प्रद्युम्न-चरित

(आदि कालिक हिन्दी काव्य)

रचयिता:—कवि सधारु

प्राक्कथन लेखक

डा० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०
रीडर, हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

★

सम्पादक

पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ
कस्तूरचंद कासलीवाल शास्त्री एम० ए०,

प्रकाशक

केशरलाल बख्शी
मंत्री प्रबन्धकारिणी कमेटी
दि० जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे
जयपुर

प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा की प्राचीन रचना 'प्रद्युम्नचरित' को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति सर्व प्रथम हमें ४–५ वर्ष पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्रभण्डार की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् शास्त्रभण्डार कामा (भरतपुर) में भी इस ग्रंथ की एक प्रति मिल गयी। क्षेत्र की प्र० का० कमेटी ने ग्रंथ की उपयोगिता को देखते हुये इसके प्रकाशन का निश्चय कर लिया।

प्रद्युम्न चरित दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी की ओर से संचालित जैन साहित्य शोध–संस्थान का आठवां प्रकाशन है। इस पुस्तक के पूर्व क्षेत्र की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ३ भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थ सिद्धिसार आदि खोज पूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य की कितनी सेवा हो सकी है इसका तो विद्वान एवं रिसर्च स्कालर्स ही अनुमान लगा सकते हैं लेकिन अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें जिनका अभी ५–७ वर्षों में ही प्रकाशन हुआ है उनमें जैन विद्वानों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों का उल्लेख देखकर तथा हमारे यहां साहित्य शोध–संस्थान के कार्यालय में आने वाले खोज प्रेमी विद्वानों की संख्या को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि क्षेत्र की ओर से जो ग्रंथ सूचियां, प्रशस्ति संग्रह एवं अनुपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेख आदि प्रकाशित हुये हैं उनसे साहित्यिक जगत् को पर्याप्त लाभ पहुंचा है।

यद्यपि हमारा प्रमुख ध्यान राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां तैयार करवाकर उन्हें प्रकाशित कराने की ओर है लेकिन हम चाहते हैं कि ग्रंथ सूची प्रकाशन के साथ साथ भण्डारों में उपलब्ध होने वाली अज्ञात एवं महत्वपूर्ण सामग्री का भी प्रकाशन होता रहे। अब तक साहित्य शोध संस्थान की ओर से राजस्थान के ७० से भी अधिक ग्रंथ भण्डारों की सूचियां तैयार की जा चुकी हैं तथा उनमें उपलब्ध अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाओं का या तो परिचय लिया जा चुका है अथवा उनकी पूरी प्रतिलिपियां उतार कर संग्रह कर लिया गया है। ये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की रचनायें हैं। इन भण्डारों में हमें अपभ्रंश एवं हिन्दी की सबसे अधिक सामग्री मिलती है। अपभ्रंश का विशाल

साहित्य जो हमें प्राप्त हुआ है उसका अधिकांश भाग जयपुर, अजमेर एवं नागौर के भण्डारों में उपलब्ध हुआ है। इस प्रकार हिन्दी की १३–१४ वीं शताब्दी तक की प्राचीनतम रचनायें भी हमें इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। संवत् १३५४ में निबद्ध रल्ह कवि कृत जिनदत्त चौपई इनमें उल्लेखनीय रचना है जो अभी १ वर्ष पूर्व ही कासलीवालजी को जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई थी।

हम राजस्थान के सभी ग्रंथ भण्डारों की चाहे वह छोटा हो या बड़ा ग्रंथ सूची प्रकाशित कराना चाहते हैं। इससे इन भण्डारों में उपलब्ध विशाल साहित्य तो प्रकाश में आ ही सकेगा किन्तु ये भंडार भी व्यवस्थित हो जावेंगे तथा उनकी वास्तविक संख्या का पता लग जावेगा। किन्तु हमारे सीमित आर्थिक साधनों को देखते हुये इस कार्य में कितना समय लगेगा यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम इस कार्य को कम से कम समय में पूर्ण करना चाहते हैं। यदि साहित्यिक यज्ञ के इस मुख्य कार्य में हमें समाज के विद्वानों एवं दानी सज्जनों का सहयोग मिल जावे तो हम इस ग्रंथ सूची प्रकाशन के सारे कार्य को ५–७ वर्ष में ही समाप्त करना चाहते हैं।

ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग जिसमें करीब ६ हजार हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण रहेगा प्रायः तैयार है तथा उसे शीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रेस में दिया जाने वाला है इसके अतिरिक्त १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई का भी सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है उसे भी हम इसी वर्ष पाठकों के हाथों में दे सकेंगे।

अन्त में प्रद्युम्न चरित के सम्पादन एवं प्रकाशन में हमें श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल एम. ए. शास्त्री एवं पं० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ आदि जिन २ विद्वानों का सहयोग मिला है मैं उन सभी का आभारी हूं। राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ, अध्यक्ष जैन संस्कृत कालेज का हमें जो ग्रंथ सम्पादन में पूर्णसहयोग मिला है उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूं। पंडितजी साहब से हमें साहित्य सेवा की सतत प्रेरणा मिलती रहती है। क्षेत्र की ओर से संचालित इस जैन साहित्य शोध संस्थान की स्थापना भी आप ही की प्रेरणा का फल है। पुस्तक का प्राक्कथन लिखने में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० माताप्रसादजी गुप्त ने जो कष्ट किया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी हमें उनका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

जयपुर
ता० १०-८-५६

केशरलाल बख्शी

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ कब से होता है, यह उसके इतिहास का सबसे अधिक विवादपूर्ण विषय रहा है। पहले कुछ विद्वानों का मत था कि पुंड या पुष्य हिन्दी का आदि कवि था जो आठवीं या नवीं शती में हुआ था किन्तु उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं थी। इधर अपभ्रंश के एक सर्वश्रेष्ठ कवि पुष्पदन्त की रचनाओं के प्रकाश में आने पर अनुमान किया जाने लगा है कि पुष्य नाम के जिस कवि का हिन्दी के आदि कवि के रूप में उल्लेख होता रहा है, वह कदाचित् पुष्पदन्त था। किंतु पिछले ५०—६० वर्षों की खोज में पुष्पदन्त ही नहीं अपभ्रंश के चार दर्जन से अधिक कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से पृथक स्थान मिलना चाहिए या इसे पुरानी हिन्दी का साहित्य ही मान लेना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें भाषा के इतिहास की ओर मुड़ना पड़ता है। भारतीय भाषाओं पर जिन विद्वानों ने कार्य किया है, उनका मत है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि की भांति हिन्दी भी एक आधुनिक भारतीय आर्य—भाषा है। इसकी विभिन्न बोलियां उन उन क्षेत्रों में बोली जाने वाली अपभ्रंशों से विकसित हुई हैं, और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भांति हिंदी की विभिन्न बोलियों की भी कुछ विशेषताएं हैं जो उन्हें उनके पूर्ववर्ती अपभ्रंशों से अलग करती हैं। उनका यह भी मत है कि समस्त अपभ्रंशों को मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषाओं में स्थान मिलना चाहिए क्योंकि उनकी सामान्य प्रवृत्तियां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं की हैं।

किन्तु यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि बोलचाल की भाषाएँ एकदम नहीं बदलती हैं, उनमें धीरे धीरे परिवर्तन होता चलता है और ऊपर मध्य कालीन और आधुनिक आर्य भाषाओं में जिस प्रकार का अन्तर बताया गया है, वह क्रमशः उपस्थित होता है। अतः काफी लंबे समय तक ऐसा रहा होगा कि अपभ्रंश के विशिष्ट तत्व धीरे—धीरे समाप्त हुए होंगे और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विशिष्ट तत्व अंकुरित होकर पल्लवित हुए होंगे। इसलिए जिस साहित्य में अपभ्रंश और आधुनिक आर्य भाषाओं दोनों के तत्व मिलते हैं उन्हें कहां रक्खा जाए, यह प्रश्न बना ही रहता है, भले ही हम सिद्धान्ततः यह मानलें कि अपभ्रंश—

साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग स्थान मिलना चाहिए। यह सन्धिकालीन साहित्य परिमाण में कम नहीं है। इसका सर्व श्रेष्ठ व्यावहारिक उत्तर कदाचित् यही है कि इसे दोनों साहित्यों की सम्मिलित सम्पत्ति माना जाए। इसे उतना ही ह्रासकालीन अपभ्रंश का साहित्य माना जाए जितना इसे आधुनिक भाषाओं के प्रादुर्भाव काल का। और विद्वानों का यह कर्तव्य है कि इस संधिकालीन साहित्य को शेष समस्त अपभ्रंश साहित्य से भाषा तत्वों के आधार पर अलग करके इसे सूची बद्ध करें, तभी हमारे साहित्य के इतिहास के इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उचित रीति से समाधान हो सकता है कि उसका प्रारंभ कब से होता है।

यदि इस संधिकालीन साहित्य का अनुशीलन किया जावे तो यह सुगमता से देखा जा सकता है कि इसके निर्माण में सबसे बड़ा हाथ जैन विद्वानों और महात्माओं का रहा है, और वस्तुतः साहित्य में इनका इतना बड़ा योग रहा है जो कि इस संधिकाल से पूर्व निर्मित हुआ था। इतना ही नहीं विभिन्न भाषाओं में आधुनिक आर्य भाषाओं के मिश्रण के साथ जैन विद्वान और महात्मा सत्रहवीं शती तक बराबर अपभ्रंश में रचनाएँ करते आ रहे हैं। अभी अभी जैन कवि पं० भगवतीदास कृत 'मइंकलेहचरिउ' (मृगांकलेखाचरित) नाम की रचना मेरे देखने में आई है* जो विक्रमीय अठारहवीं शती की रचना है। इसलिए यह प्रकट है कि अपभ्रंश के साहित्य की श्रीवृद्धि में जैन कृतिकारों का योग असाधारण रहा है। जब अपभ्रंश बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी और उसका स्थान आधुनिक आर्य भाषाओं ने ले लिया था, उसके बाद भी सात आठ शताब्दियों तक जैन कृतिकारों ने अपभ्रंश की जो सेवा की, वह भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ध्यान देने की वस्तु है। इससे उनका अपभ्रंश के प्रति एक धार्मिक अनुराग सूचित होता है; इसलिए यदि परिनिष्ठित अपभ्रंश और संधिकालीन अपभ्रंश का सबसे महत्वपूर्ण अंश हमें जैन विद्वानों और कवियों की कृतियों के रूप में मिलता है तो आश्चर्य न होना चाहिये।

किंतु एक कारण और भी इस बात का है जो इस साहित्य के कृतिकारों में जैन कवियों और महात्माओं का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। वह यह है कि जैन धर्मावलंबियों ने अपने साहित्य की बड़ी निष्ठा पूर्वक सुरक्षा की है। अपभ्रंश तथा संधियुग का जितना भी भारतीय साहित्य प्राप्त हुआ है, उसका सर्व प्रमुख अंश जैन भंडारों से ही प्राप्त हुआ है, इसलिए उस साहित्य में यदि जैन कृतियों का बाहुल्य हो तो उसे स्वाभाविक ही मानना चाहिए और इसके प्रमाण प्रचुरता से मिलते हैं कि अपभ्रंश और संधि युग में साहित्य-रचना अनेक जैनेतर कवियों ने

---

*इस ग्रंथ के संपादक श्री कस्तूरचंद कासलीवाल की कृपा से प्राप्त।

की है; उदाहरणार्थ 'प्राकृत 'पैंगल'* में उदाहरणों के रूप में संकलित अधिकतर छंद जैनेतर कवियों के प्रतीत होते हैं; हेमचन्द्र द्वारा उदाहृत तथा जैन प्रबंधकारों द्वारा उद्धृत+ छंदों में भी एक बड़ी संख्या जैनेतर कृतियों के छंदों की लगती है। बौद्ध सिद्धों की रचनाएं तो सर्व विदित ही हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि इन दोनों युगों का जैनेतर साहित्य भी बहुत था और उसकी खोज अधिकाधिक की जानी चाहिए।

कुछ पूर्व तक जैन भंडारों में प्रवेश असंभव-सा था, किंतु अब अनेक भांडारों ने अपने संग्रहों को दिखाने के लिए प्रवेश की व्यवस्था कर दी है। उधर उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का भी एक व्यवस्थित आयोजन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग द्वारा आरंभ हुआ है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जैन भण्डारों की पोथियों के विवरण संकलित और प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस खोज कार्य में अनेकानेक अपभ्रंश, संधिकालीन हिंदी तथा आदि-कालीन हिंदी की रचनाओं का पता लगा है, जिससे हिंदी साहित्य के बहुत से परमोज्वल रत्न प्रकाश में आने लगे हैं। इन्हीं में से एक सबसे उज्वल और मूल्यवान रत्न सधारु कृत प्रद्युम्न चरित है। इसकी रचना विभिन्न पाठों के अनुसार सं० १३११, १४११ और १५११ में हुई है, किन्तु गणना के अनुसार सं० १४११ की तिथि ठीक आती है, इसलिये वही इसकी वास्तविक रचना तिथि है। इस समय के आस-पास की निश्चित तिथियों की रचनाएं इनी-गिनी हैं, और जो हैं भी, इतने अधिक निश्चित रूप और पाठ की ओर भी कम है। आकार में यह रचना चउपई छंदों की एक सतसई है और काव्य दृष्टि से भी बड़े महत्व की है। इसलिये इस रचना की खोज से हिन्दी साहित्य के आदिकाल की निश्चित श्री वृद्धि हुई है। यह बड़े हर्ष की बात है कि श्री पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री द्वारा इसका सम्पादन करा कर अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था की है। उसकी इस सेवा के लिये हिन्दी जगत् को अतिशय क्षेत्र का आभार मानना चाहिए।

श्री पं० चैनसुखदास तथा श्री कासलीवाल ने इसका सम्पादन बड़े ही परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। उन्होंने इसकी सर्वोत्तम कृतियों का उपयोग सम्पादन में करते हुए उन सब के पाठान्तर विस्तारपूर्वक इस संस्करण में दिये हैं

---

* सम्पादक—चन्द्रमोहन घोष, प्रकाशक—एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, कलकत्ता।

+ देखो, हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण, मेरुतुङ्ग का प्रबन्ध चिन्तामणि तथा मुनिजिन विजय द्वारा सम्पादित—पुरातन प्रबन्ध संग्रह।

जिनकी सहायता से इस रचना का पाठ निर्धारण पाठानुसंधान की आधुनिक प्रणाली पर भी करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी फिर उन्होंने हिन्दी में अर्थ भी सम्पूर्ण रचना का दिया है। हिन्दी की प्राचीन कृतियों का सन्तोषजनक रूप से अर्थ लगाना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, कारण यह है कि उसके लिये आवश्यक कोषों का अत्यन्त अभाव है। हिन्दी के सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान कोष 'हिन्दी शब्द सागर' से ऐसे ग्रन्थों का अर्थनिर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती। पुरानी हिन्दी का भाषात्मक अध्ययन भी अभी तक नहीं हुआ है, यह भी खेद का विषय है। ऐसी दशा में किसी भी पुरानी हिन्दी कृति का अर्थ देना स्वतः एक कष्ट साध्य कार्य हो जाता है। सम्पादकों ने रचना का यथासम्भव ठीक-ठीक अर्थ लगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्होंने रचना की समीक्षा भी विभिन्न दृष्टियों से उसकी भूमिका में की है। इससे सभी प्रकार के पाठकों को, रचना को और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी। अतः मैं सम्पादकों को इस सम्पादन के लिये हृदय से बधाई देता हूं। वे इस ग्रन्थमाला से अनेक नव-प्राप्त प्राचीन हिन्दी की रचनाओं का सम्पादन करना चाहते हैं। मेरी यही शुभकामना है कि वे अपने संकल्प को पूरा करने में सफल हों।

इस संस्करण में पाठ-निर्धारण के लिये वे आधुनिक पाठानुसन्धान की प्रणाली का आश्रय नहीं ले सके हैं अन्यथा पाठ कुछ और अधिक प्रामाणिक हो सकता था। आशा है कि वे इसके अगले संस्करण में इस अभाव की पूर्ति करेंगे।

प्रयाग — माताप्रसाद गुप्त

३१-६-५६.

प्रस्तावना

प्रद्युम्न चरित का हमें सर्व प्रथम परिचय देने का श्रेय स्व० रायबहादुर डा० हीरालाल को है, जिन्होंने 'सर्च रिपोर्ट' सन् १६२३-२४ में इसका उल्लेख किया था। इसके पश्चात् श्री बाबू कामताप्रसाद अलीगंज (एटा) द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से इसका परिचय प्राप्त हुआ, किन्तु उन्होंने अपनी उक्त पुस्तक में इसका उल्लेख वीर सेवा मन्दिर देहली के मुख-पत्र 'अनेकान्त' में प्रकाशित एक सूचना के आधार पर किया था और इस सूचना में इसे गद्य की रचना बतलाया था। इसी पुस्तक के प्राक्कथन में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उसे गद्य ग्रन्थ मान कर शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। श्री अगरचन्द नाहटा बीकानेर को जब उक्त पुस्तक पढ़ने को मिली तो उसे देखने पर उन्हें पता चला कि 'प्रद्युम्न-चरित' गद्य रचना न होकर पद्य रचना है एवं उसका रचना संवत् १४११ है। इसके बाद नाहटाजी का जयपुर से प्रकाशित 'वीरवाणी' पत्र के वर्ष १ अङ्क १०-११ (सन् १६४७) में "सं० १६८८ का लिखित प्रद्युम्न-चरित्र क्या गद्य में है ?" नामक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षिप्त किन्तु वास्तविक परिचय दिया और लेख के अन्त में निम्नलिखित परिणाम निकाला :-

"उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि कवि का नाम रायरच्छ नहीं, पर साधारु या सधारु था। वे अगरोवइ से उत्पन्न अग्रवाल जाति के शाह महराज (महाराज नहीं) एवं गुणवती के पुत्र थे। इनका निवास स्थान सम्भवतः रायरच्छ था। इसे ही सूची कर्ता ने रायरच्छ पढ़ कर इसे ग्रन्थकर्ता का नाम बतला दिया है। नगवर सन्त पाठ अशुद्ध है सम्भवतः र व शब्द को आगे पीछे लिख दिया है। शुद्ध पाठ नगर वसन्त होना चाहिए। सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना प्रति से रचना काल की मिली है। अभी तक सम्वत् १४११ की इतनी स्पष्ट रचना ज्ञात नहीं है इस दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है।"

इसके पश्चात् प्रद्युम्न चरित के महत्व को प्रकाश में लाने अथवा उसके प्रकाशन पर किसी का ध्यान नहीं गया। इधर हमारा राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां तैयार करने का पुनीत कार्य चल ही रहा था।

सन् १६५४ में जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार की सूची बनाने के अवसर पर उसी भण्डार में हमें 'प्रद्युम्न-चरित' की भी एक प्रति प्राप्त हुई। जयपुर के उक्त भण्डार की ग्रन्थ सूची बनाने का काम जब पूरा हो गया तो इस पुस्तक के सम्पादक श्री कासलीवाल और श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ को भरतपुर प्रान्त के जैन ग्रन्थ भण्डारों को देखने के लिये जाना पड़ा और कामां (भरतपुर) के दोनों ही मन्दिरों के शास्त्र भण्डारों में 'प्रद्युम्न-चरित' की एक एक प्रति और भी उपलब्ध हो गई लेकिन जब इन दोनों प्रतियों को परस्पर में मिलाया गया तो पाठ भेद एवं प्रारम्भिक पाठ विभिन्नता के अतिरिक्त रचना काल में भी १०० वर्ष का अन्तर मिला। अग्रवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना सम्वत् १३११ दिया हुआ है किन्तु यह प्रति अपूर्ण, फटी हुई एवं नवीन है। भाषा की दृष्टि से भी वह नवीन मालूम होती है। खंडेलवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना काल सम्वत् १४११ दिया हुआ है तथा वह प्राचीन भी है। इसी प्रति का हमने सम्पादन कार्य में 'क' प्रति के नाम से उपयोग किया है।

इसी बीच में नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से रीवां में हिन्दी ग्रन्थों के शोध का कार्य प्रारम्भ किया गया और सभा के साहित्यान्वेषक को वहीं के दि० जैन मन्दिर में इस ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संक्षिप्त परिचय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' देहली में प्रकाशित हुआ। पर इस लेख से भी 'प्रद्युम्न-चरित' के सामान्य महत्व के अतिरिक्त कोई विशेष परिचय नहीं मिला। साहित्यान्वेषक महोदय ने लिखा है कि "इसके कर्ता गुण सागर (जैन) आगरा निवासी सम्वत् १३११ में हुए थे" लेखक ने इस रचना को ७०१ वर्ष पहले की बताया। ग्रन्थ का यही नाम देख कर हमने उसका आदि अन्त का पाठ भेजने के लिये श्री रघुनाथजी शास्त्री को लिखा। हमारे अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा ने रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का पाठ भेजने की कृपा की। इसके कुछ दिन पश्चात् ही क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग को देखने के लिये श्री नाहटाजी का आगमन हुआ और वे रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का भाग अपने साथ ले गये। तदनंतर नाहटाजी का प्रद्युम्न-चरित पर एक विस्तृत एवं खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी अनुशीलन' वर्ष ६ अङ्क १-४ में 'सम्वत् १३११ में रचित प्रद्युम्न-चरित्र का कर्ता' शीर्षक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद इस रचना को श्री महावीर क्षेत्र की ओर से प्रकाशित कराने का निश्चय किया गया। दो प्रतियां तो हमारे पास पहिले ही से थीं और दो प्रतियां श्री नाहटाजी द्वारा प्राप्त हो गईं। नाहटाजी द्वारा प्राप्त इन

दो प्रतियों में से एक प्रति देहली के शास्त्र भण्डार की है और दूसरी सिंधी ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इन चारों प्रतियों का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है :—

(१) यह प्रति जयपुर के श्री बधीचन्दजी के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है। इस प्रति में २४ पत्र हैं। पत्रों का आकार ११½ × ५½ इञ्च का है। इस प्रति का लेखन काल सम्वत् १६०५ आसोज सुदी ३ मंगलवार है। प्रति प्राचीन एवं स्पष्ट है। इसमें पद्यों की संख्या ६८० है। इस संस्करण का मूलपाठ इसी प्रति से लिया गया है। लेकिन प्रकाशित संस्करण में पद्यों की संख्या ७०१ दी गई है। इसका मूल कारण यह है कि वस्तुबंध छंद के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रथम चौपई को भी लिपिकार अथवा कवि ने उसी पद्य में गिन लिया है इसी से पद्यों की संख्या कम हो गई। इस प्रति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियों में वस्तुबंध के पश्चात् प्रयुक्त होने वाली चौपई छंद को भिन्न छंद माना है तथा उसकी संख्या भी अलग ही लगाई गई है। प्रस्तुत पुस्तक में १७ वस्तुबंध छंदों का प्रयोग हुआ है इसलिये १७ चौपई तो ये बढ़ गई, शेष ४ छंदों की संख्या लिखने में गलती होने के कारण बढ़ गई हैं, इसलिये इस संस्करण में ६८० के स्थान में ७०१ संख्या आती है। कहीं कहीं चौपई छंद में ४ चरणों के स्थान पर ६ चरणों का भी प्रयोग हुआ है।

(२) दूसरी प्रति ('क' प्रति)

यह प्रति कामां (भरतपुर) के खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है जिसकी पत्र संख्या ३२ है तथा पत्रों का आकार १० × ४½ इञ्च है। इसकी पद्य संख्या ७१६ है, लेकिन ७०० पद्य के पश्चात् लिपिकार ने ७०१ संख्या न लिख कर ७१० लिख दी है इसलिये इसमें पद्यों की कुल संख्या वास्तव में ७०७ है। प्रति में लेखन काल यद्यपि नहीं दिया है, किन्तु यह प्रति भी प्राचीन जान पड़ती है और सम्भवतः १७ वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व की लिखी हुई है। इस प्रति में २३ वें पत्र से २८ वें पत्र तक अर्थात् मध्य के ६ पत्र नहीं हैं।

(३) तीसरी प्रति ('ख' प्रति)

यह प्रति देहली के सेठ के कूंचे के जैन मन्दिर के भण्डार की है, जो वहां के साहित्य सेवी ला० पन्नालाल अग्रवाल की कृपा से नाहटाजी को प्राप्त हुई थी। यह प्रति एक गुटके में संग्रहीत है। गुटके में इस रचना के ७२ पत्र हैं। प्रति की लिपि स्पष्ट तथा सुन्दर है। इस प्रति में पद्यों की संख्या

७१४ है जो मूल प्रति से १३ अधिक हैं। यह सम्वत् १६४८ जेठ सुदी १२ गुरुवार को हिसार नगर में दयालदास द्वारा लिखी गई थी। पांडे प्रहलाद ने इसकी प्रतिलिपि की थी। इसकी लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

संवत् १६४८ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां गुरुवासरे श्री साहजहां राज्ये श्री हिसार नगर मध्ये लिखितं दयालदासेन लिखापितं पांडे पहिलाद्। शुभमस्तु।

(४) चौथी प्रति ('ग' प्रति)

यह प्रति सिंधिया ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इस प्रति में ७१३ छंद हैं। इसका लेखनकाल संवत् १६३५ आसोज बुदी ११ आदित्यवार है। इस प्रति को राजगच्छ के उपाध्याय विनयसुन्दर के प्रशिष्य एवं भक्तिरत्न के शिष्य नयरत्न ने अपने पढ़ने के लिये लिखा था। पाठ भेदों में इस प्रति को 'ग' प्रति कहा गया है।

इसमें प्रारम्भ से ही चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है जब कि अन्य तीन प्रतियों में ८ वें पद्य से (ख प्रति में ७ वें पद्य से) नमस्कार किया गया है। मंगलाचरण के प्रारम्भ के १२ पद्य निम्न प्रकार हैं—

रिषभ अजित संभो जिनस्वामि, कम्मनि नासि भयो शिवगामी।
अभिनंदनदेउ सुमति जगईस, तीनि वार तिन्ह नामउ सीस ॥ १ ॥

पद्मप्रभ सुपास जिणदेव, इन्द फनिंद करहि तुम्ह सेव।
चन्द्रप्रभ आठमउ जिणिंद, चिन्ह धुजा सोहइ वर चन्दु ॥ २ ॥

नवमउ सुविधि नवहु भवितासु, सिद्ध सरुणु मुकति भयो भासु।
सीतल नाथ श्रेयांस जिणंदु, जिण पुजत भवो होइ आनंद ॥ ३ ॥

वासपूज्य जिणधर्म सुजाण, भवियण कमल देव तुम्ह भाणु।
चक्र भवनु साई संसारु, स्वर नरकउ सु उलंघण हारु ॥ ४ ॥

विमलनाथ जउ निर्म्मलबुधि, तजि भउ पार लही सिव सिद्धि।
सो जिण अनंतु वारंबार, अष्ट कर्म्म तिणि कीन्हे छार ॥ ५ ॥

जउ रे धर्म्म धम्मधुरवीर, पंच सुमति वर साहस धीर।
जैरे सति तजी जिणि रीस, भवीयण संति करउ जगईस ॥ ६ ॥

कंथु अरह चयकवइ नरिंद, निर्ज्जर कम्मं भयो सिव इन्द ।
जोति सरुपु निरंजण कारु, गजपुर नयरी लेवि अवतारु ॥ ७ ॥

मल्लिनाथ पंचेन्द्री मल्ल, चउरासी लक्ष कियो निसल्ल ।
जउरे मुनिसुव्रत मुनि इंद, मन मर्दन वीसवे जिनंद ॥ ८ ॥

जउरे नामि गुण ग्यांन गंभीर, तीन गुपति वर साहसधीर ।
निलोपल लंछन जिनराज, भवियण वहु परिसारइ काज ॥ ९ ॥

सोरीपुरि उपनउ वरवीरु, जादव कुल मंडण गंभीरु ।
जाउरे जिणवर नेमि जिणंद, रतिपति राइ जिण पूनिमचंदु ॥१०॥

आससेन नृप नंदनवीर, दुष्ट विघन संतोषण धीर ।
जाउरे जिणवर पास जिणंद, सिरफन छत्र दीयो धरणिंद ॥११॥

मेर सिखर पूरव दिसि जाइ, इन्द्र सुर त्रिभुवन राइ ।
कंचन कलस भरे जल क्षीर, ढालहि सीस जिणेसर वीर ॥१२॥

उक्त ४ प्रतियों के अतिरिक्त जब नवम्बर सन् ५८ के प्रथम सप्ताह में श्री नाहटाजी जयपुर आये तो उन्होंने 'प्रद्युम्न-चरित' की एक और प्रति का जिक्र किया और उसे हमारे पास भेज दिया। यद्यपि इस प्रति का पाठ भेद आदि में अधिक उपयोग नहीं किया जा सका, किन्तु फिर भी कुछ सन्देहास्पद पाठ इस प्रति से स्पष्ट हो गये। यह प्रति भी प्राचीन है तथा संवत् १६६६ श्रावण बुदी ६ आदित्यवार को लिखी हुई है। प्रति में २७ पत्र हैं तथा उनका १०½ × ४½ इञ्च का आकार है। इसमें पद्य संख्या ७०१ है। इस प्रति की विशेषता यह है कि इसमें रचना काल सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त मूल प्रति के प्रारम्भ में जो विस्तृत स्तुति खण्ड है वह इस प्रति में नहीं है। प्रति के प्रारम्भ में ६ पद्य निम्न प्रकार है।

अठदल कमल सरोवरि वासु, कासमीरि पुरियउ निवासु ।
हंसि चडी करि वीणा लेइ, कवि सधारु सरसै पणवेइ ॥ १ ॥

पणमावती दंडु करि लेइ, ज्वालामुखी चक्केसरि देइ ।
अंबाइणि रोहणि जो सारु, सासण देवि नवइ साधारु ॥ २ ॥

स्वेत वस्त्र पदमासरिण लीरण, करहि आलवरिण बाजहि बीरण ।
आगमु जारिण देइ बहुमती, पुणु पणवौं देवी सुरस्वती ॥ ३ ॥
जिरण सासरण जो विघन हरेइ, हाथि लकुटि ले आगें होइ ।
भवियहु दुरिय हरइ असरालु, आगिवारिण पणवउ खितपालु ॥ ४ ॥
संवत् तेरहसइ होइ गए, ऊपरि अधिक एयारह भए ।
भादव सुदि पंचमि जो सारु, स्वाति नखत्रु सनीश्चरु वारु ॥ ५ ॥

वस्तुबंध :—

पणविवि जिणवर सुद्ध सुपवित्तु

नेमीसरू गुणनिलउ, स्याम वणु सिवएवि नंदणु ।
चउतीसह अइसइ सहिउ, कमकरणी घण माण मद्दणु ।
हरिवंसह कुल तिलउ, निजिय नाह भवरणासु ।
सासइ सुह पावहं हरणु, केवलणाण पसु ? ॥ ६ ॥

विभिन्न भाषाओं में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित रचनायें:—

प्रद्युम्न कुमार जैनों के १६६ पुण्य पुरुषों में से एक हैं । इनकी गणना चौबीस कामदेवों (अतिशय रूपवान) में की गई है । यह नवमें नारायण श्री कृष्ण के पुत्र थे । यह चरमशरीरी (उसी जन्म से मोक्ष जाने वाले) थे । इनका चरित्र अनेक विशेषताओं को लिये हुए होने के कारण आकर्षणों से भरा पड़ा है । मनुष्य का उत्थान और पतन एवं मानव-हृदय की निर्बलताओं का चित्रण इस चरित्र में बहुत ही खूबी से हुआ है और यही कारण है कि जैन वाङ्मय में प्रद्युम्न के चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है । न केवल पुराणों में ही प्रसंगानुसार प्रद्युम्न का चरित्र आया है अपितु अनेक कवियों ने स्वतन्त्र रूप से भी इसे अपनी रचना का विषय बनाया है ।

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र सर्व प्रथम जिनसेनाचार्य कृत 'हरिवंश पुराण' के ४७ वें सर्ग के २० वें पद्य से ४८ वें सर्ग के ३१ वें पद्य तक मिलता है । फिर गुणभद्र के उत्तर पुराण में, स्वयम्भू कृत रिट्ठणेमिचरिउ (८ वीं शताब्दी) में, पुष्पदन्त के महापुराण (९-१० वीं शताब्दी) में तथा धवल के हरिवंश पुराण (१० वीं शताब्दी) में वह प्राप्त होता है । इन रचनाओं

में से प्रथम दो संस्कृत एवं शेष अपभ्रंश भाषा की हैं। उक्त पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित जो स्वतन्त्र रचनायें मिलती हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

क्र० सं०	रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	रचना काल
१.	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	११वीं शताब्दी
२.	पज्जुण्णकहा	सिंह अथवा सिद्ध	अपभ्रंश	१३वीं शताब्दी
३.	प्रद्युम्नचरित	कवि सधारु	हिन्दी	सं० १४११
४.	प्रद्युम्नचरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१५वीं शताब्दी
५.	प्रद्युम्नचरित्र	रइधू	अपभ्रंश	१५वीं शताब्दी
६.	प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	सं० १५३०
७.	प्रद्युम्न चौपई	कमलकेशर	हिन्दी	सं० १६२६
८.	प्रद्युम्नरासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	सं० १६२८
९.	प्रद्युम्नचरित्र	रविसागर	संस्कृत	सं० १६४५
१०.	शाम्बप्रद्युम्न रास	समयसुन्दर	राजस्थानी	सं० १६५९
११.	प्रद्युम्नचरित्र	शुभचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१२.	प्रद्युम्नचरित्र	रतनचन्द्र	संस्कृत	सं० १६७१
१३.	प्रद्युम्नचरित्र	मल्लिभूषण	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१४.	प्रद्युम्नचरित्र	वादिचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१५.	शाम्बप्रद्युम्न रास	ज्ञानसागर	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१६.	शाम्बप्रद्युम्न चौपई	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१७.	प्रद्युम्नचरित्र	भोगकीर्ति	संस्कृत	——
१८.	प्रद्युम्नचरित्र	जिनेश्वर सूरि	संस्कृत	——
१९.	प्रद्युम्नचरित्र	यशोधर	संस्कृत	——
२०.	प्रद्युम्नचरित्र भाषा	—	हिन्दी गद्य	——
२१.	प्रद्युम्नप्रबन्ध	देवेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	सं० १७२२
२२.	प्रद्युम्नरास	मायाराम	हिन्दी	सं० १८१८
२३.	शाम्बप्रद्युम्न रास	हर्षविजय	हिन्दी	सं० १८४२
२४.	प्रद्युम्नप्रकाश	शिवचन्द	हिन्दी	सं० १८७९
२५.	प्रद्युम्नचरित	बख्तावरसिंह	हिन्दी गद्य	सं० १९१४

उक्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र रूप से महासेनाचार्य (११ वीं शताब्दी) के संस्कृत 'प्रद्युम्न चरित्र' एवं सिंह कवि के अपभ्रंश पज्जुण्णकहा (१३ वीं शताब्दी) के पश्चात् हिन्दी में

सर्व प्रथम रचना करने का श्रेय कवि सधारु को है। इसी रचना के पश्चात् संस्कृत और हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन पर २३ रचनायें लिखी गई। इससे विद्वानों एवं कवियों के लिये प्रद्युम्न का जीवन चरित्र कितना प्रिय था, इसका स्पष्ट पता लगता है।

प्रद्युम्न चरित की कथा—

द्वारका नगरी के स्वामी उन दिनों यादव-कुल-शिरोमणि श्री कृष्णजी थे। सत्यभामा उनकी पटरानी थी। एक दिन उनकी सभा में नारद ऋषि का आगमन हो गया। श्री कृष्ण ने तो उनका आदर सत्कार कर अपने सभा भवन से उन्हें विदा कर दिया, पर जब वे सत्यभामा का कुशल-क्षेम पूछने उसके महल में गये तो उसने उनका कोई सम्मान नहीं किया। इससे ऋषि को बड़ा क्रोध आया और अपमान का बदला लेने की ठान ली। वे सत्यभामा से भी सुन्दर किसी स्त्री का कृष्णजी के साथ विवाह करने की सोचने लगे। बहुत खोज करने पर उन्हें रुक्मिणी मिली, किन्तु उसका विवाह शिशुपाल से होना तय हो चुका था। नारद ने वहां से लौट कर श्रीकृष्णजी से रुक्मिणी के सौन्दर्य की खूब प्रशंसा की और अन्त में उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बड़े खुश हुए। उन्होंने बलराम को साथ लेकर छलपूर्वक रुक्मिणी का हरण कर लिया। रथ में बिठाने के पश्चात् उन्होंने रुक्मिणी को छुड़ाने के लिये सभी प्रतिपक्षी योद्धाओं को ललकारा। शिशुपाल सेना लेकर श्रीकृष्ण से लड़ने आ गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में शिशुपाल मारा गया और श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर द्वारका की ओर चले। मार्ग में विवाह सम्पन्न कर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। नगर में खूब उत्सव मनाये गये। रुक्मिणी के विवाह के बाद बहुत समय तक श्री कृष्णजी ने सत्यभामा की कोई खबर न ली। इससे सत्यभामा को बड़ा दुःख हुआ। सत्यभामा के निवेदन करने पर श्री कृष्णजी ने उसकी रुक्मिणी से भेंट कराई। सत्यभामा और रुक्मिणी ने बलराम के सामने प्रतिज्ञा की कि जिसके पहिले पुत्र होगा वह पीछे होने वाले पुत्र की माता के बालों का अपने पुत्र के विवाह के समय मुण्डन करा देगी।

दोनों रानियों के एक ही दिन पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों के दूतों ने जब यह सन्देश श्रीकृष्ण को जाकर कहा तब रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा पुत्र माना गया किन्तु उसको जन्म लेने की छठी रात्रि को ही धूमकेतु नामक असुर हरण कर लेगया और पूर्व भव के बैर के कारण उसे वन में एक शिला के नीचे दबा कर चला गया। उसी समय विद्याधरों का राजा

कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के साथ विमान द्वारा उधर से जारहा था। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई भारी शिला को हिलते देखा। शिला को उठाने पर उसे उसके नीचे एक अत्यधिक सुन्दर बालक दिखाई दिया। तुरन्त ही उसने उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपनी स्त्री को दे दिया। कालसंवर ने नगर में पहुँचने के बाद उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया।

इधर रुक्मिणी पुत्र वियोगाग्नि में जलने लगी। उसी समय नारद ऋषि का वहां आगमन हुआ। जब उन्होंने प्रद्युम्न के अकस्मात् गायब होने के समाचार सुने तो उन्हें भी दुख हुआ। रुक्मिणी को धैर्य बंधाते हुए नारद ऋषि प्रद्युम्न का पता लगाने विदेह क्षेत्र में केवली भगवान् के समवसरण में गये। वहां से पता लगाकर वे रुक्मिणी के पास आये और कहा कि १६ वर्ष बाद प्रद्युम्न स्वयं सानन्द घर आ जायेगा।

कालसंवर के यहां प्रद्युम्न का लालन पालन होने लगा। पांच वर्ष की आयु में ही उसे विद्याध्ययन एवं शस्त्रादि चलाने की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा गया। थोड़े ही समय में वह सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया। कालसंवर के प्रद्युम्न के अतिरिक्त ५०० और पुत्र थे। राजा कालसंवर का एक शत्रु था राजा सिंहरथ जो उसे आये दिन तंग किया करता था। उसने अपने ५०० पुत्रों के सामने उस सिंहरथ राजा को मार कर लाने का प्रस्ताव रखा पर किसी पुत्र ने कालसंवर के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की। केवल प्रद्युम्न ने इसे स्वीकार किया और एक बड़ी सेना लेकर सिंहरथ पर चढ़ाई करदी। पहिले तो राजा सिंहरथ प्रद्युम्न को बालक समझ कर लड़ने से इन्कार करता रहा, पर बार बार प्रद्युम्न के ललकारने पर लड़ने को तैयार हुआ। दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में विजयश्री प्रद्युम्न को मिली। वह राजा सिंहरथ को बांध कर अपने पिता कालसंवर के सामने ले आया। कालसंवर अपने शत्रु को अपने अधीन देखकर प्रद्युम्न से बड़ा खुश हुआ और उसे युवराज पद दिया एवं इस प्रकार उन ५०० पुत्रों का प्रधान बना दिया।

इस प्रतिकूल व्यवहार के कारण सब कुमार प्रद्युम्न से द्वेष करने लगे एवं उसे मारने का उपाय सोचने लगे। उन सब कुमारों ने प्रद्युम्न को बुलाया और उसे वन क्रीड़ा के बहाने वन में ले गये। अपने भाइयों के कहने से प्रद्युम्न जिन मन्दिरों के दर्शनार्थ सर्व प्रथम विजयगिरि पर्वत पर चढ़ा, पर वहां उसने फुंकार करता हुआ एक भयंकर सर्प देखा। प्रद्युम्न तुरन्त ही उस डरावने सर्प से भिड़ गया तथा उसकी पूंछ पकड़ कर उसे जमीन पर दे

मारा इसे देखकर वह सर्प यक्ष रूप में प्रद्युम्न के सामने आकर खड़ा हो गया और और प्रद्युम्न को प्रसन्न होकर १६ विद्यायें दीं। फिर प्रद्युम्न दूसरी काल गुफा में गया। वहां के रक्षक कालासुर दैत्य को हरा कर वहां से चंवर छत्र प्राप्त किया। तीसरी गुफा में जाने पर उसे एक भयावह नाग से लड़ना पड़ा। किन्तु उस नाग ने भी हार मानली एवं भेंट स्वरूप नागशय्या, पावड़ी, वीणा और अन्य तीन विद्यायें दीं। जब प्रद्युम्न उन कुमारों के साथ एक सरोवर के पास पहुंचा तो उन्होंने उसे स्नान करने को कहा। पहिले तो उस सरोवर के रक्षक प्रद्युम्न को सरोवर में प्रवेश करते देख कर बड़े क्रुद्ध हुए पर अन्त में बलवान जानकर मकर पताका प्रदान की। इस प्रकार प्रद्युम्न जहां भी गये वहां से ही उन्हें अच्छी २ भेंटें मिलती रहीं इतना ही नहीं, एक वन में उन्हें एक रती नामकी सुन्दर कन्या भी मिली, जिससे उनने विवाह कर लिया।

इस प्रकार जब वह अनेक विद्याओं का लाभ लेकर कालसंवर के पास आया तब वह उस पर बड़ा खुश हुआ। इस प्रकार एक दिन वह अपनी माता कञ्चनमाला से भी मिलने गया। उस समय वह प्रद्युम्न के रूप और सौंदर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो गई और उससे प्रेम-याचना करने लगी। प्रद्युम्न को इससे बड़ी ग्लानि हुई और वह जैसे तैसे अपना पीछा छुड़ाकर अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिए वन में किसी मुनि के पास गया और उनका पथ प्रदर्शन चाहा। प्रद्युम्न ने अपनी चतुरता से कञ्चनमाला से तीन विद्यायें ले लीं। कञ्चनमाला ने अपनी इच्छा पूरी न होने एवं तीनों विद्याओं के छिन जाने पर स्त्री चरित्र फैलाया और प्रद्युम्न पर दोषारोपण किया। उसने अपना अङ्ग प्रत्यङ्ग विकृत कर लिया। कालसंवर यह सब जानकर बड़ा दुखी और क्रोधित हुआ। उसने अपने ५०० पुत्रों को बुलाकर प्रद्युम्न को मारने के लिए कहा। कुमार पिता की बात सुन कर बड़े खुश हुए। वे प्रद्युम्न को बुला कर वन में ले गये किन्तु उसे आलोकिनी विद्या द्वारा अपने भाइयों के इरादे का पता लग गया और उसे बड़ा क्रोध आया। उसने सभी कुमारों को नागपाश से बांधकर एक शिला के नीचे दबा दिया।

कालसंवर यह वृत्तान्त जानकर बड़ा कुपित हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर प्रद्युम्न से लड़ने चला। प्रद्युम्न ने भी विद्याओं के द्वारा मायामयी सेना एकत्रित करदी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। प्रद्युम्न के आगे कालसंवर नहीं ठहर सका। तब कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के पास तीनों विद्यायें लेने के लिए दौड़ा किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि प्रद्युम्न पहिले से ही विद्याओं को छल कर ले गया है तो उसे कञ्चनमाला के सारे भेद का

पता लग गया। फिर भी कालसंवर प्रद्युम्न से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा इतने में ही नारद ऋषि वहां आगये। उन्होंने जो कुछ कहा उससे सारी स्थिति बदल गई और युद्ध बन्द हो गया। इससे कालसंवर को बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रद्युम्न ने भी सब कुमारों को बन्धन मुक्त कर दिया।

कालसंवर से आज्ञा लेकर प्रद्युम्न ने नारद ऋषि के साथ द्वारका नगरी के लिए विमान द्वारा प्रस्थान किया। मार्ग में हस्तिनापुर पड़ा। वहां दुर्योधन की कन्या उदधि कुमारी का सत्यभामा के पुत्र भानुकुमार के साथ विवाह होने के लिए अभिषेक हो रहा था। नारद द्वारा यह जानकर कि उदधि कुमारी प्रद्युम्न की मांग है वह भील का भेष धारण कर उन लोगों में मिल गया और उदधि कुमारी को बलपूर्वक छीन कर ले गया। प्रद्युम्न उस कन्या को विमान में बैठा कर द्वारका की ओर चल पड़ा। द्वारका पहुंच कर नारद ने वहां के विभिन्न महलों का उसे परिचय दिया।

जब चतुरंगिणी सेना के साथ आते हुए भानुकुमार को देखा तब प्रद्युम्न विमान से उतरा और उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया। एक मायामय चंचल घोड़ा अपने साथ ले लिया। घोड़े को देखकर भानु का मन ललचाया। उसने विप्र से उसका मूल्य पूछा। विप्र ने घोड़े का इतना मूल्य मांगा जो भानु को उचित नहीं लगा। भानुकुमार विप्र के कहने पर घोड़े पर चढ़ा और घोड़े को न संभाल सकने के कारण गिर पड़ा जिसे देखकर सारे लोग हंसने लगे। जब बलदेवजी ने विप्र भेषधारी प्रद्युम्न से ही घोड़े पर चढ़ने को कहा तो वह बहुत भारी बन गया और घोड़े पर चढ़ाने के लिए प्रार्थना करने लगा। दस बीस योद्धा भी उसे उठाकर घोड़े पर न चढ़ा सके तो भानुकुमार स्वयं उसे उठाने आगे आया। तब वह भानु के गले पर पैर रखकर चढ़ गया और आकाश में उड़ गया।

पुनः प्रद्युम्न ने अपना रूप बदलकर दो मायामय घोड़े बनाये। उन मायामय घोड़ों को उसने राजा के उद्यान में छोड़ दिया। घोड़ों ने राजा के सारे उद्यान को चौपट कर दिया। इसके पश्चात् उसने दो बन्दर उत्पन्न किये जिन्होंने सत्यभामा की बाड़ी को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जब भानुकुमार बाड़ी में आया तो मायामय मच्छर उत्पन्न कर उसे बाड़ी से भगा दिया। इतने में ही प्रद्युम्न को मार्ग में आती हुई कुछ स्त्रियां मिलीं, जो मंगल गीत गा रही थीं। उनको भी उसने रथ में घोड़े और ऊंट जोड़ कर रास्ते में गिरा दिया। इसके बाद वह एक ब्राह्मण का रूप धारण कर लाठी टेकता हुआ सत्यभामा की बावड़ी पर गया और कमंडलु में जल मांगने लगा। पानी भरने से मना

करने पर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने बावड़ी की रक्षा करने वाली दासियों के केश मूंड लिये। जल सोखिणी विद्या द्वारा उसने बावड़ी का सारा पानी सुखा दिया तथा कमंडलु में भर लिया और फिर नगर के चौराहे पर उस कमंडलु के पानी को उंडेल दिया जिससे सारे बाजार में पानी ही पानी हो गया।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न मायामय मेंढा बना कर वसुदेव के महल पर पहुँचा। वसुदेव मेंढे से लड़ने लगे। वे मेंढे से लड़ने के शौकीन थे। मेंढे ने वसुदेव की टांग तोड़ कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फिर प्रद्युम्न वहां से सत्यभामा के महल पर जाकर भोजन-भोजन चिल्लाने लगा। सत्यभामा ने उसे आदर से भोजन कराया, पर उस भेषधारी ब्राह्मण ने सत्यभामा का जितना भी सामान जीमन के लिये लिया था सभी चट कर दिया और फिर भी भूखा ही बना रहा। इसके पश्चात् उसने एक और कौतुक किया कि जो कुछ उसने खाया था वह सब वमन कर उसका आंगन भर दिया। इससे सत्यभामा बड़ी दुखी एवं तिरस्कृत हुई।

इसके बाद वह ब्रह्मचारी का भेष धारण कर अपनी माता रुक्मिणी के महल में गया। रुक्मिणी अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में थी क्योंकि केवली कथित उसके आने के सभी चिह्न दिखाई दे रहे थे। इतने में ही उसने एक ब्रह्मचारी को आता हुआ देखा। रुक्मिणी ने उसे सत्कारपूर्वक आसन दिया। वह ब्रह्मचारी बड़ा भूखा था, भोजन की याचना करने लगा। प्रद्युम्न की माया से रुक्मिणी को घर में कुछ भी भोजन नहीं मिला तो उसने नारायण के खा सकने योग्य लड्डू उस ब्रह्मचारी को परोस दिये। उन अत्यन्त गरिष्ठ सारे लड्डुओं को उसे खाते देख कर रुक्मिणी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी बातचीत से उसको सन्देह हुआ कि सम्भवतः वही उसका पुत्र हो। जब सचाई जानने के लिए माता बहुत बेचैन हो गई तब अकस्मात् प्रद्युम्न अपने असली सुन्दर रूप में प्रकट हो गया और उसे देख कर माता की प्रसन्नता का पार न रहा।

सत्यभामा की दासियां जब पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार रुक्मिणी के केश लेने आई तो प्रद्युम्न ने उन्हें भी विकृत कर दिया। इस समाचार को सुन कर बलभद्र बड़े कुपित हुए और रुक्मिणी के पास आये। प्रद्युम्न विक्रिया से अपना स्थूलकाय ब्राह्मण का रूप बना कर महल के द्वार के आगे लेट गया। बलभद्र ने बड़ी कठिनता से उसे हटा कर महल में प्रवेश किया, पर इतने में ही प्रद्युम्न ने सिंह रूप धारण किया और बलभद्र का पैर पकड़ कर

मंजूषे में डाल दिया। फिर उनने माता को उस विमान में ले जाकर बैठा दिया जहाँ नारद और उदधि कुमारी बैठे थे।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न ने मायामयी रुक्मिणी की बांह पकड़ कर उसे श्रीकृष्ण की सभा के आगे से ले जाते हुए ललकारा कि यदि किसी वीर में सामर्थ्य हो तो वह श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी को छुड़ा कर ले जावे। फिर क्या था, सभा में बड़ी खलबली मच गई और शीघ्र ही युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्ण अपने अनेक योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि में आ डटे किन्तु प्रद्युम्न ने सभी योद्धाओं को मायामय नींद में सुला दिया। इससे श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए और प्रद्युम्न को ललकार कर कहने लगे कि वह रुक्मिणी को वापस लौटा कर ही अपने प्राणों की रक्षा कर सकेगा। किन्तु वह कब मानने वाला था। आखिर दोनों में युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण जी जो भी वार करते उसे प्रद्युम्न अविलम्ब काट देता। इस तरह दोनों वीरों में भयंकर लड़ाई हुई। जब श्री कृष्ण कुपित होकर निर्णायक युद्ध करने को तैयार होने लगे तो नारद वहां आ गये और दोनों का परस्पर में परिचय करवाया। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पैरों में गिर गया और श्रीकृष्ण ने आनन्द विभोर होकर उसका सिर चूम लिया। प्रद्युम्न ने अपनी मोहिनी माया को समेटा और सारी सेना उठ खड़ी हुई। घर घर तोरण द्वार बांधे गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल कलश स्थापित कर नगर प्रवेश पर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। इस तरह यह कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। फिर प्रद्युम्न का राज्याभिषेक का महोत्सव हुआ, तब कालसंवर और कंचनमाला को भी बुलाया गया। इसके पश्चात् प्रद्युम्न का विवाह बड़े ठाठ बाट से किया गया। सत्यभामा ने अपने पुत्र भानुकुमार का विवाह भी सम्पन्न किया। वे सब बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते रहे।

कुछ समय पश्चात् शंबुकुमार का जीव अच्युत स्वर्ग से श्री कृष्ण की सभा में आया और एक अनुपम हार देकर उनसे कहने लगा कि जिस रानी को आप यह हार देंगे उसी की कूंख से उसका जन्म होगा। श्रीकृष्ण यह हार सत्यभामा को देना चाहते थे, किन्तु प्रद्युम्न ने अपनी विद्या के बल से जामवन्ती का रूप सत्यभामा का सा बना कर श्री कृष्ण को धोखे में डाल दिया और वह हार उसके गले में डलवा दिया। इसके बाद जामवन्ती और सत्यभामा दोनों के क्रमशः शंबुकुमार और सुभानुकुमार नाम के पुत्र हुए। दोनों साथ साथ ही वृद्धि को प्राप्त हुए। जब वे बड़े हुए तो एक दिन दोनों

कुमारों ने जुआ खेला और शंबुकुमार ने सुभानुकुमार की सारी सम्पत्ति जीत ली।

जब समयानुसार सुभानुकुमार का विवाह हो गया तो रुक्मिणी ने अपने भाई रूपचन्द के पास कुण्डलपुर प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार को अपनी कन्या देने के लिये दूत भेजा, किन्तु रूपचन्द ने प्रस्ताव स्वीकार करने के स्थान पर दूत को बुरा भला कहा और यादव वंश के साथ कभी सम्बन्ध न करने की प्रतिज्ञा प्रकट की। रुक्मिणी यह जान कर बहुत दुखी हुई। प्रद्युम्न को भी बड़ा क्रोध आया। प्रद्युम्न भेष बदल कर कुण्डलपुर गया तथा युद्ध में रूपचन्द को हरा कर उसे श्री कृष्ण के पैरों पर लाकर डाल दिया। अन्त में दोनों में मेल हो गया और रूपचन्द ने अपनी पुत्रियां दोनों कुमारों को भेंट कर दी।

प्रद्युम्न कुमार ने बहुत वर्षों तक सांसारिक सुखों को भोगा। एक दिन वह नेमिनाथ भगवान के समवसरण में पहुँचा। वहां केवली के मुख से द्वारका और यादवों के विनाश का भविष्य सुना तो उसे संसार एवं भोगों से विरक्ति हो गई। माता-पिता के बहुत समझाने पर भी उसने न माना और जिन दीक्षा ले ली। तपश्चरण कर प्रद्युम्न ने घातिया कर्मों को नाश किया और केवल ज्ञान प्राप्त कर आयु के अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त किया।

प्रद्युम्न चरित की कथा का आधार एवं उसके विभिन्न रूपः—

जैन चरित काव्यों एवं कथाओं के मुख्यतः दो आधार हैं-एक महापुराण तथा दूसरा हरिवंश पुराण। आगे चल कर इन्हीं दो पुराणों की धारायें विभिन्न रूपों में प्रवाहित हुई हैं। प्रद्युम्न चरित की कथा जिनसेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण से ली गई है। यद्यपि कवि ने अपनी रचना में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, किन्तु जो कथा प्रद्युम्न के जीवन के संबंध में हरिवंश पुराण में दी हुई है। उसी से मिलता जुलता वर्णन प्रद्युम्न चरित में मिलता है। दोनों कथाओं में केवल एक ही स्थान पर उल्लेखनीय विरोध है। हरिवंश पुराण में रुक्मिणी पत्र भेज कर श्रीकृष्ण को अपने वरण के लिये बुलाती है जबकि प्रद्युम्न चरित में नारद के अनुरोध पर श्रीकृष्ण विवाह के लिये जाते हैं।

गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण (महापुराण का उत्तरार्द्ध) में प्रद्युम्न चरित की कथा संक्षेप रूप में दी गई है, इसलिये उसमें नारद का श्रीकृष्ण

की सभा में आगमन, सत्यभामा द्वारा नारद को सम्मान न देना, नारद द्वारा सत्यभामा का मानमर्दन करने का संकल्प, श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण एवं शिशुपाल वध, प्रद्युम्न का मुनि के पास जाना आदि घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। प्रद्युम्न चरित में कंचनमाला द्वारा प्रद्युम्न को तीन विद्याओं का देना लिखा है जबकि उत्तरपुराण के अनुसार प्रद्युम्न ने इससे प्रज्ञप्ति नाम की विद्या लेकर उनकी सिद्धि की थी।

महाकवि सिंह द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य पज्जुण्णकहा* (१२ वीं शताब्दी) और प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित की कथा में भी साम्य है। केवल पज्जुण्णकहा में प्रत्येक घटना का विस्तृत वर्णन करने के साथ-साथ प्रद्युम्न के पूर्वभवों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जबकि प्रद्युम्न चरित में इनका केवल नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त 'पज्जुण्णकहा' की कथा श्रेणिकराजा द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर गौतम गणधर द्वारा कहलाई गई है किन्तु सधारु कवि ने मंगलाचरण के पश्चात् ही कथा का प्रारम्भ कर दिया है।

महासेनाचार्य कृत संस्कृत प्रद्युम्न चरित ११ वीं शताब्दी की रचना है। रचना १४ सर्गों में विभाजित है। पज्जुण्णकहा की तरह घटनाओं का इसमें भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है इसमें और प्रद्युम्न चरित्र की कथा में पूर्णतः साम्य है।

इसी प्रकार हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित' में प्रद्युम्न के जीवन की जो कथा दी गई है उसमें और सधारु कवि द्वारा वर्णित कथा में भी प्रायः समानता है।

प्रद्युम्न का जीवन जैन साहित्यकों के लिये ही नहीं किन्तु जैनेतर साहित्यिकों के लिये भी आकर्षण की वस्तु रहा है। विष्णु पुराण के पंचम अंश के २६ वें तथा २७ वें अध्याय में रुक्मिणी एवं प्रद्युम्न की जो कथा दी हुई है, वह निम्न प्रकार है :—

रुक्मिणी कुण्डिनपुर नगर के भीष्मक राजा की कन्या थी। श्री कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ और रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भीष्मक ने शिशुपाल को रुक्मिणी देने का निश्चय कर लिया। इस कारण विवाह के एक दिन पूर्व ही श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया और इसके बाद उसके साथ उसका विधिवत् विवाह सम्पन्न

* आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में इसकी हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।

हुआ। काल क्रम से रुक्मिणी के प्रद्युम्न पुत्र उत्पन्न हुआ। इसे जन्म लेने के छठे दिन ही शम्बरासुर ने हर लिया और उसे लवण समुद्र में डाल दिया। समुद्र में उस बालक को एक मत्स्य ने निगल लिया। मछेरों ने उस मत्स्य को अपने जाल में फांस लिया और शम्बर को भेंट कर दिया। जब शम्बर की स्त्री मायावती उस मछली का पेट चीरने लगी तो वह बालक उसमें से जीवित निकल आया। इतने में ही वहां नारद ऋषि आये और रानी को सारी घटना सुना दी। मायावती उस बालक पर मोहित हो गई और उसका अनुरागपूर्वक पालन किया। उसने उसे सब प्रकार की माया सिखा दी। जब प्रद्युम्न को अपनी पूर्व घटना का पता चला तो उसने शम्बरासुर को लड़ने के लिये ललकारा और उसे युद्ध में मार दिया तथा अन्त में मायावती के साथ द्वारका के लिये रवाना हो गया। जब वह वहां पहुँचा तो रुक्मिणी उसे पहिचान न सकी, किन्तु नारद ऋषि के आने पर सारी घटना स्पष्ट हो गई। कुछ दिनों पश्चात् प्रद्युम्न ने रुक्मी की सुन्दरी कन्या को स्वयंवर में ग्रहण किया तथा उससे अनिरुद्ध नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ।

उक्त कथा और प्रद्युम्न चरित्र में निम्न प्रकार से साम्य एवं असाम्य है :—

साम्य—(१) प्रद्युम्न को श्री कृष्ण एवं रुक्मिणी का पुत्र मानना।
(२) जन्म के छठी रात्रि को ही असुर द्वारा अपहरण।
(३) नारद ऋषि द्वारा रुक्मिणी को आकर सारी स्थिति समझाना।
(४) रुक्मी की पुत्री से प्रद्युम्न का विवाह।

असाम्य—प्रद्युम्न को शम्बरासुर द्वारा समुद्र में डाल देना तथा वहां उसे मत्स्य द्वारा निगल जाना और फिर उसी के घर जाकर मत्स्य के पेट से जीवित निकलना, मायावती का मोहित होना और बालक प्रद्युम्न का पालन करना और अन्त में युवा होने पर शम्बरासुर को मार कर मायावती से विवाह करना।

कथाओं के साम्य और असाम्य होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय वाङ्मय में प्रद्युम्न का चरित लोकप्रिय एवं आकर्षण की वस्तु रहा है।

बौद्ध साहित्य में प्रद्युम्न का उल्लेख है या नहीं और यदि है तो किस रूप में है साधनाभाव के कारण इसका पता हम नहीं लगा सके।

कवि का परिचय

रचना के आरम्भ में कवि ने सरस्वती को नमस्कार करते हुए अपना नामोल्लेख 'सो सधार पणमइ सरसुति' इस प्रकार किया है। इसलिये कवि का नाम 'संधार' होना चाहिए, किन्तु अनेक स्थलों पर 'सधारु' नाम भी दिया हुआ है। अन्य प्रतियों में भी अधिकांश स्थलों पर 'सधारु' नाम आया है इसलिये कवि का नाम 'सधारु' ही ठीक प्रतीत होता है। +कवि ने अपने जन्म से अग्रवाल जाति को विभूषित किया था। इनकी माता का नाम सुधन था जो गुण शाली थी। पिता का नाम साह महराज था, अन्य प्रतियों में साहु महराज एवं समहराइ भी मिलता है। वे एरच्छ नगर में रहते थे। एरच्छ नगर के नाम एरछ, एरिछि, एलच, एयरच्छ एवं एरस के पाठान्तर भेद से भी मिलते हैं। किन्तु इन सब में मूल प्रति वाला एरच्छ ही अधिक ठीक जान पड़ता है। इस नगर का उत्तर प्रदेश में होना अधिक सम्भव है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी जैन सन्देश आगरा के एक लेख में इसकी पुष्टि की है। नाहटाजी ने इस नगर को मध्य प्रदेश में होना माना है जो ठीक मालूम नहीं होता। उस समय उस नगर में बहुत से श्रावक लोग रहते थे जो दशलक्षण धर्म का पालन करते थे।

अपना परिचय देने के पश्चात कवि ने लिखा है कि जो भी प्रद्युम्न चरित को पढ़ेगा वही मरने के पश्चात् स्वर्ग में देवता के रूप में उत्पन्न होगा तथा अन्त में मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य इसका श्रवण करेगा उसके अशुभ कर्म स्वयमेव दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसको दूसरों को सुनावेगा उस पर प्रद्युम्न प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को लिखाने वाले, लिखने वाले, पढ़ाने वाले सभी लोगों को अपार पुण्य की प्राप्ति होना लिखा है, क्योंकि प्रद्युम्न का चरित पुण्य का भण्डार है। अन्त में कवि ने अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि वह स्वयं कम बुद्धि वाला है तथा अक्षर मात्रा का भेद नहीं जानता, इसलिये छोटी बड़ी मात्रा

+ महसामी कउ कीयउ बखाणु, सुभ पजुन पायउ निरवाणु।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपाति ॥
सुधणु जणणी गुणवइ उर धरिउ, सा महराज घरइ अवतरिउ।
एरछ नगर वसंते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराणु ॥
सावयलोय वसहि पुर माहि, दह लक्खण ते धम्मं कराहि।
दस रिस मानइ दुतिया भेउ, भवहि चितह जिणेसरु देउ ॥

के लिये अथवा अक्षरों के कम अधिक प्रयोग के लिये पहिले ही पण्डित वर्ग से वह क्षमा याचना करता है।

रचना काल :—

अब तक प्रद्युम्न चरित्र की जितनी प्रतियां उपलब्ध हुई हैं उन सभी प्रतियों में एकसा रचना काल नहीं मिलता है। इन प्रतियों में रचना काल के तीन सम्वत् १३११, १४११ एवं १५११ मिलते हैं। यहां हमें यह देखना है कि इन तीनों सम्वतों में कौनसा सही सम्वत् है। विभिन्न प्रतियों में निम्न प्रकार से रचना काल का उल्लेख मिलता है:—

(१) अग्रवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर रीवां एवं आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला की प्रतियों में सम्वत् १३११ लिखा हुआ है।

(२) बधीचन्दजी का जैन मन्दिर जयपुर, खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर देहली और बाराबंकी वाली प्रतियों में रचना सम्वत् १४११ दिया हुआ है।

(३) सिंधिया ओरिएंटल इन्स्टीट्यूट उज्जैन वाली प्रति में सम्वत् १५११ दिया हुआ है।

सम्वत् १३११ वाले रचना काल के सम्बन्ध में जो पाठ है, वह निम्न प्रकार है :—

संवत् तेरहसै हुइ गये ऊपर अधिक इग्यारा भये।
भादौ सुदि पंचमी दिन सार, स्वाति नक्षत्र जनि सनिवार।

उक्त पद्य के अनुसार प्रद्युम्न चरित्र सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुआ था।

सम्वत् १४११ वाला रचना काल जो ४ प्रतियों में उपलब्ध होता है, निम्न प्रकार है :—

सरसकथा रसु उपजइ घणउ, निसुणहु चरितु पजूनह तणउ।
संवत् चौदहसै हुइ गए, ऊपर अधिक इग्यारह भए।
भादव दिन पंचइ सो सारु, स्वाति नक्षत्र सनीश्चर वारु ॥१२॥

जयपुर वाली प्रति

सरसकथा रस उपजइ घणउ, निसुणउ चरित पज्जउवन तणउ ।
संवत् चउदसइ इग्यार, ऊपरि अधिक भई ग्यार ।
भादव सुदि नवमी जे सार, स्वाति नक्षत्र सनीचर वार ।
देवलोक आरणोत्तर सार, हरिवंश अव्याउ वंश सधार ॥१२॥

खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर कामां

उक्त पद्यों में जयपुर वाली प्रति में सम्वत् १४११ भाद्रपद मास पंचमी शनिवार स्वाति नक्षत्र एवं कामां वाली प्रति में सम्वत् १४११ भादवा सुदी ६ शनिवार स्वाति नक्षत्र रचना काल दिया हुआ है। दोनों प्रतियों में तिथियों के अतिरिक्त शेष बातें समान हैं।

इसी प्रकार उज्जैन वाली प्रति में निम्न पाठ है :—

संवत् पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अरु तह भया ।
भादव वदि पंचमि तिथि सारु, स्वाति नक्षत्र सनीस्वरवारु ॥

इसके अनुसार 'प्रद्युम्न चरित' की रचना सम्वत् १५११ भादवा बुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुई थी।

इस प्रकार सभी प्रतियों में भाद्रपद मास शनिवार एवं स्वाति नक्षत्र इन तीनों का एक-सा उल्लेख मिलता है। इसलिये यह तो निश्चित है कि प्रद्युम्न चरित की रचना भाद्रपद मास एवं शनिवार के दिन हुई थी। किन्तु रचना सम्वत् कौनसा है, यह हमें देखना है। तीनों रचना सम्वतों में सम्वत् १५११ वाला रचना काल तो सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रथम तो यह सम्वत् अभी तक एक ही प्रति में उपलब्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त 'पंचसइ' पाठ स्वयं भी गलत है इससे पन्द्रह सौ का अर्थ नहीं निकलता इसलिये सम्वत् १५११ वाले पाठ को सही मानना युक्ति संगत नहीं है। सम्वत् १३११ वाला पाठ जो अभी तक २ प्रतियों में मिला है, उसके सम्बन्ध में भी हमारा यही मत है कि गुण सागर नामक किसी विद्वान् ने सम्वत् चौदहसै के स्थान पर तेरहसइ पाठ परिवर्तित कर दिया तथा 'सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराण' के स्थान पर इस रचना का कर्ता स्वयं बनने के लोभ से प्रेरित होकर 'गुण सागर यह कियो बखान' पाठ बदल दिया। इसके अतिरिक्त इस कवियश: आर्थी ने आरम्भ के जिन पद्यों में सधारु का नाम था उनके स्थान पर नये ही मंगलाचरण के पद्य जोड़ दिये।

अब रहा सम्वत् १४११ का रचना काल। इस रचना सम्वत् के सम्बन्ध में सभी विद्वान् एक मत हैं। श्री नाहटाजी ने प्रद्युम्न चरित के रचनाकाल का विवेचन करते हुए लिखा है [1] कि संवत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनका कहना है कि बदी पंचमी, सुदी पंचमी और नवमी इन तीन दिनों में स्वाति नक्षत्र नहीं पड़ता। डा० माताप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर जो तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भादवा सुदी ५ शनिवार है। सर्चे रिपोर्ट के निरीक्षक रायबहादुर स्व० डा० हीरालाल ने अपनी रिपोर्ट [2] में लिखा है कि संवत् १४११ भादवा बुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है। लेकिन उनका भी बुदि का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठीक नहीं बैठता है। इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत १४११ भादवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है। प्रद्युम्न चरित में जो 'भादव दिन पंचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर संभवतः मूल पाठ 'भादव सुदी पंचमी सो सारु' यही होना चाहिये।

प्रद्युम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल ने दस वीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल माना है। शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्तकें इतिहास में विवेचनीय मानी हैं। इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रासो (२) हम्मीर रासो (३) कीर्त्तिलता (४) कीर्तिपताका (५) खुमानरासो (६) बीसलदेवरासो (७) पृथ्वीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयंक जय चन्द्रिका (१०) परमाल रासो (११) खुशरो की पहेलियां और (१२) विद्यापति पदावलि। उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों की दृष्टि से आदि काल का लक्षण निरूपण और नामकरण हो सकता है। इनमें से अन्तिम दो तथा 'बीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं। अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप का

---

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ६ अंक १–४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5th of the dark of Bhadva month which on calculations regularly Corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

Search Report 1923–25 P-17.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन बारह रचनाओं के आधार पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है[1] कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भु के पउमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल ११ वीं शताब्दी से आरम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (८०० से १४०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्व को यदि आज से ५० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी धर्मों के विद्वानों ने रचनायें की थी, किन्तु प्राचीन हिन्दी भाषा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहां ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है:—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विषय की उच्चकोटि की रचनायें हैं।

---

१ हिन्दी साहित्य का आदिकाल (डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी)

वर्तमान उपलब्ध कवियों में स्वयम्भू अपभ्रंश के पहिले महा कवि हैं जिनकी रचनायें उपलब्ध होती हैं। 'पउमचरिय', 'रिट्ठणेमिचरिउ' तथा 'स्वयम्भू छन्द' इनकी प्राप्त रचनाओं में तथा 'पंचमीचरिउ' अनुपलब्ध रचनाओं में से हैं। 'स्वयम्भू' अपने समय के ही नहीं किन्तु अपने बाद होने वाले कवियों में भी उत्कृष्ट माने जाते थे। इनके काव्यों में घटना बाहुल्य के वर्णन के साथ-साथ काव्यत्व का सर्वत्र माधुर्य्य दृष्टिगोचर होता है। स्वयम्भू युग प्रधान कवि थे, इनने अपने काव्यों की रचना सर्वथा निडर होकर की थी। इसके बाद के सारे अपभ्रंश एवं बहुत कुछ अंशों में हिन्दी साहित्य पर भी इनकी वर्णन शैली का पूर्णतः प्रभाव पड़ा है।

१० वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में देवसेन, रामसिंह, पुष्पदन्त, धवल, धनपाल एवं पद्मकीर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। मुनि रामसिंह देवसेन के बाद के विद्वान् हैं। डा० हीरालालजी ने 'पाहुड दोहा' की प्रस्तावना में इन्हें सन् ६३३ और ११०० के बीच का अर्थात् सम्वत् १००० ई० के लगभग का विद्वान् माना है। रामसिंह स्वयं मुनि थे, इसलिये इन्होंने साधुओं को सम्बोधित करते हुए ग्रन्थ रचना की है। इनका 'पाहुड दोहा' रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। १५ वीं शताब्दी में कबीर ने जो अपने पदों द्वारा उपदेश दिया था, वही उपदेश मुनि रामसिंह ने अपने 'पाहुड दोहा' द्वारा प्रसारित किया था।

देवसेन १० वीं शताब्दी के दोहा साहित्य के आदि विद्वान् कहे जा सकते हैं। 'सावयधम्म दोहा' इन्हीं की रचना है, जिसे इन्होंने सम्वत् ६६० के लगभग मालवा प्रान्त की धारा नगरी में पूरा किया था। महाकवि स्वयम्भू की टक्कर के अथवा किन्हीं बातों में तो उनसे भी उत्कृष्ट पुष्पदन्त हुए जिन्होंने 'महापुराण', जसहरचरिउ' एवं 'णायकुमारचरिउ' की रचना की। इनमें प्रथम प्रबन्ध-काव्य एवं शेष दोनों खण्ड काव्य कहे जा सकते हैं। महापुराण अपभ्रंश का श्रेष्ठ काव्य है। पुष्पदन्त अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा उनके काव्यों में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। धनपाल कवि ने 'भविसयत्तकहा' की रचना की थी। कवि का जन्म धक्कड़ वैश्य वंश में हुआ था। कवि को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान था, इसलिये एक स्थानपर इन्होंने अपने आपको सरस्वती पुत्र भी कहा है। १२२ संधियों और १८ हजार पद्यों में पूर्ण होने वाला 'हरिवंशपुराण' धवल कवि द्वारा इसी शताब्दी में रचा गया था। धवल के इस काव्य की भाषा प्रांजल और प्रवाह-पूर्ण है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा पाठक के मन को मोह लेती

है। इसमें अनेक रसों का संमिश्रण बड़े आकर्षक ढङ्ग से हुआ है। पद्मकीर्ति ने अपने 'पासणाहचरिउ' को सम्वत् ६६६ में समाप्त किया। भाषा साहित्य की दृष्टि से यह काव्य भी उल्लेखनीय है।

११ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में वीर, नयनन्दि, कनकामर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि वीर का यद्यपि एक ही काव्य 'जम्बूसामीचरिउ' उपलब्ध होता है। किन्तु उनकी यह एक ही रचना उनके पाण्डित्य एवं प्रतिभा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। 'जम्बूसामीचरिउ' वीर एवं शृङ्गार रस का अनोखा काव्य है। नयनन्दि ने अपने काव्य 'सुदंसण चरिउ' को सम्वत् ११०० में समाप्त किया था। ये अपभ्रंश के प्रकांड विद्वान् थे। इसीलिये इन्होंने 'सुदंसणचरिउ' में महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार पुरुष, स्त्री एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है। बाण एवं सुबन्धु ने जिस क्लिष्ट एव अलंकृत पदावली का संस्कृत गद्य में प्रयोग किया था नयनन्दि ने भी उसी तरह का प्रयोग अपने इस पद्य काव्य में किया है। विविध छन्दों का प्रयोग करने में भी यह कवि प्रवीण थे। इन्होंने अपने काव्य में ८५ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। सकलविधिनिधान काव्य में अपने से पूर्व होने वाले ४० से अधिक कवियों के नाम इन्होंने गिनाये हैं, जिनमें संस्कृत अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के कवि हैं। कनकामर द्वारा निबद्ध 'करकण्डु चरिउ' भी काव्यत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इसका भाषा उदात्त भावों से परिपूर्ण एवं प्रभाव गुणयुक्त है। इसी शताब्दी में होने वाले धाहिल का 'पउमसिरिचरिउ' एवं अब्दुल रहमान का 'सन्देशरासक' भी उल्लेखनीय काव्य है।

१२ वीं शताब्दी में होने वाले मुख्य कवियों में श्रीधर, यशःकीर्ति, हेमचन्द, हरिभद्र, सोमप्रभ, विनयचन्द आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। हेमचन्द्राचार्य अपने समय के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के साथ साथ अपभ्रंश भाषा के छन्दों को भी उन्होंने अपने 'छन्दोनुशासन' में उद्धृत किया गया है।

१३ वीं और १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश साहित्य के साथ साथ हिन्दी साहित्य का भी निर्माण होने लगा। इसी शताब्दी में पं० लाखु ने 'जिणयत्त चरिउ' जयमित्रहल ने 'वड्ढमाणकव्व' कवि सिंह ने 'पज्जुण्ण चरिउ' आदि काव्य लिखे। १४ वीं शताब्दी में धर्मसूरि का 'जम्बूस्वामीरास', रल्ह का जिणदत्त चउपई' (संवत १३५४) घेल्ह का 'चउवीसी गीत' (संवत् १३७१) भी उल्लेखनीय रचनायें हैं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण हिन्दी की रचना

जिणदत्त चउपई है जिसे रल्ह कवि ने संवत् १३५४ में समाप्त किया था। ५५० से भी अधिक चउपई एवं अन्य छन्दों में निबद्ध यह रचना भाषा साहित्य की दृष्टि से ही नहीं किन्तु काव्यत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश से हिन्दी में शनैः शनैः शब्दों का किस तरह परिवर्तन हुआ, यह इस काव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। यद्यपि कवि ने इस काव्य में अपभ्रंश शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है किन्तु उनका जिस सुन्दरता से प्रयोग हुआ है उससे वे पूर्णतः हिन्दी भाषा के शब्द मालूम पड़ते हैं। वास्तव में १३ वीं और १४ वीं शताब्दी हिन्दी भाषा की साहित्यिक रचनायें प्रयोग करने के लिये महत्वपूर्ण समय था।

पं० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में संवत १०४५ से १४६० तक की रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है—"इस युग के साहित्य सृजन में जैन मतावलंबियों का हाथ विशेष रहा है। कोई पचास के लगभग जैन साहित्यकारों के ग्रन्थों का पता लगा है।[१] परन्तु जैन विद्वानों का यह मधुर साहित्य जितना भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना साहित्य की दृष्टि से नहीं है यद्यपि साहित्यिक सौन्दर्य भी इसमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है।

मेनारियाजी की निम्न सूची से स्पष्ट है कि हिन्दी की नींव ११ वीं शताब्दी में रख दी गई थी और उसको जैन विद्वानों ने मजबूत बनाया था।

---

१. कुछ महत्वपूर्ण नाम ये हैं—धनपाल (सं० १०८१), जिनवल्लभसूरि (सं० ११६७) पल्ह (११७०), वादिदेवसूरि (सं० ११८४), वज्रसेनसूरि (सं० १२२५), शालिभद्रसूरि (सं० १२४१), नेमिचन्द्र भण्डारी (सं० १२५६), आसगु (सं० १२५७), धर्म (सं० १२६६), शाह रयण और भत्तउ (सं० १२७८), विजयसेनसूरि (सं० १२८८), राम (सं० १२८६), सुमतिगणि (१२६०), जिनेश्वरसूरि (१२७८–१३३१), अभयतिलक (सं० १३०७), लक्ष्मीतिलक (सं० १३११–१७), सोममूर्ति (सं० १२६०–१३३१), जिनपद्मसूरि (सं० १३०६–२२), विनयचन्द्रसूरि (१३२५–५३), जगडु (सं० १३३१), संग्रामसिंह (सं० १३३६), पद्म (सं० १३५८), जयशेखरसूरि (सं० १३६०–६२), प्रज्ञातिलकसूरि (सं० १३६३), वस्तिग (सं० १३६८), गुणाकर–सूरि (सं० १३७१), अंबदेवसूरि (१३७१), फेरु (१३७६), धर्मकलश (सं० १३७७), सारमूर्ति (१३६०), जिनप्रभसूरि (१३६०–६०), सोलण (१४ वीं शताब्दी), राज–शेखर सूरि (सं० १४०५), जयानंदसूरि (सं० १४१०), तरुणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (१४१२), जिनोदयसूरि (१४१५), ज्ञानकलश (१४१५), पृथ्वीचन्द्र (सं० १४२६), जिनरत्न सूरि (सं० १४३०), मेरुनंदन (सं० १४३२), देवसुन्दरसूरि (सं० १४४०), साधुहंस (सं० १४४५)।

जैन विद्वानों की लोक भाषायें लिखने में रुचि होने के कारण उन्होंने हिन्दी को प्रारम्भ से ही अपनाया और उसमें अधिक से अधिक साहित्य लिखने का प्रयास किया।

प्रद्युम्न चरित का समकालीन हिन्दी साहित्य

अब हमें प्रद्युम्न चरित के समकालीन साहित्य पर (सं १४०० से लेकर १४२५ तक लिखे गये) विचार करना है और देखना है कि इस समय लिखे गये हिन्दी साहित्य और प्रद्युम्न चरित में कितनी समानता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद की रचनाओं का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है। उसमें महाराष्ट्र के साधु नामदेव की स्फुट रचनाओं का उल्लेख अवश्य किया गया है। इसके अतिरिक्त 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद के जिन कवियों का नामोल्लेख हुआ है उसमें केवल एक कवि शार्ङ्गधर आते हैं। किन्तु उनकी जिन दो रचनाओं के नाम हम्मीर रासो तथा हम्मीर काव्य—गिनाये गये हैं वे भी मूल रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं। हां, उनकी इन रचनाओं के कुछ पद्य इधर उधर जाकर मिलते हैं। शार्ङ्गधर के जो पद्य मिले हैं उन पर अपभ्रंश का पूर्ण प्रभाव है। एक पद्य देखिये—

पिंधउ दिढ सरगाह वाह उप्पर पक्खर दइ।
बंधु समदि रण धसउ हम्मीर बअण लइ॥
उड्डल णाह पह भमउ खग्ग रिउ सीसहि डारउ।
पक्खर पक्खर ठेल्लि पेल्लि पब्बअ अप्फालउ॥
हम्मीर कज्जु जज्जल भणइ कोहाणल मुहमह जलउ।
सुलताण सीस करवाल दइ तज्जि कलेवर दिअ चलउ।

श्री मनारियाजी ने जिन जैन कवियों के नाम गिनाये हैं उनमें राजशेखरसूरि (१४०५), जयानंदसूरि (१४१०), तरुणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (सं० १४१२), जिनोदय सूरि (१४१५), सधारु कवि के समकालीन आते हैं। किन्तु एक तो इन कवियों की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई बड़ी रचना नहीं मिलती दूसरे जो कुछ इन्होंने लिखा है वह प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) से पूर्णतः प्रभावित है। विनयप्रभ कृत गौतमरासा का एक पद्य देखिये—

नयण वयण कर चरणि जिण वि पंकज जलि पाडिय ।
तेजिहि तारा चंद सूर आकासि भयाडिय ॥

इसलिये यह कहा जा सकता है कि सधारु कवि अपने समय के अकेले हिन्दी कवि हैं; जिन्होंने इस प्रकार का प्रबन्ध काव्य लिखने का प्रयास किया था।

हिन्दी साहित्य में प्रद्युम्न चरित का स्थान :

'प्रद्युम्न चरित' हिन्दी भाषा में अपने ढंग का अकेला काव्य है। वह पुरानी हिन्दी एवं नवीन हिन्दी काव्यों की मध्य की कड़ी को जोड़ने वाला एक श्रेष्ठ काव्य कहा जा सकता है। चउपई, एवं वस्तुबंध-छन्द में लिखा जाने वाला यह यद्यपि पहिला काव्य नहीं है किन्तु साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो इसे प्रथम स्थान मिलना चाहिये। आगे चलकर जिन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं में चौपई छन्द को मुख्य स्थान दिया है उन पर अधिकांश रूप से जैन रचनाओं का प्रभाव है। चउपई छन्द क्या कवि और क्या पाठक दोनों के लिये ही प्रिय सिद्ध हुआ है।

प्रद्युम्न चरित को काव्य की दृष्टि से किस श्रेणी में रखा जा सकता है यह विचारने की वस्तु है। काव्य के साधारणतः दो भेद किये जाते हैं प्रथम 'प्रबन्ध-काव्य' दूसरा 'मुक्तक काव्य'। प्रबन्ध-काव्य के फिर तीन भेद हैं : महाकाव्य, खंड काव्य एवं चंपू काव्य। इसमें से प्रद्युम्न चरित मुक्तक काव्य तो हो नहीं सकता इसलिये यह अवश्य ही प्रबन्ध काव्य है। डा० रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली पृष्ठ ६६ प्रबन्ध काव्य का जो लक्षण दिया है वह निम्न प्रकार है—

"प्रबन्ध काव्य में मानव जीवन का पूर्ण दृश्य होता है। उसमें घटनाओं की संबद्ध शृंखला और स्वाभाविक क्रम के ठीक ठीक निर्वाह के साथ साथ हृदय को स्पर्श करने वाले, उसे नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिये। इति वृत्त मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता। इसके लिये घटना चक्र के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं और व्यापारों का प्रतिबिम्बवत चित्रण होना चाहिये जो श्रोता के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में समर्थ हो। अतः काव्य में घटना का कहीं तो संकोच करना पड़ता है और कहीं विस्तार।"

प्रद्युम्न चरित में डा० रामचन्द्र शुक्ल का प्रबन्ध-काव्य वाला लक्षण ठीक बैठता है। इसमें घटनाओं का शृंखलाबद्ध क्रम है, नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश है। इन सबके अतिरिक्त यह काव्य के श्रोताओं के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में भी समर्थ है। इसलिये प्रद्युम्नचरित को निश्चित रूप से प्रबन्ध-काव्य कहा जा सकता है।

प्रद्युम्नचरित ६ सर्गों में विभक्त है उसमें विरह, मिलन, युद्ध वर्णन, नगर वर्णन, प्रकृति-वर्णन एवं इन सबके अतिरिक्त मायावी विद्याओं का वर्णन मिलता है। उसका नायक १६६ पुण्य पुरुषों में से एक है। वह अतिशय पुण्यवान् एवं कलाओं का धारी है। वह धीरोदात्त प्रकृति का नायक है।

काव्य के प्रवाह को स्थिर एवं प्रभावोत्पादक रखने के लिये अवान्तर कथाओं का होना भी प्रबन्ध काव्य के लिये आवश्यक है। अवान्तर कथाओं से पात्रों का चरित निखर जाता है और वे पाठकों को अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर लेती हैं। प्रस्तुत काव्य में रुक्मिणी-हरण तथा नारद के विदेह क्षेत्र में जाने की घटना, सिंहरथ युद्ध वर्णन, उदधिकुमारी का अपहरण, भानुकुमार के विवाह का वर्णन, सुभानु तथा शंबुकुमार का द्यूत-वर्णन आदि कथायें आयी हैं। इनसे 'प्रद्युम्न चरित' के काव्यत्व की उत्कृष्टता में वृद्धि हुई है।

पूरे काव्य में घात-प्रतिघात खूब चला है। पाठकों का ध्यान किञ्चित् भी दूसरी ओर न बँट सके; इसलिये कवि ने अपने काव्य में ऐसे प्रसंगों को पर्याप्त स्थान दिया है। स्वयं नायक के जीवन में ही आश्चर्यकारी घटनाओं का बाहुल्य है। धूमकेतु असुर द्वारा उसको शिला के नीचे दबाया जाना, फिर कालसंवर द्वारा उसका बचाया जाना, उसे गुफाओं के दिखाने के बहाने अनेक विपत्तियों में फंसाना, किन्तु उसका अनेक विद्याओं के लाभ के साथ वापिस सुरक्षित निकल आना, सिंहरथ के साथ युद्ध में विजय-श्री का प्राप्त होना, स्वयं कालसंवर एवं फिर द्वारका में श्रीकृष्ण के साथ भयंकर युद्ध होना एवं उसमें भी विजय लक्ष्मी का मिलना आदि कितने ही प्रसंग उपस्थित होते हैं। जब पाठकों को नायक को विपत्ति में फंसा हुआ देखकर पूर्ण सहानुभूति होती है और जब वह वहां से विजय के साथ निरापद लौटता है तो पाठक प्रसन्नता से भर जाते हैं।

'प्रद्युम्न चरित' एक सुखान्त काव्य है। इसका नायक लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने एवं भोगने के पश्चात् जिन दीक्षा धारण कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है। जैन लेखकों के प्रायः सभी काव्य सुखान्त हैं; क्योंकि अपने काव्यों द्वारा सामान्य जन में घुसी हुई बुराइयों को दूर करने का उनका लक्ष्य रहता है।

इस काव्य में खलनायक अथवा प्रतिनायक का स्थान किसको दिया जावे यह भी विचारणीय प्रश्न है। पूरे काव्य में कितने ही पात्रों का चरित्र चित्रित किया गया है; जिनमें श्रीकृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, सुभानुकुमार, नारद, कालसंवर सिंहरथ, रूपचंद आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

खलनायक नायक का जन्म जात प्रतिद्वंद्वी होता है। उसका चरित्र उज्ज्वल न होकर दूषित एवं नायक प्रत्यनीक होता है। वह अपने कार्यों के द्वारा सदा ही नायक को परेशान करता रहता है। पाठकों को उससे कदापि सहानुभूति नहीं होती किन्तु 'प्रद्युम्न चरित' में उक्त बातें किसी भी पात्र के साथ घटित नहीं होतीं। पूरे काव्य में प्रद्युम्न का सत्यभामा, भानुकुमार, सिंहरथ, रूपचंद, कालसंवर और उसके पुत्रों के अतिरिक्त कभी किसी से विरोध नहीं होता। यही नहीं सिंहरथ एवं रूपचंद से भी कोई उसका विरोध नहीं था। उनके साथ इसका युद्ध तो केवल घटना विशेष के कारण हुआ है। अब केवल दो पात्र बचते हैं जिनमें प्रद्युम्न का जन्म जात तो नहीं; किन्तु अपनी माता रुक्मिणी के कारण विरोध हो गया था। इनमें सत्यभामा को तो स्त्री पात्र होने के कारण खलनायक का स्थान किसी भी अवस्था में नहीं दिया जा सकता। अब केवल भानुकुमार बचते हैं; किन्तु भानुकुमार ने प्रद्युम्न के साथ कभी कोई विरोध किया हो अथवा लड़ाई लड़ी हो ऐसा प्रसंग पूरे काव्य में कहीं नहीं आया; हां इतना अवश्य हुआ है कि प्रद्युम्न अपने असली रूप में प्रकट होने के पहिले तक द्वारका में विभिन्न रूपों में उपस्थित होता रहा और सत्यभामा और भानुकुमार को अपनी विद्याओं के सहारे छकाता रहा। भानुकुमार सत्यभामा का पुत्र था और सत्यभामा प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी की सौत थी। इसी कारण प्रद्युम्न का भानुकुमार के साथ सौमनस्य नहीं था। भानुकुमार की मांग-उदधिकुमारी से प्रद्युम्न ने विवाह कर लिया था इसका कारण भी यही था और इसीलिये उसने दो अवसरों पर उन्हें नीचा दिखाया था। किन्तु इससे भानुकुमार को खलनायक सिद्ध नहीं किया जा सकता। नायक से विरोध एवं युद्ध होने के कारण ही किसी को खलनायक की कोटि में कैसे लिया जा सकता है। प्रद्युम्न का युद्ध तो अपना कौशल दिखलाने के लिये श्रीकृष्ण

के साथ भी हुआ है। फलितार्थ यह है कि यह काव्य बिना ही खलनायक के है और यह इसकी एक खास विशेषता है।

रस अलंकार एवं छन्द—

'प्रद्युम्न चरित' वीर रसात्मक काव्य है। काव्य का प्रथम सर्ग युद्ध वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्तिम सर्ग भी युद्ध वर्णन से ही समाप्त होता है। वैसे यद्यपि इसमें अन्य रसों का भी प्रयोग हुआ है; किन्तु वीर रस प्रधान रूप से इस काव्य का रस मानना चाहिये। श्रीकृष्ण–जरासन्ध युद्ध, प्रद्युम्न–सिंहरथ युद्ध, प्रद्युम्न–कालसंवर युद्ध, प्रद्युम्न श्रीकृष्ण–युद्ध एवं प्रद्युम्न रूपचन्द–युद्ध इस प्रकार काव्य का काफी हिस्सा युद्ध–वर्णन से भरा पड़ा है। पाठक को प्रायः काव्य के प्रत्येक सर्ग में युद्ध के दृश्य नजर आते हैं। "रहिवर साजहु, गयवर गुडहु, सजहु सुहड, आज रण भिडउ" के वाक्य काव्य में सर्वत्र प्रयोग किये गये हैं। सिंहरथ जब प्रद्युम्न को बालक समझ कर युद्ध करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है तो उस समय उसे प्रद्युम्न जिस प्रकार जवाब देता है वह पूर्णतः वीरोचित जवाब है :—

बालउ सूरु आगासह होइ,तिन को जूझ सकइ धर कोइ।
बाल वभंगु डसइ सउ आइ, ताके विसमणि मंतु न आहि ॥१६८॥
सीहणि सीहु जणै जो बालु, हस्ती जूह तणो वे कालु।
जूह छाड़ि गए वणु ठाउ, ताकहु कोण कहै भरिवाउ ॥१६६॥

इसी प्रकार जब श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध के समय वार्तालाप होता है तो वह वास्तव में वीर रसात्मक है। उसके पढ़ने से उसके नायक प्रद्युम्न की वीरता एवं शौर्य की आश्चर्य-कारी चतुरता का पता चलता है। यद्यपि उस जमाने में आज की तरह जन विनाश कारी आणविक व अन्य शस्त्र नहीं थे, किन्तु तलवार, धनुष, गदा, भाला, गोफन, बर्छी, बाण एवं चक्र ही प्रमुख हथियार थे। लड़ाई में योद्धा इतने कुशल थे कि एक समय में धनुष में ५० बाण तक चढ़ाकर चला सकते थे। अग्निबाण जलबाण, वायु बाण, नागपाश आदि के प्रयोग करने की प्रथा थी। वायु बाण और जलबाण आदि कैसे होते थे कुछ कहा नहीं जा सकता। माया से अनेकानेक शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके भी युद्ध लड़ा जाता था। कभी २ माया से विरोधी सेना मूर्च्छित भी करदी जाती थी जो अंत में पुनरुज्जीवित हो जाती थी। इन विद्याओं के कारण यह काव्य अद्भुत रस से ओत प्रोत है इसलिए इसका मुख्य रस वीर होने पर भी यह अद्भुत मिश्रित है।

इन दोनों रसों के अतिरिक्त शृंगार, करुण, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। वात्सल्य रस जो जिसे कई लोग नव रसों के अतिरिक्त रस मानते हैं इस काव्य में प्रयुक्त हुआ है।

वात्सल्य-रस का एक नमूना देखिए—

जब रूपिणि दिठा परदवणु।
सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयणु फुणि कंठ लायउ।
अब मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुतु आयउ॥
दस मासइ जइउ धरिउ, सहोए दुख महंत।
बाला तुराह न दिठ मइ, यह पछितावउ नित॥४२६॥

चौपई

माता तणे वयणु निसुणेइ, पंच दिवस कउ बालउ होइ।
खण इकु माह विरधि सो कयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहुउ॥४३०॥
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाई।
खण खण जेंवणु मागइ सोइ, बहुतु मोह उपजावइ सोइ॥४३१॥

इसी प्रकार बीभत्स रस का भी कवि ने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। श्री कृष्ण और प्रद्युम्न में खूब जम कर लड़ाई हुई। युद्ध में अनेकों योद्धा काम आये। चारों ओर नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे।

कवि कहता है:—

हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु।
ठाठा रुहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल॥५०४॥
गीधीणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जणावहि सार।
वेगि चलहु सापडी रसोइ, ग्रसइ आइ जिम तिपत होइ॥५०६॥

प्रद्युम्न के छटी रात्रि में अपहरण हो जाने के कारण, रुक्मिणी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी। उसका परिवेदन और आक्रन्दन वास्तव में हर एक के लिए हृदय द्रावक था। वह पुत्र वियोग के कारण ऐसी संतप्त

रहने लगी कि उसका शरीर कृश हो गया और उसकी सारी प्रसन्नता जाती रही। करुण-रस का यह प्रसंग भी हृदयंगम करने लायक है—

जहि सो रूपिणि करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ।
निन नित छीजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ अरू रोवइ वयण, आसू बहुत न थाके नयण।
पूव्व जन्म मैं काहउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ॥१४१॥
की मइ पुरिष विछोही नारि, की दम्ब घाली वरणह मझारि।
की मैं लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संताप कवण गुण परयउ ॥१४२॥

प्रद्युम्न ने जो नाना स्थलों पर अपनी अलौकिक विद्याओं का प्रयोग किया है उसे पढ कर पाठक आश्चर्य में डूब जाता है। ये विद्यायें सामान्य जन को प्राप्त नहीं हैं इसलिए प्रद्युम्न की अद्भुतता में कोई संदेह नहीं रहता यही चीज रस बन कर पाठक पर छा जाती है।

सत्यभामा ने कपट-भेषी ब्राह्मण प्रद्युम्न को जितना सामान परोसा वह सभी खा गया। ८४ हांडियों में तैयार किये हुए व्यंजनों को तो वह बात की बात में चट कर गया। यही नहीं इसके अतिरिक्त जो कुछ सामान सत्यभामा के पास था वह सभी प्रद्युम्न के उदरस्थ हो गया। फिर भी वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा इस अद्भुतता का भी पाठक रसास्वादन करें:—

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि।
माडे कडे परोसे तासु, सबु समेलि गउ एकइ गासु ॥३८७॥
भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी बैठि आइ।
जेतउ घालइ सबु संघरइ, बडे भाग पातलि उबरइ ॥३८८॥

काव्य में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया गया है। वैसे मुख्य मुख्य अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्त: अपह्नुति अर्थान्तरन्यास एवं स्वभावोक्ति आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। काव्य में अनूठी उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य-सौन्दर्य अधिक विकसित हुआ है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. सैन उठी बहु सादु समुदु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुदु॥५५७॥

ध्रुवक

कुंवर[२] पलाणिउ सव[३] जगु जणिउ[१], गयणिहि उछली[४] खेह ।
[५]रहिवर साजहि वाजे वाजहि, जाणौं[५] भादों के मेह ॥
जे[६] अरिदल[७] भंजइ परीवल गंजहि, सुहड चले[८] अप्रमाणु[९] ।
ते भणइ[१०] सभूते[११] जाइ[१२] पहुते, सबल वीर समराण ॥१७५॥

चौपई

आवतु[१] देखि कुमर[२] परदमणु, भणै सिंधु[३] यौ[४] वालो[५] कोणु ।
वालो[६] रण[७] कि पठावइ कोइ, इहिसउ[८] भीडत[९] लाज मो[१०] होइ ॥१७६॥
फुणि[१] फुणि वाहरी जंपइ राउ, किम करि वालेहि घालै घाउ ।
देखि मया[२] चित[३] उपनी ताहि, वाल कुवर बाहुडि घर जाहि ॥१७७॥

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

निसुणि[१] वयण[२] कोप्यो परदवणु, हीण बोलु तै बोल्यो कवणु ।
वालउ कहत[३] न लाभइ[४] ठाउ, अब[५] भानउ तेरउ भरिवाउ॥१७८॥

---

(१७५) जणियउ (क) जाणिउ (ख) २. तब राजकुमर पलाणइ (ग) ३. सहू (क) सहु (ग) ४. उडी (क) ५. जिम (क) जाण (ख) जाणउ (ग) ६. अब (क) ७. अरियण (ग) ८. सबाथहू (क) ९. रण सामि (क) ले प्राण (ग) १०. भये (ख) ११. रथ-जूते (ग) १२. आइ (ख)

(१७६) १. देखिउ (क) देख्या (ग) २. तिहि (ग) इहु (ख ग) ४. बालहु (ख) वालकु (ग) कवणु (ख ग) क—प्रति—कहे सिघरथ इसी कवण ६. बालउ (क ख) बाला (ग) ७. रिणिमहि (क) रणिहि (ग) ८. एह सो (क) इहु सिहु (ख) इसु स्यों (ग) ९. भिरत (क) तिडत (ख) १०. न (क) मुहि (ख) मै (ग)

(१७७) १. बाला देखि जंपियो राउ (ग) २. दया (ख) ३. मनि (ग) क प्रति—तो देखत मोहि मनु विगसाइ, उठि कुमर बाहुडि घरि जाहि (क)

(१७८) १. सुणे (ग) २. वचन (ग) ३. कहि (ग) ४. किम (ग) लाज नहि ठाउ (क) ५. इब (ग)

तब रावत[1] काढइ करवाल, वरिसहि बाण मेघ असराल[2] ।
भिडइ सुहड[3] करि असिवर लेइ, रह[4] चूरइ मइगल पहरेइ ॥१७९॥
मैंगल[1] सिहु मंगल[2] आ भिडइ, हैवर[3] स्यौं[4] हैवर आ[5] भिडइ ।
पंचावधु[6] जूझू तहि[7] भयउ, गीध[8] मसाण तहा उठीयउ[9] ॥१८०॥
सैयन[1] जूझि परीधर[2] जाम, दोउ बीर भीरे रण ताम ।
दोइ वीर खरे[3] सपराण, दोइ करह सिंघ जिहू ठाण ॥१८१॥
मलु[1] जूझते दोउ भीडइ, दोउ वीर[2] अखाडो करहि ।
हारिउ सिहु गयउ भरिवाउ, बांधिउ[3] मयण गले[4] दे पाउ ॥१८२॥
वस्तुबंध—जवहि[1] जित्यउ कुवर परदवणु
सुर देखइ ऊपर[2] भए, बंधि[3] स्यंघरहु कुमर चल्लिउ ।
मयणु सुगुणु सवेहि वुल्लिउ, तव सज्जण आणंदियउ ॥
देखि राउ आणंदियउ, तू सिवि[4] कीयउ पसाउ ।
महु णंदण जे पंच—सय, तिहि उपर तू राव ॥१८३॥

चौपई

मयण चरितु निसुणि सवु कोइ, सोला[1] लाभ परापति होइ ।

---

(१७९) १. करि ले (ग) २. असराल (क ख ग) ३. कुमर (ख) ४. रहवर चूरमइ गल विहुरेइ (क) तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है।

(१८०) १. स्यो (क, ग) २. रण (ग) ३. रहवर (ख ग) पाइक (क) ४. सिउ (ख) ५. संचडिउ (ख) तुलि चढं (ग) ६. हयवर सेती हयवर सार (क) पचावरणु (ख) पंचवरसु (ग) ७. जव (ख) ८. गिद्ध (ख) गर्ध (ग) ९. उठि गयउ (ख) उठि करि गयउ (ग) (क) इणि जूझ करत वडवार (क)

(१८१) १. सैना (क ख) सेन्या (ग) २. रणि (ग) ३. बहुरी (ग)

(१८२) १. मारन (क) माल (ख,ग) २. राउ (ग) ३. बंधि (ग) ४. गलि (ग)

(१८३) १. जाम (क ख) २. अचिरज (क) ग प्रति— जइ कीयो तव सुरि तहि ३. बांधि (ख ग) ४. ठिवि (ख) ५. दहु (ख)

(१८४) १. सोलहु (क ख ग) २. देवा पढ घण सो वन जमउ हमोह चढि सिधरचु धरि गयउ (यह पाठ क प्रति में है) ग प्रति में इस छन्द का पूरा पाठ नहीं है।

विजाहर तब करइ पसाउ, बांध्यो छोडि स्यंवरउ राउ।
देइ[२] पटु पुणि आकउ लयउ, समदिउ स्यंवराउ घर गयउ ॥१८४॥

तव[१] कुम्वरन्हि[२] मन विसमउ[३] भयउ[४], जियत[५] बुआल[६] हमारउ भयउ।
इतडो[७] राइ न राखियउ[८] मान, पालकु आणि कीयउ परधानु ॥१८५॥

तवहि[१] कुवर[२] मिल कीयउ उपाउ, अव भानउ[३] इनकौ[४] भरिवाउ।
सोला गुफा दिखालइ[५] आजु, जैसे होइ निकंटकु[६] राजु[७] ॥१८६॥

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखलाने के लिये ले जाना

एहु मंत्र[१] जिण भेटइ[२] कवणु[३], लियउ वुलाइ[४] कुमर परदमणु।
कियो मंतु सब कुमर[५] मिले, खेलण[६] मिसि वण क्रीडा चले॥१८७॥

भणहि[१] कुवर निसुणहि[२] परदवणु, विजयागिरि उपर जिण भवणु।
जो नर[३] पूज करइ नर सोइ[४], तिहि[५] कहु पुत्र[६] परापति होइ ॥१८८॥

---

(१८५) १. तब (ग) २. कुमर (क) कुमरहं (ख) कुवरिहि (ग) ३. विशमो (क) विसमा (ग) ४. कियउ (क) भया (ग) ५. जीवत (क) जीवतु (ख) वेचुडु (ग) ६. आलु (क) महलु (ख) हालु (ग) ६. गयउ (ख) थयउ (क) कीया (ग) ७. एतउ (क) इतनउ (ख) इतना (ग) ८. राखिय (क) राखिउ (ख) राख्या (ग)

(१८६) १. तब (क) २. कुमर (क) कुमार (ख) कुवरिहि (ग) ३. एहनउ (क) इसुका (ग) ४. इब भागा (ग) इब भनि छिया कउ भडिवाउ (ख) ५. दिखावहि (क ग) ६. निकंटो (क) निकेरहु (ख) ७. जिउ हम (ग)

(१८७) १. मंतु (ख ग) २. मेटउ (क) मेटइ (ख) मोटइ (ग) ३. कवण (क) कउण (ग) ४. चालहु जाहि खेलण (ग) ५. भाई सवि (क) ते खिण महि (ग) ६. खेलउ (क) अन्तिम चरण का (ग) प्रति में निम्न पाठ है—

जाइ जो लेण भुचति कीडा को चले !

(१८८) १. भाजहु (ग) २. देखउ (ग) ३. तिहु (क) तहु (ख) तिन्ह (ग) ४. कोइ (क,ख,ग) ५. तिह को (क) तिसकौ (ग) ६. पुनि (क) पुत्र (ख,ग)

निसुणि वयण हरख्यो[1] परदवणु, चढि गिरवरि[2] जोवइ[3] जिणभवणु ।
चढी[4] जो देखइ[5] वीर पगारू[6], विषमु नागु करि मिल्यउ[7] फुकारू[8] ॥१८९॥
हाकि मयणु विसहरस्यो[1] भीडइ[2], पकडि पूछ तहि[3] तलसीउ[4] करइ ।
देखि वीरू मन[5] त्रिंभिउ[6] सोइ, जाख[7] रूप होइ[8] ठाडो[9] होइ ॥१९०॥
दुइ कर जोडि करइ[1] सतिभाउ, पूछहुँ[2] हूं[3] तु कणखउराउ[4] ।
राजु[5] छाडि[6] गयउ तव चरणि[7], सोलह विद्या आणी[8] धरणि ॥१९१॥
हरि[1] घर ताह[2] होइ अवतरणु[3], तुहि[4] निरखि[5] लेइ परदवणु[6] ।
यह[7] थोथी तसु राजा तणी, लेइ सम्हालि[8] वस्त[9] आपणी ॥१९२॥

---

(१८९) १. हरषिउ (क,ख) कोपा (ग) २. वे चढि गिरि (क) चढिवि सिखर (ख) चडि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चढियउ (क) चढियउ जो (ख) चढिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि भृंगारि (क) वीर पगार (ख) वीर पगारि (ग) ७. मिल करइ (क) करि मिलिउ (ख) उठिउ (ग) ८. चिकार (क) फुंकार (ख,ग)

(१९०) १. सिहु (ख) सउ (ग) २ भिडिउ (क ख ग) ३. तिन (क) तिहि (ग) ४. शिव कियउ (क) सिर करिउ (ख) सिरु करया (ग) ५. मइ (क) मनि (ख,ग) ६. विसनव होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जखि (क) जक्ख (ख) जख (ग) ८. करि (क) हुइ (ख) सो (ग) ९. ऊठउ कोइ (क) बइठा होइ (ग)

(१९१) १. कहइ (क,ग) २. पुछइ हूं (क) पूरमह (ग) ३. हूँ तउ (क) हिव (ग) ४. कणंखउ (ख) कनखल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) कहुचल्या (ग) ७. चरणि (क ख ग) ८. आणी (क) आणी (ग)

(१९२) १. हरित्थर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. अवतारिण (क) अवतरणी (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न राखि (क) ६. लिहि परवमणु (क) विद्या आपणी (ख) ७. इह छोड (क) यवणी (ख) ८. संभारि (क) ९. वसत (क) वसतु (ग)

नोट— १९२ वां छंद (ग) प्रति में नहीं है।

१६ विद्याओं के नाम

हिय–आलोक अरु मोहणी[1], जल–सोखणी रयण–दरसणी ।
गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ–दरिसणी सुधा–कारणी[2] ॥१६३॥

अगिनि–थंभ विद्या–तारणी[1], बहु–रूपणि[2] पाणी–बंधणी[3] ।
गुटिकासिधि पयाइ होइ, सवसिद्धि जाणइ सब कोइ ॥१६४॥

धारा–बंधणी बंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।
रयणह[1] जडित अपूरब जाणि, कणय मुकटु तहि[2] आफउ[3] आणि ॥१६५॥

आफि[1] मुकट फुणि पायह पडिउ, विहसि वीरु तहा[2] आगइ[3] चलउ[4] ।
सो मयरद्धु[5] सपत्तउ[6] तहा, हरिसय पंच[7] सहोयर[8] जहा ॥१६६॥

कुमरन्हि पासि मयणु जब गयउ, मन महु तिन्हहि अचंभो भयो ।
उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, दूजी[1] गुफा दिखालइ आणि[2] ॥१६७॥

---

(१६३) १. गेहणी (क) २. सुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से भिन्न प्रथम चरण के हिय के स्थान पर एक संमउ (क) एक मूक्ता (ख) एक सुरही (ग)

(१६४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१६५) १. जडिउ (क) राइ (ग) २. तिणि (क) तहि (ख) तिह (ग) ३. दीना (क) सो (ग)

(१६६) १. ति (क) २. ताहि (ख) तब (ग) ३. आगलि (क) अगहा (ग) ४. सरिउ (ग) ५. मइरधउ (क) मइराधा (ग) ६. पहुतो (क) आयो (ग) ७. हिव पंचसहू (क) हहिसयपंच (ख,ग) ८. सहोदर (क ग)

(१६७) १. बीजो (क) २. आइ (क) आहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु,[1] कालासुर[2] दैयतु[3] तहि ठाउ[4]।
पूरव[5] चरितु न मेटइ कवणु, तिहि[6] सिहु जाइ भिरइ[7] परदवणु ॥१९८॥
हाकि[1] कुवर धर[2] पाडिउ[3] सोइ, हाथ जोडी फुणि[4] ठाढो होइ।
पवरिशु[5] देखि हियइ अहि डरइ,[6] छत्र[7] चवर ले आगइ धरइ ॥१९९॥
वसुणंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किंकर फुणि लागइ[1] पाइ।
फुणि सो[2] मयणु अगुहडो[3] चलइ, तीजी गुफा आइ[4] पइसरइ[5] ॥२००॥
नाग गुफा दीठी[1] वर बीर,[2] अति[3] निहालिउ[4] साहस धीरू।
विषमु नागु घणघोर करंत,[5] सो तिहि आइ भिडिउ मयमंतु ॥२०१॥
तव[1] मयण मन करइ[2] उपाउ, गहि[3] विसहर भान्यउ[4] भरिवाउ।
देखि अतुल[5] बल संच्यो[6] सोइ,[7] हाथ जोडि फुणि उभो[8] होइ ॥२०२॥

---

(१९८) १. सुहनाणि (क) तिहु नांव (ख) २. काल सरोवग (क) कालु संभु (ग) ३. देखो (क) दीन्हउ (ग) ४. ठाणि (क) ठुाउ (ग) ५. रचित (क) विस (ग) ६. तिह ठा (क) तिहि सहु (ख) तिन्हस्यो (ग) ७. भिडइ (क) भिडिउ (ख) लडया (ग)

(१९९) १. हांकया (ग) २. सो (क) पछा (ग) ३. पाडइ (क) पडया (ग) ४. छिणि (क) सो (ग) ५. पौरिष (क) पउरिषु (ख) पउरषु (ग) ६. अति डरइ (क) गहबरइ (ग) ७. छन्नू (ग) छत्तु (ख)

(२००) १. लागा (ग) २. ते (क) सु (ग) ३. आगउ चलइ (क) सो अगहा सरइ (ग) ४. जाइ (ग) ५. संचरइ (क)

(२०१) १. बेठो (क) अवदीठी (ख) २. वीरि (ख) ३. धूत (क) बहु (ख) रूप (ग) ४. निकलउ (क) निहाली (ग) ५. धुरधरंत (क)

(२०२) १. तबही (क ग) २. करइ (क) बहुकिया (ग) ३. ग्रव (क) तहि (ख) ४. भानो (क) भानउ (ख,ग) ५. अतिबल (ग) ६. संकिउ (क ख) संक्यां ७. लोह (ग) ८. करिविनऊ सोइ (क) सो ऊभा होइ (ग)

मयण कुवर बलिवंतउ जाणि, चंद्र[1] सिघासणु आप्पउ[2] आणि ।
नागसेज[3] बीणा पावडी, बिद्या तीनि आणि[4] सो[5] धरी ॥२०३॥
सेनाकरी[1] गेह–कारणी, नागपासि बिद्या–तारणी ।
इनडी[2] लाभ तिहा तिहि भयो[3], फुणि सो न्हाण[4] सरोवर गयो ॥२०४॥
न्हात देखि धाए[1] रखवाल, कवण पुरिषु[2] तू चाहिउ काल[3] ।
जो सुर राखि सरोवरु[4] रहिउ[5], तिहि[6] जल न्हाइ[7] कवण तू[8] कह्यउ[9] ॥२०५॥
तबइ वीर बोलइ प्रजलेइ[1], आवत वज्र[2] भेलि को लेइ ।
जे[3] विसहर मुह घालै हत्थ, सो मोसहु[4] जुभणह[5] समत्थ[6] ॥२०६॥
तब रखवाले[1] मिलइ[2] साण, विषमु बीरु यह[3] नाही माण[4] ।
उपरा उपरु[5] करइ[6] मुह चाहि, मयरधउ[7] बरु[8] आप्पहि आणि[9] ॥२०७॥

---

(२०३) १. सिघ (ग) २. दोधउ (क) आकिउ (ख) ३. नाग,पाशि (क) ४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सनारी (क) सेना कारणी (ख) २. एबडउ (क) चडतु (ख) इतना (ग) ३. थी (क) ते (ग) ४. न्हाण (क,ख,ग)

(२०५) १. आये (क) आया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चल्यो (ग) ३. कालि (क) अकाल (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हाण (क ख) ८. तुहु (क ख) ९. भयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति में ३–४ चरण नहीं है ।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पजलेइ (ख) इतनै सुणत मयण परजलेइउ (ग) २. आवत सुभु भाडिय करि लेहु (क) अवतु वजु भलिय को लेइ (ख) आवतु वालि भकोलवि चाल्यो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि भूक करण (क) ६. मूलपाठ हाथ और समथ

(२०७) १. रखवाल (क) २. मिलियर अवशाणि (क) मिलवहिसपतु (ख) बोलण ३. हम (क) इहु (ख ग) ४. जाणइ कवणु (ख) सानि (ग) ५. रुपु (ख) ६. कहहि (क,ख) करइ (ग) ७. मयरधा (क) मयरद्ध (ख) महराध्य (ग) ८. भर (क) बलु (ग) ९. आफहि माह (क) आकहि ताहि (ख ग)

अगिनिकुंड गउ[१] जब वर वीरू, करइ आगए हिव[२] साहस धीरू
अठउ[३] सरवरू[४] चलियउ[५] जाणि, अगिनि कपड[६] तहि[७] आपिउ आणि ॥२०८॥
लेलइ[१] वीरू अगाडो[२] चलइ[३], विरख[४] आंब तो दीठउ फलयउ ।
खाउ[४] आंब[५] तोडी सो[६] खाइ[७], वंदरूदेउ[८] पहुतउ आइ ॥२०९॥
कवणु[१] वीरू तू तोडहि[२] आम, मुहिसिहुं[३] आइ भिडहि[४] संग्राम ।
कोपि मयणु[३] तव[४] तिहिपहु गयउ, तिहुसहु[५] जुझु महाहउ कियउ ॥२१०॥
मयण पचारि जिणिउ[१] सो देउ, कर[२] जोडइ अर[३] विणवइ सेव ।
पहुममालु[४] दुइ हाथहु लेइ, अर पावडी जुगलु[५] सो देइ ॥२११॥
तउ[१] लइ मयण कयथवण[२] गए[३], पयठइ[४] मयण[५] फुणि[६] उभे भए[७] ।
गयउ[८] वीर जउ[९] वणहु मझारि, दुयरू[१०] गौयरू उठिउ विचारि[११] ॥२१२॥

(२०८) १. गयउ (क) पहुता (ग) जब गइयउ (ख) २. आण हिव (क) झंपता साइ (ख) झंपतह (ग) ३. तूठउ (क,ख) तूहा (ग) ४. सुरवर (क ख) ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपडु (ख) निवाडु (ग) ७. आयो जाणि (क) दीन्हा आणि (ग) नोट—मूलपाठ धाणहिव के स्थान पर झापतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) तेलइ (ख) लेइ (ग) २. त आगो (क) अगुहडो (ख) अगहा (ग) ३. चलिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृक्ष (ग) ५. अंब (क) अशोक (ग) ६. को (क, ख) ७. फलिउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग) ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. अंब (क) आंब (ख ग) २. समाहि (क) ३. मोस्यो (ग) ४. केह (क) तिसु (ग) ५. स्यो (ग) माहि तिनि कियो (क) मालावरझु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. दुइ कर जोडि सु विनवइ सोव (ग) ३. बहु (क ख) ४. पुहुप (ख ग) पहुप (क) ५. युगल (क) पगहु (ग)

(२१२) १. तब ले (ख ग) २. कपत्थ (ग) ३. गयउ (ग) ४. जइठइ (ख) पइठि (ग) ५. मीह (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. अभा भया (ग) ८. ले ले मयण गउ (क) ९. जे (ग) १०. दुद्धरू (ख) सुयर (क) कुंजरू (ग) ११. विकारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है ।

सा[1] गैयरु[2] गरूवो[3] मयमंतु, हाथि[4] कुम्बरुस्यो[5] भिरउ[6] तुरंतु ।
मारि[7] दंतुसल[8] तोडइ सोइ, चडिवि[9] कंधि करि अंकुस[10] देइ ॥२१३॥

पुणि नावी[1] लइ गए[2] कुम्वार[3], तह[4] विसहरु णिवसइ संकालु[5] ।
जाइ वीरु[6] तहां उत्तर नहइ[7], विसहर निकलो मथणस्यो[8] भिडइ ॥२१४॥

तहि[1] गहि पूछ फिरावइ सोइ, बिलख बदनु तउ[2] फुणवइ होइ ।
फुणि तिहि विसहर सेवा करी, काममुंदरी आफी[3] छुरी ॥२१५॥

मलयागिरि[1] पर जब गयउ[2], करि विसादु[3] फुणि[4] उभउ[5] भयउ ।
अमरदेव तहि आयउ धाइ, निजिणि[6] कंद्रप धरीउ रहाइ ॥२१६॥

हारयो[1] देवभगति तिस करइ, कंकणु जुवलु[2] आणि सो धरइ[3] ।
सिखरु मुकटु देइ[4] अविचारु[5], आपिउ[6] आणि[7] वस्त उनिहारु[8] ॥२१७

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरु (क ख) ३. अतिहि (क) परभय (ख) गरुवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमर सो (क) कुमरसिहुं (ख) कुवरु (ग) ६. फिरइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) तूरि (ग) ८. फुणि मानो सोइ (ग) ९. तब (क) सो (ग) १०. दिइ (ग)

(२१४) १. बावडी (क) विविभो (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार (क,ख) कुमारु (ग) ४. तबहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारु (ग) तबहि सूर इक करइ झंकार (क) ६. तिहु (क) तह (ख) तब (ग) ७. चढयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क,ख) तब (ग) २. तब (क ख ग) ३. आपी (क) अरु आफो (ख) आपउ (ग)

(२१६) ऊपरि थो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग) ३. बिसहु (ख) बिसमाहुसु (ग) ४. तिह (क) फणि (ख) ५. ऊभा भया (ग) भयो (क) ६. कुंवर संघाति करइ लडाइ (क) णिज्जि णिकंद्रपु धरिउ रहइ (ख) जिण्या मुकंद्रप रहया थाराइ (ग)

(२१७) १. हास्यो देव भगति तिस कर इहि (ख) अमर देउ तबहा कारेइ (ग) २. युगल ते (क) जुगल (ग) ३. धरहि (क) जि वीनउ आइ (ख) आणि सो देइ (ग) ४. दुइ (क) दियो (ग) ५. अतिचारु (क) ६. आप्पा (क) आंफि (ख) ७. आणिउ (ख) ८. उरहारु (क ख) अरुहारु (ग)

नोट—२१७ मूल प्रति में प्रथम चरण में 'अमरदेव तहु आयउ धाइ' पाठ है ।

बरहासेण गुफा ही जहा, कुंवरन्हि मयण पठायो तहा ।
जिहि ठा अमरदेउ हो कोइ, रूप वरह भयो खण सोइ ॥२१८॥
सूंवर रूप आइ सो भिडउ, मारिउ मयणि दतसलि भिडउ ।
पुष्प चापु दीनउ सुरदेउ, विजहसंखु आपिउ तहि खेउ ॥२१९॥
तवहि मयणु वण वयठउ जाइ, दुष्ट जीउ निवसइ तह आइ ।
वण मा मयण पहूँतउ तहा, वीरू मणोजो बांधिउ जहा ॥२२०॥
बांधिउ वीर मनोजउ छोडी, फुणि ते वणमा गए बहोडी ।
जहि विजाहरि एतउ कीयउ, सो वसंतु खग बंधिवि लयउ ॥२२१॥
फुणि सु मनोजउ मनहविसाइ, कुम्वर मयण के लागइ पाइ ।
हाथ जोडि सो कहा करेइ, इंदजालु विद्या दुइ देइ ॥२२२॥

(२१८) १. बारहसेन (क) बराहसेन (ख) वीरसेण (ग) २. हहि (क) जब गयउ (ख) थी जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. ठइ (ग) ६. हुवो (क) हुइ (ख.ग) ७. थकउ (क) भयउ (ख) भया (ग) ८. रहि (क) हुइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. भया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख,ग) ३. वंतूसल भडइ (क) वंतूसलु भडिउ (ख) हेठि सो दीया (ग) ४ पुहप (ख) पुहवि (ग) ५. चाप (क ख) चंपि (ग) ६. हुनइ (क) दीना (ग) ७. सुरदेह (क) सुरदेवि (ख) ८. विजइ (क) विजय (ख वाजि (ग) ९. आयो (क) आफिउ (ख ग) १०. तिणि जहो (क) उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपवणि (ग) २. पयट्ठइ (क) वणि (ख) पइट्ठा (ग) ३. दुट्ठ (ख) ४. पुहोम (ग) ५. केराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पहुतो (क) ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जण (क) २. माहि (क) महि (ख) ३. जिणि (क) ४. विधाधरि (क) विज्जाहरि (ख) ५. सोतिणि कुमरि बंधि छिण लियउ (क)

(२२२) १. मनोजव (क) २. मनि विहसाइ (क ख) ३. लागउ (क) ४. काहउ करइ (क) ले धरइ (क)

नोट:— ग प्रति में २२० से २२६ तक के छन्द नहीं हैं ।

उवसंत[1] मनि[2] भयउ उछाहु, दीनी[3] कन्या ठयहु विवाहु ।
बहु भगति बोल सतिभाइ, फुणि[4] विजाहरू लागइ[5] पाइ ॥२२३॥
अरजुन[1] वणहु वीरु[2] जउ जाइ, तिहि वण जरहु[3] पहुतउ[4] आइ ।
तिहिसउ[5] जुझ अपुरव होइ, कुसमवाण[6] सर आपइ[7] सोइ ॥२२४॥
फुणि सो वीरू विउण[1] खण गयउ, विलतरंग[2] सिरि उभउ भयउ
विरखु[4] तमाल[5] तणाउ[6] हुइ जहा, खण मयरद्ध[7] सपतउ तहां ॥२२५॥
फटिक–सिला बयठी[1] वर नारि, जपइ जाप सो वणहु मभारि ।
तउ विजाहर पुछइ मयणु, वण मा वसइ णारि यह[2] कम्वणु ॥२२६॥
तउ[1] वसंत मन[2] कहइ[3] विचारि, रतिनामा यह वूचइ[4] नारि ।
अति सरुप सुहनाली[5] नयण[6], लेइ विवाहि कुम्वर परदवणु ॥२२७॥
तव[1] मयण मन[2] भो उछाहु, दीनी[3] कुवरि आढए[4] विवाहु ।
फुणि सो मयण सपतउ तहा, इहि[5] सयपंच सहोयर जहा ॥२२८॥

(२२३) १. तब वसंत (क ख) २. उछाहु (क ख) ३. दीधी (क) ४. भिणि (क) ५. लागउ (क)

(२२४) १. अरजुण (क) २. वीरजय (क) जाणि (क) ४. पहुतो (क) तिहसो (क) तिहिसिहु (ख) ५. होइ (क) ६. आफइ (ख)

(२२५) १. वलि खण (क) २. विरख लता (क ख) ३. उग (क) तालि (ख) ४. विरख (क) विरखु (ख) ५. तमालह (क) तमाल (ख) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपतउ (ख)

(२२६) १. सो (ख) २. इह (ख) सो (क)

(२२७) १. वलि वसंत (क) २. मनि (क) ३. करइ (क) ४. वीजी (क) ५. सुचिनाली (क) १. मयण (क ख)

(२२८) १. तवहि (क ख) २. भयो (क ख) ३. दीठी (क ख) ४. तणउ (क) आढयो (ख) ५. खइ जइ (क) जहि सइ (ख)

२२४—मूल प्रति में तिहिसउ जुझ के स्थान पर तिहिसउज

भणइ[1] कुवर मुहामुह चाहि, विषमु वीरु यह[2] मानन[3] आहि
सोलह गुफा पठायो[4] मयण[5], तह तह[6] मिलहि वस्त्र आभरण ॥२२९॥

मयणह पौरिशु देखि अपारु, तब कुम्वरन्हि छोडिउ[1] अहंकारु
सबहु मिलि सलहिउ तहि ठाइ, पुनवंत कहि लागे पाइ ॥२३०॥

वस्तु बंध—पुन्नु बलियउ[1] अहि[2] संसारु[3] ।
पुन्नु[4] सेम्वहि सुर असुर, पुन्नु सफलु[5] अरहंत जंपिउ[6] ।
कत[7] रूपिणि उर अवतरिउ, धूमकेत[8] ले[9] सिला[10] चंपिउ[11] ॥
जमसंवरू कंत[12] लै गयउ, कनयमाल घरितह[13] गयउ विरिद्धि ।
सोलह लाभ महंतु फलु, पुण्ण परापति सिद्धि ॥२३१॥

चौपई

पुन्नहि[1] राजा भोगु महि होइ, पुन्नइ नरु उपजइ सुरलोइ ।
पुन्नहि अजर[2] अमर सुगपरगा[3], पुन्नहि जाइ जीव णिव्वाणा[4] ॥२३२॥

---

(२२९) १. चितइ (क) पभणहि (ख) २. एहि (क) इह (ख) ३. मन (क) माणु न (ख) ४. दिखायो (क) पठायउ (ख) ५. मरण (क ख) ६. तिहि तिह (क)

(२३०) १. छोडियउ (क) छाडियउ (ख)

(२३१) १. गुरुवउ (क) २. आहि (क ख) ३. संसारि (क ख) ४. पुन्नि (क) ५. फलइ (क) ६. जाणिउ (ख) जंपइ (क) ७. कितु (क) ८. कित धूमकेत (क) ९. किल (क) लइ (ख) १०. सिला तल (क) ११. चंपइ (क) चंपिउ (ख) १२. कह (क) किसो पुनइ अविहड विधि—यह पाठ 'क' प्रति में ही मिलता है । १३. नोट—मूल प्रति का पाठ 'घरि बंधि'

(२३२) १. पुनि जग माहि एहउ होइ (क) पुण्य बडउ सु जगत महि होइ (ख) २. अजरामर (ख) ३. पद ठाण (क) अमर विमाण (ख) ४. निरवाणि (क)

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त विद्याओं के नाम

विद्या सोलह लइ[1] अविचार, चम्वर छत्र सिर मुकट अपार।
नागसेज औ[2] रयणानी[3] भरी[4], भणिमणि[5] कमंड[6] बीणा पावडी ॥२३३॥

विजयसंख कौसाद[1] अपार, चंद्र संघासण[3] सेखण[2] हार।
सोहइ हाथ काममुंदरी[3], पहुपचाप कर[4] कडिहा छुरी ॥२३४॥

कुसुमबाण कर हाथह लेइ, कुंडल जुंवल[1] सम्वण[2] पहेरइ।
राजकुवरि दुइ परिणइ सोइ[3], चढि गैंयर[4] फुणि ऊभौ[5] होइ ॥२३५॥

कंकण जुगल रयणि अनिवार, अर दुइ[1] लेइ पुष्प[2] की माल।
न्हानी वस्त[3] गणं[4] तह[5] कवण, इतनउ[6] लेनि[7] चलउ[8] परदवण ॥२३६॥

मयण कुवर घर चल्यो तुरंत, मेघकूट[1] खग[2] जाइ[3] पहुत।
जमसंवरु[4] भेटिउ[5] तिहि[6] ठाउ, बहुत भगति करि लागो[7] पाइ ॥२३७॥

भेटि[1] राउ[2] फुणि उभो भयो[3], मयणु[4] कुवरु रणबासह गयो।
कनकमाल[5] खग[6] भेटी जाइ, बहुत भगति करि लागो[7] पाइ ॥२३८॥

---

(२३३) १. जे सुविचार (क) २. सो (क) जा (ख) ३. रयणहि (ख) रयणह (क) ४. जडी (क ख) ५. अगनि (क ख) ६. कपटु (ख)

(२३४) १. कोसाव (क) कउसबु (ख) २. सेरवर (क) ३. संघासण (क) ३. मूंदडी (क ख) ४. कडि (क)

(२३५) १. युगल (क) जुगलु (ख) २. श्रवण (क) सवणह (ख) ३. जाइ (क) ४. गइयर (ख) ५. उभउ (क ख)

(२३६) १. दुइ (क ख) २. पुहप (क ख) ३. वस्तु (क) वसतु (ख) ४. गिणइ (क) गणइ (ख) ५. इहं (क ख) जिहि (ख) ६. एती (क) इतडउ (ख) ७. ले (क) लइ (ख) ८. चालिउ (क) निकलिउ (ख)

(२३७) १. मेघ कुटिल (क) २. सो (ग) खगि (ख) खिणि (क) ३. आइ (क) ४. काल (ग) ५. नइ वइठउ पाइ (ग) ६. तिह भाइ (ख) ७. लागिउ (ख)

(२३८) १. राव (क) २. पुणि (क) तब (ग) ३. उभउ भयउ (क ख ग) ४. फुणिवि मयण (ग) ५. कणयमाल (क ख) ६. भेट तिह (ग) ७. लागउ (क) लागी (ख) लागा (ग)

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

देखि सरूप[1] मयरा वर वीर, कामवाण तसु हयउ[2] सरीर ।
फुणि सो अंचलु[3] लागी धाइ, करि[4] उतरु[5] वह चल्यौउ[6] छुडाइ ॥२३६॥

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

फुणि सो मयणु सपतउ तहा, वण[3] उद्यान मुनिस्वरु जहा ।
नमस्कार करि पूछइ सोइ, कहहु वयण जो[1] जुगतउ[2] होइ ॥२४०॥
कणयमाल[1] माता[2] मुह[3] तणी, सो[4] मो[5] पेखि[6] कामरस घणी[7] ।
आंचल[8] गहिउ छांडि[9] तहि कारिण, कारणु कहहु कवण मुहि जाणी[10]।२४१।
तं[1] मुणियर जंपइ तंखीणी[2], कहहु आत तुह जम्मह[3] तणी ।
सोरठ देस वारमइ[4] ठाउ, तिहि पुरि निमसै[5] जादमराउ ॥२४२॥
ताकी[1] घरणि[2] आहि[3] रुकिमिणी, जह[4] कीरती महमंडल घणी ।
तिहि[5] सम तिरी न पूजइ[6] कोइ, कंद्रप जगणि तिहारी[7] होइ ॥२४३॥

(२३६) १. मयण सुन्दर (ग) २. न मुहयउ (ख) हणिउ (क) तिसु हुआ (ग) ३. अंचलि (क ग) ४. कहि (ग) ५. उत्तरु (ग) ६. गयउ (क) चल्या (ग)

नोट—तीसरा और चौथा चरण ख प्रति में नहीं है

(२४०) १. जे (क) जुगती (ग) २. जैन धर्म हुइ निश्चय जहां (ग)

(२४१) १. कंचनमाला (ग) मा (ग) ३ मोहि (क) महु (ख) मुहि (ग) ४. सा (क ग) ५. मोहि (क) महु (ख) हम (ग) ६. देखि (क ग) ७. सरि हणी (क ग) हणो (ख) ८. अंचल (क ग) ९. छोडि (ग) १०. मुणीसर जाणि (क)

(२४२) १. तउ (क) तब (ग) २. तंखिणि (ख) ३. जनमह (क) जम्मंतर (ख) जनम्ह (ग) ४. द्वारिका (क) बारवै (ग) ५. स्वामी (क) निवसइ (ख ग)

(२४३) १. तिहकी (क) तिहि की (ख) तिसु की (ग) २. परिणी (ख) ३. अछइ (ग) ४. जस (क) ५. तिहसरि (ग) ६. भीनवि (क) तिरिय न (ख) तिया न (ग) ७. तुम्हारी (क) तुहारी (ख, ग)

धूमकेत हौ[1] तू हरि लयो, चापि सिला तल सो उठि[2] गयो।
जमसंवर तोहि[3] पालिउ आणि, सो परदवन आप[4] तू जाणि ॥२४४॥
कणयमाल तुव[1], अंचल गहिउ, पूव जन्म सो[2] सनमथ[3] भयउ।
जइ[4] वहु तोसिहु पेमरस[5] भीनि, छलु करि लीन्हहि[6] विद्या तीनि ॥२४५॥
निसुणि[1] वयण सो बाहुडि[2] जाइ, कनकमाल पहु बइठउ जाइ[3]।
विद्या तीनि मोहि जउ[4] देहि, जुगतो[5] पेसणु[6] करिहो[7] तोहि[8] ॥२४६॥
रस[1] की बात कुवर पहु सुणी, पेम[2] लुवधि अकुलाणी घणी।
जमसंवर की करीय न काणि, तीनिउ[3] विद्या आफी[4] आणि ॥२४७॥
पूरव[1] दाउ कुम्वर[2] मन रल्यउ, फुणि[3] विद्या लइ[4] वाहुरि[5] चलिउ[6]।
हम्वु[7] तुम्हि[8] पूतु जणणी[9] तू मोहि[10], जगतउ[11] होइ[12] सु[13] पेसणु देहि ॥२४८॥

---

(२४४) १. तिहु थो हरिलियो (क) तउ तूं हरिलिउ (ख) तुम्हि हरि ले गया (ग) २. उट्ठियउ (क) उठि गयउ (ख) उट्ठि गया (ग) ३. तू (ख ग) ४. अपूरब (ग) मूल प्रति में तोहि पाठ नहीं है।

(२४५) १. तुम (क) तव (ख) तुम्ह (ग) २. तोहि (क) कउ (ख) मोहि (ग) ३. संनबध (ग) ४. जो बहु होइ (क) जइ हुव हुतो (ख) जे वह तोहि (ग) ५. प्रेम (क) परम (ख) पिरमें (ग) ६. छीनले (क)

(२४६) १. सुणउ (ग) २. बहुडिउ (ख) ३. आइ (क ख ग) ४. जे (क) जइ (ख) ५ जुगत (क,ख) जुगति (ग) ६. पलउ (क) विसनुह (ग) ७. करिहु (क) होइ (ख) हउ करिस्यो (ग) ८. थेहि (ख)

(२४७) १. सर (ग) २. प्रेम लुबध (क) प्रेम लुब्ध (ग) ३. तीनइ (क) तीन्हों (ग) ४ सउपी (ग)

(२४८) १. परियउ (क) कडिउ (ख) पूरिउ (ग) २. कुमार (ख) ३. छिण (क) ले (ग) ४. सो (ग) ५. बाहुडि (क ख ग) ६. चल्यो (क) भलिउ (ख) ७. हम (क) हउ (ख ग) ८. तोहि (क) तुहि (ख) ९. मात (क) १०. हुई (ग) ११. युगत (क) जुगति (ग) १२. पसाउ (क) १३. करिउ क्यो सोइ (क)

कनकमाला द्वारा अपना विकृत रूप करना

कणयमाल तब [1]धसक्यो [2]हीयउ, [3]मोसिहु [4]कुडकुडीया कीयउ ।
[5]इकु तउ लाज [6]भइ मत [7]टल्यउ, अवरु [8]हाथि लइ विद्या चलिउ ॥२४९॥
कणयमाल [1]तउ विसमउ [2]धरइ, सिर [3]कूटइ [4]कुकुवारउ करइ ।
उर थणहर [5]महु [6]फारहु सोइ, केस [7]छोडी [8]विहलंघन होइ ॥२५०॥
इक रोवइ इक करहु पुकार, कालसंवर रा [1]जाणी सार ।
कुमर [2]पांचसे पहुते जाइ, कनकमाल पहु बइठे आइ ॥२५१॥
कालसंबर [1]सउ कहउ सभाउ, इहि [2]विधि [3]पालक [4]कीयउ उपाउ ।
धरम पूत करि [5]थापिउ सोइ, अब सो मोकहु [6]गयो विगोइ ॥२५२॥

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

[1]निसुणि बयण नरवइ परजलीउ, [2]जाणे [3]घीउ अधिकु [4]हुतासणु [5]परिउ ।
कुवर पाचसह लिये हकारि, [6]पवण वेगि [7]इहि आवहु मारि ॥२५३॥

---

(२४९) १. धसकंया (ग) धसकिउ (ख) २. हीया (ग) ३. मोहि स (क) मुहि सिहु (ख) मोस्यों (ग) ४. कूडि जइ (ग) ५. अब मोहि (क) इकु सहु (ख) इकुलो (ग) ६. गई (ख) ७. मन टलिउ (क) मनु टालिउ (ख) मनु टलिउ (ग) ८. ले विद्या हाथहु ते चलिउ (ग)

(२५०) १. तो (ग) २. करइ (क ख) ३ पीडइ (ग) ४. कुकवर (क) कुकुआरउ (ख) अरु कूकतउ फिरइ (ग) ५. नख (क) नहु (ख) करि (ग) ६. फाडइ (क ख) पोटइ (ग) ७. खोलि (ख ग) ८ विहलघल (क ख) विहलंखलि (ग)

(२५१) १. जणइ सार (क) राजा पासि जणावउ सार (ग) २. पंचसइ (क) पंचसय (ख ग)

(२५२) १. स्यो (क) सिउ (ख) जब बइठा आइ (ग) २. विधु (ग) ३. बालक (क ग) पालणी (ख) ४. किउ एहु उपाव (क) कीयउ उपगाउ (ख) कीया उपाउ (ग) ५. राखिय (क) थापी (ग) ६. चलिउ (ख) गया (ग)

(२५३) १. सुणे (ग) २ जणु (ख) ३. घृत (क) घिरत (ग) ४. वसंनर (क) हुतासए (ख) वैसंदर (ग) ५. भलिउ (क) पडिउ (ख) टालइ (ग) ६. चल्लिहु वेगिहु ७. तुम (क)

तव कुवर मन पूरउ दाउ, हिकहु भयउ विरुद्धउ राउ ।
मिलि सव कुवर एकठा भए, मयरण बुलाइ कुवर वण गए ॥२५४॥

तवइ अलोकरिण विद्या कह्यउ मयरण अचंकित काहे भयउ ।
एह बात हो कहौ सभाइ, ए सब मारण पठए राय ॥२५५॥

तव रिसारणौ साहस धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर ।
चारि सौ नानाणौ आकउ भरइ, बाधि घालि सिला सिर धरइ ॥२५६॥

एकु कुम्वर राखिउ कमार, राजा जाइ जणाइ सार ।
तुहि जउ राय भरोसउ आहि, दणु परिगह आणाइ पलणाइ ॥२५७॥

जमसंवर रा बइठउ जहा, भागिउ कुवरु पुकारिउ तहा ।
सयल कुम्वर वावी मह घालि, उपर दोनौ वज्र सिल टाल ॥२५८॥

---

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरइ (ग) ३. पूगउ (ग) ४. इसु कौ (ग) मार मयरण अब पूजइ दाउ (क) मारहि मयरण (ख) ५. सहि (ग) ६. बुलावइ (ग) ७. कमल (क ख)

(२५५) १. मालोकरिण (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग) ३. मयणि काइते डीलउ कहइ (क) संभलु मयणु कुवरह मति कहइ (ग) निचितउ (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. तुम्ह (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) बिहसाणउ (ख) रीसाणा (ग) ३. सहस सधीर (ग) ४. चारिसइ निनाणो (क) चारि निनाणों (ख) चउसइ नंम्याणु (ग) ५. आगइ धरइ (क) आंको भरा (ख) अंकौ भरउ (ग) ६. वापि (ग) ७ सुहड (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन लिया उबारि (ग) २. राजहि (क ख ग) ३. जणावहि (ख) ४. तुहि सइ (क) जे तुम्ह (ग) ५. दलु (क ख) दल (ग) ६. परियण (क) ७. सब लेहु (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. बइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पहूता (ग) ४. महि (क ग) मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. दीधी (क) ७. शिला पखाल (क) शिला टाल (ख) हुताल (ग)

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

निसुणि वयण मन कोपिउ[1] राउ, आजु मयण भानो[2] भरिवाउ[3] ।
रहिवर[4] साजे गैवर गुडे[5], तुरिय[6] पलाणे पाखर परे[7] ॥२५९॥

धनुक[1] पाइक अरु छुरीकार[2], अतिवल[3] चलत न लागी[4] बार ।
आवत देखि[5] मयण[6] कहु[7] करै[8], सैनाकरि[9] सयन रची धरै ॥२६०॥

जाइ पहुतउ[1] दल अतिवंत[2], तहा[3] हाकि भीडइ मयमंत ।
रावत[4] स्यौ रावत रण भिरइ, पाइक[5] स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥

जमसंवर कहु[1] आइ[2] हारि, चउरंगु दलु[3] घालिउ[4] मारि ।
विजाहरु[5] रा[6] विलखउ भयो, रहवरु[7] मोडि नयर महु गयउ ॥२६२॥

---

(२५९) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. भानउ (ख) भागउ (ग) ३. भडिवाउ (ख ग) ४. रहहिवार (ग) ५. गुडह (क) गुडहि (ग) ६.तुरी (क ग) ७. पडहि (क ग)

(२६०) १. धानुक (क ख) धानुप (ग) २. कगाहि (ग) ३. अतिवल (क) ४. लाइ वार (क) सभि हथियार सूभट ले आहि (ग) ५. मयनु (ख) ६. कया (ख) के (क) ७. निहुरथो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. सेना रचि साम्हउ संचरइ (क) सयना कहइ सयनु रचि धरहु (ख) माया रुप मयनु रचि ताम (ग)

(२६१) १. पहूता (क) पहूते (ख) २. वलवंत (क) मिलि आयो बलु जबहि अनन्तु (ग प्रति) ३. वेगइ आइ (क) तहं तहं हांकि भिडे मयमंत (ख) तब रथु हांकि भिडया मयमंतु ४. रहवर सिहु रहवर (ख ग) रहवर सो रहवर (क) ५. टूटइ खडग पडइ मुंड ताम (क) टूटहि तुंड मुंड धर जाम (ख) टूटहि रुंड मुंड बहु ताम (ग)

(२६२) १. को (क) २. आवइ (क) ३. बलु (ख) ४. घल्लिउ (ख) घाल्या सहि (ग) ५. राउ (क) तव (ग) ६. विलखा (ग) ७. मयण कुवर सहु बलु मारिया (ग)

पुणि[1] णिय मंदिर जाइ पहुत, जमसंवर तव[2] कहइ निरुत ।
कनकमाल हउ आयउ[3] तोहि, तीन्यो विद्या आफइ मोहि ॥२६३॥

निसुणि वयण अकुलानी[1] बाल, जाणि सुहइ[2] वज्र की ताल ।
जिहिलगी सामी[3] एतउ[4] भयउ, मो[5] पह छीनी कुवर ले गयउ ॥२६४॥

वस्तुबंध—एह[1] नरवइ सुणिउ जव वयणु ।
विजाहर कारण[2] करइ, तिय[3] चरितु सुणि हियउ कंपिउ ।
उरथु[4] रुहडे फाडियउ मोहि सरिसु इणि अलिउ[5] जंपिउ ॥
पेम लुवधें[6] कारणी आपी विद्या तीनि ।
अव मोस्यो परपंचु[7] करइ, कुमर ले गयो छीनि ॥२६५॥

---

(२६३) १. थिरि (क) फुणि २. तह (क) ३. आयो आयउ (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ है—

जम संवरु तव मिलखा भया, वलु छोड्या घर कहु उहि गया ।
जहति जातह बोलें एह, तीन्यो विद्या वेगी देहु ॥२५२॥

(२६४) १. नारि (ग) २. सिरि वजी पन्नताल (क) ३. स्यामी (क) स्वामी (ग) ४. एहवा (ग) ५. मुझ (क) मोहि बिगोइ छीनो ले गया (ग)

(२६५) १. जा (क) २. कारुणा (ग) करइ (ख) ३. भिया (क) तिया (ग) ४. एस रुप मइ समझियउ (क) कंपइ उसुदा घर हुरइ (ख) उरकुच होइ पूरहस्यो (ग) ५. आलु (क) आल (ग) ६. लुवधि (क ख) ७. परपंचु (क ख) ग प्रति—

वहु भूरइ तहु राउ मनि, देख चरितु इहु तेणि ।
प्रेम लुवध कइ कारणिहि, सउपी विद्या एणि ॥

चौपई

...ख चरित जब[1] बोलइ[2] राउ, अब मो[3] भयउ मरण को ठाउ।
तिरियह[4] तणउ जु पतिगउ[5] करइ, सो माणस[6] अणखुटइ[7] मरइ ॥
तिरिय[8] चरितु निसणउ[9] भरिभाउ[10], बिलख वदन भउ[11] खगवइराउ[12] ।२६६

भुचक छन्द

स्त्री चरित का वर्णन

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ[1], निउ पिउ[2] छोडइ[3] अवरु भोगवइ।
तिरियहि[4] साहस दूणो[5] होइ, तिरिय चरित जिण[6] फुलइ[7] कोइ ॥२६७॥

चौपई

नीची[1] बुधि तिम्बइ[2] मनि रहइ[3], उतिमु छोडि नीच संगहइ[4]।
पयडी नीच[5] देइ सो पाउ[6], एसो तिवइ[7] तणउ सहाउ ॥२६८॥

---

(२६६) १. पुणि (क ख) तब (ग) २. सोभइ (क) ३. इम मोहि जुगतउ मरण का ठाउ (ग) ४. त्रिय (क) तिथा (ग) ५. पतिगव (ख) पतिगह (क) मरोसा (ग) ६. मूरिख (क) नर जाणउ (ग) ७. अनखूंटी (क ख) ८. त्रिय (क) तिरिय (ख) तिया (ग) मूल पाठ तिनिय ९. सुणहु (ग) १०. धरिभाउ (ग) ११. भयउ (क) तह (ग) १२. तब राउ (क) बोलइ राउ (ग)

(२६७) १. चवइ (क ख) चवहि (ग) २. निय पिय (क) निउ पिउ (ख) नाहगु (ग) मूल पाठ केवल पिउ है। ३. छोडि (क ख ग) ४. पौरिष (क) ५. दूणउ (ख) दुवणउ (क) ६. नवि (क) मतु (ग) ७. भूलइ (क) भूलउ (ख ग)

(२६८) १. नीच (ख) २. तियइ (क) ती (ख) तियह (ग) ३. मनि रहै (क) मनु हरइ (ख) मनु धरहि (ग) मूल पाठ मुनि ४. संग्रहइ (क ख) भोगवहि (ग) ५. नीची (क ख ग) ६. दे सो पाय (क) देइ सो पाउ (ख) देह सिर पाव (ग) ७. त्रियह (क) ती मइ (ख) ती वइ (ग)

उजैंणि[1] नयरि[2] सो बूचइ[3] ठाउ, पुव्वह्[4] हुती विवयह् राउ ।
तिरिय विसास[5] करइ[6] जो घणउ, जिहि[7] जीउ सोप्यो राजा तणउ ।२६९।
दुइजे राउ[1] जसोधर भयउ[2], अमइ[3] महादे सोखइ लयउ ।
विस लाइ दइ मारयो[4] राउ, फुणि कुवडउ[5] रम्यो[6] करि[7] भाउ ।२७०।
फुणि तीजे[1] णिसुणह धरि भाउ, आथि[2] नयरु पाटण[3] पयठाणु ।
हया[5] सेठि निमसइ[6] तिहि काल, तीनि नारि ताकी[7] सुहिनाल ।२७१।
सोतउ[1] सेठि[2] घरिणि उहि गयउ, जौर[3] मुगधि तिहि साहसु कीयउ ।
छाडी[4] हया[5] सेठी की[6] कारिण[7], धूतु एकु सिर[8] थापिउ आणि ।।२७२।।
अदिणि[1] छोडि[2] नाहु[3] सुपियारु, धूतु आणि ता[4] कीयउ भतारु[5] ।
तिहि[6] साहस कउ[7] अंत न लहउ, तिहि[8] चरितु हउ केतउ[9] कहउ ।२७३।

---

(२६९) १. अवजेंणि (ख) २. नयरी (ख) नयर (ग) ३. जो हुाउ (क) ऊचइ (ख) उसिव (ग) ४. पुरव हु गयउ सो ठाउ (क) पुव्वहु हुतु बियर कम्मुराउ (ख) तिस पुर भंचउ विक्रमराउ (ग) ५. विशास (क) विस्वास (ग) ६. किया तिह घणा (ग) ७. जिय (क) आपणउ (क) (तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है)

ते हिलि जिउ प्राण राजा तणउ (ख) राजइ सउप्या जीव आपणा (ग)

(२७०) १. राज (क) २. गयउ (क) ३. अमइ महादेवि सो टलिउ (क) अमय महादे सो घर गयउ (ख) अम्रत-मती तिय लागीया (ग) ४. मारिउ (क ख) मारा (ग) ५. कुवडा ते (क) ६. रमिउ (क ख) रम्याउक्ष (ग) ७. धरि (ख ग)

(२७१) १. तेउ (क) तीय (ख) विजमाहृक तब बोलइ राउ (ग) २. अथि (क ग) ३. पइठणपुर (ग) ४. हुाउ (क ग) ठाउ (ख) ५. धणवइ (क) हाया (ख) हुवा (ग) ६. बसइ (क) ७. तिहके (क) तिस की (ग)

(२७२) १. सोवतउ (क) सो तहि (ख ग) २. घरणिहि (ग) ३. प्रेम लुबध तिहि अइसा कीया (ग) ४. छाडइ (क) छोडी (ग) ५. तेह (क) हाया (ख) तणी (ग) ६. सव (ग) ७. काणि (क) ८. धरि (क ख) तिन राखा आणि (ग)

(२७३) १. दविगणउ (क) एणिवं (ख) २. छांडि (ख) ३. नारि (क) ४. तिह (क) तिन (ख) ५. भताऊ (ख) प्रथम-द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है। ६. इह (क) तिसका (ग) ७. को (क) अंतु न कोई लहइ (ग) ८. त्रिय (क) त्रिया (ख) तिया (ग) ९. कितना ले (ग) केता कहोइ (ग)

अभया राणी कीए विनाश[1], सुहदंसण[2] लगि गये परान ।
जिहि लगि[3] जुझ महाहो भयो, लइ तप चरणु[4] सुदंसणु गयउ ॥२७४॥

रावण राम जु[1] वाढी[2] राडि, विग्रहु[3] भयउ सुपनखा लागि ।
सीया[4] हडइ[5] लंका परजलइ[6], सब परियण[7] रावण संघरइ[8] ॥२७५॥

कौरों[1] पांडो[2] भारथ[3] भयउ[4], तिहि[5] कुरुखेत महाहउ ठयउ[6] ।
अठार[7] खोहणी दल संघारि, द्रु[8] इ दल बोलइ दोवइ[9] नारि ॥२७६॥

कालसंवरु तउ कहइ[1] बहोडी, कनकमाल[2] तो[3] नाही खोडी ।
पूरव रचित न मेटण कवणु[4], ए बीधा लेहै परदवणु ॥२७७॥

असुह कम्मु[1] नहु[2] मेटइ कोइ, सुरजनुहु[3] तउ सुवरीयउ होइ ।
दोस न कनक[4] तुहि तणउ, इह लहणौ[5] लाभइ आपणउ[6] ॥२७८॥

---

(२७४) १. विनाश (ख) २. सुदंसण (क) सुभदंसण (ग) ३. तिहि स्यौं मास झूझ इहु भयो (ग) ४. संजम लेइ (क) लय तप चरणु (ख ग)

(२७५) १. जा (ग) २. वाधी (क) बंधी (ग) ३. विघन सुरपखि कीनी राड (क) विगाहु बलिउ सपनखो लाहि (ख) विग्रह चल्या सुपन भय ताडि (ग) ४. सीता (क) सीय (ख ग) ५. हरण (क) हडणु (ख) हडो (ग) ६. परजलणु (क) परजलइ (ख) परजली (ग) मूल पाठ—परजली लाइ ७. सब परियण (क ख) रखउ परियर (ग) मूल पाठ स्यो पहयाल ८. संघरण (क) संघरइ (ख) संघटी (ग)

(२७६) १. कौरव (क) कौरउ (ख) कइरव (ग) २. पांडव (क) पांडउ (ख) पंडव (ग) ३. विग्रह (ग) ४. भयउ (ख) ५. तिनि (क) तिन्ह (ख) तिन्हे (ग) ६. कियो (क) किया (ग) ७. अट्ठारह (क ग) अठारह (ख) ८. दुइ (क ख ग) ९. द्रोपदी (क ग)

(२७७) १. वीला (ग) २. कंचनमाल (ग) ३.•तह लागी (क) न दुमय खोडि (ग) ४. कोइ (ख) तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

(२७८) १. कम्मं (क) २. नवि (क) ३ सज्जन ते सुख वैरी होहि (क) प्रथम एवं द्वितीय ग में तथा द्वितीय एवं तृतीय चरण ख में नहीं है । ३. कनकमाल (क ग) ४. लिखियउ (क) लहणा (ग)

गाथा

दग्घंति[1] गुणा विचलंति वल्लहा[2], सज्जनाहि[3] विहडंति[4] ।
विवसाय[5] णत्थि सिद्धी पुरिसस्स परंमुहादिम्वहा ॥

चौपई

छुटउ कमणु[1] काल की वहिणा, फुणि तैं बहुडी करी सामहुणा[2] ।
चउरंगु बलु सबु समहाइ, करउ[3] अभेडउ दुहजो जाइ ॥२७६॥

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

बहुत रोस[1] मन नरवइ भयउ, चाउ[2] चढाइ हाथ करि[3] लयउ ।
लयउ[4] धनपु[5] टंकारिउ[6] जाम, गिरि पवय[7] जाणी डोले ताम ।२८०।

दोउ[1] वीर आइ रण भिडे, देखइ अमर विवाणहि चडे ।
वरसहि बाण सरे असराल, जाणी घण गाजइ[2] मेघ अकाल ।२८१।

गाथा

१. न संति (ख) निसंति (ग) २. विद्या (ग) ३. सजणाइ (क) सज्जनाय (ख) सयण सज्जन (ग) ४. विचलंति (ग) ५. सजन पासु दुयथु भया, जे मयिहु कम्म चलंति (ग)

(२७९) १. कवण (क ख) २. संमहुण (क) समंहाण (ख) ३. करइ जुध तब बाहुडि आवि (क)

ग—काल संवरु मनि भया उदासु, छोड्या कणयमाल का पासु ।
दल चउरंगु सहु लीया बुलाइ, करइ भूभु बाहुडि सो आइ ॥

(२८०) १. दोसु (ख) २. चक्र (क) चाप्त (ग) ३. तिहि लीया (ख) ले (ग) ५. धुणहु (ग) ६. टंकारा (ग) ७. पवास भइ कंपइ ताम (ग)

क—धनुष टंकार करइ ते जाम, तब गिर परवत कालइ ताम

(२८१) १. दोनउ (ग) २. गज्जहि (ग) ग प्रति में दो चरण निम्न रूप में अधिक हैं—

दोऊ वीर वीर सपराण, दूणे दूणे करि संधाण

तब[1] परदमण रिसानो जाम, नागपासि मुकलाइ[2] ताम ।

सो दलु नागपासि दिठु[3] गह्यउ, राउ अकेलउ ठाढउ वद्धउ[4] ॥२८२॥

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ।२८३।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

भणइ[1] मयणु रहायो मयणु, आपहि पूतहि गाउ कमणु[2] ।

जिहि प्रतिपालिउ कियउ[3] तु राउ, तिहिकउ[4] किमि[5] भानइभरिभाउ २८४

नारद आत कहै समुझाइ, दु[1] दल बिगाहि[2] धरइ[3] रहाइ ।

कालसंवर तो[4] हो इन जुत[5], यह परदवण नरायण पूत[6] ॥२८५॥

निसुणि वयण[1] मन उपनौ भाउ, भरि आयौ[2] सिर उमइ[3] राउ ।

इतडो[4] परि पछितावो भयउ, चउरंग दलु संघरि[5] लयउ ॥२८६॥

---

(२८२) १. सो (ग) २. छोडइ तिसु ठाम (ग) ३. वुध (क) ४. रहो (क) रहिउ (ख ग)

(२८३) क ख प्रतियों में निम्न पाठ है ।

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ॥२६२॥

ग प्रति—

भणइ मयणु हौ इसउ कराउ, इउ भागउ इसका भडिवाउ ।

नानारिषि आया तिह ठाइ, कही बात बलि आंवइ साइ ॥२७३॥

(२८४) १. तउ रिपि जइ रहायउ मयण (क ख) बोलइ रिषि तू सुण परदवणु (ग) २. बिग्रह (क ख ग) ३. अंतराय (क) तू तह राउ (ग) ४. तिनकउ (क) तिस का (ग) ५. सिंधु (क) किउ (ग)

(२८५) १. दुइ (क,ख) दुहु (ग) २. विघ्न (क) विग्रहउ (ग) विगाहु (ख) ३. हरइ धराइ (क) घराइ (ग) ४. तोहि (क) तुहि (ख) तुम्ह (ग) ५.-निरुत (क) जुत (ख) ६. तुम्हारउ (ग)

(२८६) १. मयण (क) वचन (ग) २. आकइ (क) आकउ (ख) अहि आंकि (ग) ३. धुमइ (क) घूमइ (ख) घूमौ (ग) ४. लडियउ (क) तानि न मारिए (ख) इतना (ग) ५. गयउ (क, ख) सहु संघारिया (ग)

तव[1] मयण मन छोडो कोह, मोहणी जाइ उतार्यो मोह ।
नागपासि जव[2] घाली छोरी, चउरंग बल उठो[3] वहोरी ॥२८७॥
उठी[1] सैन[2] मन हरिष्यो राउ, बहुत मयण को कीयो पसाउ ।
नानारिषि बोलइ तंविणी, वर अवेसि[3] तिहारी[4] धणी[5] ॥२८८॥
वयण हमारे जउ मन[1] धरहु, घर[2] वेगे सामहणी करहु ।
पवण वेगि तुम द्वारिका[3] जाहु, आज तिहारी आहि विवाहु ।२८९।
नारद बात कही तुम भली, मुही केवली[1] कही सो मिली ।
विहसि बात बोलइ[2] परदवण, हम कहु वेगि पराइ[3] कम्वणु ।२९०।

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

नारद[1] खण[2] विमाण रवि फरइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ ।
वहुडि[3] विम्वाण धरइ[4] मुनि जोडि, खण[5] मलयद्धउ[6] धारइ[7] तोडि॥ २९१॥
विलख वदन भो[1] नारद जाम, करइ उपाउ मयणु[2] हसि ताम ।
मणि[3] माणिक मय[4] उदउ करंतु, रचि विमाण खण[5] धरइ तुरंतु ।२९२।

(२८७) १. तबही (क ख ग) २. तब (क) बन्ध (ग) ३. सुचला (ग)

(२८८) १. उठो (क) उट्ठि (ख ग) २. सेन (क) सयण (ख) मयणु (ग) ३. आरति (क) अवसेरि (ख, ग) ४. तुम्हारी (क) तुहारी (ख) अवि तुम्ह (ग ५. तणी (ग)

(२८९) १. चिति (ग) २. घर सामहणी साम्हा चलिउ (क) घर कहु वेगि पयाणा करहु (ख) घर को वेगि साम्हतो करहु (ग) ३. घर कहु जाहु (ग)

(२९०) १. मुणिवर (क) २. पूछइ (क) ३. परणावइ (क ग) पराणइ (ख)

(२९१) १. रिषि (ग) २. रिषि (क) ३. करइ (क) रिषि धरइ सु जोडि (ग) ४. करि (ग) ५. खण (ग) ६, मयरद्धउ (क ख) ६. मइराधा (ग) ७. घालइ (क ख ग) मूल प्रति में मुनि के स्थान पर 'मन' शब्द है ।

(२९२) १. होइ (क) हुउ (ख) २. मइरघउ (क) मयण खिणि ३. मइरधउ (क) ४. बहु (ख) का (ग) ५. खण (ख) खिणि (ग)

विद्यावल तह[१] रच्यो[२]उ, विमाणु, जहि उदोत[३] लोपि[४] ससि भाणु ।
धुजा घंट घाघरि[५] सजुतु, फुणि तिह[६] चढयो नारायण पूत । २६३

जमस[१] वरु रामहिउ जाइ, बहुत भगति करि लागइ पाइ ।
कुमरहि सरिसु खिण तवु[२] करइ, कंचणमाल समदि[३] घर चलइ।२६४।

कुंवरु मयण अरु नारदु पास, चढि विमाण उपए[१] आकास[२] ।
गिरि पव्वय[३] वहु लंघे मयण, बहुत ठाइ वंदे जिणभवण ।२६५।

फुणि वण[१] माझ पहुते जाइ, उदिधिमाल दीठी ता ठाइ ।
बहुत वरात[३] कुंवर[४] स्यो मिलि, भानु[५] विवाहण[६] द्वारिका चली ।२६६।

नारद[१] बात मयणस्यो कही, यह पहल[२] तुम ही कहु वरी ।
तुम हडि धूमकेत ले जाइ, तउ[३] अब भानहि दीनी आइ ॥२६७॥

मुनि जंपइ मुहि[१] नाही खोडी, आहि[२] सकति तउ लेहि[३] अजोडि[४] ।
रिषि कौ वयण कुमरु मण धरइ, आपण भेस भील[५] कहु करइ ।२६८।

(२६३) १. तिनि (क) तहि (ख) तिहि (ग) २. सलिउ (ख) ३. उदया (ग) ४. लोपिउ (क) लोपिहु (ग) करहि (ख) ५. घघारि (क) वावती (ख) क—कराण विमाणु सुहिर रसजुत (ग) ६. चलि चढयो (ग)

(२६४) १. राजा समिभाइ (क) राजा समदि धरि जाइ (ख) माया तिसु ठाइ (ग) २. खमावणि करइ (क) खिउ लम करउ (ख) सबहि कुमर सौं विमति करइ (ग) ३. माला जाइ धरि (क) कलण सिरि धरइ (ग)

(२६५) १. अगासि (क) २. उपने (क) उप्पने (ग) ३. परवत (क ग) पव्वय (ख)

(२६६) १. वण माहि (क ख ग) २. उदधिमाला रही तिसु ठाइ (ग) ३. वात (क) वरात (ख) वरसेइ (ग) ४. कुमर मन (क) कमर कहु (ख ग) ५. भान (क) भानु (ख ग) ६. विवाहण (क ख ग) मूल प्रति वण के स्थान-पर मण

(२६७) १. ऋषि (ग) २. उबचरी (ग) ३. तौ यह नारि भानु कहु ठया (ग)

(२६८) १. तुम (क) तुम्हि (ग) २. आत्थि (ग) करि अजोडि (ग) ४. बहोडि (क ख) ५. भिलन का (ख)

ग —नारद वचनहि अइसा भया, आपण भेस भील ठया (ग)

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

धणही कांड विसाले हाथ, उतिरि मिल्यउ तिनि के साथ ।
पवण वेग सो आगय गयउ, देइ आखर परिण उभउ भयउ ।२९९।

हुउ बटवाल नारायण तणउ, देइ दाण मुहि लागइ घणउ ।
चढ़ी वस्तु आपु मुहि जोगु, जइसे जाण देइ सबु लोगु ।।३००।।

महलउ भणइ निसुणि मह वयणु, चढ़ी वस्त तू मागइ कवणु ।
अर्थ दर्बु सोनो तु लेहि, हम कहु जाण अगहुडउ देइ ।।३०१।।

भीलु रिसाइ देइ तब जाण, आइसी परि किम्ब लाभइ जाण ।
भली वस्त जो तुम पह आइ, सो मुहि आपि अगहुंडे जाहि ।३०२।

तउ महलउ जंपइ मुहि चाहि, एक कुम्वरि मोपहु इह आहि ।
हरिनंदण कहु परणी जोइ, अरे सम्बर किम मांगइ सोइ ।३०३।

---

(२९९) १. घणही (क) धणुही (ख) धनुष (ग) २. सजि करि सर ले हाथि (क) बाण विसाले हाथि (ख) कटारी विसाहल हाथ (ग) ३. तिन कइ (क) तिन्ह ही (ख ग) ४. पुणि उठि मिल्या (ग) ५. ले आखल (क) बइ आखल (ख) वेइ अविहु तब ऊभा भया (ग) ६. तब (क) फुणि (ख)

(३००) १. वस्त (क) बाणा (ख) वस्तु (ग) २. जोगि (क) लोगु (ख) ३. जिउ हुउ

(३०१) १. महिला (क ग) २. सुणहि (क) ३. मो (क) ४. अरथ (क) अरथु (ख ग) ५. दरबु (ख ग) देखि (क) ६. तं (क) ७. लेहु (क) लोहि (ख) ८. आगे (क) अगुहडे (ख) वेगि जाण (ग)

(३०२) १. भिल्लु (ख) २. आण (क ख ग) ३. एसी (क) ४. बडी (ग) ५. आहि (क ख) अछहे (ग) ६. लागहु (क) अघचडउ (ख) सोहु हम वेहु भिलु हम कहुं (ग)

(३०३) १. चाहि (ख) २. ओ मो पहि (क) इह मो पहि (ख) यह मो पहि (ग) ३. सोइ (ख) ४. सबर (क) समर (ख) नोट—तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

भणइ[1] वीर[2] यह आफहि[3] मोहि, जइ सइ[4] बाट जाण द्यो[5] तोहि ।
महलहु कोपि पयंपइ[6] ताहि, अरे भिलु [7]तोहि जुगत न आहि ।३०४।

निसुणइ[1] महल[2] कहइ विचारु, हउ नारायण तणउ कुमार ।
[3]इहखोल जिन करहु संदेहु, उदधिमाल तुमि[4] मो कहु देहु ॥३०५॥

महलउ बोलइ रे अचगले,[1] झूठउ[2] बहुत कहइ अतिगले[3] ।
तीनि खंड जो पुहमि नरेसु, तिहि के पूतहि[4] आइसु[5] बेसु ॥३०६॥

बाट छोडि तउ ऊवट[1] चले,[2] उहि[3] पह भील कोडी दुइ[4] मिले ।
भणइ सबारु[5] नहि मुहि[6] छोडि, बलु करि कन्या लइय अहोडी[7] ।३०७।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बल पूर्वक छीन लेना

छीनि कुम्वरि तहि[1] लइ पराण, फुणि सो बाहुडि चल्यउ[2] विम्वाण ।
भीलु देखि सो मनु अहि डरइ, करण[3] कलापु कुवरि सो करइ ।३०८।

---

(३०४) १. मुहि (क) इह (ख) यह (ग) २. भिल्लु (ग) ३. सचपहि मोहि (ग) ४. जेसे (क) ५. दो (क) दिउ (ख) नातरु जाणक देऊ तोहि (ग) ६. भणइ (क) चंपइ (ख ग) ७. तुहि जुगती न आहि (क ख)

ग प्रति में—हरि नंदन कहु परणो जोइ, अरे भिल्लु किउ मागहि सोइ ।

(३०५) १. सुणि (ग) २. महिले (क) माहतो (ख) महिला (ग) ३. एणि वयणि (क) दूसर बात मत (ग) ४. तुम्हि आयो एहि (क) तुहि मुहि कहु देहु (ख) हम कहु देउ (ग)

(३०६) १. अवगले (क) महिला कोपि सु तब परजलो (ग) २. जुट्ठि (क) ३. आगले (क ख) झूठा वचन कहवहि हो भिली (ग) ४ पुत्र (क) पूत कि (ख) प्रदुन (ग) ५. कवणु इह वेसि (क) अइसउ भेसु (ख) अइसा वेसु (ग)

(३०७) १. उवरे २. (ग) चलइ (क) चले (ख) चलिउ मूलप्रति में 'चलोउ' (ग) ३. उठि (ख) तापहि (ग) ४. इकं (क ग) ५. कुमर (क) सधारू (ख ग) मूल प्रति में 'सघरु' ६. हम (ग) ७. यहोडि (क ख) अजोडि (ग)

(३०८) १. सो लिये पराणि (क) सोज कुवर तिन्हि लई पराण (ग) २. चले (क) चलिउ (ख ग) ३. मरण (ख) करुण (ग) मत ए रूप कुमर ए करिउ (ग)

पहली मयरण कुवर[1] कंहु[2] वरी, दुजे[3] भानु विवाहरण चली ।
नारद निसुणी हमारी बात, अब[4] हौ परी भील के[5] हाथ ॥३०६॥

अब मोहि पंच परम गुण सरणा, लिउ सन्यास[1] होइ किन मरणा ।
तउ नारद मन भयो[2] संदेहु, बुरो[3] वयरण इनि आखिहु एहु[4] ॥३१०॥

तउ[1] नारद जंपइ तंखिरणी, कंद्रप कला करइ आपरणी ।
लखरण बतीस कराथमय[2] अंगु, रूप आपरणौ भयो अरणंगु ॥३११॥

उदधिमाल सुंदरि[1] समझाइ, फुरिण बिमारण सो चलिउ सभाइ ।
चलत विमारण न लागी बार, गये[2] बारम्वइ के पइसार ॥३१२॥

देखि नयरु बोलइ परदवरणु, दिपइ पदारथ मोती रयरणु ।
धनुक[1] कंचरण दीसइ भरी, नारद वसइ कवरण उह[2] पुरी ॥३१३॥

---

(३०६) १. कुवरी (क) २. चली (ग) ३. कजइ (क ग) दुइजइ (ख) अबहू (क) अबहुउ (ख) इही (ग) ५. कइ (ख ग)

(३१०) १. ले चारित किम हो सहि मरणु (क) ले मासा जसु होवइ मरणं (ग) सील सथास सिउ हुइ किन मरण (ग) २. पडिउ (क ख) पइयो (ग) ३. बोरउ (क) ४. मोहि (क)

(३११) १. उठि (क) २. करणचन (क) करणइमइ (ग)

(३१२) १. तब (ग) चले विमारिण बचंत मनु लाइ (ग) २. गये नगर द्वारिका मझार (क) गए बारमइ कियवइ सारू (ख) गया बरबइ नयर दुवारि (ग)

(३१३) १. धन करण (क ख ग) २. ए (क) इह (ख) ग प्रति में यह पद्य नहीं है ।

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

वस्तुबंध—भणइ नारद निसुणि परदवण ।

[1]यह तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माझ सायरहं णि[2]च्चल ।
[3]जंमि भूमिय [4]अथि तुव, सुद्ध फटिक म[5]णि जणित उज्जल ॥
कुवा [6]वाडिउ च वणाथर बहु ध[7]वहर आवास ।
[8]पहुपयाल जिणवर भुवण प[9]उलि कोट चोपास ॥३१४॥
निसुणि ज[1]पइ मयणु वरवीर, मु[2]झ वयणु नारद निसुणि ।
[3]फुडउ कहहि एहु गुझु रखहि, दे[4]खि मयणु णिय चित्तु दइ ॥
जो जहि तणउ अवासु ॥३१५॥

चौपाई

[1]माझ नयरि धवल हरु उत्त[2]गु, पंच वर्ण मणि जडिउ सुचंगु ।
गरुड धुजा सोहइ [3]वहु घणउ, [4]वंहु अवास सु नारायण तणउ ॥३१६॥

(३१४) १. एह बसइ (क) यह कहियइ (ख) यह ऊंचो (ग) २. सचंगी (क) हुनिहचल (ख) हयवुधरि (ग) ३. जम्म (क ख) जनम (ग) छंद तुमहु (क) इह माथि तुव (ख ग) करइ राज इकु छत्ति सो हरि (ग प्रति में यह चरण पहले के स्थान पर है। ५. सो वन्न वन्नी (क) जडित (ख) ६. वाडी वयण वर (क) वाडिउ वयण पथर (ख) वापी वाग वण (ग) ७. भवल (क ख ग) ८. वहु पयार (क) ९. पोवलि कोर चोपास (क) मझु वयण नारद निसुणि भुवणि कितवणइ तासु (ख) कंचन कलसिहि दीपतिहि बसइ भूवण चउपास (ग)

(३१५) १. पयंपइ (ग) २. मोहि (ग) ३. फुडउ मुझहि गुह्य रखहि (क) कहहु साचा जिन गुज्झ राखहु (ग) ४. कवण गेहि मुह तणउ सयल चरित मोहि सयल अखहि (क) कवणु गेंहु महु कहु तणउ सवु चवहि महु सरसु अक्खर (ख) कवणु गेह इहु किसण तणो। सयल भेवु हम वेगि भाखहु (ग)

(३१६) १. मझि (क ग) मझु (ख) २. जडिय (क) अडिउ (ख) जडे (ग) मूलपाठ चडिउ ३. तव खिणउ (क) बहु घणा (ख) ४. एह (क) बहु (ग)

सिय[1] धुजा डोलइ[2] चोपास, वह[3] जाणइ बलिभद्र अवास ।
जहि[4] धुज[5] मेढे[6] दीसइ देव, वह[7] मंदिर जाणइ वसुदेव ॥३१७॥

जिहि धुजा बिजाहर सहिनाण, वंभण वइठे पढइ पुराण ।
जहि कलियलु वहु सूझइ[1] घणउ, वह अवासु सतिभामा तणउ[2] ।३१८।

कलकमाल जस[1] उदो करंत, जह वह धुजा दीसइ[2] फहरंत[3] ।
मणिगज[4] मणि सहि चउपास, वह तुहि[5] माता तणउ अवास ॥३१९॥

निसुणि वयण हरषिउ[1] परदवणु, तिहि[2] को चरितु न जाणै कवणु।
उतरि विमाणति उभउ भयउ, फुणि सो मयणु नयर मा[3]गयउ ।३२०।

प्रद्युम्न को भानुकुमार का आते हुए देखना

चवरंग दल सयन[1] संजूत, भानकुवर[2] दीठउ आवंतु ।
तव विद्या पूछइ परदम्वनु, यह कलयलुसिह[3] आवइ कम्वनु[4] ।३२१।

---

(३१७) १. सिय (क) २. लहकइ (क) डोलहि (ख) डोलें (ग) ३. ए आणइ (क) उ जाणइ (ख, ग) ४. जिहि (क) जहि (ख) जाहि (ग) ५. धज्जु (क) धुजा (उ) ध्वजा (ग) ६. मीढा (क) मीढे (ख) मढ (ग) ७. उह (क ख ग) मूल प्रति में 'सिष'

(३१८) १. सूझइ (क) सुणियं (ग) सूझइ (ख) २. भणउ (क ख ग)

(३१९) १. सुजइ दइ (क) सुनि उदउ (ख) बहु उदो (ग) २. दिपइ (क) ३. फरकंति (क) ४. मरकति मणि दीसइ चुहु पासि (क) जाहि बहु धुजा दीसहि चउपासि (ख) मर्गज मणि दीसहि जिसु पास (ग) ५. उह (क) तुहि (ख) तुहु (ग)

(३२०) १. बोल्या (ग) २. तिसु का (ग) ३. माहि (क) महि (ख ग)

(३२१) १. सेन (क) सइन (ग) २. भानु कुवरू आवइ निरुतु (ग) ३. कलियल सु (क) कलियर स्यउ (ग) ४. कवणु (क ख) कउण (ग)

निसुणि मयण तुहि कही विचारु, यह हरि नंदनु भानु कुमारु ।
इहि लगि नयरी बहुत उछाहु, यह जु कुवरु जइ तणउ विवाहु ॥३२२॥

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

तहा मयण मन करइ उपाउ, अब इहकउ भानउ भरिवाउ ।
बूढ वेस विप्र को करइ, चंचल तुरिय मयायउ करइ ॥३२३॥

चंचल तुरीयउ गहिरी हिंस, चार्‌यो पाय पखारे दीस ।
चारि चारि आंगुल ताके कान, राग बाग पहचाणइ सान ॥३२४॥

इक सोवन वाखर वाखर्‌यउ, पकरी बाग आगेहुइ चलिउ ।
भान कुवर देख्यो एकलउ, बाभण बूढउ घोरो भलउ ॥३२५॥

घोरो देखि भान मन रलउ, पूछइ बात विप्र कहु चलिउ ।
फुणि तहि बाभणु पूछिउ तहा, यह घोड़ो लइ जंहहि कहा ॥३२६॥

(३२२) १. एहि लगि (क) इह बर (ग) २. एह सु (क) इह सु (ख ग) ३. जिह (क) जाहि (ख) जिस (ग)

(३२३) १. तबहि (क ग) २. बहु (ग) ३. इब (ख) ४. इसका (ग) इहि कर (ख) ५. बूढउ (क ख) बूढा (ग) ६. तुरी (क ग) तुरिउ (ख) ७. मायामई (ग) मायामउ (ख) मयण रचि धरई (ग)

(३२४) १. गुहीरी हासु (क) आगइ आरसी (ग) २. पाउ (क) पाय (ख) गाव (ग) ३. परषालिय (क) परवाले (ख ग) ४. ए तासु (क ख) ५. चारइ (क) चारिसु (ख) ६. जिन्ह के (क) तिन्ह के (ख) जिसुके (ग) ७. पिछाणइ (क) पहचाणइ (ख] ८. भानु (क ख)

(३२५) १. साखति सोवन अरु पाखरउ (क ग) २. पाखर पाखरियउ (क ख) ३. पकडि (क ख ग) ४. आघेरउ (क) आगइ (ख ग) ५. घोडउ (क ख) घोडा (ग)

(३२६) १. घोडा देखत जम मनु चलिउ (ग) २. पूछण (क ख ग) ३. चले चाल्यो किहा (ग) ४. जाइसि (क)

बाभणु[1] ठवहुक घोडौ हुइ आपणउ, लजिउं[2] समुद[3] थालुका तँणउ ।
निसुणिउ भान कुम्वर कौ नाउ, तउ तुरंगु आणिउ तिहि ठाइ।३२७।
भान कुवर मन[1] उपनो भाउ, बहुतु[2] विप्र कहु कियउ पसाउ ।
निसुणि[3] विप्र हउ अखएहु,[4] जो[5] मागइ सो तोकहु देउ ॥३२८॥
तवहि विप्रु मागइ सतिभाइ, भानकुवर कँ मनु[1] न सुहाइ[2] ।
विलखउ भानकुवर[3] मन भयउ,[4] मान भंगु इहि मेरउ कियउ।३२९।
भणइ विप्र[1] हौ[2] आखउ तोहि, इतनउ[3] जे न सकहि दइ मोहि ।
मइ तो कहुदीनउ[4] सतभाइ, परिहा[5] जउ देखहि दौडाइ[6] ॥३३०॥

भानुकुमार का घोड़े पर चढ़ना

निसुणि वयणु कुवर मन रुल्यउ, कोपारूढु[1] तुरगइ[2] चढिउ[3] ।
विषमु तुरंगु न[4] सकउ सहारि, घोड़े[5] घाल्यो भानु अखारि ॥३३१॥

---

(३२७) १. बंभण विरस कहइ आपणउ (क) बाभणु गवडु कहइ आपणउ (ख) बंभण नाउ कहइ आपणा (ग) २. तेजी एह (क ग) ते जिउ (ख) ३. रण समदह तणउ (क) समुदह तणा (ग)

(३२८) १. वहु (ग) २. बहुति (क) बहुतु (ग) ३. निसुण (ख) ४. इसउ करेउ (ग) अखो तोहि (क) आखउ तोहि (ख) ५. सो आयो (क) तुझ जोगी (ग)

(३२९) १. मनहु (ख) २. सनांहि (ग) ३. वदन (क) ४. तब (ग) को। (क)

(३३०) १. हुइ (क) कहुउ (ग) २. आयो (ग) ३. मांगिउ सके न बहुसी कोइ (क) इतनउ जे न सकहि दइ मोहि (ख) मांग्या देइ न सकइ मोहि (ग) ४. बोलिउ सतिभाउ दीना रुपसाउ (ग) ५. परहुदाउ (क) अब जे इस कहुं लइ दउडाइ (ग) ६. दउडाइ (ख) मूल प्रति—मांगिउ अइ सकइ वे मोहि

(३३१) १. कोप रूपि सु (ग) २. तुरंगम (क) लइ चलिउ (ख) ४. नवि सहो (क) ५. भानकुमार घालिउ अखारि (क) घोडइ दीनउ भानु पु राडि (ख) घोडे पाड्या भानुकुमार (ग)

पढिउ भानु[1] यहु वडउ त्रिजोगु, हासी करइ सभा को लोगु ।
यह[2] नारायणतनो कुमारु, या[3] समु नाही अवर असवारु ॥३३२॥
भणइ विप्र तुम काहे[1] रले, इहि तरूणे पह[2] बूढे भले ।
दूरह[3] ते करि आवउ आस, भानकुवर तइ कियउ निरास ॥३३३॥
हलहर भणइ[1] विप्र जिण[2] डरहु, इन्ह[3] घोडे किन तुम ही चढउ ।
हौं बूढउ चाहौं[4] टेकणौ, दिखलाउ[5] पवरिष[6] आपणउ ॥३३४॥

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

जण दस बीस[1] कुवर पाठए, विप्रह[2] तुरी चढावण गए ।
तउ बाभण अति भारउ होइ, तिहिके[3] कहे न सटकइ सोइ ।३३५।
तुरीय चढावण आयो भाणु, उलगाणे[1] को नाही मानु ।
जण दस बीस कियउ भरिवाउ, चडिवि भान गलि दीनउ पाउ ३३६
चढइ विप्र असवारिउ करइ, अंतरिख भो[1] घोरो[2] फिरइ ।
दिठउ सभा अचंभो भयउ, चमतकार करि उपइ[3] गयउ ॥३३७॥

(३३२) १. अब हुवो (क) तब भया (ग) २. ए (क) इहु (ख ग) ३. समान (क) इहि समु (ख) इसु सरि (ग)

(३३३) १. हंसे (ख) २. हम (क) ते हम (ग) ३. दूर थकी (क)

(३३४) १. कहइ (क) २. मत अवहु (ग) ३. एणि को (क ख) इसु घोडइ तुम वेगहु चढिउ (ग) ४. चाहउ विकाणउ (क) चाहउ वेकणउ (ख) चालउ टेकणा (ग) ५. दिखलावउ (ख) ६. बल पौरष (क)

(३३५) १. दीयम (ख) २. तू चढावण भए (क) ३. तिहु कइ कियइ न उठइ सोइ (क) तिन्ह कइ कहइ मइ चाढइ सोइ (ख) तिन के कहे न सकइ चढि सोइ (ग)

(३३६) १. उलगाण (क) उलगणो (ख) उलगण (ग) २. चढयो तुरंग विप्र। गलि पाउ (ग) मूलप्रति—उलमाणे कउमाथु न आहि

(३३७) १. हुइ (क ग) २. मागे (ख) ३. ऊपमि (क ग)

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

फुणि सो रूप खधाइ[1] होइ, द्वौ घोड़े निपजावइ सोइ ।
वन उद्यान रावलुहो[2] जहा, घोड़े खावी[3] पहुतउ तहा ॥३३८॥
वराह[1] मयण पहुतउ जाइ, तउ[2] रखवाले उठे रिसाइ ।
इहु वण चरण न पाव कोइ, काटइ[3] घास विगुचनि होइ ॥३३९॥
कोपि मयण मन[1] रहउ सहारि, रखवालेसहु[2] कहयउ हकारि[3] ।
कछुस[4] मोलु आइ तुम्हि लेहु, भूखे तुरी चरण किन देहु[5] ॥३४०॥
तवइ[1] भइ तिन्हु की मतु हारि, काम मूदरी देइ उतारि ।
रखवाले वौलइ[2] वइसाइ, दुइ घोड़े ए[3] चरहु अघाइ ॥३४१॥
फिरि फिरि घोड़ो वण मा चरइ, तर[1] की माटी उपर करइ ।
तउ रखवाले कूटइ[2] हीयउ, इ घोड़े वण चोपटु[3] कीयउ ॥३४२॥
दीनी[1] तिनसु काम मूदरी, वाहुरी[2] हाथ मयण कै[3] चढी ।
सो वर वीर पहुतउ तहा, सतिभामा की वाडी जहा ॥३४३॥

---

(३३८) १. खुघाइ (क ग) २. रावल (क) रखवालउ (ख) सुरावल (ग) ३. रचि (क) खइचि (ख) खंची (ग)

(३३९) १. वण महि (क ख ग) २. कावउ खास चरावइ आइ (क) काटइ घासु विगूचइ सोइ (ख) तीसरा चौथा चरण—क प्रति—तव रखवाला बोलइ एम घास रावलउ काटइ केम (क) ३. कापइ तासु विभावइ सोइ (ख) काटइ घास विगूचइ सोइ (ग)

(३४०) स_कोप (क) जिन (ग) २. मंगाहि जम हारि (ख) बुलाइ (ग) ४. कछु मोल तुम हम पहि लेहु (क) कछू मोलि तुम्हि मापणउ लेहु (ग) ५. तुम (क)

(३४१) १. तव कीनो (ग) २. बोलहि (क) बोले (ग) ३. लेहु (ग) मूलप्रति—चइथइ

(३४२) १. तल की (क ख ग) २. लुंदहि (ख) पीटहि (ग) ३. चउपटु (ग) चउपट (ख) अन्तिम चरण क प्रति में नहीं है ।

(३४३) १. मूंदडी (क ख) २. दीनी तहि (ग) ३. कुमर के पडी (क)

बाडि मयण पहुतउ जाइ, बहुत्त विरख दीठे ता ठाइ।
कोइ न जाणइ जिनकी आदि, बहुत भाति फूली फुलवादि।३४४।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

आइ जुही पाडल[1] कचनारु, वबलसिरि[2] वेलु तिहि सारु।
कूंजउ महकइ अरु[3] कणवीरु, रा[4] चंपउ[5] केवरउ गहीरु[6] ॥३४५॥

कुंहु[1] टगरु मंदारु सिदूरु, जहि बंधे महइ[2] सरोरु[3]।
दम्वणा[4] मरुवा केलि अणंत[5], निवली[6] महमहइ अनंत ॥३४६॥

आम जंभीर सदाफल घणे, बहुत विरख तह दाडिम्ब[1] तणे।
केला दाख बिजउरे[2] चारु, नारिंग[3] करुणा[4] खीप[5] अपार ॥३४७॥

नीवू पिंडखजूरी संख[1], खिरणी लवंग छुहारी दाख।
नारिकेर फोफल बहु फले, बेल कइथ घणे आवले ॥३४८॥

(३४४) १. तिह (क) तहि (ख)

(३४५) १. पाटल (क) पाडले (ख) २. वाउल सेवती सो सभिचार (क) वावल (ख) ३. अवर (ख) ४. राइ (क) राय (ख) ५. चंपा (क) ६. केतकी गहीर (क) केवड्ड हीर (ग)

(३४६) कुंद अगर मंदार सिंदूर (क) कूदु टगर मधुर सिंदूर (ख) २. मह महइ (क) महकइ (ख) ३. सलरीव (ख) ४. दमणउ (क) दवणा (ख) ५. महंत (ख) ६. नीम्बू (क) नेवालो (ख)

(३४७) १. अगणित गिणे (क) जाजिण घणे (ख) २. बिजौरी (क) ३. नारिलो (क) करणा (क) करुणा (ख) ५. खीप (क ख) मूलप्रति में 'खीपि' पाठ है

(३४८) १. अणंत (क) असंख (ख) मूलप्रति में कइथ के स्थान परइथ पाठ है

नोट—३४४ से ३४८ तक के पद्य 'ग' प्रति में नहीं है।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

बाडी देखी अचंभिउ वीर, तव मन चितइ साहस धीर।
जइसइ लोग न जाणइ[1] कोइ, बांदर[2] दुइ निपजावइ सोइ ॥३४९॥

तउ बंदर[1] दीने मुकलाइ, तिन सब बाडी घाली खाइ।
जो फुलवाडि[2] हुती बहु भाति, वंदर घाली सयल निपाति।३५०।

फुणि[1] ते बंदर पइठे[2] मोडि, रूख[3] विरख सब घाले तोडि।
सब[4] फल हुली तव संचरी, लउपट[5] करि सब बाडी धरी ॥३५१॥

लंका जइसी[1] की[2] हणवंत, तिम बारी की[3] वालखयंत।
भानु कुम्वर हो[4] बैठो जहा, मालि जाइ पुकारचो तहा ॥३५२॥

मालि भणइ[1] दुइ कर जोडि, मो[2*3] जिन सामी लावहु खोडि।
वंदर[4] दूसै[5] पइठै[6] आय, तिहि[7] सब बाडी घाली खाइ ॥३५३॥

जवति[1] माली करी पुकार, रथ चढी कुम्वर लए हथियार।
पवण वेग सो धायउ[2] तहा, बंदर[3] वाडी तोरी[4] जहा ॥३५४॥

---

(३४९) १. जाणइ (क ख ग) २. वानर (क) बंदर (ख ग)

(३५०) १. वानर (क) २. फुलवाडि (ग) मूलप्रति में फुलवारि पाठ है। यह चौपई 'ख' प्रति में नहीं है।

(३५१) १. पुणते (ख) २. पठए (क) ३. रूख (ख) ४. सब्ब फलाहुली (ख) फुलवाडी (ग) ५. चउपर वाडी करि सवि धरी (क ख) चउड चपट लिहू बाडी करी (ग) मूलप्रति में 'बेव पाठ है

(३५२) १. जिस करी (क) जेमसी (ग) २. करी (क ख ग) ३. लोधी पु लपंत (क) किय काल कयंति (ख) तउ वाडी बंदरि खाधन्ति (ग) ४. छइ (क) था (ख)

(३५३) १. विनवइ (क ग) २. मुझ (क) मोहे (ग) ३. मत (क) ४. वनचर (क) ५. बाडी (क) दुइ (ख ग) ६. इहि बइठा आइ (ग) दुइ तहि पइठे आइ (ख) ७. तिन (क) तिन्ह (ख) तिम्ह (ग)

(३५४) १. जव तिहि (क ख ग) २. आउ (क) पहुता (ग) ३. वानर (क) ४. तोडइ (क) तोडी (ख) तोडहि (ग)

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना करना

तउ मयरधउ काही[१] करइ, मायामइ[२] मछर रचि[३] धरइ।
तिहि ठा भानु सपतउ आइ[४], खाजतु[५] मछर[६] चलिउ[७] पलाइ ॥३५५॥
भानु भाजि णिय[१] मंदिरि गयउ, पहरकु दिवसु आइ[२] तिह भइउ।
तंखिणि बहु नरकामिणी[३] मिली, भानइ तेल चढावण चली ॥३५६॥

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

तेल[१] चढावहि[२] करइ सिंगारु, सूहउ[३] गावइ मंगलुचारु।
रथ चढि कुवरिति[४] उभीभइ, फुणि मटियारणुउ[५] पूजण गइ ॥३५७॥
तबइ मयण सो काहो[१] करइ, ऊंटु तुरंगु जोति[२] रथ चढइ[३]।
ऊटू तुरंगु सुअठे[४] अरडाइ, भानु रालि[५] घोडउ घर जाइ ॥३५८॥
पडिउ भानु उइ[१] बिलखीभइ, गावत[२] आइ रोवति गइ।
ऊद्द तुरंग उठे अरराइ, असगुन[३] भयो न जाण न जाइ ॥३५९॥

---

(३५५) १. काहउ (क) अइसा (ग) २. मायारूप (ग) ३. तह करइ (क) रचिति धरइ (ग) ४. मूलपाठ तहां जाउ (ग) भानुकुमर तउ पहुंता आइ (ग) ५. खाजत (क) खाजनू (ख) ६. माछर (क ग)—७. चलउ (क ख) खिरिण रही सो चली पलाइ (ग)

(३५६) १. निज (क ग) २. आइ तिह भयो (क) तहां तिसु भया (ग) ३. नयरी (ग)

(३५७) १. तिलु (ख) २. चढुमहि (ख) ३. अइसइ (क ख) तब से (ग) ४. कुवरति (क) ते (ख)—चढयो कुंवरु रथि आगे भयो (ग) ५ मटियाणी (क) मढियाणउ (ख) मवियाणउ (ग)

(३५८) १. तहि अइसो करइ (ग) २. जोडि (ग) ३. चलइ (क ख) धरइ (ग) ४. उठया अरडाइ (क ख) तबहि उर सो करइ पुकार (ग) ५. असवण भयो न जणइ सुहाइ (क) घोडा भागा भानहि मार (ग)

(३५९) १. तब बिलखा भया (ग) २. गावै थी सो घर कहु गया (ग) ३. असवणु (ख) नोट—यह पद्य क प्रति में नहीं है।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

फुणि मयरद्धउ बंभणु भयउ, कर[1] धोवती कमंडलु लयउ ।
लाठी टेकतु चलिउ सभाइ, खणु बावडी पहूतउ जाइ[2] ॥३६०॥
उभो भयउ जाइ सो तहा, सतिभामा की चेरी[1] जहा ।
भूखउ बामणु जेम्वणु[2] करहु, पाणिउ पियउ[3] कमंडलु भरहु ॥३६१॥
फुणि चेडी जंपइ तंखणी[1], यह बापी सतिभामा तणी ।
[2]इणि ठा पुरिषु न पावइ[3] जाण, तू कत आयउ विप्र अयाण ॥३६२॥
तउ बंभण कोपिउ तिणकाल[1], किन्हहू[2] के सिर मूडे हि वाल[3] ।
[4]किन्हहू नाक कान ते खुटी[5], फुणि बंभणु पइठउ[6] बावडी ॥३६३॥

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

फुणि तहि बुधि उपाइ घणी, सुइरी[1] विद्या जल सोखणी ।
पूरि कमंडलु निकलिउ सोइ, सूकी बावड़ी[2] रीति होइ ॥३६४॥

कमंडलु के जल को गिरा देना

सूकी देखि अचंभी नारि, गो बाभण चोहटे[1] मझारि ।
धाइ लड़ी बाहुडी कर गयउ, फुलि[2] कमंडलु नदी होइ वहउ ॥३६५॥

---

(३६०) १. तलि (ग) २. श्राइ (क ग)

(३६१) १. बावडी (क) चेडी (ख ग) २. जोमण (क) जेमणु (ख) जीवणु (ग) ३. पाणी पिए (क) पाणी देहु (ग)

(३६२) १. ला तणी (क) २. इहि ठा (ख ग) ३. आवइ (क)

(३६३) १. तिणि काल (क) तहि बाल (ख) तिहूताल (ग) २. किण्हहूकउ (क) किन्हही के (ख) तिन्ह के (ग) ३. बाल (क ख ग) ४. किनहू (क) सबे (ग) ५. खुडी (क ख ग) इव (क) ६. बइठावउ (ग) मूलप्रति में 'तिताल' पाठ है

(३६४) १. सुमरी (क) सुमरी (ख) संवरी (ग) २. थाइ (ग)

(३६५) १. चउहटे (ख) ते पहुती सतभामा बारि (ग) २. फूटि (ख)

बूडरण लागी पारणी हाट, भरणहि वारिणए पाडी पाठ।
नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ॥३६६॥

प्रद्युम्न का मायामयी मेंढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

फुरिण तहि मयरण मित्र[1] चितयउ, माया रूपी मेंढो[2] कियउ।
पहुतउ वसुदेव तरणौ[3] खंधार, कठीया जाइ जरणाइ सार॥३६७॥
तउ वसुदिउ[1] बोलइ सतभाउ,[2] वेगउ तहा भीतरि[3] हकराउ[4]।
कठिया जाइ संदेसउ कहिउ,[5] लै[6] मैंढो भीतरि गयउ॥३६८॥
छोटो[1] मैढो धरी न संक,[2] विहसि[3] राउ तव छाडी टंक।
तउ मयरद्धउ बाहु कहइ, बात एम की कारगु अहइ[4]॥३६९॥

(३६६) क प्रति में—
कमंडलु भरि चलिउ बाजारि, करयो पडिउ कंमडलु सारि।
फूटि कमंडलु नद्दू तिह चली, लोक उत्तर पूछइ वेवली॥३७४॥
पूछइ परिणहारी बइठे हाट, भरणहि वारिणए पाखी हाट।
नगर लोग सब कौतिग लिउ, इतनो करि तहां थी चलिउ॥३७५॥
ख प्रति
बूडरण लागी पारणी हृट, भरणहि वारिणए पाडी पाठ।
नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहा ते चलिउ॥३७१॥
लोग महाजन कौतिग मिल्यो, इतना करि बाहुडि चाल्यो (ग)
ग प्रति
बंभरण जाइ जरणाईसार, गय बंभरण चउहटै मझारि॥३५८॥
फारि कमंडलु नदी हुइ चली, नगर उनी बोलइ तब बली।
बूमरण लागउ सभु बाजार, सवइ लोग मिलि करहि पुकार॥३५९॥

(३६७) १. मनु (क) बहुडि (ग) मंतु (ख) २. मढिउ (क) मेंढउ (ख) माटो (ग) ३. के द्वारि (ग)

(३६८) १. वसुदेउ (क) वसुहिउ (ख) वासुदेव (ग) २. तिहि ठाइ (ग) ३. सातरिहु (ख) वेढा तुहहु भीतरहु कराउ (ख) ४. बुलाइ (ग) ५. कियउ (ख) चयउ (ग) ६. लै भागउ बहु (क) ले मींढा उह्व भीतरि गयो (ख ग)

(३६९) १. डाडिउ (क) छोडिउ (ख) छूटा (ग) २. संख (क) संग (ग) ३. विहसि रायणि ग्राडी साक (क) विहसि राय पुछ्ठ कडो ढंग (ख) विहसि राय तब बोलो ढंग (ग) ४. ग्रछइ (क ग) मूलपाठ ग्रहै

विहसि अणंगु पयंपइ ताहि, हुउ परदेसी बाभण आहि ।
दुखइ[1] टंक तुहारी देव, तउ हुउ[2] जीवत उबरउ केम्व ॥३७०॥

तउ जंपइ वसुदेउ बहोडी, इहिर वयण तुहि[1] नाही खोडी ।
मन आपणो धरइ जिन[2] संक, मेरी तूटि[3] जाइ किन टंक ॥३७१॥

तब तिन्हि मेहूउ[1] दीनउ छोडि, देखत सभा टांग गउ तोडि ।
तोडि टांग मैंढो आहूडिउ, वसुदेउ राउ भूमि[2] पडिगयउ ॥३७२॥

वशुदेउ राउ भूमि गिरि पडिउ, छपन कोटि[1] मन हासउ[2] भयउ ।
निहि ठा सिगली सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घर जाइ ॥३७३॥

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण
कर सत्यभामा के महल में जाना

कनक धोवती जनेउ धरै, द्वादस टीको चन्दन करै ।
च्यारि वेद आखूक[1] पढंत, पटराणी घर जायो पूत[2] ॥३७४॥

उभो भयो जाइ सीढार[1], कठिया जाइ जणाइ सार ।
जेते वाभण भीतर घणे, सतिभामा बरजे आपणे ॥३७५॥

---

(३७०) १ देखहु कत तुहारी सेव (क) २. तुह जिनवरउ मन मानउ देव (क) तउ हउ तुम्ह ते उबरउ केव (ग) 'हुउ' मूलप्रति में नहीं है ।

(३७१) १. तुम माही खोडि (क) २. मा (ख) न (ग) ३. टूट (क)

(३७२) १. मीढउ (क ख ग) टांग (ख) टंग (ग) २. भूमि गत (क) वासुदेव भूमहि गिर पड्यो (ग)

(३७३) १. कोडि (क ख ग) २. मिलि हासउ किउ (क) ग प्रति–हो वसुदेव कहा मह किया.................. ।

तासी पारै सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घरि जाइ

(३७४) ग प्रति में–करिहि कमंडलु धोती बंधि, द्वादश तिलक जनेउ कंठि ।
चारिउ वेद प्रचूक भणाइ, पटराणी घर पहुंता आइ ॥

१. अचूपके (ख) २. पहूत (क ख)

(३७५) १. जाइ सीह दुवारि (क ख) सुतासु (ग)

सुण्यो पढंतउ[१] उपनो भाउ, वह[२] बाभण भीतर हकराउ[३] ।
राणी तणउ हकारउ भयउ, लाठी टेकतु भीतर गयउ ॥३७६॥

अक्षत[१] मोरु हाथ करि लेइ, राणी जाइ[२] आसीका देइ ।
तूठी राणी करइ पसाउ, मागि विप्र जा[३] उपर भाउ ॥३७७॥

सिर कंपत बंभण जब कहइ, बोल तिहारो साचउ अहइ[१] ।
बयणु एकु ही आखउ[२] सारु, भूखउ बाभण देहु आहारु[३] ॥३७८॥

राणी तणउ पटायतु कहइ[१], भूखउ खरउ[२] करटहा[३] अहइ[४] ।
राणी आणइ[५] अर्थु भंडारु, एकुउ[६] मागइ एकु आहारु[७] ॥३७९॥

तुम विप्र कहत हहु भलउ, तुह्मि[१] वहु बाभणु हउ एकलउ[२] ।
वेद पुराण कहिउ जो[३] सारु, उतिमु एक आहि आहारु ॥३८०॥

बैठि[१] विप्र[२] उठ भोजन करहु, उपरा उपर काहे लडहु ।
एक ति उपरि तल[३] बैसरहि, अवरइ विप्र परसपर लडहि[४] ॥३८१॥

(३७६) १. पंडित (ग) २. इह (क) बहु (ख) इहि (ग) ३. बुलाइ (क) लेइ बुलाइ (ग) इकु संति कराइ (ख)

(३७७) १. अखत (ख) अखित (ग) २. कहु आशिष सो देइ (ग) ३. जिह (क) जह (ख) जिसु (ग)

(३७८) १. कयइ (ग) २. अपउ (क) ३. आधारु (ग)

(३७९) १. धणी ततउ पठाइतु कहइ (ख) २. चितु आहाइ (ग) सोहउ कसइ (क) ३. करहिहा अहइ (क) ४. कहइ (ख ग) ५. आपइ (क ख) आफइ (ग) ६. तू किउ (क) बहुवा (ख) हुउतउ (ग) ७. आधारु (ग)

(३८०) क प्रति में यह छन्द नहीं है। १. तुझि (ग) एकला (ग) ३. सो (ग)—'ख' प्रति में चौथा चरण नहीं है ।

(३८१) १. बैसि (क) बइसि (ख) बइसहु (ग) २. बंभण (ग) ३. एक ति विप्रति उपरि लडहि (क) ४. कलहि (ख)

निसुनहु बात परदवन तणी, मुकलाइ[1] विद्या जूभणी ।
उपराफहि[2] संभरण लहइ, सिर[3] कूटहि कुकुवार करहि ॥३८२॥
राणी बात कहइ समुभाइ, इतु[1] करटहानु[2] लागी वाइ[3] ।
दूरउ[4] होइ तहि[5] घालइ रालि[6], नातरु बाहिर देहि निकालि ॥३८३॥
तउ मयरधउ बोलइ बयणु, साधु[1] अघाणउ भूखे[2] कम्वणु ।
खुधा[3] वियापइ सुणइ विचारु[4], हमि कहु मूठिक देहि अहारु[5] ॥३८४॥
सतिभामा ता तउ[1] काही[2] करइ, कनक थालु तस[3] आगइ धरइ ।
बइसि विप्र तसु[4] भोजन करहु, उन[5] की बात सयल[6] परिहरहु ॥३८५॥
बैठउ[1] विप्रु[2] आघासणु[3] मारि, चकला दिनउ आगइ सारि ।
लेकर[4] दीनउ हाथु पखाल, आणिउ[5] लोणु परोसिउ थाल ॥३८६॥

---

(३८२) १. मुकलावइ (ख) २. उपरु (ग) पक्ते (ख) उपरि (ग) ३. सिर फूटहि कोलाहल करहि (क) सिर कूटहि कुवारउ करहि (ख) पीटहि सीसु कूक बहु करहि (ग)

(३८३) १. इते (ग) २. काइटा (क) कररहि (ग) ३. वाइ (क) पाइ (ग) ४. भलइ बुरउ (ख ग) ५. तउ (क) जउ (ग) ६. राखि (ग) मूलप्रति में 'बार' पाठ है

(३८४) १. साधु (क ख) २. भूखउ (ख) ३. त्रुभा वियापहि (ख) सुड़े विप्प (ग) ४. तू वासा (ख) ५. अधारु (ग)

(३८५) १. सब (क ग) २. हसी (ग) ३. तब आणि धराइ (ग) ४. तुम (क) तुम्ह (ख ग) ५. उन्ह की (ख ग) इनकी (क) ६. सवे (ग) मूलप्रति में 'सुन्ह की' पाठ है ।

(३८६) १. बइसउ (क) २. विपु (ख) ३. अघाणि (क) ४. लोटउ (क) ५. अण्पिउ (ख) नोट—यह छन्द 'ग' प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

चउरासी हाडी[1] ते[2] जाणि, व्यंजन[3] बहुत परोसे आणि ।
मांडे[4] वडे[5] परोसे तासु, सबु समेलि[6] गउ एकुइ गासु ॥३८७॥

भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी बैठि आइ ।
जेतउ घालइ सबु[1] संघरइ, वडे[2] भाग पातलि उवरइ[3] ॥३८८॥

बाभण भणइ निसुणि हो बाल, अधिक पेट मोहि उपजी ज्वाल ।
तिसु[1] तिसु लोगु सयलु परिहरयउ, मो आगे सबु कोडा[2] करहु ॥३८९॥

जहि जेम्वण[1] न्योते सबु लोगु, तितउ[2] परोसिउ बाभण जोगु ।
नारायणु कहु लाइ धरे, तेउ सयल विप्र संहरे ॥३९०॥

तउ राणी मन विलखी होइ, तिहि[1] तो खाइ सयल[2] रसोइ ।
यह[3] बाभणु अजहु न अघाइ, भूखउ भूखउ परिविलखाइ[4] ॥३९१॥

भयण वीरु[1] यहु वडउ बिजोगु, तइ नु[2] नयर सबु न्योत्यो लोगु ।
सो काहो जेम्वहिगे[3] आइ, इकुइ विसु न सकइ अघाइ ॥३९२॥

---

(३८७) १. विधि (ग) ते तउ (ग) ३. भोजन (ग) ४. मंडा (क) मांडे (ख ग) ५. बहुत (ग) ६. सकेलि (ख ग) सवनि कीयो एके गासु (क)

(३८८) १. ते तउ खाय (ख) २. बडइ (ख) ३. ऊवरइ (क) उबराइ (ख) मूलप्रति में 'ठाइ'

(३८९) १. निवलो लोग सबहि परिहरउ (ग) २. कूडा (क ग)

(३९०) १. जीमण (क ख) ज्योणार (ग) २. निउतउ (क) निउते (ख) निवंतिह (ग) ३. तिन्ह कइ उपज्या वडा वियोग (ग)

(३९१) १. इहतउ (क ख) इनतउ (ग) २. सबहि (र) ३. खाते लाडू नारायण खाइ (क) ४. बिललाइ (क ख ग)

(३९२) १. थाक (ख) विप्र (ग) २. नगर काज (ग) ३. जीमइगो (क) जोवहिगे (ख)

राणी चितह उपणी काणि, काहौ अवरु परोसो आणि ।
भूखउ बांभण काहो करइ, घालि आंगुली सो उ[1]खलइ ॥३९३॥
असो बांभण कोतिगु करइ, [1]सब मांडहौति उखली भरइ ।
मान भंगु राणी कहु कीयउ, मयणु विप्र तें खूडउ भयउ ॥३९४॥

प्रद्युम्न का विकृत रूप बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

मूंडी मूडि नली[1]यरा लयउ, निहुडिउ चलइ कु[2]बडा भयउ ।
बडे दां[3]त वि[4]रूपी देह, फु[5]णि सु[6]चलिउ माता के गेह ॥३९५॥
खण खण रुपिणि चडइ अवास, खण खण सो जोवइ चोपास ।
[1]मोस्यो नारद कह्यउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३९६॥
जे मुनि [1]वयण कहे पर[2]माण, ते सबई पूरे सहिनाण ।
[3]च्यारि अ[4]बते दीठे फले, अरु आं[5]चल दी[6]ठे पी[7]यरे ॥३९७॥
सुकी वाधी भरी सुनीर, [1]अपय जुगल भरि आए खीर ।
तउ रुपिणी मन [2]विभउ भयउ, [3]एते ब्रह्मचारि त[4]हा गयउ ॥३९८॥

---

(३९३) १. सब पाछउ भरइ (क) सो करइ (ख) ऐसा कौतिग बंभण करै (ग)

(३९४) १. सब माहुउ उखालि सो भरई (क) सब भाणहुउ उखलि सो भरइ (ख) सउ मंडा अखलि सो भरऊ (ग)

(३९५) १. कमंडलु हाथि (ख) नालियरु (ग) २. हूबउ भयो (क) भयउ (ख) होइ (ग) ३. दातारिव (क) दंत (ग) ४. विरुवी (ख) विरूपिय (ग) ५. बहुडि (क) ६. सुचलिउ (ख)

(३९६) १. मुहिस्यो (क) हमसी (ग) ख प्रति में प्रथम चरण नहीं है ।

(३९७) १. वचन (क) वच (ग) २. आखे (ग) ३. चारि (ख ग) ४. अम्बते ५. अंचल (ग) ६. दीसहि (क) हुये (ख ग) ७. पीयला (क)

(३९८) १. थाणय (क) पयोहर (ख) २. विसमो (क) विसमा (ग) विभउ (ग) ३. इतइउ तापसु वारेहि गया (ग) ४. कह भयउ (क)

नमस्कारु तब रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा[1] उच्चरइ ।
करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिंघासणु बैसण देइ ॥३९९॥
समाधान पूछइ समुभाइ, बहु भूखउ भूखउ चिल्लाइ ।
सखी बुलाइ जणाइ सार, जेंवण करहु म लावहु बार ॥४००॥
जीवण[1] करण उठी तंखिणी, सुन्दरी मयण[2] अगनि[3] थंभीणी ।
नाजु[4] न चुरइ चूल्हि धुंधाइ, बहु भूखउ भूखउ चिल्लाइ[5] ॥४०१॥
हो[1] सतिभाम कै घरि गयउ, कूर न पायो भूखउ भयउ[2] ।
जो[3] दीयो सो लीयो छीनि, तिनस्यो पुरी लाघण तीन ॥४०२॥
रूपणि चितइ[1] उपनी कारिंग, तउ लाडू[2] ति परोसे आणि ।
मास[3] दिवस को लाडु धरे, खूडे[4] रूप सबइ संघरे ॥४०३॥
आधु खाइ नारायण खाइ, दिवस पंच ज्यो रहइ अघाइ ।
तब रूपिणि मन विभी[1] कहइ, किछु किछु जाणउ यहु अहइ ॥४०४॥

---

(३९९) ३९८ के पश्चात् एक छन्द ग प्रति में और है जो निम्न प्रकार है—
तापस देखि उपना भाउ, तब रूपणी पूछई सतभाउ ।
स्वामी आगमणु किहां थी भया, एता ब्रह्मचरजु कहां ते लिया ॥
१. खेडउ (क) खूडउ (ख)

(४०१) १. पाक करण उठी तंखिणी, (क) २. सुमरी विद्या (ग) ३. अगनि (क) अगि (ख) अग्नि बंधणी (ग) ४. नाज न चढइ भूमि धूंजाइ (क) नाज न राभहि चूल्हि धुंधाइ (ख) अगिन बलइ चूल्हइ धूंधाइ (ग) ५. बिललाइ (क ग)

(४०२) तबहि मयण उठि मा पहि गया (ग) २. रहिउ (क) भयउ (ख) ३. सतिभामा सो (ग)

(४०३) १. चित (क) चितहि (ग) २. लघु लडू परसउ (ग) पदसे (क) ३. नाराइणु कहु लाडू धरे (ग) ४. खोडे बंभण सब संघरे (ग) मूलप्रति में 'बीर' पाठ है ।

(४०४) १. विभउ (ख) चिंतिहि बिसमाइ (ग)

तउ राणी मन विसमउ करइ, अइसइ पूतउ रहु[1] को धरइ ।
जइ[2] उपजइ तो कहसा न जाइ, किमु करि नारायण पतियाइ ॥४०५॥
तउ रूपिणी मनि भयो संदेहु, जमसंवर घर वाढिउ एहु ।
विद्या वलु इह[1] दीसइ घणाउ, यहु परभाउ अहि[2] विद्या तणउ ॥४०६॥
फुणिइ जे[1] पूछइ करि नयणु[2], लयउ[3] वरतु तुम्हि कारणु कवणु ।
तव रूपिणि पूछइ धरि भाउ, सामी कहहु आपणउ ठाउ ॥४०७॥
काहा तैं तुम्हि भो आगमणु, दीनी दिष्या[1] तुहि गुरु कवणु ।
जन्मभूमि हो पूछो तोहि, माता पिता पयासो[2] मोहि ॥४०८॥
तवहि रिसाणौ बोलइ सोइ, गुरु बाहिरी दीख[1] किमु होइ ।
गोतु नाम सो पूछइ ताहि[2], व्याहु विरधि जहि सनवधु आहि[3] ॥४०९॥
हम परदेस दिसंतर फिरहि, भीख[1] मांगि नित भोजन करइ ।
कहा तूसि तू हम कहु देहि, रूसइ कहा हमारउ लेहि ॥४१०॥

---

(४०५) १. उधरिको (ग) २. किउ करि लाभइ इसकी माय (ग)

(४०६) १. हुइ तुम यहु घणउ (क) हुइ इहु यहु घणउ (ख) इसु पहि हुइ घणी (ग) २. अथि तिसु तणी (ग)

(४०७) मूल प्रति के प्रथम दो चरण ख प्रति में से लिये गये हैं। १. पूजइ (क) २. रुकमिणी (ग) ३. लिउ वर इहु (ग)

(४०८) १. दीन्ही दीक्षा सो गुरु कवणु (ग) २. पयासहु (क) पयासहि (ख) प्रकीसउ (ग)

(४०९) १. देखहि (क) दीक्षा (ख) दिष्टि (ग) २. तोहि (क) मोहि (ग) ३ होइ (ग)

(४१०) १. भीख मांगि (क) चरी मांगि (ख) चारि भंग (ग) मूलप्रति में 'चरी मांगित' पाठ है। २. रूसी (क) रूसहि (ख) रूठी (ग)

खूडउ दिठु रिसाणउ जाम, मन बिलखाणी रूपिणि ताम ।
बहुरि मनावइ दुइ कर जोडी, हम भूली जिन लावहु खोडी ॥४११॥
तबहि मयणु जंपइ तिहि ठाइ, मन मा कहा बिसूरइ माइ ।
साचउ मयणु पयासउ मोहि, जिम्ब पडि उतरू आफउ मोहि ॥४१२॥
तउ जंपइ मन करहि उछाहु, जिम्ब रूपिणि कउ भयउ बिवाहु ।
जिम्ब परदवण पुत्रु हडि लयउ, सयलु कथंतरू पाछिलउ कहिउ।४१३।
धूमकेत हो सो हडि लियउ, फुणि तह जमसंवरू लै गयउ ।
मुहिसिहु नारद कहिउ निरुत, आजु तोहि घर आवइ पूत ॥४१४॥
अवर वयण मुनि कहे पमाण, ते सबई पूरे सहिनाण ।
अजहु पूतु न आवइ सोइ, तहि कारण मनु बिलखउ होइ ॥४१५॥
सतिभामा घर बहुत उछाह, भानकुवर को आइ विवाहु ।
हारी होड न सीधउ काजु, तिहि कारण सिर मुंडइ आजु ॥४१६॥
माता पास कथंतर सुण्यउ, हाथ कूटि फुणि माथो धुन्योउ ।
आजु न रूपिणि मन पछिताइ, हउ जण पूत मिल्यो तुहि आइ ॥४१७॥

---

(४११) १. खरा रिसाणा बीख्या जाम (ग) खूडउ निसुणि रिसाणउ जाम (ख) २. मत (ग)

(४१३) १. जउ (ग)

(४१४) १. सोवत (क) तिह सो (ख)

(४१५) १. सगला (क)

(४१६) १. होड (क) मूलप्रति में 'होर' पाठ है

(४१७) १. तौ मा (ख) २. तणउ (क)

कंदप[1] बुद्धि करी तंखिणी, सुमिरी विद्या बहु रूपिणी ।
निजु माता उभिल करि धरइ, रूपिणि अवर मयाइ करइ ॥४१८॥

सत्यभामा की स्त्रियों का रूक्मिणि के केश उतारने के लिये आना

एतइ बहु वरकामिणी मिली, अरु नाउ गोहिणि करी चली ।
अछइ मयाई रूपिणि जहा, ते वर णारि पहुती तहा ॥४१९॥
पाइ पडइ अरु विनवइ तासु, सतिभामा पठई तुम्ह पासु ।
सामणि जाणहु मरु सण लेहु, मलिवक केस उतारण देहु ॥४२०॥
निसुणि वयण सुंदरि यो कहइ, बोल तिहारो साचउ हवइ ।
निसुणहु चरित अणंगह तणउ, नाउ मूंडिउ सिर आपणउ ॥४२१॥

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

हाथ आंगुली धरी उतारि, अर मूंडी गोहिण की नारि ।
नाक कान तिनहु के खुरे[1], फुणि ते सव्व घर तन वाहुरे[2] ॥४२२॥
गामति[1] निकली नयर मझारि, कम्वण पुरिष ए बिटंगी[2] नारि ।
यहर[3] अचंभउ वडउ बिजोउ[4], हासी करइ नगर को लोगु ॥४२३॥
एते छण ते रावल गई, सतिभामा पहु उभी भई ।
विपरित देखि पयंपइ सोइ, तुम कवणइ[1] मोकली बिगोइ ॥४२४॥

---

(४१८) १. कद्दंपि (ग)
(४२०) मूलप्रति में—तुम्हि जिन सामिणि ऊण लेहु पाठ है
(४२२) १. पखे (ग) २. सेवखे (ग)
(४२३) १. गावत (क ख) गावतु (ग) २. बिडंरी (ख) ३. अउर (क) एहु (ग) इहुह (ख) ४. वियोग (क) बिजोगु (ख) वियोगु (ग)
(४२४) १. कवणें (ख) नाई (ग)
नोट—क प्रति में दूसरा और तीसरा चरण नहीं है ।

तब[1] ते जंपइ बिलखी भइ, हम ही रूपिणि के घर गई ।
नाक कान जो देखइ टोइ, नाउं[1] सरिसु[2] उठी सब रोइ ।।४२५।।
निसुणि[1] चरितु चर आए तहा, रूपिणि रावल[2] बैठी जहा ।
विटमी नारि[3] सिर मूंडे घणे, नाक कान हम काटे सुणे ।।४२६।।
निसुणि वयण फुणि रूपिणी कहइ, निश्चे[1] जाणौ येहो[2] अहइ ।
काज ताज छोडहि बरबीर, परगट होइ तूं साहस धीर ।।४२७।।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

तब सो पयड[1] भयो परदवणु, तहि सम[2] रूपिन पूजइ कवणु ।
अतिसरूप बहु लक्षणवंतु, तउ रूपिणि जाणउ यह[3] पूत ।।४२८।।

वस्तुबंध—जब रूपिणि दिठ परदवणु ।
सिर चुंमइ आकउ[1] लीयउ, बिहसि वयणु[2] फुणि कंठ लायउ ।
अब मो हियउ सफलु[3], सुदिन आज जिहि पुत्तु आयउ ।।

(४२५) क प्रति में प्रथम दूसरा चरण नहीं है । १. नाई (क) नाऊ (ख) नाई (ग) २. सिउ ऊठे सवि रोइ (ग)

(४२६) करवि चरितु घरि आया तहां (ग) २. रोवै (ग) ३. सिय (ग)

(४२७) १. निहचउ जाणउ (ख) नीचउ जाणौ (ग) नचिहू जाणउ (क) २. हुं इह अहइ (क) इह को अहइ (ख) ये हो अहै (ग) मूलप्रति में 'इवह' पाठ है ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण मूल प्रति और क प्रति में नहीं है । यहां 'ग' प्रति में से लिया गया है ।

(४२८) १. मयण (क) मयणु (ख) परगट (ग) २. सरि (ग) तासु रुपि न पूजइ कवणु (क) सबु को जाणइ सुंदर वयणु (ख) ३. निज (ग)

दस मासइ जइउ[४] धरिउ, सहीए दुख महंत ।
बाला[५] तुराह न दिठ मइ, यह पछितावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तणे वयणु निसुणेइ, पंच दिवस कउ बालउ होइ ।
खण इकु माह विरधि सो कयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहुउ ।४३०।
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाइ ।
खण खण जेवणु[१] मागइ सोइ, बहुतु मोहु उपजावइ सोइ ।४३१।
इतडउ चरितु तहा तिहि कियउ, फुणि आपणउ रूपो भयउ ।
माता मयणु सुनु[१] मोहि, कवतिगु[२] आज दिखालउ तोहि ॥४३२॥

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

एतउ अवसर[१] कथंतर भयउ, सतिभामा महलउ[२] पठयउ ।
तुम बलिभद्र भए लागने, आइस[३] काम[४] रुकमिणी तणे ॥४३३॥

---

(४२६) १. वाकउ दीयउ (क) अंकउ भरिउ (ख) अंकउ लिउ (ग) २. हिय तब कंठि लायो (ग) ३. जीतव्य फल (क) जीविउ सफलु (ख) जीवहु सफलु (ग) ४. उरि धारिउ (ख) मइ उरि धरचो (ग) ५. बालकु होतु न दीठु मइ इहु पछितावा पूत (ग)

(४३०) नोट—चौपइ ख प्रति में नहीं है ।

(४३१) १. भोजन रोइ (ग)

(४३२) १. सुणहि तू (क) २. कउतिग (क) नोट—ग प्रति में चौथा चरण नहीं है । मूलप्रति में 'वसो' पाठ है ।

(४३३) १. समर (क ख ग) २. कंचुकि (क) महला (ग) ३. अइसा (क) अइसे (ख ग) ४. किये (ख ग) मूलप्रति में—'पठ्यो' पाठ है

महलउ जाइ पहुतउ[1] तहा, बलिभद्र कुवर बइठे जहा।
सुगति विगतिहि विनइ[2] घरणी, एसे काम कीए रूपिणी ॥४३४॥

हलधर के दूत का रूक्मिणि के महल पर आना

हलहल[1] कोपि[2] दूतु पाठयो[3], पवरण वेगि रूपीरिग पहु[4] गए।
उभे भए जाइ सीहद्वारु, भीतर जाइ जरणाइ सार ॥४३५॥

तवइ मयरण बुधिमहु धरइ, मूंडउ[1] वेस विप्र को करइ।
[2]वडउ पेट तिनि आपरणउ कीयउ, फुरिण आडौ दुवारि पडि ठयउ ४३६

तवहि दूत वोलइ तिस ठाइ, उठहि विप्र हम भीतर जाहि।
तउ सो वाभरण कहइ वहोडि, उठि[1] न सकउ आइयहु वहोडो।४३७।

निसुरिण बयरण ते उठे रिसाइ, गहि गोडउ[1] रालियउ कढाइ।
[2]जइ इहु कीम्बहूं वाभरणु मरइ, तउ फुरिण इन्हकहु गोहिच चढइ।४३८।

---

(४३४) १. सरतउ (क) संपत्तो (ख) संपती (ग) २. वींधी (क) स्वामी बात सुरोहि मुझ तरणी (ग)

(४३५) १. बलिभद्र (क) २. वेगि (ग) ३. पठगो (क) पाठइ (ख) पाठया (ग) ४. घरि (ग)

(४३६) १. बूढउ (क ख) बूढा (ग) २. मूलप्रति में 'तहा विपरित' पाठ है

(४३७) १. आनि इह (क) हुउ न सकौ आये बहोड (ग)

(४३८) १ गहि गोडे रालउ इक नइ (क) गोडे बूखहि चलिउ न जाइ (ग) २. जो इहु कबही बंभणु मरइ। तउ पुरिण इसु की हत्या चडइ (ग) ग प्रति में निम्न पद्य अधिक है—

सो हम कहु वेद न पइसारु, संधि रहया सो धर का बारु।
गहि गोडा जे रालउ तोहि, मरइ सु बंभणु हत्या माहि ॥४४०॥

प्रवेश न प्राप्त सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

अइसो[1] जाणिति वाहुडि गए, हलहर आगइ ठाढे भए।
वाभण एकु वाइहि[2] पइउ, जाणि सु दिवसु पंचकउ मउउ ॥४३९॥
तिन[1] पह हम न लइ पयसारु, रुधि[2] पडिउ सो पवलि दुवारु।
गहि गोडउ जउ जालइ[3] ताहि, मरइ[4] सु वंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

निसुणि वयण हलहर परजल्यउ[1], कोपारूढ हो आपण[2] चलिउ।
जण दस वीसक गोहण[3] गए, पवण वेगि रुपिणि पह[4] गए ॥४४१॥
उभे भए ति सीहद्वार[1], दीठउ[2] वाभण परउ दुवार।
तउ बलीभद्र पइंपइ[3] ताहि, उठहि विप्र हमि भीतर जाहि ॥४४२॥
तब वंभण हलहरस्यो कहइ, सतिभामा घर[1] जेम्वण गयउ।
सरस[2] अहार[3] उवरु[4] मइ भरिउ, उठि न सकउ पेट आफरचउ[5] ॥४४३॥

---

(४३९) १. इसउ वयण (क) अइसउ जाणिसि (ख) दीठा बंभणु (ग) २. वारउइ (क) बारिहइ (ख) बाहरि हुइ (ग)

(४४०) १. तहि (क) तिहि (ख) सो हम कहु देइ न पइसारू (ग) २. रहणा घर का बाद (ग) ३. रालहि (क) राखहे (ख) रालउ (ग) ४. मरइ सु बंभणु हत्या आहि (ग) नोट—यह पद्य ग प्रति में मूलप्रति के ४४० वें पद्य के आगे तथा ४४१ वें के पहिले दिया गया है। मूलप्रति में—मरइ किमइ गोहचहि ...डराहि पाठ है

(४४१) १. पज्जलिउ (क) परजलिउ (ख) परजल्यो (ग) २. पुण (ख) जाणइ वइसंदरि हो दरमउ (ग) ३. साथिहि (ग) ४. घरि (ग)

(४४२) १. जाइसीह (क ख) तिसीहउ (ग) २. बारि (क) दीठा बाभण पड्या दुवारि (ग) ३. कहइ हसि बात (ग)

(४४३) १. एजो थरि रहइ (ग) २. सरस (क ख ग) ३. मूलप्रति में 'पहार' पाठ है। ४. उवरु (क) बहुत संचरउ (ख) ५. आफरियउ (क) अफरिउ (ख) आफरै (ग)

तब बलिभद्र कहै हसि बात, एकर हुटा न उठइ खात।
बाभण खउ लालची होइ, बहुत खाद जाणइ सबु कोइ ॥४४४॥

तबइ रिसाइ विप्रइ कहइ, तू बलिभद्र खरौ निरदयी।
अवर करइ बाभण की सेव, पर दुख बोलइ तू केव ॥४४५॥

तवइ उठिउ बलिभद्र रिसाइ, गहि गोडउ गहि चल्यउ कढाइ।
कहा विप्र कहु दीजइ कालि, बाहिर करि आवहु निकालि ।४४६।

तब हलहर लइ चलीउ कढाइ, पूछइ मयणु रुक्मिणी माइ।
एक बात हौ पूछउ तोहि, कवण वीर यह आछहि मोहि ।४४७।

रुक्मिणि द्वारा हलधर का परिचय

छपन कोटि मुख मंडल सारु, यहु कहिए बलिभद्र कुवारु।
सिंघजूझ थो जाणइ घणउ, यहु पीतियउ आहि तुमि तणउ ।४४८।

गहि गोडइ वहु बाहिर गयो, बांधि पाउ घडउ हुइ रहउ।
देखि अचंभउ हलहरु कहइ, गुपत वीर य कोण अहइ ॥४४९॥

(४४४) १. रिढिया अनूतरि खात (क) रढिहानउ हटहि खात (ख) रढिकान उहुही खातु (ग) २. खरउ (ख) जरा (ग)

(४४५) १. तहु दोषंतर बोलहि वेव (ग)

(४४६) १. लिनि लीयौ उचाइ (ग) २. गालि (क ख) गाल (ग) ३. मइ देह (क) मुबीजै निकालि (ग)

(४४७) १. रिसाइ (क)

(४४८) १. पीतरिउ (क) पीतिया (ग)

(४४९) १. बुद्धि पाइ बुडउ होइ भयौ (क) वढिउ पाउ वह महा रहिउ (ख) बाधा पाउ धरति नहि हुया (ग) २. करइ (ख) ३. कोइ (ग)

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

रा[1]लि पाउ भुइ उभउ रहइ, त[2]हि खण सिंह रूप वहु भयउ[3] ।
त[4]हि हलु आवधु लयो सम्हालि, फुणि ते दोउ भीरे पचारि ।४५०।

जूझइ भिरइ अखारउ करइ, दोउ सबल मलावभ[1] लरइ[2] ।
सिंघ रूपि उठियोउ संभालि, गहि गोडउ घालियउ अछालि[3] ।४५१।

छपनकोटि नारायण जहा, पडियो[1] जाइ ति हलहर तहा ।
देखि अचंभ्यो सगलो लोगु, भणइ कान्ह यह वडउ विजोगु ।४५२।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणि के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

इ[1]हर बात तो इहइ रही, वाहुरि कथा रुपिणी पह गई ।
पूछिउ तव नंदन आपनो, का[2]पह सीख्यउ बल पोरिष घणो ।।४५३।।

मेघकूट जो पा[1]ठइ ठाउ, जमसंवर तहा निमसै राउ ।
नि[2]सुणी वयण माइ रुपिणी, तिहि ठा[3] विद्या पाइ घणी ।।४५४।।

---

(४५०) १. राडि पाउ भोमि ऊभो सोइ (ग) २. तखिणि (ग) ३. विकमइ सो होइ (ग) ४. उठि बलिभद्र घालिउ संभारि (क) उहि हलु आवधु लियो संभालि (ख) हलु आवधु लिया संभालि (ग) मूलप्रति में—'सहि लुध्यावधु' पाठ है

(४५१) १. मल्लबहु (क) २. जुभिवइ (क) लडहि (ख) ३. अछालि (क)

नोट—ग प्रति में यह छन्द नहीं है। ख प्रति में तीसरा चौथा चरण नहीं है।

(४५२) १. पडिउ (क ख) पडया (ग)

(४५३) १. अइसी (ग) हरनहर बात उहो इह रही (ख) २. आपहि करण पउरिषु घणा (ग)

(४५४) १. पहुइ (क) पाथा (ग) पावइ (ख) २. सुणहु बात माता रुकमिणि (ग) ३. यह (क) या (ख) हुइ (ग)

निसुणि वयण हुं आखउ तोहि, आनारिदि ऐ आयो मोहि।
उदधिमाल[1] मइ यह जोडि, फुणि प्रदवन कहै कर[2] जोडी ।४५५।
विहसि माइ तब रुपिणि कहइ, कहा सुभइया नारद यहइ ।
निसुणि पूत यह आखउ तोहि, उदधिमाल दिखलावहि मोहि ४५६

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को यादवों की सभा में ले जाने की स्वीकृति लेना

तउ मयरद्धउ कहइ सभाइ, बोल एकु हौं मागों[1] माइ ।
बाह् पकरि तोहि सभा बसारि[2], लेजइहौ जादौनी पचारि ।।४५७।।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणि द्वारा वर्णन

[1]भणइ माइ सुणि साहस धीर, ए जादौ है बलीए बीर ।
हरि हर कान्हु खरे सपरान, इन्ह आगइ किम पावहु जाण ।४५८।
[1]पंचति [2]पंडव पंचति [3]जणा, [4]अतुल बल कौंतीनन्दना ।
अर्जुन भीमु निकुल सहदेउ, इनके पवरिष नाही छेव ।।४५९।।
छपन कोटि जादौ बलिवंड, जिनके भय कांपइ नवखंड[1] ।
[2]ऐसे खत्री बसइ [3]बहुत, किम्व तू [4]जिणइ अकेलो पूत ।।४६०।।

---

(४५५) १. लई अजोडि (ग) लईय वहोडि (क ख) २. ययहोडि (ग)

(४५७) १. दीजै (ग)

(४५८) १. भानउ चलो हउ (ग) २. महयलि (क) कहियहि (ख)

(४५९) १. पांचति (ख) अवर (ग) २. पंचउ (ग) ३. जाण (क ख) ४. अवर मल्ल कैरव नन्दना (क) मल्ल कुंती णंदण (ख) बल कुंतीनन्दन (ग)

(४६०) १. तीनि (ख) वहमंड (क) २. जिसे (ग) ३. निवस (ग) ४. आइसि एकलउ (क)

वस्तुबंध--ताम कोपियो भणइ मयरद्ध[1]
रण[2] तोडइ भड अतुल बल, लउ मान जादम[3] असेसह ।
विहडाउ रण पांडवह, जिणऊ[4] रणि सव्वह नरेसह ॥
नारायण हलहर जिणिवि, सयलहु करउ संघार ।
पर[5] कुरवि जिणवरु मुहवि, सामिउ नेमि कुमारु ॥४६१॥

चौपई

मयणु चरितु निसुणहु सत्तु[1] कवणु, नारायणु जुभइ परदवणु ।
बाप पूत दोउ[2] रण भिरे, देखइ अमर विमाणाह चढे ॥४६२॥

रुक्मिणि की बांह पकड़ कर यादवों की सभा में
ले जाकर उसे छुड़ाने के लिये ललकारना

कोपारुढ[1] मयण जव भयउ, बाह पकरि माता[2] लीए जाइउ ।
सभा नारायणु बइठउ जहा, रूपिणि सरिस सपतउ तहा ॥४६३॥
देखि सभा बोलइ परदवणु, तुम सो[1] बलियो खत्री[2] कवणु ।
हउ रुपिणि ले चल्यो दिखाइ, जाहि[3] बलु होइ[4] सु लेहु छुडाइ ४६४

---

(४६१) १. मयण रणि (क) मयरद्ध (ख) मूलपाठ ममफरि २. रण तोडउ भड अतुल बल (क ख) धाइ लयरद्ध, रण तोडउ भउ ३. जबह (ख) ४. जिणिसु (क) जिणऊ रणि सव्वह नरेसह (ख) मूल पाठ जिहन्नु सवरि सहकारि नरेसह ५. एकुवि जिणवर मुच्चिकरि (ख) नोट-- वस्तुबंध छन्द ग प्रति में नहीं है।

(४६२) १. सह कौथु (ग) २. दोनों (ग)

(४६३) १. कोपारुपि (ग) २. रूपिणि (ग)

(४६४) १. सहि (क ख ग) २. कितछु (ग) ३. जेहा (ग) ४. माइ (क ख)

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके युद्ध के लिये ललकारना

[1]तू नारायण मथुराराउ, तइ [2]कंस भान्यो भरिवाउ ।
जरासंध तइ [3]बधौ पचारि, मोपह [4]रुपिणि आइ उवारि ॥४६५॥
[1]दसह [2]दिसा निसुणो वसुदेव, [3]जूझत तणउ तुम जाणउ भेउ ।
[4]जादो मिलहु तुम छपन कोडि, वलि करि रुपिणि लेहु [5]अजोडि ।४६६।
[1]वलिभद्र तू वलियो वर वीर, रण संग्राम [2]आहि तू [3]धीर ।
[4]हल सोहहि तोपह हथियारु, मो [5]पह रुपिणि [6]आइ उवारु ॥४६७॥
तूही अर्जुन [1]खंडव दहणु, तो पवरिष जाणं सबु कवणु ।
तँ वयराड छिडाइ गाइ, अब तू रुपिणि लेइ [2]मिलाइ ॥४६८॥
भीम [1]गजा सोहहि कर तोहि, पवरिष आज दिखावइ मोहि ।
खारि पाच तू भोजन खाइ, [2]अब संग्राम भिडइ किन आइ ॥४६९॥
निसुणि वयण सह्यो जोइसी, करि [1]जोइस काही हो वसी ।
बिहसि बात पूछइ परदवणु, [2]तुमहि सरिस जिणइ रण कवणु ।४७०।

---

(४६५) १. हुउ (ग) २. कंसह (क) कंसाह (ख) ३. बंधिउ (क) जीतिया (ग) बांधियउ (ख) ४. लोहि (ख) लेइ (ग)

(४६६) १. होवहु (ग) २. दिसार (क ख ग) ३. झूझ (क) जूझण (ग) ४ वलिए (ग) ५. बहोडि (क ख)

(४६७) १. वलिभद्र तह गुरुआ गंभीर (ग) २. साहस धीर (ग) ३. वीर (ख) ४. हलु सोहितौ (ग) ५. वलकरि (ग) ६. आज (ग)

(४६८) १. खंडव वण दहणु (क) खंडा वण दहनु (ग) धणुक धरणु (ख) २. छुडाइ (क) किन मराइ (ग)

(४६९) १. गदा (क) २. अबहि आइ जुज्झहि रण मांहि (ग)

(४७०) १. करि जोइसकइ सच होइसी (क ख) गिणिज्योइसु कइ साहुउ हसी (ग) २. वलदलि माहे रणि जीतइ कवणु (ग) नोट—चौथा चरण ख प्रति में नहीं है ।

निकुल कुवरु तउ पवरिपुसारु, तोपहु[1] कोंत आहि हथियारु ।
अब हइ भयो मरण को ठाउ, मोपहु रुपिरिण आणि छिडाइ ।४७१।

तुहि नारायण हलहर भए, छल[1] करि कुणि कुंडलपुर गये ।
तबहि बात जाणी तुम्ही तणी, चौरी हरी[2] आणी रुकिमिणी॥४७२॥

मयरधउ जपइ तिस ठाइ, अब किन आइ भिरहु संग्राम ।
बोल एकुह बोलो भलो, तुम सब खत्री हउ एकोलो ॥४७३॥

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

वस्तु--निसुणि कोप्यो[1] तहा महमहण ।
जाणौ वैशुंदरु[2] घृत ढल्यउ, जाणिक[3] सिंह वन मा गाजिउ ।
णं[4] सायर थल हलिउ, सयन सबनि[5] जादवन्हि सजिउ ॥
भीउ[6] गजा लइ तहि चलिउ, अर्जुन लिउ कोवंड ।
नकुल[7] कोपि कर कोंत लउ, तउ हलिउ[8] बरम्हंडु ॥४७४॥

चौपई

साजहु साजहु भयउ कहलाउ, भयउ सनद्धउ जादमराउ ।
हैवर साजहु गैवर गुरुहु, साजहुइ[1] सुहड आजु रण भिडहु ॥४७५॥

---

(४७१) १. सोहइ हत्थु तोहि कुंता हथियारु (ग) नोट--ख प्रति में चौथा चरण नहीं है

(४७२) १. बलि परि (क) २. जाइ (क)

(४७४) १. राउ (ग) २. घिउ (ग) ३. जणु (ख) जाणु (ग) ४. गहणि (ख) ५. सुर सायर तवउ चलो (क) णं सायरु महि उछलियउ (ख) जाणउ सेषनु मेरु उच्छलिउ ६. सयल जाम (क) सयन जबहि (ख) कुंडउ सेनु मीसानु विज्जउ (ग) ७. हलहरि हत्थु मायछलिउ (ख) ८. फाटउ (क) हाल्या (ग) मूलप्रति में--अरहिउ पाठ है।

(४७५) १. धावहु (ख)

आयसु भयउ सुहर रण[1] चलइ, ठा ठा[2] के विसखाती करइ ।
केउ[3] कर साजइ करवालु, केउ साजि लेहु हथियारु ॥४७६॥

युद्ध की तैयारी का वर्णन

केउ माते गैंवर गुडहि, केउ सुहर साजि रण[1] चढइ ।
केउ तुरीन पाखर[2] घालि, केउ आवध[3] लेइ सभालि ॥४७७॥
केउ टाटण[1] जूभण लेइ, केउ माथे टोपा[2] देइ ।
केउ पहरइ आगि[3]सनाह, एसे होइ चाले नर[4] नाह ॥४७८॥
कोउ कोंतु लेइ कर[1] साजि, कोउ असिवर नीकलइ[2] माजि ।
कोउ सेल सम्हारइ फरी[3], कोउ करिहा[4] साजैं छुरी ॥४७९॥
केउ भणइ बात समुझाइ, इन सुहडनि हइ लागी बाइ ।
जिहि है रूपिणि हरि पराण, सो नरु नहीं तिहारे मान ॥४८०॥
[1]एक ठाइ सब खत्री मिलहु, घटाटोप होइ जूभण[2] चलहु ।
[3]थोछी बुधि जिन करहु उपाउ, अब[4] यो भयउ मरण कउ[5] चाउ ॥४८१॥

---

(४७६) १. निसाणेहि (ग) २. टाटर टोपजि सिरि परि धरणा (क) ठाके होइ उसारमती कराऊ (ग) ३. केइ कमरि कसहि (ग) कोइ (ख)

(४७७) १. जात रथि (ग) रथ (ख) २. अंबारी (ख) ३. आयुध (ग)

(४७८) १. जोसण (ग) २. टोपी (ख) ३. अंग (क ग) ४. रण माहि (क ख ग)

(४७९) १. रण (ग) २. नीकलए (क) नीकालहि (ख) लेहि रण ३. खरी (क) करी (ग) ४. हाथिहि (ग)

(४८०) नोट—प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८१) १. आसु रणि (ग) २. जूझण (ख) करी सुम्ह (ग) मूल पाठ लज्जी ३. उरिय (क) कछु (ग) ४. इब हियो (क) इहु हुइ (ग) ५. कउ ठाउ (क) कउ वाउ (ख) का ठाउ (ग)

चाउरंगु बलु[१] मिलिउ तुरंतु[२], हय गय रह[३] जंपाण संजुतु ।
सिगिरि[४] छात दीसहि अपाण, अंतरीख[५] हुइ चले[६] बिमाण ॥४८२॥

अैसी सयन चली अपमाण, बाजण लागे दरड[१] निसाण ।
घोडा[३] खुररड[२] उछली खेह, जाणौ ताजे[४] भादम्व के मेह ॥४८३॥

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

बाइ दिसा करंकइ कागु, बाट काटिगो कालौ नागु ।
महुवरि दाहिणी अरु[१] पडिहारु, दक्षण दिस फेकरइ सियालु ॥४८४॥

वण मा दीसइ जीव असंखि, धूजा पडइ तिन वैसर पंखि ।
सारथि भणइ कहै सतिभाउ, बूरै[१] सगुन न दीजै पाउ ॥४८५॥

तउ केसव बोलइ तिस ठाइ[१], सुगमु सुगणइ विवाहण जाइ ।
सा सारथी समुझावै कोड, जो विहि लिख्यो सु मेटइ कोइ ॥४८६॥

चालै सुहड न मानहि सवनु, देखि सयनु अकुलाणे मयणु ।
माता रूपिणि घालि बिमाण, पाछइ आपण रचइ[१] अपाण ॥४८७॥

---

(४८२) १. बलु (क ग) २. संपत्तु (ग) ३. पाइक मिले बहुत्त (ग) ४. सिखरि छत्र (क ख) सिगण छत्र नहीं परवाणु (ग) ५. बाजइ गाजइ गुहिर निसाण (क) ६. चढा (ग)

(४८३) १. गहिर (ख) गुहिर (ग) २. घोरा खुरइ (क) घोडा लघु (ख) घोडा रज खुर (ग) ३. मूल पाठ खोडा ४. गरजइ (क) गाजे (ख ग)

(४८४) १. अरु पडिहारु (क ख ग) महिला सोही अरु प्रतिहारु कूकइ वसिण दिसा सीयालु (ग) मूलपाठ अंतु परिहारु

(४८५) १. इन सकुणहि किउ दीजै पाउ (ग)

(४८६) १. सतिभाउ (ग) नोट—दूसरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८७) १. रचइ पराण (क) रचइ विमाणु (ख) मूलप्रति में 'चइ' पाठ है
ग—तवहि मयणु बातुडि बुधि आणि, माता रुपणि चढी बिमाणि ।
चडि करि रथि बोलइ महमहणु, चालहु सुहड न मानहु सवणु ॥

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

तबइ मयण[1] मन मा व्रधिकरी, सुमिरी विद्या समरी[2] करी ।
जइसउ तह बलु पर देखीयउ, इसउ[3] सयन आपणउ कीयउ ॥४८८॥

युद्ध वर्णन

दोउ दल सयउ[1] मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर[2] लए ।
इनउ[3] साजि लए करवाल, जाणिक जीभ[4] पसारी काल ॥४८९॥
मयगल सिउ मैंगल रण भिरइ[1], हैवर स्यो हैवर आ भिरइ[2] ।
रावत पाइक भिरे पचारि, पडइ उठइ[3] जिमवर की सारि ॥४९०॥
केउ हाकइ केउ लरइ, केउ मार मार प्रभणइ ।
केउ भीरहि समरि रण[1] आजि, केउ कायर निकलइ भाजि ॥४९१॥
केउ वीर भिडइ दूबाहु, केउ हाक देइ रण माहु ।
केउ करइ धनष[1] टंकारू, केउ असिवर करइ संघारु[2] ॥४९२॥

---

(४८८) १. वाहुडि (ग) २. धरी (ख) ३. सेना करी (क) सयन कारणी (ख) विरधी करी (ग) ४. तसउ (क) तइ सउ (ख) जे ता तिनि परदल देखिया, ते ता सेनु आपणा कीया (ग)

(४८९) १. साम्हे उभे (क) सनमुख जब (ख) वीर बराबर भये (ग) २. धणहर (क) ३. किनही (क) किनहू (ख) केइ (ग) ४. जीभ (क ख ग)

(४९०) १. आ भिडहि (क) २. आसुडइ (क) किरजइ (ग) ३. सहहि अतिमार (ग)

(४९१) ग—केइ हाथि कहिके पहुणहु, केइ मारते कहि इम भणहि ।
केइ भिडहि संवरि रणि गाजि, केइ कायर नासहि भाज ॥
१. मूलपाठ रणाजि

(४९२) १. धूक का हुाउ (ग) २. पहार (क ख) के असवार घालहि घाउ (ग)

देखि समरि[1] बोलइ हरिराउ, अर्जुन भीम्मु तिहारी ठाउ।
सहिदो निकुल पयंपहि तोहि, पवरिषु आजु दिखावहि मोहि ।४६३।

फुणि पचारि बोलइ हरिराउ, दसी दिसा निसुणी बसुदेउ।
बलिभद्र कुवर ठाउ तुमि तणउ, दिखलावहु पवरिश आपणउ ।।४६४।।

कोप्यो भीमसेणि[1] तुरी चढाइ, हांकि[2] गजा ले रणमहि भिडइ।
गयर सरीसो करइ प्रहार, भाजहु[3] खग्री नही उवार ।।४६५।।

कोपारूढ[1] पंथ[2] तब भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लीयउ।
चउरंग बलु भिडउ पचारि, को रण पंथ[3] न[4] सकइ सहारि ।।४६६।।

सहद्यो हाथ लेइ करिवालु, निकुल कौंत ले[1] करइ प्रहारु।
हलहर जुझ न पूजइ कोइ, हल आवध लइ पहरइ सोइ ।।४६७।।

जादव भिरइ सुहर वर वीर, रण संग्राम[1] ति साहस[2] धीर।
दसर दिसा होइ वसुदेव भिडे, वहुतइ सुहर[3] जूझि रण पडे ।।४६८।।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या बल से सेना को धराशायी करना

तब[1] मयरद्ध कोप मन धरइ, माया[2] मइ जूधु बहु करइ।
मोहे सुहड़ सयल रण पडे, देखइ सुहड[3] विमाणा चडे ।।४६९।।

---

(४६३) १. सेनु (ग)

(४६५) १. भीव तवहि तुल चढया (ग) २. हाथि (क ग) मूलप्रति में 'लए सो भीडह' पाठ है ३. जूझ भीम वेइ बहुती मार (ग)

(४६६) १. कोपिरुढ पत्थ (ग) २. पत्थु (ख) ३. पत्थह (ख) पत्थ (ग) ४. सहइ रणि मार (ग)

(४६७) १. का (ग) मूलप्रति में 'अल' पाठ है।

(४६८) १. संग्रामहि (ग) २. आहि रणधीर (क) ३. जे रण संगमि आहि रणधीर (ख) ४. मायामयी झुझ रण पडे (ख)

(४६९) १. मइमत्तो तब जूझ कराइ (ग) २. मोहणि विद्या दीई समदाय (ग) ३. अमर (क ख ग)

ठा[1] ठा रहिवर हयबर पडे, तूटे छत्रजि रयणनि[2] जरे ।
ठाठा[3] मैंगल पडे अनंत, जे संग्राम आहि[4] मयमंत ॥५००॥

सेना जूझि परी रण जाम, विलख वदन भो केसव ताम ।
हाहाकारु[1] करै महमहणु, वलियो[2] वीरू आहि यह कवणु ॥५०१॥

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

वस्तुबंध—पडे जादौ व देखि वर वीर ।
अरु[1] जे पंडी अतुलबल, जिन्हहि[2] हाक सुर साथ कंपइ ।
जिन[3] चलंत महि थर हरइ, सबलधार[4] नहु कोवि जित्तइ ॥
ते सब क्षत्री इहि[5] जिणे, यह[6] अचरिउ महंतु ।
काल रूप यहु[7] अवतरिउ, जादम्ब कुलह खयंतु ॥५०२॥

चौपइ

फिरि फिरि सैना देखइ राउ, खत्री परे न सूझइ ठाउ ।
मोती रयण[1] माल जे जरे, दीसइ छत्र तूटी[2] रण पडे ॥५०३॥
हय गय रहिवर[1] पडे अनंत[2], ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।
ठाठा[3] रुहिरु बहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ[4] वेताल ॥५०४॥

---

(५००) १. ठांइ ठांइ हिवइ आंसू पडइ (ग) २. सिर (ग) ३. पाइक (ग) ४. सुर (ग)

(५०१) १. कारु (क ग) मूलपाठ कालु २. रणमहि वीर अपि परववणु (ग)

(५०२) १. पनुजे (ख) २. अरजुन (ग) २. जिन्ह हाक ते सुरगुद डोलइ (ग) ३. जिन्ह हाक हव मेदिनी धसइ (ग) ४. समर (ख) चलइ मेरु जिन्ह हाकु भोले (ग) ५. रण (ग) ६. इहु सूरा मयमतु (ग) ७. सब संघरइ (ख)

(५०३) १. रल (ग) २. तूरि (ख) तुही धर (ग) नोट—५०३ से ६१३ तक के छन्द 'क' प्रति में नहीं है ।

(५०४) १. मयगल (ग) २. बहुत (ग) ३. रुधिरपवें (ग) ४. किलकिलहि (ख)

गीधीरगी[1] स्याउ[2] करइ पुकार, जनु[3] जमराय अणावहि सार।
वेगि चलहु सापडी[4] रसोइ, असइ[5] आइ जिम तिपत होइ ॥५०५॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

तउ महमहनु कोपि[1] रथ चढइ, जनु गिरिवर पव्वउ खर हडइ[2]।
हालइ महियलु सलकिउ[3] सेस, जम संग्राम चलिउ[4] हरि केसु ॥५०६॥

युद्ध भूमि में रथ बढाने पर शुभ शकुन होना

जब रण पेलिउ रथु आपनउ, तब फरकिउ लोयणु दाहिणउ।
अरु दाहिणइ अंगु तसु करइ, सारथि निसुणि कहा सुभु करइ ॥५०७॥

सारथि एवं श्रीकृष्ण में वार्तालाप

रण संग्रामु सयनु सबु जिणी, अरु इहि आइ हडी रुक्मिणी।
तउ न उपजइ कोप सरीर, कारण कहा कहइ रणधीर ॥५०८॥
तंखण सारथि लागो कहण, कवण अचंभउ यह महमहण।
भाजहि सुहड[1] हाक तुह तणी, अरु तो हाथ चढइ रुक्मिणी ॥५०९॥

(५०५) १. वाधिणि (ख) गीदउ (ग) २. स्याल (ग) ३. ते (ग) ४. संपडइ (ख) ५. स्याहु आय जिस ति ते होइ (ख) पंखी पसुवन रहइन कोइ (ग)

(५०६) १. कोपि सुडि (ख) कोपि रणि (ग) २. खडहडइ (ख) पर्वत थर हरयो (ग) ३. सकिउ (ख) बोलै (ग) ४. चढिउ (ख) चल सुरणि जावमह नरेसु (ग)

(५०७) दीठी सयन पडी धर ताम कोपारुढ विसणु भउ ताम।
तंखणि हाथ लइ कर चाउ, भारियण बल भानउ भडिवाउ ॥
यह छंद मूलप्रति में नहीं है।

(५०९) १. सुहड (ग) २. तीसरा चरण 'ख' प्रति में नहीं है मूलप्रति में। 'कुवर' पाठ है।

तउ जंपइ[1] केसव वर वीर, निसुणी वयण तू खत्री धीर ।
तइ[2] मह सयन सयलु संघरयउ, अर भामिनी[3] रूपिणि ले चल्यउ ॥५१०॥

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

पुनवंतु तुहु खत्री कोइ, तुह[1] उपरि मुह कोपु न होइ ।
जीवदानु मैं दीनउ तोहि, वाहुड[2] रूपिणि आपहि मोहि ॥५११॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्णजी की वीरता का उपहास करना

तब हसि जंपइ[1] धन्री मयणु, अैसी वात कहै रण कवणु ।
तोहि देखत मैं रूपिणि हडी, तो देखत सब[2] सयना परी ॥५१२॥
जिहि[1] तू रण मा जिणिउ विगोइ, तिहि स्यो अवहि साधि[2] बयो होइ ।
लाज न उठइ तुमइ हरिदेउ, वहुडि भामिनी मांगइ केम्व ॥५१३॥
मैं तू सूणिउ जूझ आगलउ, अब मो दीठउ पौरिष[1] भलउ ।
कछु न होइ तिहारे कहे, सयन पडी तुम हारिउ हिए ॥५१४॥
तउ मयरद्ध हसि[1] करि कह्यउ, तइ[2] सबु कुटम धरणि पडि सह्यउ ।
तेरउ मनुइ परंखिउ आजु, तुहि फुणि नाही रूपिणि काजु ॥५१५॥

(५१०) १. तास (ग) २. सह्यु मयलु सयेतु संघरिउ (ख) मोहि (ग) ३, लिया (ग)

(५११) १. इसु (ग) २. जाहि (ग)

(५१२) १. बोलइ (ग) २. पाडी (ग)

(५१३) १. मारया वलु सथाह विगोइ (ग) २. सारथि (ग) सांति (ख) किन कोइ (ख)

(५१४) १. सेता (ग ख) तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है। मूलप्रति में भेलउ पाठ है ।

(५१५) १. विहसि फुणि (ख) तवहि वहसि (ग) २. जेता हरइ मनि संसारहइ (ग)

[1]छोडि आस तइ परिगह तणी, अरु तइ छोडी सो रुक्मिणी ।
जउ तेरे मन कछू न आहि, पभणइ मयणु जीउ[2] लै जाहि ॥५१६॥

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

[1]मण पछितावउ जादमुराउ, म[2]इयासहु बोल्यउ अतिभाउ ।
इहि मोस्यो बोल्यो [3]अगलाइ, [4]अब मारउ जिन जाइ पलाइ ॥
उपनउ कोप भइ चित काणि, धनुष चढाइयउ सारंगपाणि ॥५१७॥
अर्द्ध[1] चंद्र तहि [2]बाधिउ बाण, अब याकउ देखियउ पराणु ।
साधिउ [3]धनियउ दीठउ जाम, कोपा[4]रूढ मयण भो ताम ॥५१८॥
कुसुमबाण तब [1]बोलिउ [2]वयणु, धनहर छीनि[3] गयउ महमहणु ।
[4]हरि को चाउ तूटिगो जाम, दूजइ धनष [5]संचारिउ ताम ॥५१९॥
[1]फुणि कंद्रपु सरु दीनउ छोडी, [2]वहइ धनकु गयो गुण तोडि ।
कोपारूढ [3]कोप तब भयउ, तीजउ [4]चाउ हाथ करि लयउ ॥५२०॥

(५१६) तजी (ग) २. जीवड़ा (ग)

(५१७) १. भनि (ख, ग) २. मइ हसिउ (ग) मइ सुख (ग) ३. आगलउ (ख) ४. इब (ख) जिन (ग)

(५१८) १. तिनि संध्या बाणु (ग) २. इब इह (ख) इब देखउ इसु तणा निवानु (ग) ३. धणहरू (ख, ग) ४. कोपिरूप (ग)

(५१९) मेलिउ (ख ग) २. चाउ (ख) मयणु (ग) ३. छिन्नउ तब (ग) ४. तब हरि चाउ तूटिया ताम (ग) ५. चढ़ामा (ग) नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है ।

(५२०) १. तब (ग) २. मुहई (ख) ऊभी धणुष गया सो तोडि (ग) ३. विष्णु (ख) विष्णु (ग) ४. कटारा (ग)

मेलइ बाण मयण तुजि चडिउ, सोउ[1] बाण तूटि धर परयउ ।
विस्नु सभालइ धनहर तीनि, लिए मयरद्धउ घालइ छीनि ॥५२१॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

हसि हसि बात कहै प्रदवणु, तो[1] हम माही[2] कवी कवणु ।
कापह[3] सीख्यउ पोरिष ठाउणु, मोसिहु कहइ तोहि गुर कवणु ॥५२२॥
धनुष बाण छीने[1] तुम तणे, तेउ राखि न सके आपणे ।
तो पवरिषु मै दीठउ आजु, इहि पराण तइ भूंजिउ राजु ॥५२३॥
फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि, जरासंध क्यो[1] मारिउ कांसु ।
विलख बदन तब केसव भयउ, दूजउ रथ[2] मयायउ ठयउ ॥५२४॥

श्रीकृष्ण का कोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

तहि आरूढो जादौराउ, कोपारूढु लयउ करि चाउ ।
अगनि[1] बाणु धायउ प्रजुलंतु, चउदस[2] झल बहु तेज करंतु ॥५२५॥

---

(५२१) १. सोइ बाणु तूटि भुइ पडिउ (ग)

(५२२) १. तउ हसि बात कहइ परदवणु (ख) २. अतकन्न (ग) ३. रहसि भाइ पूछइ महमहणु (ग)

(५२३) १. छेवे तुहि तणे (ख)

(५२४) १. किम जीतिउ (ख) तइ जीत्या (ग) २. मूल प्रति में 'अर्थ' पाठ है।

(५२५) १. अगनि बाणु मेल्हइ महमहणु (ख) अगनिबाण धाई परजलंत (ग) २. तिहि की धाच न जाई सहणु (ख)

मयरद्धे[1] दल चले पलाइ, अभिगिभ[2] करइ सहण न जाइ।
डाभहि[3] हय गय रहिवर घणे, उहटे[4] सयन पजूनहा तणे ॥५२६॥
कोपारूढ भयो तव मयणु, ता रणहाक सहारइ कवणु।
पुहपमाल कर धनहर लीयउ, साधिउ मेघबाण पर ठयउ ॥५२७॥
मेघनादु[1] घनघोर करंत, जल थल महियल नीर भरंत।
[illegible] आगि [illegible], [illegible] सयन [illegible] बहि ताम ॥५२८॥
रहिवर छत्रजि दीसइ भले[1], नीर प्रवाह सयल[2] बहि चले।
हय गय तुरय[3] वहइ असेस, खत्री[4] राणे वहे असेस ॥५२९॥
तव जंपइ महमहण[1] पचारि, कीयह[2] सुकम की चालि।
नारायण मन परचो संदेहु[3], हुंतो[4] यह वरिसउ मेहु ॥५३०॥
तव मनह अचंभो भयो, मारुत[1] बाण हाथ करि लयो।
जवइ[2] बाण धाइयो भहराइ, मेघमाली[3] घानी विहडाइ ॥५३१॥

(५२६) १. रउछभल (ख) रूपवंत (ग) २. अगिनिबाण रण सहण न जाइ (ग) अगनि झल लख सहणन जाइ (ख) ३. बाझहि (ख) ४. हवरे (ख)

नोट—५२६ का तीसरा चौथा चरण तीनों प्रतियों में नहीं है।

(५२८) १. मेघबाणु (ख ग)

(५२९) १. घणे (ग) २. हुये तंखिरो (ग) ३. रथ संवहितउ चले (ग) ४. खत्री वहे जे रण भागले (ग)

(५३०) १. हरिराउ संभालि (ग) २. की यह सुकम भउम की गारि (ख) कउ इहु सुकु कय मंगलवालु (ग) ३. भडा (ग) ४. कहा हु तउ इह वरसिउ मेहु (ख) कहु सु कहा ते आया मेहु

(५३१) १. मारुती (ग) २. जवहि पवन छूटा तिहि ठाइ (ग) ३. मेघमाला घाले वहराइ (ग)

मायामय[1] सन खर हुइइ, उरइ छत्र[2] महिमंडल परहि ।
चउरंग दलु चलिउ पडाइ,[3] हय गय[4] रह को सकइ सहारि ॥५३२॥

तवइ पजून[1] कोपु मन कियउ, परवत बारा हाथ[2] करि लयउ ।
मेल्हीउ बाण धनसु कर लयउ, रुधि पवणु आडहु[3] हुइ रह्यउ ॥५३३॥

कोप्यो द्वारिका तणो नरेसु, मयणहि पवरिसु देखि असेसु ।
वज्र प्रहार करइ खण[1] सोइ, पब्बउ[2] फूटि खंड[3] सो होइ ॥५३४॥

देवतु[1] बाणु मयण लउ हाथ, नारायण पठउ जम पाथि ।
तव केसव मन विसमइ होइ, याको चरितु न जाणइ कोइ ॥५३५॥

मयसउ जुझु महाहउ[1] होइ, एकइ एकु न जीतइ कोइ ।
दोउ सुहड[2] खरे वलिवंत,[3] जिन्हि[4] पहार फाटहि वरम्हंड ॥५३६॥

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

तवइ कोपि जादौ मनि कहइ, मेरी हाक कवण रण सहइ ।
मोस्यो खेत रहै को ठाइ, इहि कुल देवी आहि सहाइ ॥५३७॥

---

(५३२) १. माया रूपि पवन संघरइ (ग) २. अद (ग) ३. पलाइ (ग) ४. गयवर को सकउ रहाइ (ग)

(५३३) १. मणि (ग) २. हस्त (ग) ३. आगइ (ग)

(५३४) १. फुणि (ग) २. पर्वत (ग) ३. कुइ (ग)

(५३५) १. देव विभाग (ग)

(५३६) १. मही महि (ग) २. वीर (ग) वलिवडं (ग) ३. जिम्ह धालंस्या लोपहि ब्रह्मांड (ग)

(५३७) नोट—चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

मइ रण जीतिउ कंसु पचारि जरासंध रण घालि मारि ।
मै सुर असुर साथ रण रह्यउ, यह[1] गरहु जु खेत अरि रह्यउ ।।५३८।।

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

तब तिहि[1] धनहर[2] घालिउ रालि, चन्द्रहंस कर लीयो सभालि ।
बीजु सपिसु चमकइ करवालु, जाणौ सु जीभ पसारै काल ।।५३६।।
जबति[1] खरग हाथ करि लयउ, चंद्र रयणु चाम्बइ[2] कर गहिउ ।
रथ ते उतरि चले भर[3] जाम, तीनि भुवन अकुलाने ताम ।।५४०।।
इंदु चंदु फण[1] वं खल भल्यउ[2], जाणौ[3] गिरि पर्व्वतउ टलटल्यउ ।
मन मा कहइ सुरंगिनि[4] नारि, अबयहु इहइ कइसी मारि ।।५४१।।
किसन[1] कोपि रण धायउ जाम, रूपिणि मन अवलोइ ताम ।
दउ[2] पचारै मेरो मरणु, जुभइ कान्हु परइ परदवणु ।।५४२।।
नारद निसुणि कहु सतिभाउ, अब या भयो मीच को ठाउ ।
जब जिउ सुहड[1] न भीरइ पचारि, वेगो नारद जाइ निवारि ।।५४३।।

---

(५३८) १. इहु गरवा जे रण महि रह्याउ (ग)

(५३९) १. तिन्हि (ग) २. धणहर (ग)

(५४०) १. जब हरिहाथ खडग करि लेइ (ग) तबहि खडगु हाथि करिलिये (ख) २. चामइ (ख ग) ३. भुई (ग) भऊ (ख)

(५४१) १. मासण पर हरे (ग) २. भले (ख) ३. अंबरमह पावन गिरि पर्व- दलई (ग) ४. मुरूपिणि (ग)

(५४२) १. क्रिष्ण कोपि रण धरया जबहि (ग) २. बहु पचावइ (ख ग) ३. पड इबहूं झूझई परदवणु (ग)

(५४३) १. लगु (ग)

रणभूमि में नारद का आगमन

रुपिरिण[1] वयणु मन सो धरइ, हो सो विमाणहु रीथ उतरइ ।
रण मयरद्ध नारायण जहा, नारदु जाइ सपत्तउ तहा ॥५४४॥
विस्नु[1] मयण रथ दीठउ पाउ, चाहै[2] करण कुवर कहु घाउ ।
नानारिषि षण पहुंतो जाइ, बाहु पकरि सो धरयो रहाइ ॥५४५॥

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

तब हसि नारद लागो कहण, मोहि वचन निसुणह महमहणु ।
कहउ[1] तोसिउ कहहु वहुतु, यह प्रदवण तिहारो[2] पूतु ॥५४६॥
छठी निसिहि सो हरि लयउ. कालसंवर घर वृद्धिहि भयउ ।
इहि जीत्यो स्यंघरथ[1] पचारि, पुंनवंत[2] यह देव मुरारि ॥५४७॥
सोला लाभ भए इहि जोगु, कणयमाल सिउ भयउ विजोगु ।
कालसंवर जीत्यो तिहि ठाइ, पंद्रह[1] वरिस मिली तुह आइ ॥५४८॥
यह सु मयणु गरवो वरवीर, रण संग्राम जु साहस धीर ।
याहु[1] पौरिष को वर्णइ[2] घणाउ, यह सो पूत रूकिमिणी तणउ ॥५४९॥

---

(५४४) १. रूपिणि वयणहि तब बाहुबलि, इसु वेगा रथ ते उतरहि (ग)

(५४५) १. नराइणि रथि दीना पाउ (ग) २. लोडइ (ग)

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है

(५४६) १. क्या क्या हो तुम्हसउ २. तुम्हारा

(५४७) १. सिंघरथराउ (ग) २. पुण्यवंत (ग)

(५४८) १. बारह (ग) मूलप्रति में—'सो लाख' पाठ है

(५४९) १. रहि (ख) इसु (ग) २. बरणई (ख) वर्णउ (ग) मूल प्रति में पर्णइ पाठ है ।

[1]एतहि मयण पास मुनि जाइ, तिहिस्यो बात कहइ समुझाइ।
[2]यह तो आहि पिता तुम तणउ, जिहि[3] पवरिष दीठउ तइ घणउ ॥५५०॥

प्रद्युम्न का श्री कृष्ण के पांव पड़ना

तउ परदवणु चलिउ तिहि ठाइ, जाइ पडिउ केसव के पाइ।
[1]तव नारायण हसिउ हीयउ, मयण उठाइ उछंगह लयउ ॥५५१॥
[1]धनु रुकिमणी जेनि[2] उर धरीउ, धनि सुरयणि जिणि अवतरिउ।
[3]धनिमु ठाउ विराधी गयउ, जिहि धनु आजु जु मेलउ भयउ ॥५५२॥
धनुष बाणु तिहि घाले रालि, बाहुडि कुवर लीयउ[1] अवठालि।
जिहि घर आइसो[2] नंदनु होइ, तिहिस्यो[3] वरस लहइ सबु कोइ ॥५५३॥

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

तव नानारिषि बोलइ एम, चलहु नयरि मन भावहु खेव।
कुवर मयण घर करहु पएसु, नयरी उछहु करहु असेसु ॥५५४॥
नारायण मन बिसमउ भयउ, परिगहु सयलु जुझि रण गयउ।
जादम कुटम पडे संग्राम, किम्व मुहि होइ सोभ पुरि ताम ॥५५५॥
नानारिषि बोलइ वयण, क्षत्री तू[1] मोहिणी सकेलइ मयण।
क्षत्री सुहड उठइ बरवीर, रण संग्राम[2] मति साहस धीर ॥५५६॥

(५५०) १. नारद मयणि पास उठि आइ, (ग) २. यहु सो पिता तु अपि तुम्ह तणा (ग) ३. तिमु पुरिष क्या थर्याउ घणा (ग)

(५५१) १. तब नाराइणु उठइ उछंगि, मयण साथि भया बहु रंग (ग)

(५५२) १. धन्नि (ख) २. जिनि उदरि धर्यो (ग) ३. धनु सुठाउ जिहि थिरविहि गयउ (ख ग)

(५५३) १. अंकि उचाइ (ख) अकवालि (ग) २. अइसउ (ख) ३. तिहि परमंस लहइ सबु कोइ (ख) तिहि घरि सलह करइ सहु कोइ (ग)

(५५६) तुहु (ख) तू सो (ग) २. संग्रामजि (क ख) संग्रामहि (ग)

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खड़ा होना

तव मयरधइ[1] छाडयो मोहु, मोहिणि जाइ उतारयो मोहु ।
सैन उठी बहु[2] सादु समुद्दु, जाणौं[3] उपनउ उथल्यउ समुद्दु ॥५५७॥
पांडो[1] उठे सुहड वरवीर, हलहलु दस दिसा धर धीर ।
छपन कोडि जादव बलिवंड, छत्री सयल उठे परचंड ॥५५८॥
हय गय रहवर अरु जंपाणु[1], उठे[2] जिमहि सल पडे विमाण ।
सिगिरि छत्र जे पुहमि अपार[3], उठि सयन कवि कहिउ सधार ॥५५९॥

प्रद्युम्न के आगमन पर आनन्दोत्सव का प्रारम्भ

धवल छन्द

मयणु कुवरू जव दीठउ आनंदिउ[1] हरि राउ ।
लइ उछंगि सिर चुंमियउ, भयउ निसाणह घाउ ॥
भयउ निसाणा घाउ, राय जादम मन भायउ ।
सफलु जन्म भउ आजु, जेमि कंद्रपु घर आयउ ॥
सहुंकारु भणंत दैव, जणु परियणु तुठउ ।
मन आनंदिउ राउ, नयण जउ कंद्रप वयठउ ॥५६०॥

---

(५५७) १. मयरद्धउ छोडइ कोहु (ख) २. भएउ सद्दु समद्दु (ख) सेन्या उठि खड़े अरु झुझु (ग) ३. जणु सु उच्छलिउ पलय समुद्द (ख) जाण्या बलु थोथल्यार समुंदु (ग) मूलप्रति में 'समुद्र' पाठ है ।

(५५८) १. पंडव (ख ग)

(५५९) १. जंपण (ख) झंपाण (ग) २. उट्ठे मयगल भवकंकि बयाण (ग) ३. विभाण (ख)

(५६०) धवलु (मूल प्रति) दोहा (ख) धवल बंधों के (ग) १. मनावा (ग)

भेरि तूर बहु बाजहि, कलयरु भयो अनंदु।
रुपिणि सरिस मिलावऊ, अवहि[1] मिलिउ तहि पूतु॥
अवर मिलिउ तहि पूतु, सयल परियण कुलमंडणु।
अतुर मल्ल वर वीर, सुयण णयण[2]णंदणु॥
चले नयर सामुहे, सयल जनु जलहर गाजे।
कलयलु भयउ बहुतु, ततुर भेरि ताहि बाजे॥५६१॥
मोती चउक पुराइयउ, ठयउ सिंघासणु आणि।
मयरद्धउ बयसारियउ पुंनवंत घर जाणि॥
पुनंवंत घर जाणि, तहां कंद्रप बइसारिउ।
मोती माणिक भरिउ थाल आरति उतारिउ॥
पाट तिलकु सिर कियउ, सयल परियण जण भायउ।
ठयो सिंघासणु आणित, मोती चउक पुरायउ॥५६२॥
घर घर तोरण उभे मोती बंदनमाल।
घर घर गुडी उछली घर घर मंगलचार॥
घर घर मंगलचार नयर जन सयल बधावउ।
पुंन कलस लइ चली नारि नइ कंद्रप घर आयउ॥
कामिणी गीत करंति, अगर चंदन बहु सोभे।
मोती बंदनमाल, घर घर तोरण उभे॥५६३॥

---

(५६१) अवरु (ख) २. जण (ख)
(५६२) १. घर तोरण उभे नारि
(५६३) १. अलोढि (ख) मूलप्रति में–'मकी' पाठ है। (क)

चौपई

सयना सयल उठी घर जाम, छपनकोडि घर चाले ताम।
द्वारिका नयरी करइस सोभ, पुणि सब चलिउ अछोहु...॥५६४॥

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

गरुयड छन्द

कंद्रपु पठयउ नयर मझारि, मयण किरणि रवि लोपियउ।
चडि अवास वररंगिणि नारि, तिन कउ मनु अविलेखियउ॥
धन रूपिणि मन धरिउ रहाइ, नारायण घर अवतरिउ।
सुर नर अवर जय जय कार, जिहि आए कलयर भयउ।
घर घर तोरण उभे बार, छपन कोडि उछव भयउ॥५६५॥

---

(५६४) १. अछोहि (ख ग) प्रति में पाठ है—

रहसु सबु करइ लुगाई, मुहलार जीतबु आज।
कहइ इव रुकमिणि माइ, परिगहु सबु आइ बइट्ठा।
आनंदा हरिराउ, मइणु जब नयणे दीठा ॥५६६॥
भेरि तूरि बहु बजहि, कोलाहल बहुत्त।
रूपिणि सरिसु मिलावडा, आइ मिल्याति सुपूत्त।
आमुकट सिरि मोतीमाला, घरि घरि मंगलचार।
जिनसि अडबंरू छत्त, जाणु बरसहि घण गज्जहि।
ऊठ्यो जय जय कार भेरि तूरा बहु बज्जहि ॥५७०॥
घरि घरि तोरण खडे, घरि घरि वेद उचारइ।
घरि घरि गुडी उछली, घरि घरि आनंद अपार।
घरि२ नयरि घरि घरिहि बधाया, करहि आरतउ थालि।
माइ बंभण सहि आया, हसि हसि पूछइ बात।
बहुत परमल तिनि मूलं, सिंघासणु तारणीया।
अरु घरि तोरण ऊभे............................... ॥५७१॥
दो मोती माणिक भरि थालु, अवरू तिसु तिलकु कराया।
सुर तेतीस रहसु बहु, सिंहासण बइसाया ॥५७२॥

चौपाई

सैन्य सबे ऊठी घर आम, छपन कोडि चले घरि ताम।
कंद्रपु पइट्ठा नयर मझारि, बाजे सबद अपार॥५७३॥

(५६५) १. नारि नच्चहि (ख) मूलप्रति में चडि पाठ नहीं है २. अभिलेखिउ (ख)

भयउ उछाहु जगत जाणिउ, नयर मंगल किजइ ।
ता संख पूरिहि नाचहि घर, पंच सबद बजहि ॥५६६॥
जबइ मयण परिगह गए, घर घर नयरि बधाए भए ।
गुडी उछली घर घर बार, कामिणी गावइ मंगलचार ॥५६७॥

चौपई

विप्रति[1] च्यारि वेद ऊच्चरइ[2], वर कामिणी तह मंगलु करइ ।
पूत्र[3] कलस[4] तह लेइ सवारि, आगे होण[5] चली वर नारि ॥५६८॥
नयरि उछाहु करवहु[1] घणाउ, जब तें दिठे नयन परदवणु ।
सिघासण बयसारिउ सोइ, पुरयन[2] तिलकु करइ सबु कोइ ॥५६९॥
दहि दूब[1] सिर आखित देइ, मोती माणिक थाल भरेइ ।
कुमरहि सिर आरति उतारि, दे असीस चालइ वर नारि ॥५७०॥

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

एतहु मेघकूट सौ ठाउ[1] जमसंवरु विजाहरु राउ ।
माणिक कंचण माल संजुत, द्वारिका नयरी आइ पहूत ॥५७१॥

---

(५६८) १. बंभण (ग) २. उच्चरहि (ख) ऊच्चरहि (ग) मूलपाठ उछल ३. सिघासन बंसाल्यो सोइ (ग) ४. तिरि (ख) ५. आगइ होइ (ख) देइ असीस (ग)

(५६९) १. कहइ बहु कवणु (ख) २. पुरजण (ख) यह पद्य ग प्रति नहीं है ।

(५७०) १. बहोय सूब (ख)

(५७१) १. सो ठाउ (ख) सो तेहि मेघकूट जो ठाउ (ग) तीसरा और चौ पद्य ग प्रति में नहीं है । मूल पाठ विवाहु

पवन वेग विजाहरराउ, जिसकी[1] सयनु न सूझइ ठाउ ।
रतिभामा[2] जो कन्ह कुमारि, सो आणी वारमइ मझारि ॥५७२॥

धमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

जमसंवरु भेटिउ हरिराउ, वहुत भगति बोलइ सतिभाउ ।
तइ वालउ पालिउ परदवणु, तुहि समु सुजन नही मुहि कम्वणु ॥५७३॥
तव रूपिणि बोलइ तिहि ठाइ, कनकमाल के लागी पाइ ।
किम्वहुउं उरगिण होउ घर तोहि, पुत भीख दीनी तइ मोहि ॥५७४॥

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

वहु आयउ करि कीयउ उछाहु, मयण कुवर को ठयउ विवाहु ।
धरि लगन जोइसी हकारि, तव मन तूठउ कन्ह मुरारि ॥५७५॥
हडे[1] वंस त्रि मंडपु ठयउ, वहुल भंती ते तोरणु[2] रहउ ।
कापरछाए वहु विथार, कनक कलस डोलहि सिहुवार[3] ॥५७६॥

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

करिसामहण[1] सयल निकुताइ, आगै निमति[2] पुहमि के राइ ।
मंडलीक जे पुहमि असेस, आए द्वारिका सयन नरेस ॥५७७॥
अंग वंग कलिगह[1] तणे, दीप समूंद के भूंजही घणे ।
लाड चोर कानकेजिकीर,[2] गाजणावइ[3] मालव कसमीर ॥५७८॥

---

(५७२) १. तिहि कइ सइनि (ग) २. रतिनामा (ख)

(५७६) १. हरे (ख) हुरइ (ग) २. कौतिगुभया (ख) ३. सिहु दुवारि (ख) दीपहि पहि वारि (ग)

(५७७) १. करिसम लहणु (ख) २. अनेक, पुहमि के भउते राइ (ग)

(५७८) १. कालिगह (ख) तिलंगह (ग) २. कानाडेकिकीर (ख) लाडग उडक भवन कसमीर (ग) ३. गाजणीह महलिवा बहुधीर (ग)

गूजर तेसौ[1] भीजी भऐ, वेलाउल संभरि के भले ।
जिआहुति[2] कनवजी भले, पुहमि राइ सब निमते गणे ॥५७६॥
संख सबुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।
भेरि तूर बाजइ असराल, महुवरि वीणा अलावणि ताल ॥५८०॥
विप्रति[1] वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।
बहु कलियरु नयरि उच्छलिउ, जब[2] मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥५८१॥
रयणनि[1] जडे[2] छत्र सिर धरइ, कनक[3] दंड चावर सिर ढलइ ।
कनक मुकट सिर उवरउ[4] नरिंद, जाणौं[5] पावस रवि करण करंत ॥५८२॥
तब बोलइ रुक्मिणी रिसाइ, सतिभामा आणिह[1] केसइ ।
तीनि भवण जउ बरजइ मोहि, तउ सिर केस उतारउ तोहि ॥५८३॥
केस उतारि पाय तल मलइ, फुणि परदवण विवाहणु चलइ ।
एतइ[1] मिलि सयल[2] जनु सव्वु, दुहु नारि करयउ[3] खिम तव्वु ॥५८४॥

---

(५७६) १. ते सोरठी जे भले (ख) कनकवेस सोरठ जे भले (ग) २. जोवन वेश कनउजी मिले (ग)

(५८१) १. चारउ वेद विप्र ऊचरहि (ग) २. इव (ग)

(५८२) १. रयणेहि (ख ग) २. जडित (ग) ३. मणि छत्त सिर ऊपरि धर्यो (ग) ४. उवो (ग) ५. जाणउ नव रवि किरण करंतु (ख) जाणु कि सूर किरण छोडंति (ग) मउर अडंबर बाणी भले वलहि, चवर कटि कउतिग चले यह पाठ ग प्रति में अधिक है ।

(५८३) १. अरणहि कराइ (ग) आणीहितु कराइ (ग)

(५८४) १. मिले अउ ताह सयलु जण लोगु (ग) २. विसयल जनतु सब (ख) ३. करामउ खिम तव्वु (ख) होइ विवाहु जुड्यो संजोगु (ग)

सयल कुटम मनि भयउ उछाहु, कुम्वर मयण कउ भयउ विवाहु ।
दइ भा[1]वरि हथलेव कीयउ, पाणिगहणु[2] इम्व कुवरहि लयउ ॥५८५॥
[1]भयउ विवाहु गयउ घर लोगु, क[2]रइ राजु बहु विलसइ भोगु ।
दे[3]खित सतिभामा ग[4]हवरइ, सव[5]तिसालु ब[6]हु परिहसु करइ ॥५८६॥

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

तउ सतिभामा मं[1]तु आ[2]ठयउ, दि[3]जु बेग खेयउ पाठयउ ।
[4]रयण सचउ पाटण तिहि ठाइ, रयणचूलु तहि निम[5]सइ राउ ॥५८७॥
विज्जु बेग तहि विनवइ सेव, सतिभामा ही पठयो देव ।
[1]रविकीरति सिहु करम सनेहु, धीय सुइ परिभानही देहु ॥५८८॥

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

सयल राय विद्याधर मिलहु, बहुत कलयल सिहु द्वारिका चलहु ।
[1]बहुत नयर महु करइ उछाह, भानकुवर जिम होइ विवाहु ॥५८९॥

---

(५८५) १. भामरि (ख) भवरि (ग) २. पाणिग्रहण जब कुवरह भया (ग)

(५८६) भयो विवाह लोग घरि जाइ (ग) २. करहि राज विलसहि बहु भाय (ग) ३. देखन (ग) ४. परजली (ग) ५. कि (ख ग) ६. दुखि परहसि भरी (ग)

(५८७) १. मंतु (ख) २. अरठयउ (ख) अरद्दयो (ग) ३. विज्जु वेगु सयल पाठयउ (ख) विजइ विगे जोइण पाठयो (ग) ४. रमल संभु पादणपुर ठाउ (ख) ५. निवसइ (ख) खगा वंक तिहहि ले आउ (ग) मूलपाठ-विमथइ

(५८८) चाल्यो दूतु पवन अनुलाइ, वेगि पहूता खिण महि जाइ ।
यह पाठ प्रथम द्वितीय चरण के स्थान में है तथा मूल प्रति का प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में तृतिय चतुर्थ चरण है ।

(५८९) १. विद्याधर तुम्हि मिलहु सुणेहु, धीय सुयंवर भानकउं देहु

माणिउ बोल कुटंमु बहु मिलिउ, अगवइराउ मसाहृण चलिउ ।
द्वारिका नयरी पहुते जाइ, जिहि ठा मंडपु धरचो छवाइ ॥५६०॥
तोरण रोपे घर घर बार, कनक कलस थापे सीहद्वार ।
सयल कुटंब मिलि कीयो उपाउ, भानकुवर को भयउ वियाहु ॥५६१॥
पथंतरि ते राजु कराहि, विविहि पयाल भोग विलसाइ ।
राज भोग सब मिलइ मयणु, तहि सम पुहमि न दीसइ कवणु ॥५६२॥

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवल ज्ञान की उत्पत्ति

एतइ अवरु कथंतर भयउ, पूर्व्व विदेह आइ संभयउ ।
पुंडरीकणी णयरु हइ जहा, खेमंधरु मुनि निमसइ जहा ॥५६३॥
नेम धर्म संजमु जु पहाणु, तहि कहु उपणउ केवलज्ञान ।
आइत स्वर्ग पसइ जो देव, आयो करण मुनिसर सेव ॥५६४॥

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

नमस्कार कीयउ तखीणी, पूछी बात भवंतर तणी ।
पूव सहोवरु मुणि गुणवंतु, सो स्वामी कहिठार उपंत ॥५६५॥

---

(५६०) १. सुपरियरु मिल्यो (ग) २. मुसाहण (ख) विवाहण (ग) ३. तोरण धरे रचाइ (ग) तृतीय एवं चतुर्थ चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

(५६१) १. कामिणि गावहि मंगलचारु (ग) २. उछाउ (ग) ३. हुआ (ग)

(५६२) ख प्रति में यह चौपाई नहीं है । ग प्रति में निम्न चौपाई है ।

इसे प्रलंबल राजु कराहि, हुउसंनाक राखहि मनमाहि ।
राजु भोगु सहि विलसहि आगु, नाही कोइ तिन्ह सममानु ॥६०७॥

(५६३) १. पूरब देसि जाइ सो गया (ग) २. खेमधरु (ग)

(५६४) १. तपि क्रिया समान (ग) २. उपजहि (ख) ३. अच्युत स्वर्ग बसइ सो देव (ग) मूलप्रति में 'पसइ' पाठ है ।

(५६५) १. नेमसिर की जोति जाण (ग) २. मोहि (ग) मुणहि (ख) ३. सो सामी कहि ठाइ उपन्नु (ख) सो संपयकवर आहि पहुत (ग)

संसयहरु [1] कुणि कहइ सभाउ, भरहखेत सो पंचमु [2] ठाउ ।
सोरठ देस बारमइ [3] नयरु, [4] तहि समीपु हइ न दीसइ [5] अवरु ॥५९६॥
तह स्वामी [1] महमहण नरेसु, धर्म नेम सो करइ असेसु ।
बहु गुणवंत भज [2] तसु तणी, तासु नाउ कहीए रूपिणी ॥५९७॥
तहि घर उपणउ खत्री मयणु, पुनवंत जाणइ सब कम्वणु ।
तासु के रूप न पूजइ कोइ, करइ राज [1] धरणि मा सोइ ॥५९८॥

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

निसुणि वयण सुर बइ गो तहा, सभा नारायण बइठो तहा ।
सुरमणि रयणजडिउ जो हारु, सोनिसुत आविउ अविचारु ॥५९९॥

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

कुणि रवि सुर यइ लागउ कहण, निसुणि वयण नरवइ महमहण ।
जिहि तू देइ अनूपम हारु, हउ कूखि लेउ अवतारु ॥६००॥

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

तउ मन [1] विभउ जादउराउ, मन मा चित करइ [2] मन भाउ ।
चंद्रकांति मणि दिपइ अपारु, सतिभामा दियह आफहु हारु ॥६०१॥

(५९६) १. सोसाइक (ग) २. सूचइ राउ (ख) सूचइ तिहि ठाइं (ग) मूलपाठ–भूचैठाउ ३. द्वारमाइ (ख) ४. मूलपाठ देसु ५. पूजइ (ग)

(५९७) १. तउ महमहणु राउ नरेसु (ग) २. नारि (ग)

(५९८) १. विलसहि महि सोइ (ग)

(५९९) १. देइ नारायणु कहे विचारु (ग) प्रथम तथा द्वितीय चरण के स्थान में निम्न पाठ है–परबजणु बीढ़ा बइठा पासि, पुरब नेह चितु भरया उल्हासि (ग)

(६००) १. जिसु तिय कै कइ गलि घालिहि हारु (ग)

(६०१) १. विसमा (ग) २. धरि भाव (ग)

प्रद्युम्न द्वारा रूक्मिणि को सूचित करना

तबहि[1] मयण मन चमक्यउ[2] भयउ, पवण वेगि रूपिणि पह गयउ ।
माता वयण सूझइ तू मोहि, एक अनूपम आखहु तोहि ॥६०२॥

पूव सहोदरु जो मोहि तणउ, सो सनेह बहु[1] करतउ कनउ ।
अब[2] मो देउ भया मुरसारु, रयणजडित तिण आप्यो[3] हार ॥६०३॥

अब[1] वह अहारसु पहरै[2] सोइ, तहि घर पूत आइसो होइ ।
माता कुडउ[3] पयासहि मोहि, कहहु तहा का अफासु तोहि ॥६०४॥

तब रूपिणि बोलै मुह चाहि, तू मो एकु सहस बरि[1] आहि ।
बहुत पूत मो[2] नाही काज, तू ही एकु मही[3] भूंजै[4] राज ॥६०५॥

जामंवती के गले में हार पहिनाना

फुणि वाहुडी बोलै रूपिणी, जंववती जु बहिण महु तणी ।
निसुणि पूत तोहि[1] कहौ विचारु, इनी[2] काउ जाइ दिवावइ हारु ॥६०६॥

(६०२) १. ताहि (ग) २. अचरिज (ग)

(६०३) १. करहि हम घणहु (ग) बहु करतो घणउ (ख) २. इब सो देव भया मुनिसारु (ग) ३. आपउ (ग)

(६०४) १. एहु हारु जो पहरहि कोइ (ग) २. तिहि कइ (ग) ३. झूठउ बोलउ मोहि कहाहि, तहारु हुउ बयाबाँ तोहि (ग)

(६०५) १. बढि (ग) २. मोहि जाणे काज (ग) ३. मोहि (ग) ४. भूपति राजु (ख)

(६०६) १. तुझ (ग) २. उसकउ (ग)

जामवती का श्रीकृष्ण के पास आना

तवहि मयणु मन कहइ विचारु, जंववती कहु[1] लेहि हकारि ।
काममुंदरी पहरइ सोइ, बोल[2] रुप सतिभामा होइ ॥६०७॥
न्हाइ धोइ पहरे आभरण, कण कंकण सोहइ ते रमण[1] ।
तिहिठा[2] वइठे कान्हु मुरारि, तहा गइ जामवंती नारि ॥६०८॥
तउ[1] मन विहसिउ तब[2] मन चाहि, तहा जाणइ सतिभामा आहि ।
वाहुडि कन्ह न कीयउ विचारु, तिहि[3] वछथलि घालिउ हारु ॥६०९॥
घालि हारु आलिगनु कियउ[1], तिहि उपदेस[2] आहि संभयउ ।
फुणि णिय रूपु दिखालि जाम, मन भिभिउ नारायण ताम ॥६१०॥
वस्तुबंध—

ताम जंपइ एम महमहण ।
मन भिभिउ विसमउ करइ, जइ यउ चरित सतिभामा जाणइ ।
वैरूप करि मोहणइ जा संवइ आणइ…………………॥
जो विहिणा सइ चितयऊ, सो को मेटणहारु ।
पुनवंत जंपइ तुव, करइ राज अनिवार ॥६११॥

---

(६०७) १. तुम्हि (ग) २. बोल रूप (ख) बोले रूप (ग)
(६०८) १. ते रमण (ख) ते रयण (ग) मूलपाठ तान्योरण २. अहिठा (ख ग)
(६०९) १. विगसइ केसव २. इहु (ग) ३. ताहू गलइ हसि घाल्यो हार (ग)
(६१०) १. करइ (ग) २. ठा आइ देउ संचरइ (ग) उरि देइ (ख)
ग— काम मूंदड़ी घटी उतारि; देखइ राउ जम्बवती नारी ॥
(तीसरे चौथे चरण के स्थान पर है)
(६११) ग प्रति में निम्न पाठ है—
ताम जंपइ जंपइ एम महमहणु मनि विंभउ विस्मउ भयो ।
एहु रूप कहि मोहनी, मयणि कुवरि माड्यो विनाणि ।
चरितु सतभामा जाणी, एहु काम कटु की कवणु हरिराजा चिंति चिंतवइ ।
जो विहिणा जिसु चितयउ सो किम मोह्यो जाइ ।
जाहि जंववती विलसंतु करहि राज बहु भाइ ॥

चौपई

जब[1] जंबइ पूत अवतरिउ, संबकुम्वारु नाउ तसु धरयउ ।
बहु गुणवंत रूप कउ निलउ,[2] ससिहर कान्ति[3] जोति आगलउ ६१२॥

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

एतहु[1] पढम सग्गि जो देउ, सुर नर करइ तास की सेव ।
सो तहं हुँ तउ आउ खउ चयउ, सतभामा घर नंदण भयउ॥६१३॥

लक्षणवंतु[1] सयल गुणवंत, अति सरूप सो सीलवंत ।
नाम कुवर सुभानु तहा[2] चयउ, सतिभामा[3] घर णंदण भयउ ॥६१४॥

दोनु कुवर खरे सुपियार, एकहि दिवस लियउ अवतार[1] ।
दोउ विरधि गए ससिभाइ, दोइ पढे गुणी इक ठाइ ॥६१५॥

शंबुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

एक[1] दिवस तिनि जूवा ठयो, कोडि सुवंद दाउ तिन ठयउ ।
संब कुवर जीणिउ तहि ठाइ, हारि सुभानुकुवरु घरि जाइ ॥६१६॥

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

तब सतिभामा परिहसु करइ, मन मा[1] मंत्र चिंति[2] सो[3] करइ ।
करहू खेल कुकडहि[4] वहोडी, जो[5] हारे सा देइ दुइ कोडि ॥६१७॥

(६१२) १. जम्बंवती ए पूतु अवतरयो (ग) २. किसु मिले (ग) ३. सूरज तिसु वडि तुलइ (ग)

(६१३) १. इहु पटमनि संदेह सो बेर, एहुता कर्म संयोगइ देव (ग)

(६१४) १. वत्तिस (ग) २. तसु भया (ग) ३. दुइज चंदु जिउ विरधो गया (ग)

(६१५) १. हथियार (ग)

(६१६) १. हारयो सयनु दाउ तिन्हि कियो (ग)

(६१७) १. गाहु (ख) महि (ग) २. मूलप्रति में चि पाठ है । ३. विसाधरा (ग) ४. कूकडन्हवकोडि (ग) ५. थाहुडि दाउ धरया तिनि फेरि ।

तउ कुकडा देइ मुकलाइ, उपराऊपरु भिरे ते आइ ।
कुवर[1] भान तणउ गो मोडी, संबकुवर जिणे[2] द्वै कोडि ॥६१८॥

वहुत खेल सो पाछइ कीयउ, तवइ[1] मंत ता ओरइ कियउ ।
दूत[2] हकारि पठायो तहा, वहुरि विजाहर निमसइ तहा ॥६१९॥

गयो दूत नही लाइ वार, विजाहरनी जणाइ सार ।
भणइ[2] दूतु मनि चिंत्या लेहु, पुत्री एकु आनहि देहु[3] ॥६२०॥

सुभानुकुमार का विवाह

विजाहर[1] मन भयउ उछाहु, दीनि[2] कुवरि भयो तह व्याहु ।
द्वारिका नयरी कलयलु भयो, व्याह[2] सुभानकुवर को भयउ ॥६२१॥

कुवर[1] सुभान विवाहै जाम, तव रुपीणि मन चितइ ताम ।
दूत वुलाइ मंत्र परठयो[2], रूपकुवर पास[3] पाठयो ॥६२२॥

---

(६१८) १. सभा नारायण मुखु वाल्या मोडि (ग) २. जीता बोइ कोडि (ग)

(६१९) १. संबकुवर जीति धनु लीया (ख ग)
२. कुवर सुभानुहि आये हारि, तउ विलखी सतभामा नारि (ख ग)

(६२०) १. विज्जाहर राइ (ग) २. भणै विपु जिन अनचितु लेहु (ग)
३. देहि (ख ग) मूलप्रति में 'भणइ दूत मन अनुचित लेख, पुत्री एकु आनइ देहि,' है ।

(६२१) १. विद्याहर (क) विज्जाहर (ख) २. तिन (क) दीनी (ख ग)
३. उछिगु लोगु सयल आइउ (ग)

(६२२) १. तव रुपणि मनि उठ्यो चाउ, हुउ अपणा व्याहउ करिभाउ (ग)
२. कियो (क) सठयो (ख) ३. पासहि पाठयउ (क) पासि पाठयो (ख)
...रिहि दूतु पाठयो, जाइ रूपचंदु बोलयउ (ग)

रुक्मिणि के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

सो कुंडलपुर गयो तुरंत, रूपचंदस्यो कह्यो निरुत्त ।
स्वामी बात सुणो मो तणी, हउ तुम पह पठयो रूपिणी ।।६२३।।

संवकुम्वार कुंवर[1] परदवणु, तिहि पत्तरिसु जाणइ सवु कवणु ।
जइसे तुम स्यो वा[2]ढइ नेहु, दुहु[3] कुमा[4]र कहु बेटी देहु ।।६२४।।

रूपचन्दु बोलइ तिस ठाइ[1], रूपिणि कहु[2] तू लेइ मनाई ।
जादौ वंस पू[3]त जो होइ, तिसको वाहुरि धीयको देइ ।।६२५।।

कहइ बात ज[1]णावउ समुझाइ, इसवही कहहि रुकुमि[2]णी जाइ ।
सा[3]भंडि तइ जु पवाडउ कियउ, बात कहत नहु दू[4]खित हियउ ।।६२६।।

जिणि परिगहु [1]घालियउ अवटाइ, सेसपाल तू गई मराइ ।
अजहु वयण कहइ तू एहु[2], मयणकुवर कहु[3] बेटी देहु ।।६२७।।

---

(६२३) निरुत्त (क) – नोट – प्रथम और द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है । मूलपाठ तुरंत ।

(६२४) १. उर (क) २. बाधइ (क) ३. देहु (क) दहू (ग) कुवरनो (ग) ।

(६२५) १. राइ (क) २. कउ तउ बेटी तहु (क) स्यउं तू कहइ बुला[illegible] ३. मूल प्रति में--पूजो सोई पाठ है । ४. तिस कहु धोयन देई कोइ (ग)

(६२६) १. जनसिउ (क) जणाणिउ (ख) इहि (ग) २. तू तिगुस्य[illegible] जाइ (ग) ३. सांभलि (क ख) संभलि करियहु म्हारा किया (ग[illegible] ४. जाटइ (ग)

(६२७) तू गई मराइ (ख) मूलपाठ—तू चल्यो मरवाइ २. महि ([illegible] ३. कहु (ग) मूलपाठ तू

निसुणि वयण खरण चाल्यो दूत, द्वारिका नयरि आइ पहूत ।
तुम[1] को वचन कहै समझाइ, सो[2] जरण कहिउ सरस्वती जाइ ॥६२८॥

नारायरण स्यो आयस[1] कहउ, हम[2] तुम माह कमरण सुख रहिउ ।
केते[3] अवगुण तुम्हारे[4] लेउ, तुम कहु छोडि डोम[5] कहु देउ ॥६२९॥

निसुणि बात[1] विलखाणी वयण[2], आसू पालु कीए द्वै नयण ।
मानभंग इहि[3] मेरउ कीयउ, बुरो[4] कियउ मुह दुख्यो हीयउ ॥६३०॥

विलख वदनि दीठि रुपिणी, पूछि बात जननी आपणी ।
कवण बोल तू विसमउ धरइ, सो मो वयण वेगि उचरइ ॥६३१॥

मइ[1] छइ पूत मंत्र आठयो, कुंडलपुर जरण[2] पाठयो ।
दुष्ट वचन ते कहे बहुत, साले[3] खरे पूए मो पूत ॥६३२॥

---

(६२८) १. तिहूकउ (क) उहूकउ (ख) मोस्यउ (ग) २. आइ कहा रुकमिणि के आइ (क) सो ति कहिउ रुकिमिणी सिहु आइ (ख) सो तिन्हु कहे रुकमिणि आइ (ग)

(६२९) १. एसो (क) अइसउ (ख) आइसा भयउ (ग) २. हम तुम्ह आइ सुखइ सा भयउ (ग) ३. कितेक (ग) किते (ख) ४. थारे (ग) ५. डूंम (क ख ग)

(६३०) १. सो विलखी वयण (ग) २. करहि दुहु (क) करइ दुइ (ख ग) ३. यहु (क) इति (ख, ग) ४. बुरा बोलु मोरयउ बोलीया (ग)

(६३२) १. इसिउ पूत मंत आव्यो (क) मइथिउ पूत वयणु आवयउ (ख) मइथा पुत्र मंतु इहु हुयउ (ग) २. छउ जरण पाठवो (क, ख) दूत पाठ्यो (ग) ३. साले खरउ हीयइ मोहि पूतु (क) साले खरे मुहि हीय बहुत (ख) सालहि हिये खरे ले पूत (ग)

मइ जाण्यांउ मुहि भायउ अहइ, एसी बात निचू[1] भउ कहइ ।
विषयवासिरिए[2] मानइ होइ, एसी बात कहइ न कोइ ॥६३

निसुरिए वयरण परदवनु रिसाइ, हीरगु वयरण तह बोलइ माइ ।
रूपचंदु रग जिरगहु पचारि, पारा[1] रूप छलि परगाउ नारि ॥६३

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

कंद्रप बुद्धि करी तंखीरगी, सुमिरी विद्या बहुरूपिरगी ।
संबु[1] कुवरु परदमनु भयउ, पवरग वेगु कुंडलपुर गयउ ॥६३

दोनों का डोम का वेष धारण कर लेना

दीठउ नयरु दुवारि[1] गयउ, डोम रूप दोउ जरग भयउ ।
मयरग अलावरिग करर[2] पठए, सामकुमार[3] मंजीरा लए ॥६३

फिरे वीर चोहटे मझारि, उभे भये जाइ सीहवारि[1] ।
बहु परिवार[2] सिउ दीठउ राउ, तउ कंद्रपु करइ उछाउ ॥६३

(६३३) १. नीच (क) नीच त्यों (ग) २. विष्णु सिंघासरिए (
विष्णुसवासिरिए (ख) किम बचन सुरिए बोलइ सोइ (ग)

(६३४) १. पवनवेग (ग)

(६३५) १. संबु कुवरु परदमणु भयो (क) संब कुमारि कुवरु हुए भए
मूल प्रति में 'स्वामी' पाठ है ।

(६३६) १. द्वारि आइए (ग) २. करि पाठए (क, ख) करगहि हुयो
३. संबु कुमरि (ग)

(६३७) सीह दुवारि (ग) सीह दुवारि (ख क) २. परियरग
(ख) परिगहस्यउ' (ग)

गीत कवित जे आदम तणौ, ते कंद्रप गाए सव[1] सुणे ।
अवर गीत सब[2] चीतइ धरणी, जादम[3] राय की सलहण करइ ॥६३८॥

जादम तणउ[1] नाउ जब लयउ, रूपचन्द मन विसमउ[2] भयउ ।
बहुत गीत की[3] जाणहु सार, कहा[4] हुते आए वैकार ॥६३९॥

रूपचन्द का अपना परिचय बतलाना

द्वारिका नयरी कहिए ठाउ, भुंजइ[1] नरायणु जादमुराउ ।
पाटमहादे जहा रुक्मिणी, राय सहोदरि जो तुह तणी ॥६४०॥

तुम्हि सलहण वइ करइ बहुत[1], तिणि राणी पठए[2] दूत ।
तुम्हि उतरु तिहि कहउ जाइ, तिहि सहेट हमि आए राइ ॥६४१॥

वाले बोलति करहु पम्वाणु[1], सतु वाचीय परि होइ पवाण[2] ।
भाख[3] पालि मन धरहु सनेहु, दोउ पुत्री[4] हमि कहु देहु ॥६४२॥

---

(६३८) १. आपणा (क) २. पाछहि (क) सो चिति मंकि (ग) ३. जादम राइ सालाहति करइ (ग)

१. मूलप्रतिमें—आग सरो पाठ है तथा चतुर्थ चरण नहीं है ?

(६३९) १. भणउ (ख) सुणउ (ग) २. मन विलखउ (क) मनि विसमउ (ख ग) मूलप्रति में 'नवि भयउ' पाठ है ३. गाए बहुबार (क) कीया तह सार (ग) ४. कहा ते आए ए बेकार (ग)

(६४०) १. तह (ग) बसहि (ख) भुंजइ ताहि नारायण राउ (ग)
मूलप्रति में—'भुवइ' पाठ है ।

(६४१) १. गुणवंत (क) तोहि सराहण करहि बहुत (ग) २. पठए वे दूत (क) पठये हम दूत (ख) तिनि नाराइणि था पठ्या दूत (ग)

(६४२) १. प्रमाण (क) परवाणु (ख) परवमणु (ग) २. मवाण (क) पर-वाणु (ख) सत्य वयण ते होहि परवाणु (ग) ३. भागिवंत (क) भाजि जाणिनि (ग) ४. कन्या (ग)

रूपचन्द का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

वस्तुबंध---

निसुणि कोपिउ खरउ[1] तहिराउ ।

जाणी वैसुंदर घीउ ढलीउ, धुणि सीसु सरवंगु[2] कंपिउ ।

पाणभ[3] बोलत गयउ, एहु बोलते कवणु जंपिउ ।।

लै[4] वाहिर ए निगहहु, सूली रोपहु जाइ ।

जइ[5] जादी तहि सबल, तोहि छुरावहु आइ ।।६४३।।

चौपई

गीम्व[1] गहे तक करहि पुकार, डोम डोम हुइ रहे अपार ।

हाथ अलावणि सिंगा[2] लए, हाट चोहटे सब परि[3]रहे ।।६४४।।

तंखण[1] कुवर भइ पुकार, रूपचंद रा[2] जाणी सार ।

हय गय रह[3] सेती पलणाइ, छण इक माह पहुंतउ आइ ।।६४५।।

रूपचंद[1] रा पहुतो आइ, सामकुम्वारु[2] परदमणु जहा ।

एक[3] तारक सब एकहि साथ, सागालाएं[4] अलावणी हाथ ।।६४६।।

---

(६४३) १. तबहि मनिराउ (ग) २. अति रोस कीए (ग) ३. प्राण जीव (क) पाण जीव (ख) पुणि बोल्यो भिम गयो (ग) ४. लेई बाहरि निगयउ (क) वहि लेहो बहु निग्रहहु (ग) ५. बांह पकडि बन महि धरिउ जैसे पाइ पलाइ (क)

(६४४) १. पोव (क) गावत गाहे करहि पुकार (ख) गीत कवित तिनि काढ वारि (ग) २. अरु गलि आइ (ग) ३. भरि गए (क ख) भये वुद्धि चौहटे फिराइ (ग)

(६४५) १. पुरवि (क) पुरवरि (ख) पुत्र गुये हूंकारि (ग) २. राय जणाई सार (क) कहु दीनी सार (ग) ३. रथ पाइक (ग)

(६४६) आइ पहुतउ तिहा (क) २. संब कुमर परदमण (क) संब कुवरु परदोमु (ग) ३. एक तक नारसिर (ग) ४. गलै अलावण बोणा हाथि (ग)

देखि डाम मन बिंभउ[1] राउ, नीघण[2] जाति करउ किम[3] घाउ ।
धणुक[4] सधारिण बाण जब हणे, तहि[5] पह अवर मिले चउगुणे ॥६४७॥

प्रद्युम्न और रूपचन्द के मध्य युद्ध

कोपारुढ मयण तब भयउ, चाउ चडाइ हाथ करि लयउ ।
अगिनबाणु दीणउ मुकराइ[1], जुझत षत्री चले पलाइ ॥६४८॥

भागी सयन गयउ भरिवाउ, बाधिउ मामू[1] गले दइ पाउ ।
लइ कन्या सबु दलु पलगाइ, द्वारिका नयरि पहुते आइ ॥६४९॥
रूप रावलइ पहुतो तहा, राउ नरायण वइठो तहा ।
रूपचंदु[1] हरि दीठउ नयण, हमइ[2] लाभु कियउ नारायणु ॥६५०॥

रूपचन्द को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

तब हसि मदसूदनु इम कहइ, इह भाणेजु[1] तिहारउ अहइ ।
इहि विद्यावलु पवरिषु[2] घणउ, जिणि जीतिउ पिता आपणउ ॥६५१॥

---

(६४७) १. बिलखो (क) चितइ (ग) बिभिउ (ख) २. निरघण (ख ग) ३. किउ (क) को (ग) ४. धनुष बाण ले हाथि हिणइ (ग) ५. ऊपरि अधिकु चउगणे मिलइ (ग)

(६४८) १. मुकलाइ (क ख ग)

(६४९) १. रूप ( ) मामा (ग)

(६५०) १. रूपचंद (क ग) २. इहु के बहुतु किया महमहणु (ग)

(६५१) १. यहु भाणजा तुहारा अहइ (ग) २. इहु सुपूत, रुकमिणि तणा (ग) नोट-- यह छंद (क) प्रति में नहीं है ।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचन्द को छोड़ देना

तब हसि माधव कीयउ[1] पसाउ, बाधिउ छोडिउ मनधरि भाउ।
मयरद्धे[3] हसि ग्राकउ भरिउ, कुथि रुपिणि पहु[4] घर ले चल्यउ ॥६५२॥

रूपचन्द और रुक्मिणि का मिलन

भेटी जाइ वहिणि आपणी, बहु[1] तक मोहु धरयो रुक्मिणी।
बहु आदर सीभइ[2] ज्योनार, अमृत भोजन भए अहार ॥६५३॥
भायउ[1] वहिणि भाणिजे भले, भयउ[2] षेमु जइ एकत मिले।
निसुणि वयण तब भयउ उछाहु, दीनी कन्या भयउ[3] विवाहु ॥६५४॥

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

हरे[1] बंस तव मंडप ठये, बहुत भांति करि तोरण रए[2]।
छपनकोटि जादम मन रले, दोउ कुवर विवाहण[3] चले ॥६५५॥

---

(६५२) १. करि मनिचाउ (ग) २. रुपचन्द राउ (ग) ३. मंराधा हसि अंकौ भरइ (ग) ४. कइ (ग)

(६५३) १. बहुता मोहु करै रुकमिणी (ग) बहुत सनेहु धरिउ रुकमिणी (ख) २. कीजहि जीमणवार (क) साजइ जवनार (ख) रची जउणार (ग)

(६५४) १. भाई वहिण भाणेजे भले (क) मिले (ख) आए बहण भणइ तुम्ह भले (ग) २. भली सरी जो खोमहमिले (ग) ३. हुयो (ग)

(६५५) १. का (ग ख) २. रोपिया (ग) ३. विवाहण (क ख ग) मूलपाठ 'बिमाणा' ग प्रति में निम्न पाठ अधिक है—

रुपचंद सिव बोलइ आणि, दोइ कन्या देवउ आणि (ग)

संख भेरि बहु पडह अनंत, महुवरि[1] वेरग तूर बाजंत ।
दे भावरि[2] हथलेवउ भयउ, पारिगगहनु[3] चौहुजरा कियउ ।।६५६।।

घर घर नयरी भयउ उछाहु, दुहु कुवर कउ[1] भयउ विवाहु ।
सुरिजन जरा ते मन मा रलइ, एकइ[2] सतिभामा परजलइ ।।६५७।।

रूपचन्द को आइस भयउ, समदिनारायरग सो घर गयउ ।
कुंडलपुर सो राज कराइ, वाहुरि कथा द्वारिका जाइ ।।
एथंतरि[1] मनु[2] धम्मंह रलो, जिरगु वंदुरग कैलासहि चलिउ ।।६५८।।

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वन्दना करना

वस्तुबंध---

ताम चितइ कुंवर परदवरगु ।
भउ संसार समुदु[1] परिजयनु, धर्म्म[2] दिढु चित दिजइ ।
कैलासहि सिर[3] जिरगवर भुवरग, सुद्ध भाइ पूजइ किज्जइ ।।
अतीत अनागत वरत[4] जे दीठे जाइ जिरिगद ।
जे[5] निपाए जिरगवर भुवरग, धनु धनु भरहं नरिंद ।।६५९।।

---

(६५६) १. मधुरी वीरग ताल बाजंत (क) २. फोया (ग) ३. पारिगग्रहरग करि बुइ परणीया (ग)

(६५७) १. का हुवा (ग) २. करि कउतिग आगे बुइ चले (ग)

(६५८) इस पद्य में ६ चरण हैं । १. इरथंतरि (क) एथंतरि (ख) येथंतरि (ग) २. सो मन महि रले (ग)

(६५९) १. दुत्तर तरइ (क) समुदपारि (ग) समुद्दपारि (ख) २. जैनधर्म (क ख ग) ३. सिखर (ख) कविलासह सो सिखरि (ग) ४. वरति वंदे (क) ५. जेरिग कराए जिरग भवरग ते सब वंदे आनंद (ख) ग प्रति में अन्तिम २ पंक्ति निम्न प्रकार है—

चलिउ ताहु जहु कम छिजइ फिरि फिरि वेखइ जिरग भुवरग ।
वंदइ भावन भाइ जे जिम, आन्धा महि रहहि तहु महोछुसरवाइ ।।

चौपई

फिरि चेताले वंदे[1] मयण, तिन्हि[2] ज्योति दिपइ जिम्व रयण ।
अट्ठविधि पूजउ[3] न्हवणु कराइ, बाहुडि मयण द्वारिका जाइ ॥६६०॥
इथंतरि अवरु कथंतरु भयउ, कौरो पांडव भारहु भयउ ।
तिहि[1] कुरखेत महाहउ भयउ[2], तिहि नेमिस्वर संजमु लयउ ॥६६१॥
बाहुरि मयण द्वारिका जाइ, भोग[1] बिलास चरित बिलसाइ ।
छहरस परि सीझइ ज्योनार, अमृत भोजन करै[2] आहार ॥६६२॥
तहा सतखणा धौल[1] हर अवास, निय[2] निय सरसे भोग बिलास ।
अगर चंदन बहु[3] परिमल वास, सरस[4] कुसम रस सदा सुवास ॥६६३॥

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

एसी[1] रीति कालुगत गयउ, फुणि नेमि जिन केवल भयउ ।
समवसरण तव आइ सुरिंद, वणवासी[2] अवर सुरिंदु ॥६६४॥
छपन[1] कोटि जादम मन रले, नारायण स्यो हलहल चले ।
समउसरण परमेसरु जहा, हलहल कान्ह पहुते तहा ॥६६५॥

(६६०) १. वंदण करइ (ख) वंदे जाणु (ग) २. तिन्ह की जोति देखइ जिणभाणु (ग) ३. पूजा (क ख ग)

(६६१) १. तिन्ह (क) तिन्हि (ख ग) २. किया (ग)

(६६२) १. छहु रति विलसइ भोग कराइ (ग) २. सरस (ग)

(६६३) १. धवल (क ख ग) २. निय पिय सरसहि (ख) नीरस परिस (ग) ३. केसर (ग) लहै (ग) ४. सरस कुसमरस सदा सुवास (क) मूलपाठ—तंबोल कुसम सर दीस

(६६४) १. अइसी (क ख) इसी (ग) २. भुवणवासी आयो धरणिंदु (ग)

(३६५) १. सभी जादम मिले (ग)

देवि[1] पंथाहिण करिउ बहुत, फुणि माधव[2] आरंभिउ[3] थुति ।
जय कंदर्प्प खयंकर देव, तइ सुर असुर कराए[4] सेव ॥६६६॥
जइ कम्मट्ठ दुट्ठ खिउकरण, जय महु जनम जनम जिनुसरणु ।
तुम पसाइ हउ दुतरु तिरउ, भव संसारि न बाहुडि परउ ॥६६७॥
करि स्तुति[1] मन[2] महि भाइ, फुणि नर कोठि बइठउ जाइ ।
तउ जिणवाणी मुह नीसरइ, सुर नर सयल जीउ मनि धरइ ॥६६८॥
धर्माधर्म सुणिउ दुठ बयण, आगम तणउ सुणिउ परदवणु ।
गणहर कहु पूछइ षण सिधि, छपनकोटि जादम की रिधि ॥६६९॥
नारायण मरण कहि पासु, सो मो कहु आपहु निरजासु ।
द्वारिका नयरी निश्चल होइ, सो आगमु कहि आफहु मोहि ॥६७०॥

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

पूछि वात तउ हलहल रहइ, मन को सासउ गणहर कहइ ।
बारह वरिस द्वारिका रहहु, फुणि ते छपनकोटि संघरहु ॥६७१॥
द्वीपायन ते उठ इव जागि, द्वारिका नयरी लागइ आगि ।
मद[1] ते छपनकोटि संघरइ, नारायण हलहल[2] उबरइ ॥६७२॥

(६६६) १. देव कहीजे कथा बहुत, (ग) २. आरभिउ थुत्त (क) आरंभिउ थोउ (ख) पुणि केसउ आइरवउ थुत्त (ग) ३. मूलपाठ आरंभिउ युत्त ४. करहि तिसु सेव (ग)

(६६८) १. करिवइ थुति (क) करिव थुत्ति (ख) करिवि थुति (ग) २. मनिमहि (क ख ग) दूसरा और तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(६७०) यह छन्द क प्रति में नहीं है ।

(६७२) १. बलिभद्र (ख) २. छपनकोडि समुंद संघरहि (ग)

मुनि आगमु सो मेटइ कम्वणु, जरदकुमार[1] हाथ हरि[2] मरणु ।
भान सुभानु अरु सामिकुमारु[3], आठ महादे संजमु भारु ॥६७३॥
सुणि बात जउ गणहर पास, निहचे द्वारिका होइ विणासु ।
दीपायनु तपचरणह गयउ, जरदकुमारु[1] वनवासा लयउ ॥६७४॥

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

दसदिसा खहू जादम भए, करि संजमु जिणवर पहु गए ।
दीख्या लेइ कुमर परदवणु, चिंतावत्थु[1] भयउ[2] नारायणु[3] ॥६७५॥

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण
श्रीकृष्ण का दुखित होना

विलख वदनु भयो[1] नारायणु, हा मुहि पूत पूत प्रदवनु ।
कवण वुद्धि उपनी तो आजु, लेहि द्वारिका भुंजहु राजु ॥६७६॥
राजधुरंधर जेठउ पूत, तोहि विद्यावल आहि वहुत ।
तोहि पवरिषु जाणइ सुरभवण, जिणतपु लेइ पूत परदवणु ॥६७७॥
कालसंवर जाणइ तो हियउ, हउ रण महतइ विलखो कीयउ ।
तइ रूपिणि हरी मुहुतणी, फुणि तइ सुहड पचारे घणे ॥६७८॥

(६७३) १. जरा (ग) २. होइ (ग) ३. सम्बु (क ख ग)

(६७४) १. जरासिंधु (क) जराकुमार वनवासी भया (ग)

(६७५) १. चिंतवन्त (क) चिंतावस्थ (ग) २. भयउ (क) ३. महुमहणु (क) महुमहणु (ग)

(६७६) १. बोलइ तिस कवण (क) बोलइ नारायणु (ख) बोला महुमहण (ग)

(६७७) १. मत (क)

नारायण के वयण सुणेइ, तं[1] पडि ऊतरु[2] कंद्रपु देइ।
[3]का कउ राजुभोग घरबारु, सुपिनंतरु जइसउ संसारु ॥६७९॥

का कउ धन पौरिषु बलु घराउ, का कउ बापु कुटंब कहि तणउ।
[1]घडिक मा जाइ विहडाइ, [2]आव क्षिपति को सकइ रहाइ ॥६८०॥

रुक्मिणि का विलाप करना

नारायण [1]वारि विलखाइ, फुणि रूपिणि सपती आइ।
[2]करण कलाप करइ विललाइ, केमु पूत मन धरमु रहाइ ॥६८१॥

एकु पूत तू मोको भयउ, धूमकेत तवही हरी लयउ।
[1]कनकमाल घर विरधि करंत, बाले सुखहु न देखिउ पूत ॥६८२॥

फुणि मोहि घर आयो आनंदु, कुल उद्योत जिम पुन्यो चंदु।
राज भोगत ए किए असेस, अव ए भूमिरु रहोगे[2] केस ॥६८३॥

---

(६७९) १. तंखिणि (ग) २. कंद्रप उतरु देइ (ग) ३. किसुका राज वेस घरबारु (ग)

(६८०) १. घडी एक धाले (ग) २. उपति लपति के रहइ पराइ (ग) ग प्रति में प्रथम द्वितीय चरण नहीं है।

(६८१) १. वाहुडि (क ख) २. चलत मगनि कउ लिउ बुम्भाइ (ग)

(६८२) १. स्तनपान मेरी नवि करिउ, नवि उछंगि कवहि महु धरिउ (क)

(६८३) १. उदयो जाणु (ग) २. लहिंगे (ख ग)

क प्रति में निम्न प्रकार है—

रुपणि मइ तप कउ मन कियउ, इव किस देखि सहारउ हियउ।
राजा एक कीता असेस, अव ए तुमिर सहु केस ॥६८८॥

क प्रति में निम्न छन्द अधिक है—

पुणि इव रूपणि लागी कहण, जिन तव लेहि पूत परवमण।
इसी कहि मइ तू उर धरिउ, अब किस देखि सहारउ हियउ॥

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तरणउ वयरण निसुरोइ, तव[1] प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।
लावण रूप सरीरहु सारु, जम रूठे सो होइ है छारु ॥६८४॥
अवगी माइन कंदलु करइ, माया मोहु मारगु परिहरइ ।
जिन सरीर दुख[1] धरहु वहुत, को मो माइ कवरण तुहि पूतु ॥६८५॥
रहटमाल[1] जिउ यहु जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहमि अवतरइ ।
पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुजरण सज्जरण लेइ सो चाहि ॥६८६॥
हम तुम सन्मधु पुव्वहु[1] जम्मु, सोहउ आरिण घटाउ कम्म ।
इम्ब करि मनु समझावइ ताहि, रुपिरिण माइ वहुडि घर जाहि ।६८७।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

इम समुझाइ रुपिरिण माइ, फुरिण गिमि[1] पास वइठउ जाइ ।
देसु कोसु[2] परिहरे असेस, पंचमुवीर[3] उमाले केस ॥६८८॥
तेरह विउ[1] चारितु चरेइ, दह लक्षरण विहु[2] धरमु करेइ ।
सहइ परीसह वाइस[2] अंग, वाहिर भीतर छायउ अंग ॥६८९॥

---

(६८४) १. तव पढि (ख ग) तव परि (क)

(६८५) १. दुख (क ख ग) मूल पाठ दुल्ह

(६८६) १. रहटमाल (ख) अरहटमाल (ग)

(६८७) १. पुरब जनमि (ग)

(६८८) १. जिरण (क ख) मुनि (ग) २. वास (ग) ३. पंच मुठि करि केस (क) पंच मुठि सिर उपडि केस (ख) पंचमहदुमउ लाये केश (ग)

(६८९) १. विरहि चारै वतु चार (ग) २. वेसु संघु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

घाइ कम्मु को किउ विरणासु, उपरणउ केवलु षरण निरजासु।
दीठउ लोयरण लोयपमारणु, झायउ[1] चित्तव उच्छउ झारणु ॥६९०॥

तंखरण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर[1] हलहर धररिंगदु।
नारायण[2] वहु सजरण[3] लोगु, सुरयणु अच्छरायणु वहु भोगु ॥६९१॥

थुणइ[1] सुरेस्वर वाणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर[2]।
जय कंद्रप हउ मति[3] नासु, जाइं[4] तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६९२॥

इय[1] थुतिवि सुर वइ फुरिंग भरणइ, धरणवइ एकु चित भउ सुणइ।
मुंड केवली रिद्ध विचित्त[2], रचहि खणंतरि[3] वण्ण विचित्त ॥६९३॥

---

(६९०) १. जो चितवं सोचइ था आसु (ग)

(६९१) १. विद्याधर आया घरि आनन्दु (ग) २. नर सुर को तहं हुंव संजोग (क) ३. सूमरण (ग)

(६९२) १. सुणइ नारि सर (क) सुणइ सुवाणी भवणे अपार (ग) २. करहु महु तिमिर (क) जइ जइ मोहणिजिरा हर हार (ग) ३. कउ कियो विणास (क) काम मनि नासु (ग) ४. जइ सुजाण तोडइ भव पास (क) अउ भी विधा लीया पासु (ग)

(६९३) १. एम भणिवि सुर सामी भरणइ, धरणवइ एकइ चितइ सुरणइ (क)
इव सुणि सुरवइ सो फुणि भरणइ, ध्यावइ मनइ सुइकचिति सुणइ (ग)

२. पवित्त (ग) ३. पाणरसि (ग)

ग्रंथकार का परिचय

मइसाभीकउ कीयउ वखाण, तुम पजुन[1] पायउ निरवाण।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए[2] मुहि उतपाति ॥६९४॥

सुधणु[1] जणणी गुणवइ उर धरिउ[2], सामहराज[3] घरह अवतरिउ।
एरछ[4] नगर वसंते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ[5] पुराणु ॥६९५॥

सावयलोय[1] वसहि पुर माहि, दह लक्षण[2] ते धम्मं कराइ।
दस[3] रिस मानइ दुतिया भेउ, भावहि[4] चितहं जिणेसर देउ ॥६९६॥

(६९४) १. प्रसाद (ग) २. आगरोवइ (ग) अगरोवइ (ख) निम्न छन्द अधिक है—

विहरइ गाम नगर बहु देस, भविय जीव संबोहि असेस।
पुणि तिनि आठ कम्म षण कियो, पुणि पजुण निव्वाणह गयो॥
हउ मतिहीण विबुद्धि अयाणु, मइस्वामीकउ कियउ वखाणु।
उछाह मन में कियउ चरित्त, पढमइ उछाइ दे सो चित्त ॥७००॥

पंडिय जण नमउं कर जोडि, हम मतिहीणु म लावहु खोडि।
अगरवाल की मेरी जाति, अगरोवे मेरी उतपति ॥७०१॥

पुव्व चरितु मइ सुणे पुराण, उपनउ भाउ मइ कियो वखाण।
जइ पुहमि इक चित कियो, साईं समाइवि लियउ ॥७०२॥

चउपइ बंध मइ कियउ विचित्तु, भविय लोक पढहु दे चित्त।
हूं मतिहीणु न जाणउ केउ, अखर मात न जाणउं भेउ ॥७०३॥

(६९५) १. सुधनु (ग) २. गर्भु उरि धरयो (ग) ३. साहु महराज (क) समहराइ करिया अवतरयो (ग) ४. एलचि (क) एयरछ (ख) मेरस (ग) ५. सुणि करिउ वखाण (क) मैं कीया वखाणु (ग)

(६९६) १. सवल लोग (ख) सब ही लोक (ग) २. नावहन ते राज कराइ (ग) ३. दरिसण मानहि दुतिया भेउ (क) दंसण नाणहि दूजउ भेउ (ख) दर्शन माहि नही तिन्ह भेउ (ग) ४. जपउ त्रिचित्त (क) ध्यावहि चित्ति (ख) ध्यावहि इक मनि जिनवर देव (ग)

एहु चरितु जो बांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
हलुवइ[1] धर्म्म खपइ सो देव, मुकति वरंगणि मा[2]गइ एम्ब ॥६९७॥
जो पुणि सुणइ मनह धरिभाउ, असुभ कर्म ते दूरि हि जाइ ।
जोर वखाणइ माणुसु कवणु, तहि कहु तूसइ देव परदवणु ॥६९८॥
अरु लिखि जो लिखियावइ साधु, सो सुर होइ महागुणराधु ।
जोर पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण भलउ ॥६९९॥

(६९७) १. हलुव कर्मु गुणि होइ सो बोउ (ख) २. पावइ एउ (ख) क प्रति में तथा ग प्रति में यह छन्द नहीं है ।

(६९९) क प्रति में उक्त छन्द के स्थान पर निम्न छन्द है—

पढहि गुणहि जे चित्तह धरइ, लिहहि लिहावइ जे सुखि करइ ।
सुणइ सुणावइ भब्वह लोय, तिह कउ पुन्न परापति होइ ॥७०५॥

ख प्रति—

जु पुणि सुणइ मनह धरि भाउ, जो बखाणइ माणसु कमणु ।
तिस कहु तूसइ सइ देउ परदवणु,......................॥७११॥
अरु लिखि जोर लिखावइ सुद्ध, सो सुर होइ महागुणरिद्ध ।
जोर पढावइ गुण कउ निलउ, सो नर पावइ संजमु भलउ ॥७१२॥
एहु चरितुह पुन्न भंडार, जो नरु पढइ सु नर महं सार ।
तहि परदवणु तूरं सि फलु देइ, संपति पुत्र अवर जसु होइ ॥७१३॥
हउ बुधि हीणु न जाणउ भेउ, अखर मातह सुणिउ नभेउ ।
पंडित जणहं नवउ कर जोडि, हीण अधिक जिन लावहु खोडि ॥७१४॥
इति प्रद्युम्न चरित्रं समाप्तं । श्लोक संख्या १२००/शुभमस्तु

ग प्रति--

हउ हीण बुद्धि न जाणउ केव, अखित मंतु सु मुनिवर भेउ ।
पंडित जन विनवउ कर जोडि, अधिकउ होतु जिन लावहु खोडि ॥७१२॥
मइ स्वामी का कीया बखाणु, पंडित जन मति होहु सुजाण ।
केवल उपजइ गुण संपुंनु, सुणहु श्रावगउ उपजइ पुन्नु ॥७१३॥
॥ इति परदवणु चउपई समाप्त ॥

यहु चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमगु तुही फलदेइ, संपति पुत्र अवरु जसु होइ ॥७००॥
हउ बुधिहीगु न जाणौ केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जगह नमू कर जोडि, हीगु अधिक जग लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्त: ॥

शुभं भवतु । मांगल्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत् १६०५ वर्षे आसोज वदि २ मंगलवारे श्री मूलसंघे लिखापितं आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाशा योग्यदत्तं । श्रेयोस्तु ॥

★
★★

हिन्दी-अर्थ

प्रथम सर्ग

स्तुति खण्ड

(१) शारदा के बिना कविता करने की बुद्धि नहीं हो सकती उसके बिना कोई स्वर और अक्षर को भी नहीं जान सकता। सधारु कवि कहता है कि जो सरस्वती को प्रणाम करता है उसी की बुद्धि निर्मल होती है।

(२) सब कोई 'शारदा शारदा' करते हैं किन्तु उसका कोई पार नहीं पाता। जिनेंद्र के मुख से जो वाणी निकली है उसे ही शारदा जानकर मैं प्रणाम करता हूँ।

(३) सरोवर में आठ पंखुडि वाले कमल पर जिसका निवास स्थान है, जिसका निकास काश्मीर से हुआ है; हंस जिसकी सवारी है और लेखनी जिसके हाथ में है उस सरस्वती देवी को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(४) जो श्वेत वस्त्र धारण करने वाली है तथा पद्मासिनी है और वीणावादिनी है ऐसी महाबुद्धिमती सरस्वती मुझे आगम ज्ञान दे। मैं उस द्वितीय सरस्वती को पुनः प्रणाम करता हूँ।

(५) हाथ में दण्ड रखने वाली पद्मावती देवी, ज्वालामुखी और चक्केश्वरी देवी तथा अम्बावती और रोहिणी देवी इन जिन शासन देवियों को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(६) जो जिनशासन के विघ्नों का हरण करने वाला है, जो हाथ में लकड़ी लिये खड़ा रहता है और जो संसारी जनों के पापों को दूर करता है ऐसे क्षेत्रपाल को पुनः पुनः सादर नमस्कार करता हूँ।

(७) चौबीसों तीर्थंकर दुःखों को हरने वाले हैं और चौबीसों ही जरा मरण से मुक्त हैं। ऐसे चौबीस जिनेश्वरों को भाव सहित नमस्कार करता हूँ तथा जिनके प्रसाद से ही कविता करता हूँ।

(८) ऋषभ, अजित और संभवनाथ ये प्रथम तीन तीर्थंकर हुए। चौथे अभिनन्दन कहलाये। सुमतिनाथ पद्मप्रभ और सुपार्श्वनाथ तथा आठवें चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए।

(६) नवें सुविधिनाथ और दशवें शीतलनाथ हुए। ग्यारहवें श्रेयांसनाथ की जय होवे। वासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और सोलहवें शान्तिनाथ हुए।

(१०) सतरहवें कुंथुनाथ, अठारहवें अरहनाथ, उन्नीसवें मल्लिनाथ, बीसवें मुनिसुव्रतनाथ, इक्कीसवें नमिनाथ, बाईसवें नेमिनाथ, तेईसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर ये मुझे आशीर्वाद दें।

(११) सरस कथा से बहुत रस उपजता है। अतः प्रद्युम्न का चरित्र सुनो। संवत् १४०० और उस पर ग्यारह अधिक होने पर भादव मास की पंचमी, स्वाति नक्षत्र तथा शनिवार के दिन यह रचना की गयी।

(१२) जो गुणों की खान हैं, जिनका शरीर श्याम वर्ण का है, जो शिवादेवी के पुत्र हैं, जो चौंतीस अतिशय सहित हैं, जो कामदेव के तीक्ष्ण बाणों का मान मर्दन करने वाले हैं, जो हरिवंश के चिन्तामणि हैं, जो तीन लोक के स्वामी हैं, जो भय को नाश करने वाले हैं, जो पांचवें ज्ञान केवलज्ञान के प्रकाश से सिद्धान्त का निरूपण करने वाले हैं, ऐसे पवित्र नेमीश्वर भगवान को भली प्रकार नमस्कार करता हूँ।

(१३) पहिले पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर फिर जिनेन्द्रदेव के चरणों की शरण जाकर तथा निर्ग्रन्थ गुरु को भाव पूर्वक नमस्कार कर उनके प्रसाद से कविता करता हूँ।

द्वारिका नगरी का वर्णन

(१४) चारों ओर लवणसमुद्र से घिरा हुआ सुदर्शन पर्वत वाला जम्बूद्वीप है। इसके दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र है जिसके मध्य में सोरठ सौराष्ट्र देश बसा हुआ है।

(१५) उस देश में जो गांव बसे हुये हैं वे नगरों के सदृश लगते हैं। जो नगर हैं वे देव विमानों के समान सुन्दर हैं। उन नगरों में प्रत्येक मंदिर धवल तथा ऊंचे हैं जिन पर सुन्दर स्वर्ण-कलश झलकते हैं।

(१६) समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी है मानों कुबेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका बारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-कलश दिखाई पड़ते हैं।

(१७) चौबारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। वहां के किवाड़ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये है तथा मोतियों की बंदनवार सुशोभित हो रही है।

(१८) जहां एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान हैं जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देवालय हैं। जहां चौरासी बाजार (चौपड़) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१९) जिसके चारों दिशा में खूब गहरा समुद्र है जिसका जल चारों ओर झकोला मारता है। जहां करोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी वह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिसमें १८ प्रकार की जातियां रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहां शूद्र भी रहते हैं, तथा जहां छत्तीसों कुल के लोग सुख पूर्वक निवास करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और साधनों की कोई गणना नहीं है। जब वह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। वह तीन खण्ड का चक्रवर्ती राजा शत्रुओं के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र सगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी विरले ही दीख पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के साथ जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे वे एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन श्रीकृष्ण पूरी सभा के साथ बैठे हुये थे। चतुरंगिणी सेना के कारण जहां खाली स्थान नहीं सूझ रहा था। अगर आदि सुगन्धित पदार्थों की गंध जहां चारों ओर फैल रही थी। सोने के दण्ड वाले चामर (चंवर) शिर पर ढुल रहे थे।

(२४) जहां पांच प्रकार के (सितार, ताल, झांझ, नगाड़ा तथा तुरही) बाजे खूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुंदर पायल पहने हुये भाव भरती हुई नृत्य करने वाली ताल, विनोद एवं कला का अनुसरण करती हुई पांव धर रही थी।

नारद ऋषि का आगमन

(२५) इतने में हाथ में कमंडल लिये हुए मुंडे हुये सिर पर चोटी धारण करने वाले, विमान पर चढ़े हुये प्रसन्न मन राजर्षि नारद वहां जा पहुँचे।

(२६) श्रीकृष्ण ने उनको नमस्कार करके बैठने के लिये स्वर्ण सिंहासन दिया। एकान्त पाकर नारायण ने उनसे पूछा कि आपका आगमन कहांसे हुआ।

(२७) हम आकाश में उड़ते हुये मर्त्य-लोक के जिन मन्दिरों की वन्दना करने गये थे। द्वारिका दीखने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यादवराय से ही भेंट करते चलें।

(२८) तब नारायण ने विनय के साथ कहा कि अच्छा हुआ कि आप यहां पधारे। हे नारद ऋषि ! आपने हमारे ऊपर कृपा की। आज यह स्थान पवित्र हो गया।

(२९) वचनों को सुनकर नारद ऋषि मन ही मन हंसने लगे तथा उनने सत्यभामा की कुशलवार्ता पूछी। नारद जी आशीर्वाद देकर खड़े हो गये और फिर रणवास में चले गये।

(३०) जहां सत्यभामा शृंगार कर रही थी तथा आंखों में काजल लगा रही थी। चन्द्रमा के समान ललाट पर जब वह तिलक लगा रही थी उसी समय नारद ऋषि वहां पहुँचे।

(३१) हाथ में कमण्डल लिये हुये ऋषि रूप और कला को देखते फिरते थे। वे सत्यभामा के पीछे जाकर खड़े हो गये और सत्यभामा का दर्पण में रूप देखा।

(३२) सत्यभामा ने जब ऋषि का विकृत रूप देखा तो मन में बहुत विस्मित हुई। उस मंद-बुद्धि ने तुलके किया कि यहां पर कोई मार डालने वाला पिशाच आ गया है।

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

(३३) बड़ी देर तक ऋषि खड़े रहे। सत्यभामा ने न तो दोनों हाथ जोड़े और न उनसे बैठने के लिये ही कहा। तब नारद ऋषि को क्रोध उत्पन्न हो गया और वे उसे सहन नहीं कर सके। तब नारदजी फटकारते हुये वापिस चले गये।

(३४) बिना ही बाजा के जो नाचने लगता है यदि उसको बाजा मिल जावे तो फिर कहना ही क्या ? एक तो शृगाल और फिर उसे बिच्छू खा जाय ? एक तो नारद और फिर वह क्रोधित होकर चलदे ।

(३५) नारद ऋषि क्रोधित होकर उसी क्षण चल पड़े तथा पर्वत के शिखर पर जाकर बैठ गये। वहां बैठे हुये मन में सोचने लगे कि सत्यभामा का किस प्रकार से मान भंग हो ?

(३६) जब नारद मुनि ये विचार करने लगे तो उनकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी। मैं सत्यभामा का अभिमान कैसे खण्डित करूं ? या तो किसी से इसको भयभीत कराऊं अथवा इसको शिला के नीचे दाब कर छोड़ दूं लेकिन इससे तो श्रीकृष्ण को दुःख होगा। अन्त में यह विचार किया कि जो इससे भी सुन्दर स्त्री हो उसका श्रीकृष्ण के साथ विवाह करा दिया जावे।

(३७) तब वे गांव गांव में फिरे और घूम घूम कर देश के सब नगर देख डाले। एक सौ दस जो विद्याधरों की नगरियां थीं उनको नारदजी ने क्षण भर में ही देख डाला।

नारद का कुण्डलपुरी में आगमन

(३८) देशों में घूमते हुये मन में सोचने लगे कि अभी तक कोई रूपवती कुमारी दिखाई नहीं दी। फिर नारद ऋषि वहां आए जहां विद्याधर की नगरी कुण्डलपुरी थी।

(३९) उस नगरी का राजा भीष्मराज था जो धर्म और नीति को खूब जानता था। जिसके अनेक लक्षणों से युक्त रूपवान पुत्र एवं पुत्री थी।

(४०) दृष्टि फैलाकर मुनि कहने लगे कि इस कुमारी के यदि कोई योग्य वर हो और विधाता की कृपा से संयोग मिल जावे तो इसका नारायण से सम्बन्ध हो सकता है अर्थात् इसके लिये नारायण ही योग्य है।

(४१) इस प्रकार मन में विचार करते हुए नारद ऋषि आशीर्वाद देकर रणवास में गए। उसी क्षण उनको सुरसुंदरी और कुमारी रुक्मिणी दिखाई पड़ी।

नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

(४२) वह अत्यन्त रूपवती तथा अनेक लक्षणों से युक्त थी। चन्द्रमा के समान मुख वाली वह ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा ही उदय हो रहा हो। हंस के समान चाल वाली वह दूसरों के मन को लुभाने वाली थी। उसके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

(४३) जब नारद को आता हुआ देखा तो सुरसुंदरी ने उन्हें नमस्कार किया। रुक्मिणी को देखकर वे बोले कि नारायण की पट्टरानी बनो।

(४४) भीष्म की बहिन सुरसुन्दरी ने कहा कि रुक्मिणी शिशुपाल को दे दी गयी है, इस सुन्दर नगरी में बहुत उत्सव हो रहे हैं, लग्न रख दी गयी है और विवाह निश्चित हो चुका है।

(४५) सुरसुन्दरी ने सत्यभाव से कहा कि अब आपके लिये ऐसा कहने का कोई अवसर नहीं है। जो शत्रु-राजाओं के मान को भंग करने के लिये काल के समान है ऐसा शिशुपाल सब कुटुम्बियों के साथ आ पहुँचा है।

(४६) उसके वचनों को सुनकर नारद ऋषि कहने लगे कि तीन खण्ड का जो चक्रवर्ति है तथा छप्पन करोड़ यादवों का जो स्वामी है ऐसे को छोड़कर दूसरे के साथ विवाह करोगी ?

(४७) पूर्व लिखे हुए को कोई नहीं मेट सकता जिसके साथ लिखा होगा उसी के साथ विवाह होगा। अपनी बात को छोड़ दो, नारायण ही रुक्मिणी को व्याहेगा।

(४८) तब सुरसुन्दरी मन में प्रसन्न हुई कि मुनि ने जो बात कही थी वही मिल रही है। नारदजी! सुनो और सत्यभाव से कहो। वह युक्ति बताओ जिससे विवाह हो जाय।

(४९) नारद ऋषि ने कहा कि तुम ऐसा करना कि पूजा के निमित्त मंदिर में चले जाना। नंदनवन को संकेत-स्थल बनाना, वहीं पर मैं तुमसे (श्रीकृष्ण) को लाकर भेंट कराऊंगा।

(५०) तब देवांगना सदृश रुक्मिणी ने कहा कि कृष्णमुरारी को कौन पहिचानेगा तब सुविज्ञ नारद ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें चिन्ह बतलाता हूँ।

(५१) जो शंख चक्र और गदा धारण करता है तथा बलिभद्र जिसका भाई है। अपने बाण से जो सात ताल वृक्ष को बींधता है, नारद ने कहा वही नारायण है।

(५२) (नारदजी ने) सुन्दर रत्नों से जड़ी हुई वज्र की अंगूठी दी और कहा कि जो उसे अपने कोमल हाथों से चकनाचूर कर दे वही गुणों से परिपूर्ण नारायण है।

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

(५३) इस प्रकार बात निश्चित करके रुक्मिणी का चित्रपट लिखवा कर उसे अपने साथ लेकर और विमान में चढ़ कर नारद ऋषि वहां आए जहां नारायण सभा में बैठे हुये थे।

(५४) महाराज बार बार चित्र पट दिखाने लगे उससे (श्रीकृष्ण) का मन व्याकुल हो गया। उनका शरीर कामबाण से घायल हो गया और वे बहुत विह्वल हो गये।

(५५) क्या यह कोई अप्सरा है अथवा वनदेवी है। अथवा कोई मोहिनी तिलोत्तमा है। क्या यह सुन्दर रूप वाली विद्याधरी है। इस स्त्री का यह रूप किसके समान है।

(५६) नारद ऋषि ने सत्यभाव से कहा कि कुण्डलपुर नामक एक नगर है। उसके राजा भीष्म से मैं तत्काल मिला और उसी की यह कन्या रुक्मिणी है।

(५७) उसको मैंने आपके लिये मांग लिया है। जाकर के विवाह करलो देर मत करो। कामदेव का मंदिर संकेत-स्थल है उसी स्थान पर जाकर भेंट कराऊंगा।

श्रीकृष्ण और हलधर का कुण्डलपुर के लिये प्रस्थान

(५८) तब श्रीकृष्ण बहुत संतुष्ट हुये। मन में हँस कर आनन्द मनाने लगे। रथ को सजवा कर एवं सारथी को बिठाकर अपने साथी (भाई) हलधर को बुला लिया।

(५९) तब सारथी ने क्षण भर में रथ को सजाया तथा वायु के वेग के समान कुण्डलपुर पहुँच गया। जहां वन में मन्दिर था वहीं पर कृष्ण एवं हलधर पहुँचे।

(६०) आपस में सलाह की। जरा भी देर नहीं लगायी। दूत के द्वारा समाचार भेज दिये। उस ने जाकर सब बात कह दी कि नंदनवन में श्रीकृष्ण आ गए हैं।

(६१) वचनों को सुनकर रुक्मिणी हंसी। मोती एवं माणिक आदि से थाल भरा, बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर पूजा के निमित्त मन्दिर में चली गई।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

(६२) रुक्मिणी ने वहां जाकर श्रीकृष्ण से भेंट की और सत्यभाव से कहा कि हे यदुराज मेरे वचनों की ओर ध्यान देकर सात ताल वृक्षों को बाणों से बींधिये।

(६३) तब श्रीकृष्ण ने वज्र मूंदड़ी को लेकर हाथ से मसल डाला। मूंदड़ी फूट कर चून हो गई मानों गरहट के नीचे चांवलों के कण पिस गये हो।

(६४) तब नारायण ने धनुष लिया और हलधर ने आकर अंगूठा दबाया। दबाने से सातों सूधे हो गये और बाणों ने सातों ही ताल वृक्षों को बींध दिया।

(६५) तब रुक्मिणी के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया और उसने मन में जान लिया कि यही नारायण हैं। उन्होंने रथ पर रुक्मिणी को चढ़ाकर पुकारा और सब बात भीष्म राज को ज्ञात करा दी।

वनपाल द्वारा रुक्मिणी–हरण की सूचना

(६६) तब वनपाल ने आकर कहा कि पीछे कोई गर्व मत करना कि रुक्मिणी को चुराकर ले गये। जिसमें शक्ति हो वह आकर छुड़ाले।

(६७) रुक्मिणी को रथ पर चढ़ा लिया तथा उसने (श्रीकृष्ण) पांचजन्य शंख को बजाया। शंख के शब्द को सुनकर सारा देवलोक शंकित हो गया तथा महिमंडल थर थर कांपने लगा। महिलाओं ने जाकर यह पुकार की कि हे पृथ्वीपति सुनिये—देव मन्दिर में खड़ी हुई रुक्मिणी को श्रीकृष्ण हर ले गये।

(६८) तब भीष्मराज मन में कुपित हुए तथा स्थान स्थान पर नगाड़ा बजने लगा। घोड़ों पर काठी कसो, हाथियों को रवाना करो तथा काल रूप होकर सब चढ़ाई करो।

(६९) जब राजा शिशुपाल को पता चला कि रुक्मिणी चोरी चली गयी है तब बड़े गुस्से में आकर उस ने कहा कि शीघ्र ही सब घोड़ों पर जीन कसी जावे।

(७०) रथों को सजाओ, हाथियों को तैयार करो। सभी सुभट तैयार होकर आज रण में भिड़ पड़ो। सब सामंत अपने हाथों में तलवार ले लें तथा धनुषधारी धनुष की टंकार करें।

(७१) शिशुपाल एवं भीष्मराज दोनों के दल की सेना के कारण स्थान (मार्ग) नहीं दीखता था। घोड़ों के खुरों से इतनी धूल उछली कि मानों भादों के मेघ मँडरा रहे हों।

(७२) दुलते हुये राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानो सैनिक हाथ में आग लेकर प्रविष्ट हो रहे हो। अथवा दुलते हुए राज-चिन्ह चँवर ऐसे मालुम होते थे मानों अग्नि में कमल खिल रहे हों। चारों प्रकार की सेना इकट्ठी होकर वायु-वेग के समान रणभूमि में आ पहुँची।

(७३) अपरिमित दल आता हुआ दिखाई दिया। धूल उड़ी जिससे सूर्य चन्द्रमा छिप गये। आश्चर्य के साथ डर कर रुक्मिणी कहने लगी कि हे महामहिम्न ! रण में कैसे जीतोगे ?

(७४) हे रुक्मिणी ? धैर्य रखो, कायर मत बनो। तुमको मैं आज अपना पुरुषार्थ दिखलाऊंगा। शिशुपाल को युद्ध में आज समाप्त कर दूंगा और भीष्मराव को बांध करके ले आऊंगा।

(७५) बात कहते हुये ही सेना आ पहुँची। शिशुपाल क्रोधित होकर बोला, हे सरदार लोगो, अपने हाथों में तलवार ले लो। आज मुठभेड़ होगी, कहीं ग्वाला भाग न जावे।

(७६) शिशुपाल और श्रीकृष्ण की इस प्रकार भेंट हुई जैसे अग्नि में घी पड़ा हो। हाथ में धनुषबाण संभाल लिया। अब संग्राम में पता पड़ेगा। अपने मन में पहिले के वचनों को याद करो। तुमने चोरी से रुक्मिणी को हर लिया यही तुमने उपाय किया। अब तुम मिल गये हो; कहां जाओगे ? अब मार कर ही रहूँगा।

(७७) जब दुष्ट ने दुष्टतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया।

श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(७८) हुंकार और ललकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो। तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथी पर प्रहार किया।

(७९) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोड़े। तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया।

(८०) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया। फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रख कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूझ रहा था।

(८१) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे। युद्ध बढ़ता ही गया बंद नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी।

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(८२) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवसर नहीं है। तब हाथ में चक्र लेकर उसे घुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर कट गया।

(८३) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदास हो गया। रण में भयंकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहां से भागने लगी।

(८४) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द और भीष्मराव की रक्षा करो। मन में वैर छोड़कर इनसे संधि करो तथा कुण्डलपुर नगर को वापिस चलो।

(८५) तब नारायण ने कृपा करके बंधे हुए भीष्मराव को छोड़ दिया। रूपचन्द से गले मिले और फिर अपने नगर को प्रस्थान किया।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

(८६) जब मुड़कर हलधर और कृष्ण चले तो वन में एक मंडप को देखा। जहां अशोक वृक्ष की छाया थी वहां वे तीनों पहुँचे।

(८७) तब उनके मन में बड़ी खुशी हुई। आज लग्न है इसलिये विवाह कर लें। भ्रमर की ध्वनि ही मानों मंगलाचार हो रहा है तथा तोते मानों वेद पाठ कर रहे हैं।

(८८) बांसों का मंडप बनाया तथा भाँवर देकर हथलेवा किया। पाणिग्रहण करके रुक्मिणी को परण लिया और उसके पश्चात कृष्णमुरारी अपने घर रवाना हो गये।

श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

(८९) जब नारायण वापिस पहुँचे तब छप्पन कोटि यादवों ने मिलकर उत्सव किया। घर घर में गुडियों को उछाला गया तथा तोरण एवं वंदनवार बांधी गयी।

(९०) रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण हंसते हुये नगर में प्रविष्ट हुए। स्थान स्थान पर बहुत से लोग खड़े थे और वे दोनों अपने महल में जा पहुँचे।

(९१) भोग विलास करते हुये कई दिन बीत गए। सत्यभामा की चिंता छोड़ दी। सौत के दुख के कारण वह अत्यन्त डाह से भरी हुई अपने नित्य प्रति के सुख को भी दुख रूप समझती थी।

सत्यभामा के दूत का निवेदन

(९२) सत्यभामा ने एक दूत को उस महल में भेजा जहां वलिभद्रकुमार बैठे हुये थे। शीश झुकाकर उसने निवेदन किया कि हे देव! मुझे सत्यभामा ने भेजा है।

(९३) दूत ने महल में हाथ जोड़कर कहा कि सत्यभामा ने कहा कि विचार कर कहो कि मुझसे कौनसा अपराध हुआ है जो कि कृष्णमुरारी मेरी बात भी नहीं पूछते।

(९४) वचनों को सुनकर हलधर वहां गये जहां नारायण बैठे हुये थे। हंस करके उन्होंने अत्यन्त विनय पूर्वक कहा कि तुमको सत्यभामा की सँभाल भी करनी चाहिये।

(९५) तब नारायण ने ऐसा किया कि रुक्मिणी का झूंठा उगाल गांठ में बांधा कर वहां पहुँचे जहां सत्यभामा का मन्दिर (महल) था।

(९६) सत्यभामा ने नेत्रों से श्रीकृष्ण को देखा और रुदन करती हुई बोली तथा अत्यन्त ईर्षा से भरे हुए वचन कहे कि हे कि हे स्वामी! मुझे किस अपराध के कारण आपने छोड़ दिया है।

(९७) तब हंसकर कृष्णमुरारी बोले तथा मधुर शब्दों से उसे समझाया। फिर श्रीकृष्ण कपट निद्रा में सो गये और गांठ को झुलाकर खाट के नीचे लटका दी।

(९८) जब गठरी को झूलते हुए देखा तो सत्यभामा उठी और उसे खोला। गठरी में बहुत ही सुगंधित महक उठ रही थी। तब सुगंधित वस्तु का देखकर उसने अपने शरीर पर लगाली।

(९९) जब श्रीकृष्ण ने उसे अंग पर मलते देखा तो वे जगे और हंसकर कहने लगे यह तो रुक्मिणी का उगाल है। तुम अपने सब झंझटो को गया समझो।

सत्यभामा का रुक्मिणी से मिलाने का प्रस्ताव

(१००) सत्यभामा सत्यभाव से बोली कि मुझ से रुक्मिणी को लाकर मिलाओ। तब हंसकर श्रीकृष्णमुरारी ने कहा कि वन में उससे तुम्हारी भेंट कराऊंगा।

(१०१) नारायण उठकर महल में गये और रुक्मिणी के पास बैठ गये। और कहने लगे कि वन में बहुत सी फुलवाड़ियां है। चलो आज वहां जीमण करें।

(१०२) नारायण ने रुक्मिणी का जैसा रूप बना लिया और पालकी पर चढ़कर बगीची में गये। जहां बावड़ी के पास अशोक वृक्ष था वहीं रुक्मिणी को उतार दिया।

(१०३) श्वेत वस्त्र, उज्ज्वल आभूषण तथा हाथों में कड़ों से सुशोभित रुक्मिणी को देवी का रूप बनाकर आले (ताक) में बैठा दिया। वह चुपचाप वहां बैठ गई और जाप जपने लगी। श्रीकृष्ण वहां से चले गये।

सत्यभामा और रुक्मिणी का मिलन

(१०४) फिर सत्यभामा को जाकर भेजा और कहा मैं रुक्मिणी को वहीं बुलवा लूंगा। तुम बावड़ी के पास जाकर खड़ी रहो जिससे तुम्हें रुक्मिणी से भेंट करा दूंगा।

(१०५) सत्यभामा बहुत सी सखी सहेलयों को साथ लेकर वाटिका में गयी जहां बावड़ी थी। तब अपनी आंखों से उसे देखकर सोचा कि क्या यह कोई वनदेवी बैठी है।

(१०६) दूध और चन्द्रमा के समान श्वेत कोई जल से ही निकलकर आई हो ऐसी उस देवी के उसने पैर छूए और बोली—हे स्वामिनी! मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे श्रीकृष्ण मानने लगें।

(१०७) फिर वह देवी को मनाने लगी जिससे कि रुक्मणी पति प्रेम से वंचित हो जावे। इस तरह अनेक प्रकार से वह अपनी बात प्रकट करने लगी, उसी समय हरि उसके सम्मुख आकर हंसने लगे।

(१०८) सत्यभामा तुम्हें क्या बाय लग गई है? (तुम पागल हो गई हो क्या) बार बार क्यों पैर लग रही हो। इतनी अधिक भक्ति क्यों कर रही हो? यह आले में (त.क, में रुक्मणी ही तो बैठी है।

(१०९) सत्यभामा उसी समय कहने लगी मैंने इसके पैर छू लिये तो क्या हुआ। तुम बहुत कुचाल करते रहते हो, यह रुक्मणी मेरी बहिन ही तो है।

(११०) तुम तो रात दिन ऐसे ही कुचाल किया करते हो ठीक ही है ग्वालवंश का स्वभाव कैसे जा सकता है। फिर सत्यभामा ने रुक्मणी से कहा—चलो बहिन घर चलें।

(१११) यान (रथ) में बैठ कर वे महल में चली गई। सब सुख भोगने लगे और विलास करने लगे। जब राजकाज करते कुछ दिन निकल गये तब दोनों रानियां गर्भवती हुई।

(११२) तब सत्यभामा ने एक बात कही कि जिसके पहिले पुत्र उत्पन्न होगा वह जिसके पीछे पुत्र उत्पन्न होगा उसे हरा देगी। तथा वह उसके पुत्र के विवाह के समय सिर के केश भी मुंडवा देगी।

(११३) बलिभद्र आकर सत्यभामा और रुक्मिणी के लागना (साक्षी) बन गये। दोनों ने उनसे कह दिया तुम हमारा पक्ष मत करना। जो भी हार जावे उस ही के सिर आकर मूंड देना।

(११४) इधर कौरवों ने दूत भेजा वह नारायण के पास पहुँचा। उसने कहा कि आपके जो बड़ा पुत्र उत्पन्न हो उसके जन्म की सूचना दूत के हाथ भिजवा देना।

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

(११५) इस प्रकार बहुत दिन बीतने पर दोनों ही रानियों के पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों ही घरों में इस प्रकार लक्षणवान एवं कला संयुक्त पुत्र हुए।

(११६) सत्यभामा का (दूत) बधावा लेकर गया और वह जाकर सिर की ओर खड़ा हो गया। रुक्मिणी का बधावा लेकर जाने वाला दूत पैरों की ओर जाकर बैठ गया।

(११७) नारायण जगे और बैठे हुये। उस समय रुक्मिणी के दूत ने बधाई दी। दूत हंसता हुआ हाथ जोड़ कर बोला-रुक्मिणी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है।

(११८) दूसरे दूत ने भी बधाई दी और नारायण से निवेदन किया कि हे स्वामिन्! मुझे तुम्हारे पास यह सूचना देने के लिये कि सत्यभामा के पुत्र उत्पन्न हुआ है, भेजा है।

(११९) तब श्रीकृष्ण ने हलधर को बुलाया और जो बात हुई थी वह उनसे बैठाकर कह दी। झूंठ बोलकर कैसे टाला जा सकता है। प्रद्युम्न ही बड़ा पुत्र है।

(१२०) दोनों रानियों के पुत्र उत्पन्न हुये। इससे घर घर बधावा गाये जाने लगे। सभी मंगलाचार गाने लगे और ब्राह्मण वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे।

(१२१) भेरी एवं तुरहि खूब बजने लगे। महुवर एवं शंख के लगातार शब्द होने लगे। घर घर में केशर अथवा रोली के चिन्ह लगाये गये तथा स्त्रियां अपने २ घरों में मंगल गीत गाने लगीं।

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

(१२२) छठी रात्रि का जागरण करते समय धूमकेतु वहीं आ पहुँचा। जब क्षण भर में उसका विमान ठहर गया तब धूमकेतु मन में सोचने लगा।

(१२३) विमान से उतर करके प्रद्युम्न को देखा। वह कहने लगा कि यह कौन क्षत्रिय है। उसी समय अपना पूर्व जन्म का वैर याद करके उसने कहा कि इसी ने मेरी स्त्री को हरा था।

(१२४) प्रच्छन्न रूप से उसने प्रद्युम्न को इस तरह उठा लिया जिससे नगर में किसी को पता ही न लगा। विमान में रखकर वह वहीं चला गया जहां वन में शिला रक्खी थी।

(१२५) धूमकेतु ने तब कई विचार किये कि क्या करूं। क्या इसे समुद्र में डालकर शीघ्र ही मार डालूं ? इतने में ही उसने एक ५२ हाथ लम्बी शिला देखी और सोचा कि इसे इसके नीचे रख दूं जिससे ये दुःख पाकर मर जावे।

(१२६) पहिले किये हुए को कोई नहीं मेट सकता। प्रद्युम्न अपने कर्मों को भोग रहा है। उसको शिला के नीचे दबाकर वह घर चला गया। तब रुक्मिणी जहां सो रही थी वहां जगी।

(१२७) छठी रात्रि को प्रद्युम्न हर लिया गया। तब रुक्मिणी को तीव्र वेदना हुई। अरे पहिरेदार तुम शीघ्र जागो और इस तरह खूब जोर से पुकारो कि नारायण एवं हलधर सुन लें। सत्यभामा को बड़ी खुशी हुई और उसने खूब शोर मचाया। जिसका पुत्र रात्रि को हर लिया गया था वह रुक्मिणी विलाप करने लगी।

(१२८) नगर में सूचना हो गई। यदुराज सोते हुए जाग उठे। छप्पन कोटि यादव पुकारते हुए देखने चले तो भी उसका (प्रद्युम्न) कहीं भी नहीं चला।

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिए प्रस्थान

(१२९) मेघकूट नामक एक स्थान था जहां यमसंवर राजा निवास करता था। जिसके पास बारह सौ विद्यायें थीं। तथा जिसकी कंचनमाला स्त्री थी।

(१३०) उसका मन वन क्रीड़ा को हुआ तथा विमान पर चढ़कर अपनी स्त्री सहित गया। वे उस वन के मध्य पहुँचे जहां वीर प्रद्युम्न शिला के नीचे दबा हुआ था।

(१३१) वन के मध्य में रखी हुई पूरी बावन हाथ ऊंची (लंबी) शिला को देखी। वह मध्य में ऊंची तथा ... में नीची हो रही थी। वह विमान से उतर कर देखने लगा।

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

(१३२) राजा ने विद्या के बल से शिला को उठाया। और अच्छी तरह देखा। जिसके शरीर पर बत्तीस लक्षण थे तथा जो सुन्दर था ऐसे कामदेव को यमसंवर ने देखा।

(१३३) कुमार को उठाकर गोद में लिया तथा लौट कर राजा विमान में गया। कचनमाला को पट्टरानी पद देकर उसे सौंप दिया।

(१३४) अत्यन्त रूपवान और अनेकों लक्षण वाले कुमार को कंचनमाला ने ले लिया। उसके समान रूप वाला अन्य कोई दिखाई नहीं देता था। वह राजा का धर्मपुत्र हो गया।

(१३५) वे विमान में चढ़कर वायु-वेग के समान शीघ्र ही (नगर में) पहुँच गये। नगर में सभी उत्सव मनाने लगे कि कचनमाला के प्रद्युम्न हुआ है।

(१३६) अत्यन्त रूपवान, गुणवान एवं लक्षणवान प्रद्युम्न सभी को प्रिय था। वह द्वितीया के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा और इस तरह १५ वर्ष का हो गया।

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

(१३७) फिर वह पढ़ने के लिये उपाध्याय के पास गया तथा उसने लिखपढ़कर सब ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्षण छन्द एवं तर्क शास्त्र बहुत पढ़े तथा राजा भरत के नाट्यशास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया।

(१३८) धनुष एवं बाण-विद्या तथा सिंह के साथ युद्ध करना भी जान लिया। लड़ना, भिड़ना, निकलना तथा प्रवेश करने का सब ज्ञान प्रद्युम्न कुमार को हो गया।

(१३६) प्रद्युम्न ऐसा वीर बन गया जिसके समान और कोई जानकार नहीं था। इस प्रकार वह यमसंवर के घर बढ़ रहा है। अब यह कथा द्वारिका जा रही है। (अब द्वारिका का वर्णन पढ़िये)

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

(१४०) इधर द्वारिका में रुक्मिणी करुण विलाप कर रही थी। पुत्र संताप से उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। वह प्रतिदिन कृष होती गयी एवं उदासीन रहने लगी। विधाता ने उसे ऐसी दुखी क्यों बनायी।

(१४१) कभी वह संतप्त होती थी तो कभी वह जोर से रोती थी। उसके नयनों में आंसू बहते हुए कभी सूखते न थे। पूर्व जन्म में मैंने कौनसा पाप किया था। अब मैं किसे देखकर अपने हृदय को सम्हालूं ?

(१४२) क्या मैंने किसी पुरुष को स्त्री से अलग किया था ! अथवा किसी वन में मैंने आग लगायी थी ? क्या मैंने किसी का नमक, तेल और घी चुरा लिया था ? यह पुत्र संताप मुझे किस कारण से मिला है ?

(१४३) इस प्रकार जब वह रुक्मिणी सन्ताप कर रही थी उस समय नारायण एवं बलिभद्र वहां आकर बैठे और कहने लगे–हे सुन्दरि ! मन में दुखी न हो। हम बिना जाने क्या कर सकते हैं ?

(१४४) स्वर्ग और पाताल में से कोई भी यदि हमें प्रद्युम्न का पता बतादे तो वह हमसे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकता है। सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे (ले जाने वाले को) मार डालेंगे तथा उसे श्मसान में से गीध उठायेंगे।

(१४५) जब वे इस तरह उसको समझाते रहे तो वह अपने मन के खेद को भूल गयी। इस प्रकार दुखित होते हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये तब नारद ऋषि द्वारिका में आये।

रुक्मिणी के पास नारद का आगमन

(१४६) जिसका सिर मुंडा हुआ है तथा चोटी उड़ रही है, हाथ में कमंडलु लिये राजर्षि नारद वहां आये जहां दुखित होकर रुक्मिणी बैठी हुई थी।

(१४७) जब नारद को आंखों से देखा तो व्याकुल रुक्मिणी उनसे कहने लगी–हे स्वामी! मेरे प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ था पता नहीं उसे कौन हर ले गया?

(१४८) हाथ जोड़कर रुक्मिणी बोली कि हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से तो मेरे ऐसा (पुत्र) हुआ था। किन्तु पेट का दाह देकर पुत्र चला गया उसकी तलाश कीजिये।

(१४९) नारद ने तब हंसकर कहा कि प्रद्युम्न की सुधि लेने के लिये मैं अभी चला। स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी अथवा आकास में जहां भी होगा वहां जाकर उसे ले आऊंगा ऐसा नारदजी ने कहा।

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

(१५०) नारद ने समझाकर कहा कि शीघ्र ही पूर्व विदेह जाऊंगा जहां सीमंधर स्वामी प्रधान हैं और जिनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है।

(१५१) नारद ऋषि सीमंधर स्वामी के समवशरण में गये। वहां चक्रवर्त्ति को बहुत आश्चर्य हुआ। नारद से वृत्तांत सुनकर चक्रवर्त्ति ने जिनेन्द्र भगवान से पूछा कि ऐसे मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं।

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

(१५२) तब जिनेन्द्र ने कहा कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सोरठ (सौराष्ट्र) देश है। वहां जैन धर्म पूर्ण रूप से चल रहा है।

(१५३) जहां सागर के मध्य में द्वारिका नगरी है वह ऐसी लगती है मानों इन्द्रलोक से आकर गिर पड़ी हो। जहां नारायणराय (श्रीकृष्ण) निवास करते हैं ऐसे मनुष्य वहां पैदा होते हैं।

(१५४) उनकी रुक्मिणी रानी है जो धर्म की बात को खूब जानती है। उसके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जिसको धूमकेतु हर कर ले गया।

(१५५) जहां एक बावन हाथ लम्बी शिला थी उसके नीचे वीर प्रद्युम्न को दबा दिया। पूर्व जन्म का जो तीव्र वैर था, धूमकेतु ने उसे निकाल लिया।

(१५६) मेघकूट एक पर्वतीय प्रदेश है वहां विद्याधरों का राजा रहता है। कालसंवर राजा वहां आया और कुमार को देख कर उठा ले गया।

(१५७) वहीं पर प्रद्युम्न अपनी उन्नति कर रहा है। इसकी किसी को खबर नहीं है। वह बारह वर्ष वहां रहेगा, फिर वह कुमार द्वारिका आ जावेगा।

(१५८) वचनों को सुनकर नारद मन में बड़े प्रसन्न हुये और नमस्कार कर वापिस चले गये। विमान पर चढ़कर मुनि वहां आये जहां मेघकूट पर्वत पर कामदेव प्रद्युम्नकुमार था।

(१५९) कुमार को देखकर ऋषि मन में प्रसन्न हुये तथा फिर शीघ्र ही द्वारिका चले गये। वहां जाकर रुक्मिणी से मिले और उसको पुत्र की सूचना दी।

(१६०) हे रुक्मिणी! हृदय में संताप मत करो। वह प्रद्युम्न बारह वर्ष बाद आकर मिलेगा। मुझे ऐसा वचन केवली ने कहा है इसलिए प्रद्युम्न निश्चय से आकर मिलेगा।

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

(१६१) सूखे हुये आम के पेड़ तथा संवार फिर से हरे भरे हो जावेंगे। स्वर्ण-कलश जल से पूर्ण सुशोभित होने लगेंगे। कूप एवं बावड़ी जो पूर्ण रूप से सूख गये हैं वे स्वच्छ जल से भरे दिखाई देंगे।

(१६२) सब दूध वाले वृक्षों में फूल आ जावेंगे। जब तुम्हारे आंचल पीले पड़ जावेंगे तथा दोनों स्तनों से दूध झरने लगेगा तब वह साहसी और धीर वीर प्रद्युम्न आवेगा।

(१६३) इस प्रकार जब प्रद्युम्न के आने के लक्षण बता कर नारद मुनि वहां से चले गये तब रुक्मिणी के मन को सन्तोष हुआ। वह पक्ष, मास, दिन और वर्ष गिनने लगी अब कथा का क्रम प्रद्युम्न की ओर जाता है।

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

(१६४) वहां एक सिंहरथ नामका राजा रहता था उससे यमसंवर का बड़ा विरोध चलता था। यमसंवर ने उपाय सोचा कि इसको किस प्रकार समाप्त किया जावे।

(१६५) उसने पांच सौ कुमारों को बुलाया और उनसे कहा कि सिंहरथ को ललकार कर युद्ध में जीतो। जो सिंहरथ से युद्ध करने का भेद जानता है वह शीघ्र आकर युद्ध का बीड़ा ले ले।

(१६६) कोई भी कुमार पास नहीं आया। तब हंसकर प्रद्युम्न ने बीड़ा लिया। उसने कहा कि हे स्वामी मुझ पर कृपा कीजिये। मैं रण में सिंहरथ को जीतूंगा।

(१६७) तब राजा ने सत्यभाव से कहा कि हे कुमार तुम बच्चे हो अभी तुम्हारा अवसर नहीं है। तुम अभी युद्ध के भेदों को नहीं जानते जिससे कि मैं तुमको आज्ञा दूं।

(१६८) (प्रद्युम्न ने कहा)--बाल सूर्य आकाश में होता है लेकिन उससे कौन युद्ध कर सकता है। सर्प का बच्चा भी यदि डस ले तो उसके विष को दूर करने के लिये भी कोई मणिमंत्र नहीं है।

(१६९) सिंहनी बालसिंह को पैदा करती है वही हाथियों के झुंड को काल के समान है। यदि यूथ को छोड़कर अर्थात् अकेलासिंह भी वन को चला जावे तो उसे कौन ललकार सकता है।

(१७०) अग्नि यदि थोड़ी भी हो तो उसका पता किसी को भी नहीं लगता। किन्तु जब वह रौद्र रूप धारण करके जलती है तो पृथ्वी को भी जलाकर भस्म कर डालती है।

(१७१) वैसे ही यद्यपि मैं बालक हूँ किन्तु राजा का पुत्र हूँ। मुझे युद्ध करने की शीघ्र आज्ञा दीजिए। मैं शत्रुओं के दल का डटकर नाश करूंगा। यदि युद्ध से भाग जाऊं तो आपको लजाऊंगा।

(१७२) प्रद्युम्न के वचनों को सुनकर राजा सन्तुष्ट हुआ तथा मदनकुमार पर कृपा की। जब यमसंवर ने उसे बीड़ा दिया तो हाथ फैलाकर प्रद्युम्न ने उसे ले लिया।

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिए प्रस्थान

(१७३) आज्ञा मिली और प्रद्युम्न चतुरंगिनी सेना को सजा कर रवाना हो गया। बहुत से नगारे, भेरी और तुरही बजने लगे। कोलाहल मच गया एवं उछलकूद होने लगी तथा ऐसा लगने लगा कि मानों मेघ ही असमय में खूब गर्जना कर रहा हो। रथ सजा लिये गये। हाथी और घोड़ों पर हौदे तथा काठियां रख दी गयी। जब तैयार होकर प्रद्युम्न चला तो आकाश में सूर्य भी नहीं दिख रहा था।

(१७४) अब प्रद्युम्न के चरित्र को ध्यान पूर्वक सुनिये कि जिस प्रकार उसने राजा सिंहरथ को जीता।

(१७५) कुमार प्रद्युम्न ने जब प्रयाण किया तो सारे जगत ने जान लिया। आकाश में रेत उछलने लगी। सजे हुये रथों के साथ जो बाजे बज रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों भादों के मेघ ही गर्ज रहे हो। उसके प्रबल शत्रुओं के समूह को नष्ट करने वाले अनगिनत योद्धा चले। वे सब वीर एकत्र होकर समराङ्गण में जा पहुँचे।

(१७६) कुमार प्रद्युम्न को आता हुआ देखकर सिंहरथ कहने लगा यह बालक कौन है ? इस बालक को रण में किसने भेज दिया है ? मुझे इसके साथ युद्ध करने में लज्जा आती है।

(१७७) बार बार में मुड़ २ कर राजा ने कहा कि वह इस बालक पर किस प्रकार प्रहार करे। उसको देखकर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई और कहा कि हे कुमार ! तुम वापिस घर चले जावो।

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

(१७८) राजा के वचन सुनकर प्रद्युम्न क्रोधित हुआ और कहने लगा मुझ को हीन वचन कहने वाले तुम कौन हो ? बालक कहने से कोई लाभ नहीं है अब मैं अच्छी तरह से तुम्हारा नाश करूंगा।

(१७६) तब राजा ने तलवार निकाली। मेघ के समान निरन्तर बाणों की वर्षा होने लगी। सुभट आपस में हाथ में तलवार लेकर भिड़ गये। रथ नष्ट हो गये और हाथी लड़ने लगे।

(१८०) हाथियों से हाथी भिड़ गये तथा घोड़ों से घोड़े जा भिड़े। इस प्रकार उनको युद्ध करते हुये पांच दिन व्यतीत हो गये। वह युद्ध क्षेत्र श्मशान बन गया और वहां गृद्ध उड़ने लगे।

(१८१) जब सेना युद्ध करती हुई थक गयी तब दोनों वीर रण में भिड़ गये। दोनों ही वीर सावधान होकर खड़े हो गये। दोनों ही सिंह के समान जम कर लड़ने लगे।

(१८२) वे दोनों ही वीर मल्लयुद्ध करने लगे तथा दोनों वीरों ने उस स्थान को अखाड़ा बना दिया। अन्त में सिंहरथ बिल्कुल हार गया और प्रद्युम्न ने उसके गले में पैर डालकर बांध लिया।

(१८३) जब प्रद्युम्नकुमार ने विजय प्राप्त की तो उस समय देवता गण ऊपर से देख रहे थे। सिंहरथ को बांध कर जब कुमार रवाना हुआ तो (यमसंवर ने) गुणवान कामदेव को तुरन्त ही बुलवाया जिससे सज्जन लोग आनंदित हुये। राजा भी देखकर आनंदित हुआ और कहने लगा कि तुमने इस अवसर पर बड़ी कृपा की है। मेरे जो पांच सौ पुत्र हैं उनके ऊपर तुम राजा हो।

(१८४) ऐसे कामदेव के चरित्र को जिसे सोलह लाभ प्राप्त हुये हैं सब कोई सुनो। विद्याधर ने कृपा कर बंधे हुये सिंहरथ राजा को छोड़ दिया और उससे पट (दुपट्टा) देकर गले मिला तथा सिंहरथ भी भेंट देकर घर चला गया।

(१८५) कुमारों के मन में दुःख हुआ कि हमारे जीते हुये ही यह हमारा राजा हो गया। राजा को इतना मान नहीं देना चाहिये कि दत्तक पुत्र को हम पर प्रधान बना दे।

(१८६) तब कुमारों ने मिलकर सोचा कि अब इसको समाप्त करना चाहिये। अब इसको सोलह गुफाओं को दिखाना चाहिये जिससे हमारा राज्य निष्कंटक हो जावे।

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखाना

(१८७) इस युक्ति को कोई प्रकट न करे। प्रद्युम्नकुमार को बुलाकर सब कुमारों ने मिलकर सलाह की और खेलने के बहाने से वन-क्रीडा को चले।

(१८८) कुमारों ने प्रद्युम्न से कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो विजयागिरि के ऊपर जिन मन्दिर हैं जो मनुष्य उनकी पूजा करता है उसको पुण्य की प्राप्ति होती है।

(१८९) प्रद्युम्न यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और पहाड़ पर चढ़कर जिनमन्दिर को देखने लगा। परकोटे पर चढ़कर वीर प्रद्युम्न ने देखा तो एक भयंकर नाग फुंकारते हुये मिला।

(१९०) ललकार कर प्रद्युम्न नाग से भिड़ गया तथा पूंछ पकड़ कर उसका सिर उलटा कर दिया। उस पराक्रमी प्रद्युम्न को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया तथा यक्ष का रूप धारण कर खड़ा हो गया।

(१९१) वह दोनों हाथ जोड़कर कर सत्य भाव से कहने लगा कि तुम पहिले कनकराज थे। जब तुम (कनकराज) राज्य त्याग कर तप करने चले तो मुझे अपनी सोलह विद्याएं दे गये थे।

(१९२) (और कहा कि) कृष्ण के घर उसका अवतार होगा। तुम प्रद्युम्न को देख लेना। उस राजा की यह धरोहर है। इसलिये अपनी विद्यायें सम्भाल लो।

१६ विद्याओं के नाम

(१९३-१९६) १. हृदयावलोकनी २. मोहिनी ३. जलशोषिणी ४. रत्नदर्शिणी ५. आकाशगामिनी ६. वायुगामिनी ७. पातालगामिनी ८. शुभदर्शिनी ९. सुधाकारिणी १०. अग्निस्थंभिणी ११. विद्यातारणी १२. बहुरूपिणी १३. जलबंधिणी १४. गुटका १५. सिद्धिप्रकाशिका (जिसे सब कोई जानते हैं) १६. धार बांधने वाली धारा बंधिणी ये सोलह विद्यायें प्राप्त की तथा उसने अपूर्व रत्न जटित मनोहर मुकुट लाकर दिया। मुकुट सौंप कर फिर प्रद्युम्न के चरणों में गिर गया तथा प्रद्युम्न हंसकर वहां से आगे बढ़ा। वह प्रद्युम्न वहां पहुँचा जहां पांच सौ भाई हंस रहे थे।

(१९७) उन कुमारों के पास जब प्रद्युम्न गया तो मन में उनको आश्चर्य हुआ। वे ऊपर से प्रेम प्रकट करने लगे तथा उसे लेजा कर दूसरी गुफा दिखाई।

(१९८) उस गुफा का नाम काल गुफा था। कालासुर दैत्य वहां रहता था। पूर्व जन्म की बात को कौन मेट सकता है प्रद्युम्न उससे भी जाकर भिड़ गया।

(१६६) कुमार ने उसे ललकार कर जमीन पर गिरा दिया फिर वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। प्रद्युम्न के पराक्रम को देखकर वह मन में बहुत डर गया तथा छत्र चँवर लेकर उसके आगे रख दिये।

(२००) हंसकर प्रद्युम्न को सौंपते हुये किंकर बन कर उसके पैरों में गिर गया। फिर वह प्रद्युम्न आगे चला और तीसरी गुफा के पास आया।

(२०१) उस वीर ने नाग गुफा को देखा। उस साहसी तथा धैर्यशाली ने उस गुफा का निरीक्षण किया। एक भयंकर सर्प घनघोर गर्जना करता हुआ आकर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२०२) प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा और वह सर्प को पकड़ कर खूब मारने लगा तब उसका अतुल बल देखकर वह शंकित हो गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

(२०३) प्रद्युम्न को बलवान जानकर चन्द्रसिंहासन लाकर सौंप दिया। नागशय्या, वीणा और पावड़ी ये तीन विद्याएं उसके सामने रख दी।

(२०४) सेना का निर्माण करने वाली, गेहकारिणी, नागपाश तथा विद्यातारिणी इन विद्याओं का उसे वहां से लाभ हुआ। फिर वहां से वह स्नान करने के लिए सरोवर पर चला गया।

(२०५) उसे स्नान करते हुये देखकर वहां के रक्षक दौड़े और कहा कि तुम कौन पुरुष हो जो मरना चाहते हो? जिस सरोवर की रक्षा करने के लिए देवता रहते हैं उस सरोवर में नहाने वाले तुम कौन हो?

(२०६) वह वीर क्रोधित होकर बोला कि आते हुये वज्र को कौन झेल सकता है? वही मुझ से युद्ध करने में समर्थ हो सकता है जो सर्प के मुख में हाथ डाल सकता है।

(२०७) अन्त में रक्षक कहने लगे कि यह भयंकर योद्धा है मानेगा नहीं। वे चुपचाप उसके मुख की ओर देखकर उसको मगर से चिन्हित एक ध्वजा दी।

(२०८) इसके पश्चात् जब यह वीर हृदय में साहस धारण कर अग्नि-कुण्ड में गया तो वहां का रहने वाला देव संतुष्ट होकर उसके पास आया और अग्नि का जिन पर प्रभाव न पड़े ऐसे कपड़े दिये।

(२०६) इनको लेकर वह वीर आगे चला और फलों वाला एक आम का वृक्ष देखा। उसके लगे हुये आम को तोड़कर खाने लगा तो वहां रहने वाला देव बंदर का रुप धारण कर वहां आ पहुँचा।

(२१०) आम तोड़ने वाला कौन वीर है ? मेरे से आकर पहिले युद्ध करो। तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर उसके पास गया और उससे जूझकर बड़ा भारी युद्ध किया।

(२११) प्रद्युम्न ने उसे पछाड़ कर जीत लिया तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और दोनों हाथों में पुष्पमाला लेकर पावड़ी की जोड़ी उसे दी।

(२१२) तब वे कामदेव को कपित्थ वन में ले गये और उसको वहां भेज कर वे खड़े रह गये। जब वह वीर वन के बीच में गया तो एक उदण्ड हाथी चिंघाड़ कर आया।

(२१३) वह हाथी विशालकाय एवं मदोन्मत्त था। शीघ्र ही हाथी कुमार से भिड़ गया। प्रद्युम्न ने उसको पछाड़ कर दांत और सूंड तोड़ दिये और स्वयं कंधे पर चढ़ कर उसके अंकुश लगाने लगा।

(२१४) इसके पश्चात् प्रद्युम्न को वे बावड़ी में ले गये जहां काल के समान सर्प रहता था। वह वीर उसकी बंबी पर जा कर चढ़ गया जिससे वह सर्प उसमें से निकल कर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२१५) वह उस सर्प की पूंछ पकड़ कर फिराने लगा जिससे वह सर्प व्याकुल हो गया। उस विषधर (व्यंतर) ने प्रद्युम्न की सेवा की और काम मूंदड़ी एवं छुरी दी।

(२१६) मलयागिरि पर्वत पर जब वह गया तो आश्चर्य से वहां खड़ा हो गया। अमरदेव वहां दौड़कर आया और अपने देह से संघात (वार) करने लगा।

(२१७) वह देव हार गया और उसकी सेवा करने लगा। उसने कंकण की जोड़ी लाकर सामने रख दी तथा सिर का मुकुट और गले का हार दिया।

(२१८) वरहासेन नामक जहां गुफा थी वहां उन कुमारों ने प्रद्युम्न को भेजा। वहां कोई व्यंतर देव था जिसने क्षण भर में वराह का रुप धारण कर लिया।

(२१६) वह वराह रूप धारी देव प्रद्युम्न से भिड़ गया। प्रद्युम्न भी उसकेदांतों से भिड़ गया तथा घात करने लगा। देव ने फूलों का धनुष एवं विजयशंख लाकर प्रद्युम्न को उस स्थान पर दिया।

(२२०) तब मदनकुमार उस वन में जाकर बैठ गया जहां दुष्ट जीव निवास करते थे। वन के मध्य में पहुँच कर उसने देखा कि एक वीर मनोज (विद्याधर) बंधा हुआ था।

(२२१) बंधे हुये वीर मनोज को उसने छोड़ दिया तथा मुड़ कर वह वन के मध्य में गया। जिस विद्याधर को प्रद्युम्न ने बांध लिया।

(२२२) फिर वह मनोज विद्याधर मन में प्रसन्न होकर मदनकुमार के पैरों पर पड़ गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रद्युम्न से प्रार्थना की तथा इन्द्रजाल नाम की दो विद्यायें दी।

(२२३) तब वसंतराज के मन में बड़ा उत्साह हुआ। उसने अपनी कन्या विवाह में उसे दे दी। उस विद्याधर ने बहुत भक्ति की एवं उसके पैरों में गिर गया।

(२२४) जब वह वीर अर्जुन-वन में गया तब वहां एक यक्ष आ पहुँचा। उससे उसका अपूर्व युद्ध हुआ और फिर उसने कुसुम-बाण नामक बाण दिया।

(२२५) फिर वह विपुल नामक वन में गया तथा वृक्षलता के समान वह वहां खड़ा हो गया। जहां तमाल के वृक्ष थे प्रद्युम्न क्षण भर में वहां चला गया।

(२२६) उस वन के मध्य में स्फटिक शिला पर बैठी हुई एक स्त्री जाप जप रही थी। तब विद्याधर से प्रद्युम्न ने पूछा कि यह वन में रहने वाली स्त्री कौन है।

(२२७) वसंत विद्याधर ने मन में सोचकर कहा कि यह रति नाम की स्त्री है। यह अत्यन्त रूपवान एवं कमल के समान सुन्दर नेत्र वाली है, हे कुमार! आप इसके साथ विवाह कर लीजिए।

(२२८) तब प्रद्युम्न को बड़ी खुशी हुई तथा कुमार का उससे विवाह हो गया। फिर वह प्रद्युम्न वहां गया जहां उसके पांच सौ भाई खड़े थे।

(२२९) वे कुमार आपस में एक दूसरे का मुंह देख कर कहने लगे कि यह मानना पड़ता है कि यह असाधारण वीर है। हमने प्रद्युम्न को सोलह गुफाओं में भेजा किन्तु वहां भी उसे वस्त्राभरण मिले।

(२३०) प्रद्युम्न का अपार बल देख कर कुमारों ने अहंकार छोड़ दिया। सब ने मिलकर उस स्थान पर सलाह की कि पुण्यवान के सब पांवों पड़ते हैं।

(२३१) भगवान अरिहन्तदेव ने कहा है कि इस संसार में पुण्य बड़ा बलवान है। पुण्य से ही सुर असुर सेवा करते हैं। पुण्य ही सफल होता है। कहां तो उसने रुक्मिणी के उर में अवतार लिया; कहां धूमकेतु राक्षस ने उसे सिला के नीचे दबा दिया और कहां यमसंवर उसे ले गया और कनकमाला के घर बढ़ा और महान पुण्य के फल से सोलह विद्याओं का लाभ हुआ तथा सिद्धि की प्राप्ति हुई।

(२३२) पुण्य से ही पृथ्वी में राज्य-सम्पदा मिलती है। पुण्य से ही मनुष्य देव लोक में उत्पन्न होता है। पुण्य से ही अजर अमर पद मिलता है। पुण्य से ही जीव निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त सोलह विद्याओं के नाम

(२३३ से २३६) सोलह विद्याओं को उसने बिना किसी विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त कर लिया। चमर, छत्र, मुकुट, रत्नों से जटित नागशय्या, वीणा, पावड़ी, अग्निवस्त्र, विजयशंख, कौस्तुभमणि, चन्द्रसिंहासन, शेखर हार, हाथ में सुशोभित होने वाली काम मुद्रिका, पुष्प धनुष, हाथ के कंकण, छुरी, कुसुमबाण, कानों में पहिनने के लिये युगल कुण्डल, दो राजकुमारियों से विवाह, सामने आये हुये हाथी को चढ़ कर वश में करना, रत्नों के युगल कंकण, फूलों की दो मालायें, इनके अतिरिक्त अन्य छोटी वस्तुओं को कौन गिने। इन सब को लेकर प्रद्युम्न चला।

(२३७) प्रद्युम्न शीघ्र ही अपने घर को चल दिया और क्षण भर में मेघकूट पर जा पहुँचा। वहां जाकर यमसंवर से भेंट की और विशेष भक्तिपूर्वक उसके चरणों में पड़ गया।

(२३८) राजा से भेंट करके फिर खड़ा हो गया और रणवास में भेंट करने चल दिया। कनकमाला से शीघ्र ही जाकर भेंट की और बहुत भक्तिपूर्वक उसके चरण स्पर्श किये।

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

(२३९) उस श्रेष्ठ वीर प्रद्युम्न के अत्यधिक मनोहर रूप को देखकर कामबाण ने उसके (कनकमाला के) शरीर को छेद दिया। फिर उसने दौड़कर उसे अपनी छाती से लगाया किन्तु वह छुड़ाकर चला गया।

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

(२४०) प्रद्युम्न फिर वहां पहुँचा जहां उद्यान में मुनीश्वर बैठे हुये थे। उनको नमस्कार कर पूछा कि जो उचित हो सो कहिये।

(२४१) कनकमाला मेरी माता है लेकिन वह मुझे देखकर काम रस में डूब गयी। उसने अपनी मर्यादा को तोड़कर मुझे आंचल में पकड़ लिया। इसका क्या कारण है यह मैं जानना चाहता हूं।

(२४२) तब मुनिराज ने उसी समय कहा कि मैं वही बात कहूँगा जो तुम्हारे जन्म से सम्बन्धित है। सोरठ देश में द्वारिका नगरी है वहां यदुराज निवास करते हैं।

(२४३) उनकी स्त्री रुक्मिणी है जिसकी प्रशंसा महीमंडल में व्याप्त है। उसके समान और कोई स्त्री नहीं है। हे मदन, वही तुम्हारी माता है।

(२४४) धूमकेतु ने तुम्हें वहां से हर लिया और शिला के नीचे दबाकर वह चला गया। यमसंवर ने तुम्हें वहां से लाकर पाला। तुम वही प्रद्युम्न हो यह अपने आपको जान लो।

(२४५) कनकमाला ने जो तुम्हें अंचल में पकड़ना चाहा था वह तो पूर्व जन्म का सम्बन्ध है। यदि यह तुम्हारे प्रेमरस में डूबी हुई है तो छलकर उससे तीन विद्यायें प्राप्त करलो।

(२४६) मुनि के वचनों को सुनकर वह वहां से लौट गया तथा कनकमाला के पास जाकर बैठ गया और कहने लगा कि यदि तुम मुझे तीनों विद्याएं दे दो तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का उपाय कर सकता हूँ।

(२४७) कुमार से प्रेमरस की बात सुनकर वह प्रेम लुब्ध होकर व्याकुल हो गयी। उसने यमसंवर का कोई विचार नहीं किया और तीनों विद्यायें उसको दे दी।

(२४८) कुमार का मन वांछा पूरा पड़ जाने के कारण बड़ा खुश हुआ। फिर वह विद्याओं को लेकर वापिस चल दिया। (उसने कहा) मैं तुम्हारा लड़का हूँ तथा तुम मेरी माता हो। अब कोई युक्ति बतलाओ जिससे मैं तुम्हें प्रसन्न कर सकूं।

(२४९) तब कनकमाला का हृदय बैठ गया और उसने सोचा कि मुझ से इसने कपट किया है। एक तो मेरी लज्जा चली गयी दूसरे कुमार विद्याओं को अपने हाथ लेकर चलता बना।

(२५०) कनकमाला मन में दुःखी हुई। वह सिर को कूटने एवं कुचेष्टा करने लगी। अपने ही नखों से स्तन एवं हृदय को कुरेच लिया तथा केश बिखेर कर बेसुध हो गयी।

(२५१) वह रोने और पुकारने लगी तथा उसने यमसंवर को सारी बात बतलाई। तभी पांच सौ कुमार वहां आये और कनकमाला के पास बैठ गये।

(२५२) कालसंवर से उसने कहा कि देखो इस दत्तक पुत्र ने क्या कार्य किया है? जिसको धर्मपुत्र करके रखा था वही मुझे बिगाड़ कर चला गया।

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

(२५३) वचनों को सुनकर राजा उसी प्रकार प्रज्वलित हो गया मानों अग्नि में घी ही डाल दिया हो। पांच सौ कुमारों को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाकर प्रद्युम्न को मार डालो।

(२५४) तब कुमारों की मन की इच्छा पूरी हुई। उससे राजा भी विरुद्ध हो गया। सब कुमार मिलकर इकट्ठे हो गये और वे मदन को बुलाकर वन में गए।

(२५५) तब आलोकिनी विद्या ने कहा कि हे प्रद्युम्न! तुम असावधान क्यों हो रहे हो। यह बात मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि इन सबको राजा ने तुम्हें मारने भेजा है।

(२५६) तब साहसी और धीर वीर कुमार क्रुद्ध हो गया और सब कुमारों के नागपाश डाल दी। ४९९ कुमारों को आगे रख कर शिला से बांध करके लटका दिया।

(२५७) उसने एक कुमार को छोड़ दिया कि जाकर राजा को सारी बात कह दे और कहला दिया कि अगर तुम में साहस हो तो सभी दलबल को लेकर आ जाओ।

(२५८) यमसंवर राजा बैठा हुआ था वहां वह कुमार भाग कर पुकारने लगा कि सभी कुमारों को बावड़ी में डालकर ऊपर से वज्र शिला डाल दी है।

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

(२५९) वचनों को सुनकर राजा बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने विचार किया कि आज प्रद्युम्न को समाप्त कर दूंगा। रथ हाथी को सजा लिया गया तथा घोड़ों पर काठी एवं हाथी पर झूल रख दी गयी।

(२६०) धनुषधारी, पैदल चलने वाले, खड्गधारी तथा अन्य भारी फौज को चलने में जरा भी देर नहीं लगी। प्रद्युम्न ने सेना को आते हुये देखकर मायामयी सेना तैयार करली।

(२६१) यमसंवर की बलशाली सेना वहां जा पहुँची तथा एक दूसरे को ललकारते हुये मदोन्मत्त होकर परस्पर भिड़ गई। युद्ध में राजा से राजा भिड़ गये तथा पैदल से पैदल लड़ने लगे।

(२६२) यमसंवर हार गया तथा उसकी चतुरंगिनी सेना को मार कर गिरा दिया गया। तब विद्याधर राजा बड़ा दुःखी हुआ और अपना रथ मोड़ करके नगर की ओर चल दिया।

(२६३) जब वह अपने महल में पहुँचा तो कालसंवर ने कनकमाला से जाकर यह बात कही कि तीनों विद्यायें मुझे दे दो।

(२६४) वचन सुनकर वह स्त्री बड़ी दुःखी हुई तथा ऐसी हो गई मानों सिर पर वज्र गिर गया। हे स्वामी ! इन विद्याओं का तो यह हुआ कि मुझ से प्रद्युम्न छीन ले गया।

(२६५) स्त्री के वचन सुनकर उसका हृदय कांप गया और उसके होश उड़ गये तथा हृदय विदीर्ण हो गया। मुझ जैसे व्यक्ति से भी इसने झूठ बोली। वास्तव में प्रेम रस में डूबने के कारण इसने तीन विद्याएं उसको दे दी और मुझ से अब छल कर रही है कि कुमार छीन कर ले गया।

(२६६) उसका चरित्र देखकर राजा बोला कि अब उसकी (राजा की) मृत्यु का कारण बन गया। जो मनुष्य स्त्री में विश्वास करता है वह बिना कारण ही मृत्यु को प्राप्त होता है। स्त्री का चरित्र सुनकर वह विद्याधरों का राजा व्याकुल हो गया।

स्त्री चरित्र वर्णन

(२६७) स्त्री झूठ बोलती है और झूठ ही चलती है (आचरण करती है) वह अपने स्वामी को छोड़कर दूसरे के साथ भोग विलास करती है स्त्री का साहस दुगुना होता है अतः स्त्री का चरित्र कभी भुलाने योग्य नहीं है।

(२६८) उसके मन में सदैव नीच बुद्धि रहती है। उत्तम संगति को छोड़कर नीच संगति में जाती है। उसकी प्रकृति और देह दोनों ही नीच हैं। स्त्री का स्वभाव ही ऐसा है।

(२६९) उज्जैनी नगरी जो एक उत्तम स्थान था वहां पहिले चिंच नामका राजा स्त्री पर खूब विश्वास करता था इस कारण उसे अपना जीवन ही समर्पण करना पड़ा।

(२७०) दूसरे यशोधर राजा हुए जो कि अपनी पटरानी महादेवी से नाश को प्राप्त हुये। उसने राजा को विष पूर्ण लड्डू देकर मार दिया और स्वयं कुबड़े से जाकर रमने लगी।

(२७१) अब तीसरी स्त्री की बात सुनिये। पाटन नामका एक स्थान था उस काल में वहां 'हुवा' नामका सेठ था जिसके 'तीनि' नाम की सुन्दर स्त्री थी।

(२७२) एक बार वह सेठ व्यापार को गया हुआ था। तब किसी ने उसे जीभ के वशीभूत कर लिया। सेठ की मर्यादा छोड़कर उसने एक धूर्त को अपने यहां लाकर रख लिया।

(२७३) अपने पति के प्यार को छोड़कर उस आये हुये धूर्त को उसने भर्तार बना लिया। इस प्रकार स्त्रियों के साहस का कोई अन्त नहीं है। इन स्त्रियों का चरित्र कितना कहा जाय।

(२७४) अभया रानी की नीचता के कारण सुदर्शन पर संकट आया तथा उसी के कारण महायुद्ध हुआ और अन्त में सुदर्शन को तपस्या के लिये जाना पड़ा।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बढ़ी थी वह सूपनखा को लेकर ही बढ़ी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध ठहरा। उसमें अठारह अक्षौहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों दल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पूर्व कृत कर्मों को कोई नहीं मेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रद्युम्न ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं मेट सकता। सज्जन भी वैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला! तुम्हारा दोष नहीं है। अपने भाग्य में यही लिखा था।

गाथा

पुरुष के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी चलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन बिछुड़ जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रवाह में कौन बच सकता है? फिर वह राजा वापिस मुड़ा और उसने अपनी चतुरंगिणी सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुष की टंकार की तो ऐसा लगा कि मानों पर्वत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों वीर रण में आकर भिड़े तो विमानों में चढ़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर बाण बरसने लगे तथा ऐसा लगने लगा कि असमय में बादल खूब गर्ज रहे हों।

(२८२) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपाश को फेंका। पूरा दल नागपाश द्वारा दृढ़ता से बांध लिया गया और राजा अकेला खड़ा रह गया।

(२८३) ऐसा करके प्रद्युम्न कहने लगा कि मैंने कालसंवर की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। जब प्रद्युम्न इस प्रकार कह रहा था तो नारद ऋषि वहां आ पहुँचे।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

(२८४) प्रद्युम्न से उन्होंने कहा कि बस रहने दो। पिता और पुत्र में कैसी लड़ाई ? जिस राजा ने तुम्हारी प्रतिपालना की थी उससे तुम किस प्रकार लड़ रहे हो ?

(२८५) नारद ने सारी बात समझा करके कही तथा दोनों दलों की लड़ाई शान्त कर दी। कालसंवर तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है क्योंकि यह प्रद्युम्न तो श्रीकृष्ण का पुत्र है।

(२८६) नारद के वचन सुनकर मन में विचार उत्पन्न हुआ। राजा का दिल भर आया तथा उसका सिर चूम लिया। राजा को बहुत पछतावा हुआ कि अपनी चतुरंगिनी सेना का संहार हो गया।

(२८७) तब प्रद्युम्न ने क्रोध छोड़ दिया। मोहिनी विद्या को हटा कर सब की मूर्छा को उतार दिया। नागपाश को जब वापिस छुड़ा लिया तो चतुरंगिनी सेना फिर से उठ खड़ी हुई।

(२८८) सेना के उठ खड़े होने से राजा प्रसन्न हुआ तथा प्रद्युम्न के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगा। नारद ऋषि ने उसी समय कहा कि तुम्हारी घर प्रतीक्षा हो रही है।

(२८९) यदि हमारे वचनों को मन में धारण करो तो शीघ्र ही घर की ओर मुंह करलो। वायु के वेग के समान तुम द्वारिका चलो। आज तुम्हारा विवाह है।

(२९०) प्रद्युम्न ने नारद से कहा कि तुमने सच्ची बात कही है। मुझे जो केवली भगवान ने कही थी सो मिल गयी है। तब हंसकर के प्रद्युम्न बोला कि हमको कौन परणावेगा ?

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

(२९१) नारद ने क्षण भर में विमान रच दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे हंसी में तोड़ डाला। मुनि ने विमान को फिर जोड़ दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे फिर तोड़ दिया।

(२६२) जब नारद दुःखित मन हुये तो मदन ने हंस करके उपाय किया और माणिक और मणियों से सज्जित एक विमान क्षण भर में तैयार कर दिया।

(२६३) प्रद्युम्न ने जिस विद्या बल से विमान को रचा था उस विमान ने अपनी कान्ति से सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति को भी फीका कर दिया। वह ध्वजा, घंटा एवं झालर संयुक्त था। उस पर नारायण का पुत्र प्रद्युम्न चढ़ा।

(२६४) चढ़ने के पूर्व कालसंवर को बहुत समझा करके अति भक्ति भाव से उसके चरणों का स्पर्श किया। कुमार ने तब क्षमा याचना की और कंचनमाला के घर गया।

(२६५) कुमार प्रद्युम्न एवं नारद मुनि विमान पर चढ़ कर आकाश में उड़े। बहुत से गिरि एवं पर्वतों को लांघ करके जिन मन्दिरों की वन्दना की।

(२६६) फिर वे वन मध्य पहुँचे तो उस स्थान पर उदधि माला दिखाई दी। प्रद्युम्न को मार्ग में बरात मिली जो भानुकुमार के विवाह के लिये द्वारिका जा रही थी।

(२६७) नारद ने प्रद्युम्न से बात कही कि यह कुमारी पहिले तुम्हीं को दी गयी थी। तुमको जब धूमकेतु हर ले गया तो उसे अब भानुकुमार को दे दी गई है।

(२६८) नारद ने कहा कि इसमें मुझे दोष कोई नहीं मालूम होता है। यदि तुम्हारे में शक्ति है तो इसको जबरन ले लो। ऋषिराज के वचनों को मन में धारण करके उसने अपना भील का भेष कर लिया।

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

(२६९) हाथ में धनुष तथा विपाक बाण ले लिया और उतर कर उनके साथ मिल गया। पवन के वेग के समान आगे जाकर उनका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया।

(२७०) मैं नारायण की ओर से कर लेने वाला हूँ इसलिये मेरी अधिक लाग है वह मुझे दो। जो मेरे योग्य अच्छी चीज है वही मुझे दे दो जिससे मैं सब लोगों को जाने दूं।

(२०१) महिलाओं ने कहा कि हमारी बात सुनो तुम कौनसी बड़ी वस्तु मांगते हो। धन सम्पत्ति सोना जो चाहे सो ले लो और हमको आगे जाने दो।

(२०२) भील ने क्रोधित होकर उनको जाने दिया तथा कहा कि ऐसे जाने मे क्या लाभ है। जो भली वस्तु तुम्हारे पास है वही मुझे दे दो और आगे बढ़ो।

(२०३) तब महिलाओं ने उसका मुंह देख कर कहा कि एक कुमारी जो हमारे पास है उसकी तो हरि के पुत्र भानु से सगाई कर दी गयी है। अरे भील! तुम और क्या मांग रहे हो।

(२०४) उस भील वीर ने कहा यही (कुमारी) मुझे दे दो जिससे मैं आगे तुमको मार्ग दूं। महिलाओं ने क्रोधित होकर कहा कि अरे भील यह कहना तुझे उचित नहीं है।

(२०५) महिलाओं के वाक्यों को सुनकर विचार करके कहने लगा कि मैं नारायण का पुत्र हूं इन वाक्यों में तुम सन्देह मत करो और उदधि माला को मुझे दे दो।

(२०६) महिला ने कहा कि हे नटखट तुम झूठ बोलने में बहुत आगे हो। जो तीन खंड पृथ्वी का राजा है क्या उसके पुत्र का ऐसा भेष होता है?

(२०७) तब वे सीधे मार्ग को छोड़कर टेढ़े मेढ़े मार्ग से चले तो उधर भी दो कोडी (४०) भील मिल गये। सधारु कवि कहता है कि तब भील ने कहा कि यदि मैं कन्या को बल पूर्वक छीन लूं तो मेरा दोष मत समझना।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बलपूर्वक छीन लेना

(२०८) तब उसने कुमारी को छीन लिया और मुड करके विमान पर चढ़ गया। भील को देखकर वह कुमारी मन में बहुत डरी और करुण विलाप करने लगी।

(२०९) पहिले मेरी प्रद्युम्न के साथ सगाई हुई फिर भानुकुमार के साथ विवाह करने के लिये चली। हे नारद मेरी बात सुनो अब मैं भील के हाथ पड़ी हूं।

(३१०) उदधि माला ने कहा अब मुझे पञ्च परमेष्ठियों की शरण है। यदि मृत्यु न होगी तो मैं सन्यास ले लूंगी। तब नारद के मन में संदेह हुआ कि इसने बहुत बुरी बात कही है।

(३११) नारद ने उसी समय कहा कि यह कामदेव अपनी कलाएं दिखा रहा है। तब प्रद्युम्न ने बत्तीस लक्षण वाले एवं स्वर्ण के समान प्रतिभा वाले शरीर को धारण कर लिया और जिससे उसका शरीर कामदेव के समान हो गया।

(३१२) उस सुंदरी उदधिमाला को समझा कर वे विमान से शीघ्र चलने लगे। विमान के चलने में देर नहीं लगी और वे द्वारिका के बाहर पहुँच गये।

(३१३) नगर को देखकर प्रद्युम्न बोले कि जो मोतियों और रत्नों से चमक रही है, धन धान्य एवं स्वर्ण से भरी हुई है। हे नारद! यह कौनसी नगरी है?

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

(३१४) नारद ने कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो यह द्वारिकापुरी है जो सागर के मध्य में दृढ़ता से बसी हुई है यह तुम्हारी जन्मभूमि है। शुद्ध स्फटिक मणियों से जड़ी हुयी उज्ज्वल है। कूवे, बावड़ी तथा सुन्दर भवन, बहुत प्रकार के जिनेंद्र भगवान के मन्दिर, चारों ओर परकोट एवं दरवाजे से वेष्ठित यह द्वारिका नगरी है।

(३१५) यह सुनकर वीर प्रद्युम्न ने कहा कि हे नारद मेरे वचन सुनो। मुझे स्पष्ट कहो तथा कुछ भी मत छिपाओ। हे प्रद्युम्न ध्यान पूर्वक देखो जो जिसका महल है (वह मैं तुमको बतलाता हूँ।)

(३१६) नगर मध्य जो श्वेत वर्ण वाला एवं पांचों वर्णों की मणियों से जड़ा हुआ तथा सुन्दर महल है जिस पर गरुड़ की ध्वजा अत्यन्त सुशोभित है यह नारायण का महल है।

(३१७) जिसके चारों ओर सिंह ध्वजा हिल रही है उसे बलभद्र का महल जानो। जिसकी ध्वजा में मैंढे का चिन्ह है यह वसुदेव का महल है।

(३१८) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहां ब्राह्मण बैठे हुये पुराण पढ़ रहे हैं तथा जहां बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्यभामा का महल है ।

(३१६) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर बहुत सी ध्वजायें फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर मरकत मणियां चमक रही हैं वह तुम्हारी माता का महल है ।

(३२०) इन वचनों को सुनकर प्रद्युम्न जिसके कि चरित्र को कौन नहीं जानता बड़ा हर्षित हुआ । विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और नगर में चल दिया ।

प्रद्युम्न का भानुकुमार को आते हुये देखना

(३२१) चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते हुए देखा । तब प्रद्युम्न ने विद्या से पूछा कि यह कोलाहल के साथ कौन आ रहा है ?

(३२२) हे प्रद्युम्न ! सुनो मैं तुम्हें विचार करके कहती हूँ । यह नारायण का पुत्र भानुकुमार है । यह वही कुमार है जिसका विवाह है । इसी कारण नगर में बहुत उत्सव हो रहा है ।

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

(३२३) वहां प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा कि मैं इसको अच्छी तरह पराजित करुंगा । उसने एक बूढे विप्र का भेष बना लिया तथा मायामयी चंचल घोड़ा भी बना लिया ।

(३२४) वह घोड़ा बड़ा चंचल था तथा जोर से हिनहिना रहा था । जिसके चारों पांव उज्ज्वल एवं धुले हुये दिखते थे । जिसके चार चार अंगुल के कान थे । जो लगाम के इशारे को पहिचानता था ।

(३२५) जिस पर स्वर्ण की काठी रखी हुई थी । वह ब्राह्मण उसकी लगाम पकड़ करके आगे चल रहा था । अकेले भानुकुमार ने उसको देखा कि ब्राह्मण वृद्ध है किन्तु घोड़ा सुन्दर है ।

(३२६) घोड़े को देखकर भानुकुमार के मनमें यह आया कि चल कर ब्राह्मण से पूछना चाहिये। फिर उसने ब्राह्मण से पूछा कि यह घोड़ा लेकर कहां जाओगे ?

(३२७) ब्राह्मण ने कहा कि घोड़ा अपना है। समंद जाति का ताजी बलख घोड़ा है। भानुकुमार का नाम सुन कर मैं घोड़े को उनके यहां लाया हूँ।

(३२८) भानुकुमार के मन में विचार हुआ और उसने ब्राह्मण को बहुत प्रसन्न करना चाहा। हे विप्र सुनो ! मैं कहता हूँ कि तुम जो भी इसका मोल मांगोगे वही मैं तुमको दे दूंगा।

(३२९) तब विप्र ने सत्यभाव से जो कुछ मांगा वह भानुकुमार के मन को अच्छा नहीं लगा। भानुकुमार बहुत दुखी हुआ कि इस विप्र ने मेरा मान भंग किया है।

(३३०) विप्र ने भानुकुमार को कहा कि मैंने तो मांग लिया है यदि तुम उतना नहीं दे सकते हो तो न देओ। मैंने तो तुमसे सत्य कह दिया। यदि इसे हंसी समझते हो तो इसे दौड़ा करके देख लो।

भानुकुमार का घोड़े पर चढना

(३३१) ब्राह्मण के वचन सुन कर कुमार (भानु) मन में प्रसन्न हुआ और घोड़े पर चढ़ गया। लेकिन वह उस घोड़े को सम्हाल नहीं सका और उस घोड़े ने भानुकुमार को गिरा दिया।

(३३२) भानुकुमार गिर गया यह बड़ी विचित्र बात हुई इससे सभा में उपस्थित लोगों ने उसकी हंसी की। वे कहने लगे यह नारायण का पुत्र है और इसके बराबर कोई दूसरा सवार नहीं है।

(३३३) विप्र ने कहा कि तुम क्यों चढ़े ? इन तरुण से तो हम वृद्ध ही अच्छे हैं। मैं बहुत दूर से आशा करके आया था किंतु हे भानुकुमार! तुमने मुझे निराश कर दिया।

(३३४) हलधर ने विप्र से कहा डरो मत। तुम ही इस घोड़े पर क्यों नहीं चढते हो ? हे ब्राह्मण यदि तुम इसका ठहराव (बेचना) चाहते हो तो अपना कुछ पुरुषार्थ दिखलाओ।

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

(३३५) कुमार ने दस बीस लोगों को ब्राह्मण को घोड़े पर चढाने के लिये भेजा तब ब्राह्मण बहुत भारी हो गया और उनके सरकाने से भी नहीं सरका।

(२३६) तब ब्राह्मण को घोड़े पर चढ़ाने के लिये भानुकुमार आया। लेकिन वह लटक गया और उसे चढ़ा नहीं सका। जब दस बीस ने जोर लगाया तो वह भानुकुमार के गले पर पांव रख कर चढ़ गया।

(२३७) जब ब्राह्मण घोड़े पर सवार हुआ तो वह घोड़ा आकाश में घूमने लगा। सभा के लोगों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि यह तो उसका चमत्कार ही है कि वह ऊपर उड़ गया।

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

(२३८) फिर उसने अपना रूप बदल लिया और दो घोड़े पैदा कर लिये। राजा का जहां उद्यान था वहां वह घोड़ों को लेकर पहुँच गया।

(२३९) जब प्रद्युम्न उस उद्यान में पहुँचा तो वहां के रक्षक क्रोधित होकर उठे और कहा कि इस उद्यान में कोई नहीं चरा सकता। यदि घास का डोगे तो किरकिरी होगी।

(२४०) प्रद्युम्न ने अपने क्रोधित मन को बड़ी कठिनता से सम्हाला और रखवालों से ललकार करके कहा, मूर्ख घोड़ों को क्यों नहीं चरने देते हो। घास का कुछ मुझ से मोल ले लेना।

(२४१) तब उनकी बुद्धि फिर गई और उनको प्रद्युम्न ने काम मूंदड़ी उतार कर दे दी। रखवाले हँसकर के बोले कि दोनों घोड़े अच्छी तरह चर लेवें।

(२४२) घोड़े फिर फिर के उद्यान में चरने लगे और नीचे की मिट्टी को खोद कर ऊपर करने लगे। तब रख वाले छाती कूटने लगे कि इन दोनों घोड़ों ने तो उद्यान को चौपट कर दिया।

(२४३) उन्होंने वह काम मूंदड़ी प्रद्युम्न को लौटा दी जिसको उसने अपने हाथ में पहनली। तब वह धीर वहां पहुँचा जहां सत्यभामा की बाड़ी थी।

(२४४) प्रद्युम्न बाड़ी में पहुँचा तो उस स्थान पर बहुत से वृक्ष दिखलायी दिये। वे कब के लगे हुए थे यह कोई नहीं जानता था। फुलवारी विविध प्रकार से खिली हुई थी।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

(३४५) जिसमें चमेली, जुही, पाटल, कचनार, मोलश्री की बेल थी। कणवीर का कुंज महक रहा था। केवड़ा और चंपा खूब खिले हुये थे।

(३४६) जहां कुंद, अगर, मंदार सिन्दूर एवं सरीष आदि के पुष्प महक रहे थे। मरुआ एवं केलि के सैकड़ों पौधे थे तथा उस बगीचे में कितने ही नीबुओं के वृक्ष सुगंधि फैला रहे थे।

(३४७) आम जंभीर एवं सदाफल के बहुत से पेड थे। तथा जहां बहुत से दाडिम के वृक्ष थे। केला, दाख, बिजौरा, नारंगी, करणा एवं खीप के कितने ही वृक्ष लगे हुए थे।

(३४८) पिंडखजूर, लोंग, छुहारा, दाख, नारियल एवं पीपल आदि के असंख्य वृक्ष थे। वह वन कैथ एवं आंवलों के वृक्षों से युक्त था।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

(३४९) इस प्रकार की बाड़ी देख कर उस वीर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने धैर्य और साहस पूर्वक विचार कर के दो बंदरों को उत्पन्न किया जिनको कोई भी न जान सका।

(३५०) फिर उसने दोनों बंदरों को छोड दिया जिन्होंने सारी बाडी को खा डाला। जो फूलबाडी अनेक प्रकार से फूली हुई थी उसे उन बंदरों ने नष्ट कर डाला।

(३५१) फिर उन बंदरों को मुड़ा कर दूसरी ओर भेजा जिन्होंने वहां के सब वृक्ष तोड डाले। फुलबाड़ी का संहार करके सारी वाटिका को चौपट कर दिया।

(३५२) जिस प्रकार हनुमान ने लंका की दशा की थी वैसे ही उन दोनों बंदरों ने बाडी की हालत कर दी। तब माली ने जहां भानुकुमार बैठा हुआ था वहां जाकर पुकार की।

(३५३) माली ने हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी मुझे दोष मत देना। दो बन्दर वहां आकर बैठे हैं जिन्होंने सारी बाड़ी को खा डाला है।

(३५४) ज्यों ही माली ने पुकार की, भानुकुमार हथियार लेकर रथ पर चढ़ गया तथा पवन के समान वहां दौड़ करके आया जहां बन्दरों ने बाड़ी को चौपट कर दिया था।

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना

(३५५) तब प्रद्युम्न ने एक मायामयी मच्छर की रचना की। जहां भानुकुमार था उस स्थान पर उसे भेज दिया। मच्छर के काटने से भानुकुमार वहां से भाग गया।

(३५६) भानुकुमार भाग करके अपने मन्दिर में चला गया। उस समय दिन का एक पहर बीत गया था। प्रद्युम्न को बहुत सी स्त्रियां मिली जो भानुकुमार के तेल चढ़ाने आ रही थी।

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

(३५७) तेल चढा करके उन्होंने शृंगार किया और वे भले मंगल गीत गाने लगी। कुमार रथ पर चढा तथा स्त्रियां खड़ी हो गई और फिर कुम्हार के यहां (चाक) पूजने गई।

(३५८) तब प्रद्युम्न ने एक कौतुक किया और रथ में एक घोड़ा और एक ऊंट जोत कर चल दिया। ऊंट और घोड़ा अरडा करके उठे और भानुकुमार को गिरा कर घर की ओर भाग गये।

(३५९) भानुकुमार के गिरने पर वे स्त्रियां रोने लगी तथा जो गाती हुई आयी थीं वे रोती हुई चली गयीं। जब ऊंट और घोड़ा अरड़ा कर उठे उससे बड़ा अपशकुन हुआ जिसको कहा नहीं जा सकता।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

(३६०) फिर प्रद्युम्न ने ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया और धोती पहिन कर कमंडलु हाथ में ले लिया। स्वाभाविक रूप से लकड़ी टेकता हुआ चलने लगा और कुछ देर पश्चात् बावड़ी पर जा पहुँचा।

(३६१) वहां जाकर वह खड़ा हो गया जहां सत्यभामा की दासी खड़ी थी। वह कहने लगा कि भूखे ब्राह्मण को जिमाओ तथा जल पीने के लिये कमंडलु को भर दो।

(३६२) उसी क्षण दासी ने कहा कि यह सत्यभामा की बावड़ी है यहां कोई पुरुष नहीं आ सकता है। हे मूर्ख ब्राह्मण तुम यहां कैसे आ गये ?

(३६३) तब ब्राह्मण उसी समय क्रोधित हो गया। उसने किसी का सिर मूंड लिया, किसी का नाक और किसी के कान काट लिये। फिर उसने बावड़ी में प्रवेश किया।

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

(३६४) उसने अपनी बुद्धि से कोई उपाय सोचा और जल सोषिणी विद्या को स्मरण किया। वह ब्राह्मण कमंडलु को भर कर बाहर निकल आया जिससे बावड़ी सूख कर रीती हो गई।

कमंडलु से जल को गिरा देना

(३६५) बावड़ी को सूखी देख कर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मण बाजार के चौराहे पर चला गया। दासी ने दौड़ करके उसका हाथ पकड़ लिया जिससे कमंडलु फूट गया और उसका जल नदी के समान बहने लगा।

(३६६) पानी से बाजार डूब गया और व्यापारी लोग पानी २ चिल्लाने लगे। नगर के लोगों के लिए एक कौतुक करके वह वहां से चल दिया।

प्रद्युम्न का मायामयी मैंढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

(३६७) फिर उस प्रद्युम्न ने मन में सोचा और उसने एक मायामयी मैंढा बना लिया। उसे वह वसुदेव के महल पर लेकर पहुँचा। तब काठीया (पहरेदार) ने जाकर सूचना दी।

(३६८) वसुदेव ने प्रसन्नता से उससे कहा कि उसे शीघ्र ही भीतर बुलाओ। काठीया ने जाकर सन्देश कहा और वह मैंढा लेकर भीतर चला गया।

(३६९) उसने मैंढे को बिना शंका के खड़ा कर दिया। राजा ने हंस कर अपनी टांग आगे कर दी। तब प्रद्युम्न ने कहा कि इस प्रकार टांग फैलाने का क्या कारण है ?

(३७०) प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि मैं परदेशी ब्राह्मण हूँ। हे देव। यदि तुम्हारी टाँग में पीड़ा हो जावेगी तो मैं कैसे जीवित बचूंगा।

(३७१) फिर वसुदेव ने हंसकर उससे यह बात कही कि तुम्हारा दोष नहीं है तुम अपने मन में शंका मत करो। मेरी टाँग कैसे टूट जावेगी।

(३७२) तब उसने मेंढे को छोड़ दिया। सभा के देखते देखते उसने वसुदेव की टांग तोड़ दी। टांग तोड़ कर मेंढा वापिस आ गया और वसुदेव राजा भूमि पर गिर पड़े।

(३७३) जब वसुदेव भूमि पर गिर पड़े तो छप्पन कोटि यादव हँसने लगे। फिर वह उस पूरी सभा को हंसा करके सत्यभामा के घर की ओर चल दिया।

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

(३७४) पीली धोवती तथा जनेउ पहिन कर चन्दन के बारह तिलक लगाये। चारों वेदों का जोर से पाठ पढ़ता हुआ वह ब्राह्मण पटरानी के घर पर जा पहुँचा।

(३७५) वह सिंह द्वार पर जाकर खड़ा हो गया तो द्वारपाल ने अन्दर जा कर सूचना दी। सत्यभामा ने अपने अन्य ब्राह्मणों को (वेद पाठ आदि क्रियाओं से) रोक दिया।

(३७६) सत्यभामा ने जब उसको पढ़ता हुआ सुना तो उसके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ और उसको अन्दर बुला लिया। जब रानी का बुलावा आया तो वह लकड़ी टेकता हुआ भीतर चला गया।

(३७७) हाथ में अक्षत एवं जल लेकर रानी को उसने आशीर्वाद दिया। रानी प्रसन्न होकर कहने लगी कि हे विप्र! कृपा करो और जिस वस्तु पर तुम्हारा भाव हो वही मांग लो।

(३७८) फिर सिर हिलाते हुये ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारी बोली सच्ची हो। मैं तुमसे एक ही सार बात कहता हूँ कि भूखे ब्राह्मण को भोजन दो।

(३७९) रानी ने पटायत से कहा कि यह भूखा खड़ा चिल्ला रहा है। इसे अपनी रसोईघर में ले जाओ और जो भी मांगे वही खिलादो।

(३८०) उसने वहां एकत्रित अन्य ब्राह्मणों से कहा कि तुम बहुत से हो और मैं अकेला हूं। वेद और पुराण में जिसको अच्छा बतलाया गया है उस एक उत्तम आहार को तुम बतलादो।

(३८१) वहां ब्राह्मणों को लड़ते हुये देख कर सत्यभामा ने कहा कि अरे तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो। एक तो तुम एक दूसरे के ऊपर बैठे हो और फिर आपस में लड़ते हो ?

(३८२) अब प्रद्युम्न की बात सुनो। उसने अपनी जृम्भणी विद्या को भेजा जिससे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे तथा एक दूसरे का सिर फोड़ने लगे।

(३८३) रानी ने बात समझ करके कहा कि इन लड़ने वालों को वायु लग गई है जो दूर हो जावें उसे भोजन डाल दो नहीं तो उसे बाहर निकाल दो।

(३८४) तब प्रद्युम्न ने कहा कि भूखे साधुओं की भूख शान्त कर दो। सुनो हमें भूख लग रही है हमको एक मुट्ठी आहार दे दो।

(३८५) सत्यभामा ने तब क्या किया कि एक स्वर्ण थाल उसके आगे रख दिया। हे ब्राह्मण ! बैठ कर भोजन करो तथा इनकी सब बातों की ओर ध्यान मत दो।

(३८६) वह ब्राह्मण अर्द्धासन मार कर बैठ गया और अपने आगे उसने चौका लगाया। हाथ धोने के लिये लौटा दिया। थाल परोस दिया तथा नमक रख दिया।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

(३८७) चौरासी प्रकार के बनाये हुये बहुत से व्यञ्जन उसने परोसे। बड़े बड़े थाल के थाल परोस दिये और वह एक ही ग्रास में सबको खा गया।

(३८८) चावल परोसे तो चावल खा गया। स्वयं रानी भी वहां आकर बैठ गयी। जितना सामान परोसा था वह सब खा गया। बड़ी कठिनता से वह पत्तल बची।

(३८९) उस ब्राह्मण ने कहा कि हे रानी सुनो। मेरे पेट में अधिक ज्वाला उत्पन्न हुई है। उन लोगों को परोसना छोड़ कर मेरे आगे लाकर सामान डाल दो।

(३६०) जितने लोग जीमन के लिये आमंत्रित थे उन सबका भोजन उस ब्राह्मण को परोस दिया गया। नारायण के लिये जो लड्डू अलग रखे हुये थे वे भी उसने खा लिये।

(३६१) तब रानी मन में बड़ी चिन्ता करने लगी कि इसने तो सभी रसोई खा डाली है। यह ब्राह्मण तो अब भी तृप्त नहीं हुआ है और भूखा भूखा कह कर चिल्ला रहा है।

(३६२) उस वीर ने कहा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि तूने नगर के सब लोगों को निमंत्रित किया है। वे आकर क्या जीमेंगे। तू एक ब्राह्मण को भी तृप्त नहीं कर सकी।

(३६३) रानी के चित्त में विचार पैदा हुआ कि अब इसको कहां से क्या लाकर परोसूंगी अब भूखे ब्राह्मण ने क्या किया कि अपने मुंह में अंगुली डाल कर उल्टी कर दी।

(३६४) उस ब्राह्मण ने क्या कौतुक किया कि सब खाली बर्तनों को उल्टी से भर दिया। इस प्रकार वह रानी का मान भंग करके वहां से खड़ा हो गया।

प्रद्युम्न का विकृत रूप धारण बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

(३६५) मूंड मुंडा कर तथा कमंडलु हाथ में लेकर झुका हुआ वह कुबड़ा बन गया। वह वहां से लौटा। उसके बड़े बड़े दांत थे तथा कुरूप देह थी। वह अपनी माता के महल की ओर चला।

(३६६) रुक्मिणी क्षण क्षण में अपने महल पर चढ़ती थी और क्षण क्षण में वह चारों ओर देख रही थी कि मुझ से नारद ने यह बात कही थी कि आज तेरे घर पुत्र आवेगा।

(३६७) मुनि ने जिन जिन बातों को कही थी वे सब चिन्ह पूरे हो रहे हैं। मनोहर आम्र के वृक्ष फले हुये देखे तथा उसका आंचल पीला दिखाई देने लगा।

(३६८) सूखी बावड़ी नीर से भर गयी। दोनों स्तनों में दूध भर आया तब रुक्मिणी के मन में आश्चर्य हुआ इतने ही में एक ब्रह्मचारी वहां पहुँचा।

(३९९) तब रुक्मिणी ने नमस्कार किया तथा उस छोड़े ने धर्म वृद्धि हो ऐसा कहा। विनय पूर्वक उसने उस ब्रह्मचारी का आदर किया तथा स्वर्ण सिंहासन बैठने के लिये दिया।

(४००) रुक्मिणी ने तो समझा करके क्षेमकुशल पूछा किन्तु वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा। रुक्मिणी ने अपनी सखी को बुलाकर सब बात बता दी तथा इसका जीमन कराओ और कुछ भी देर मत लगाओ ऐसा कहा।

(४०१) तत्काल वह जीमन कराने के लिये उठी तो प्रद्युम्न ने अग्नि स्तंभिनी विद्या को याद किया। उस कारण न तो भोजन ही पक सका और चूल्हा धुआं धार हो गया तथा वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा।

(४०२) मैं सत्यभामा के घर गया था लेकिन वहां भी खाना नहीं मिला तथा उल्टा भूखा रह गया। जो दिया वह भी छीन लिया। इस प्रकार मेरे तीन लंघन हो गये हैं।

(४०३) रुक्मिणी ने चित्त में सोचा और उसको लड्डू लाकर परोस दिये। एक मास तक खाने के लिये जो लड्डू रखे हुये थे वे सब कुबड़े रूप धारी प्रद्युम्न ने खा लिये।

(४०४) जिस आधे लड्डू को खा लेने पर नारायण पांच दिन तक तृप्त रहते थे। तब रुक्मिणी ने मन में विचारा कि कुछ कुछ समझ में आता है कि यही वह है अर्थात् मेरा पुत्र है।

(४०५) तब रानी के मन में आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का पुत्र किस घर में रह सकता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता। नारायण को कैसे विश्वास कराया जाय।

(४०६) तब रुक्मिणी के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह कालसंवर के घर बड़ा हुआ है वहां उसने कितनी ही विद्याएं सीख ली हैं यह उसी विद्या बल का प्रभाव है।

(४०७) यह विचार कर रुक्मिणी ने उससे पूछा कि हे महाराज आपका स्थान कौनसा है। आपका आगमन कहाँ से हुआ है तथा किस गुरु ने आपको दीक्षा दी है।

(४०८) आपकी कौनसी जन्मभूमि है तथा माता पिता के सम्बन्ध में मुझे प्रकाश डालिये। फिर उसने विनय के साथ पूछा कि आपने यह व्रत किस कारण ले रखा है ?

(४०९) तब वह क्रोधित होकर बोला कि बाह्य गुरु के देखने से क्या होगा। गोत्र नाम तो उससे पूछा जाता है जिसका विवाह मंगल होने वाला होता है।

(४१०) हम परदेशी हैं देश देशान्तर में फिरते रहते हैं। भिक्षा मांग करके भोजन करते हैं। तू प्रसन्न होकर हमको क्या दे देगी और रूठ जाने पर हमारा क्या ले लेगी।

(४११) जब वह खोडा क्रोधित हुआ तो उससे रुक्मिणी मन में उदास हो गयी। वह हाथ जोड़कर उसे मनाने लगी। मेरी भूल हो गयी थी आप दोष मत दीजिये।

(४१२) तब प्रद्युम्न ने उस समय कहा कि हे माता मुझे मन से क्यों भूल गयी हो। मुझे सच्चा प्रद्युम्न समझो तथा मैं पूछूं जिसका जवाब दो।

(४१३) तब मन में प्रसन्न होकर उसने (रुक्मिणी) जिस प्रकार अपना विवाह हुआ था तथा जिस प्रकार प्रद्युम्न हर लिया गया था सारा पीछे का कथान्तर कहा।

(४१४) उसे धूमकेतु हर ले गया था फिर उसे यमसंवर घर ले गया। मुझे यह सब बात नारद ने कही थी तथा कहा था कि आज तुम्हारा पुत्र घर आवेगा।

(४१५) और जो मुनि ने वचन कहे थे उसके अनुसार सब चिह्न पूरे हो रहे हैं। लेकिन अब भी पुत्र नहीं आवे तो मेरा मन दुखित हो जावेगा।

(४१६) सत्यभामा के घर पर बहुत उत्सव हो रहा है क्योंकि आज भानुकुमार का विवाह है। मैं आज होड़ में हार गयी हूँ तथा कार्य की सिद्धि नहीं हुई है। इसी कारण मेरा मस्तक आज मूंडा जावेगा।

(४१७) प्रद्युम्न माता के पास पूरी कथा सुनकर हाथ से पकड़ कर अपना माथा धुना। मन में पछतावा मत करो तथा मुझे ही तुम अपना पुत्र मिला हुआ जान लो।

(४१८) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहु रूपिणी विद्या को स्मरण किया। असली माता को उसने ओझल कर दिया और दूसरी मायामयी रुक्मिणी बना दी।

सत्यभामा की स्त्रियों का रुक्मिणी के केश उतारने के लिये आना

(४१९) इतने में सत्यभामा की ओर से बहुत सी स्त्रियां मिल कर तथा नाई को साथ लेकर चली और जहां मायामयी रुक्मिणी थी वहां वे आ पहुँची।

(४२०) पांव पड़कर उससे निवेदन किया कि उन्हें सत्यभामा ने उसके पास भेजी हैं। हे स्वामिनी तुम अपने मन में हीनतामत लाओ तथा भंवरों के समान अपने काले केशों को उतारने दो।

(४२१) वचनों को सुनकर सुंदरी ने कहा कि तुम्हारा बोल सच्चा हो गया है। अब कामदेव (प्रद्युम्न) का चरित्र सुनो कि नाई ने अपना ही सिर मूंड लिया।

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

(४२२) उस नाई ने अपने हाथ की अंगुली को काट लिया और साथ की स्त्रियों को भी मूंड लिया। उनके नाक कान खोड़े कर दिये फिर वे सब वापिस अपने घर की ओर चल दीं।

(४२३) वे स्त्रियां गाती हुई नगर के बीच में से निकलीं। किस पुरुष ने इन स्त्रियों को विकृत रूप कर दिया है? सबको यह बड़ा विचित्र अचंभा हुआ और नगर के लोग हँसी करने लगे।

(४२४) उसी क्षण वे रणवास में गयीं और सत्यभामा के पास जाकर खड़ी हो गयीं। उनका विपरीत रूप देखकर वह बोली कि किसने तुम्हारा विकृत रूप कर दिया है?

(४२५) तब वे दुःखित होकर कहने लगी कि हम रुक्मिणी के घर गयी थीं। जब उन्होंने टटोल कर अपने नाक कान देखे तो वे नाई की तरह रोने लगीं।

(४२६) इस घटना को सुनकर खबर देने वाले गुप्तचर वहां आये जहां रणवास में रुक्मिणी बैठी हुई थी तथा कहने लगे कि बहुत सी स्त्रियों के सिर मुंडकर और नाक कान काट कर विकृत रूप बना दिया है, ऐसा हमने सुना है।

(४२७) इस बात को सुनकर रुक्मिणी ने कहा कि निश्चय रूप से यही प्रद्युम्न है। हे वीरों में श्रेष्ठ एवं साहस तथा धैर्य को रखने वाले सब कार्य छोड़कर प्रकट हो जाओ।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

(४२८) तब प्रद्युम्न प्रकट हो गया जिसके समान रूप वाला दूसरा कोई नहीं था। वह अत्यन्त सुंदर एवं लक्षण युक्त था। तब रुक्मिणी ने समझा कि यह उसका पुत्र है।

(४२९) जब रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को देखा तो उसका सिर चूम लिया और गोद में ले प्रसन्न मुख होकर उसे कंठ से लगा लिया तथा कहा कि आज मेरा जीवन सफल है। आज का दिन धन्य है कि पुत्र आ गया। जिसे १० मास तक हृदय में धारण कर बड़ा दुःख सहन किया था, मुझे यह पछतावा सदैव रहेगा कि मैं उसका बचपन नहीं देख सकी।

(४३०) माता के वचन सुनकर वह पांच दिन का बच्चा हो गया। फिर वह क्षण भर में बढ़ कर एक महीने का हो गया तथा फिर वह प्रद्युम्न बारह महीने का हो गया।

(४३१) कभी वह लौटने लगा, कभी हठ करने लगा और कभी दौड़कर आंचल से लगने लगा। वह कभी खाने को मांगता था और इस प्रकार उसने बहुत भेष उत्पन्न किये।

(४३२) वहां इतना चरित करने के पश्चात् फिर वह अपने रूप में आ गया। उसने कहा कि हे माता तुम्हें मैं एक कौतुक दिखलाऊंगा।

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

(४३३) अब दूसरी ओर कथा आ रही है। सत्यभामा ने स्त्रियों को बलराम के पास भेजा और कहलाया कि हे बलराम रुक्मिणी के ऐसे कार्य के लिये आप साक्षी बने थे।

(४३४) स्त्रियां जाकर वहां पहुँची जहां बलराम कुमार बैठे हुये थे। बड़ी ही युक्ति के साथ विनय पूर्वक कहा कि रुक्मिणी ने ऐसे काम किये हैं।

हलधर के दूत का रुक्मिणी के महल पर जाना

(४३५) बलराम ने क्रोधित होकर दूत को भेजा और वह तत्काल पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के पास पहुँचा। सिंह-द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और रुक्मिणि को इसकी सूचना भेज दी।

(४३६) तब मदन (प्रद्युम्न) ने फिर विचार किया और मूंडे हुये ब्राह्मण का भेष धारण किया। उसने स्थूल पेट एवं विकृत रूप धारण कर लिया तथा वह आड़े होकर द्वार पर गिर गया।

(४३७) तब दूत ने उससे कहा कि हे ब्राह्मण उठो जिससे हम भीतर जा सकें। फिर उत्तर में ब्राह्मण ने कहा कि वह उठ नहीं सकता। लौट करके फिर आना।

(४३८) उसके वचनों को सुनकर वे क्रोधित होकर उठे और उसका पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया। तब उसने कहा कि ऐसा करने से यदि ब्राह्मण मर गया तो उनको गोहत्या का पाप लगेगा।

प्रवेश न प्राप्त कर सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

(४३९) इस प्रकार जानकर वह वापिस चला गया तथा बलभद्र के पास खड़ा हो गया। द्वार पर एक ब्राह्मण पड़ा हुआ है वह ऐसा लगता है मानों पांच दिन से मरा पड़ा हो।

(४४०) हम उन तक प्रवेश प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि वह पोल (द्वार) को रोक कर पड़ा हुआ है यदि उसके पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया जावे और वह मर जावेगा तो ब्राह्मण हत्या का पाप लगेगा।

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

(४४१) बात सुनकर बलभद्र क्रोध से प्रज्वलित होकर चले। तथा उनके साथ दस बीस आदमी गए और वे पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के घर पहुँच गए।

(४४२) वे सिंह द्वार पर जाकर खड़े हो गये और ब्राह्मण को द्वार पर पड़ा हुआ देखा तब बलभद्र ने उसे निवेदन किया कि हे ब्राह्मण उठो भीतर जावेंगे।

(४४३) तब ब्राह्मण ने बलभद्र (बलराम) से कहा कि वह सत्यभामा के घर जीमने गया था। उसने उदर को सरस आहार में इतना भर लिया है कि पेट अफर गया है और वह उठ भी नहीं सकता।

(४४४) तब बलभद्र (बलराम) हंस कर कहने लगे कि तुम एक ही स्थान पर बैठ कर खाते रहे। ब्राह्मण खाने में बड़े लालची होते हैं तथा बहुत खाते हैं यह सब कोई जानते हैं।

(४४५) तब वह ब्राह्मण क्रोधित होकर बोला कि बलराम तुम बड़े निर्दयी हो। दूसरे तो ब्राह्मण की सेवा करते हैं लेकिन तुम दुःख की बात कैसे बोलते हो?

(४४६) तब बलभद्र क्रोधित होकर उठे और उसके पैर पकड़ कर निकालने के लिये चले। ब्राह्मण ने कहा कि मुझे गाली क्यों देते हो? आओ मुझे बाहर निकाल दो।

(४४७) तब हलधर उसे निकालने लगे तो प्रद्युम्न ने अपनी माता रुक्मिणी से कहा। एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ यह कौन वीर है, मुझे कहो।

रुक्मिणी द्वारा हलधर का परिचय

(४४८) यह छप्पनकोटि यादवों के मुख मंडल की शोभा है और इन्हें बलभद्रकुमार कहते हैं। यह सिंह से युद्ध करना खूब जानते हैं। यह तुम्हारे पितृव्य (बड़े पिता) हैं यह मैं तुम से कहती हूँ।

(४४९) पैर पकड़ कर वह (बलराम) बाहर खैंच ले गया किंतु वह (प्रद्युम्न) पैर बढ़ाकर धड़ सहित वहीं पड़ा रहा। यह आश्चर्य देखकर बलभद्र ने कहा कि यह गुप्त वीर कौन है?

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

(४५०) पांव टेक कर वह भूमि पर खड़ा हो गया और उसी क्षण उसने सिंह का रूप धारण कर लिया। तब हलधर ने अपने आयुध को सम्हाला। फिर वे दोनों वीर ललकार कर भिड़ गये।

(४५१) युद्ध करने लगे, भिड़ने लगे, अखाड़े बाजी करने लगे दोनों वीर मल्ल युद्ध करने लगे। सिंह रूप भारी प्रद्युम्न संभल कर उठा और बलभद्र के पैर पकड़ कर अखाड़े में डाल दिया।

(४५२) जहां छप्पन कोटि यादवों के स्वामी नारायण थे वहां जाकर हलधर गिरे। सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये और कृष्ण भी कहने लगे कि यह बड़ी विचित्र बात है।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणी के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

(४५३) इतनी बात तो यहां ही रहे। अब यह कथा रुक्मिणी के पास से प्रारम्भ होती है। वह अपने पुत्र से पूछने लगी कि इतना बल पौरुष कहां से सीखा ?

(४५४) मेघकूट नामक जो पर्वतीय स्थान है वहां यमसंवर नामका राजा निवास करता है। हे माता रुक्मिणी! सुनो मैंने वहीं से अनेक विद्यायें सीखी हैं।

(४५५) मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे बचन सुनो। नारद ऋषि मुझे यहां लाये हैं। फिर प्रद्युम्न हाथ जोड़ कर बोला कि मैं उदधि माला को ले आया हूँ।

(४५६) तब माता रुक्मिणी ने हंसकर कहा कि भैया, नारद कहां है। हे पुत्र सुनो मैं तुमसे कहती हूँ कि उदधिमाला कहां है उसे मुझे दिखलाओ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को यादवों की सभा में ले जाने की स्वीकृति लेना

(४५७) तब प्रद्युम्न ने रुक्मिणी से कहा कि हे माता मैं तुमसे एक वचन मांगता हूँ। मैं तुम्हें तुम्हारी बांह पकड़ कर के सभा में बैठे हुये यादवों को ललकार करके ले जाऊंगा।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणी द्वारा वर्णन

(४५८) माता ने उस साहसी की बात सुनकर कहा कि ये यादव लोग बड़े बलवान हैं बलराम और कृष्ण जहां है उनके सामने से तुम कैसे जाने पाओगे।

(४५९) पांचों पाण्डव जो पंच यति हैं तुम जानते ही हो ये कुन्ती के पुत्र हैं तथा अतुल बल के धारक हैं। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव इनके पौरुष का कोई पार नहीं है।

(४६०) छप्पन कोटि यादव बड़े बल शाली हैं उनके भय से नव खंड कांपता है। ऐसे कितने ही क्षत्रिय जहां निवास करते हैं तुम अकेले उन्हें कैसे जीत सकोगे ?

(४६१) तब प्रद्युम्न क्रुद्ध होकर बोला कि मैं अशेष यादवों के बल के अभिमान को चूर कर दूंगा, और पाण्डवों को जिनके सभी नरेश साथी हैं युद्ध में हरा दूंगा। नारायण और बलभद्र सभी को रण में समाप्त कर दूंगा केवल नेमिकुमार को छोड़कर जो कि जिनेन्द्र भगवान ही हैं।

(४६२) मदनकुमार का चरित्र सब कोई सुनो। प्रद्युम्न नारायण से युद्ध कर रहा है। पिता और पुत्र दोनों ही रण में युद्ध करेंगे यह देखने के लिये देवता भी आकाश में विमान पर चढ़ कर आ गये।

रुक्मिणी की बाँह पकड़ कर यादवों की सभा में ले जाकर उसे छुड़ाने के लिए ललकारना

(४६३) तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर तथा माता की बाँह पकड़ कर ले गया। जिस सभा में नारायण बैठे थे वहां मायामयी रुक्मिणी के साथ पहुँच गया।

(४६४) सभा को देखकर प्रद्युम्न बोला कि तुम में कौन बलवान क्षत्रिय है उसको दिखाकर रुक्मिणी को ले जा रहा हूँ। यदि उसमें बल है तो आकर छुड़ा ले।

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके युद्ध के लिए ललकार

(४६५) हे नारायण ! तुम मथुरा के राजा कंस को मारने वाले कहे जाते हो। जरासंध को तुमने पछाड़ कर मार दिया था। अब मुझ से रुक्मिणी को आकर बचा लो।

(४६६) दशों दिशाओं को संबोधित करके यह कहने लगा, कि हे वसुदेव ! तुम रण के भेद को खूब जानते हो। तुम छप्पन कोटि यादव मिल कर के भी यदि शक्ति है तो रुक्मिणी को आ कर छुड़ा लो।

(४६७) हे बलभद्र ! तुम बड़े बलवान एवं श्रेष्ठ वीर हो। रण संग्राम में बड़े धीर कहे जाते हो। हल जैसे तुम्हारे पास हथियार हैं। मुझ से रुक्मिणी आकर छुड़ालो।

(४६८) हे अर्जुन ! तुम खांडव वन को जलाने वाले हो, तुम्हारे पौरुष को सब कोई जानते हैं। तुमने विराट राज से गाय छुड़ायी थी। अब तुम रुक्मिणी को भी आकर छुड़ा लो।

(४६९) हे भीम ! तुम्हारे हाथ में गदा शोभित है। अपना पुरुषार्थ मुझे आज दिखलाओ। तुम पांच सेर भोजन करते हो। युद्ध में आकर अब क्यों नहीं भिड़ते हो।

(४७०) हे ज्योतिषी सहदेव ! मेरे वचन सुनो। तुम्हारे ज्योतिष के अनुसार क्या होगा यह बतलाओ। फिर हंसकर प्रद्युम्न ने पूछा कि तुम्हारे समान कौन रण जान सकता है ?

(४७१) हे नकुल ! तुम्हारा पुरुषार्थ भी अतुल है। तुम्हारे पास कुन्त (भाला) नामक हथियार है। अब तुम्हारे मरने का अवसर आ गया है। मुझसे रुक्मिणी आकर छुड़ाओ।

(४७२) तुम नारायण और बलभद्र होकर भी छल से कुंडलपुर गये थे। उसी समय तुम्हारी बात का पता लग गया था कि तुम रुक्मिणी को चोरी से हर कर लाये थे।

(४७३) प्रद्युम्न उस अवसर पर बोला कि अब रण में आकर क्यों नहीं भिड़ते हो। मैं तुम से एक अच्छी बात कहता हूं। एक ओर तुम सब क्षत्रिय वीर हो और एक ओर मैं अकेला हूं।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

(४७४) तब श्रीकृष्ण सुनकर बड़े क्रोधित हुये जैसे अग्नि में घी डाल दिया हो। मानों सिंह ने वन में गर्जना की हो अथवा सागर और पृथ्वी हिलने लगे हों। तब सब यादव अपनी सेना सजाने लगे। भीम ने गदा ली, अर्जुन ने अपने कोदंड धनुष को उठा लिया और नकुल ने हाथ में भाला ले लिया जिससे तमाम ब्रह्माण्ड कंपित हो गया।

(४७५) तैयार हो ! तैयार हो ! इस प्रकार का चारों ओर कहला दिया। यदुराज श्रीकृष्ण तैयार हो गये। घोड़ों को सजाओ, मस्त हाथियों को तैयार करो तथा सुभट सुसज्जित हो जाओ ! आज रण में भिड़ना होगा। ऐसा आदेश दिया।

(४७६) आज्ञा मिलते ही सुभट रण को चल दिये। ठः ठः चारों ओर ये शब्द करने लगे, किसी ने हाथ में तलवार तथा किसी ने हथियार सजाये।

युद्ध की तैयारी का वर्णन

(४७७) कितनों ही मदोन्मत्त हाथी चिंघाड़ रहे थे। कितने ही सुभट तैयार हो कर रण करने चढ़ गये। कितनों ने घोड़ों पर जीन रख दी और कितनों ने अपने हथियार संभाल लिये।

(४७८) कितने ही ने युद्ध करने के लिये 'टाटण' ले लिये। कितनों ही ने अपने सिरों पर टोप पहिन लिये। कितनों ही ने शरीर में कवच धारण कर लिया और इस प्रकार वे सब राजा सजधज के चले।

(४७६) किसी ने हाथ में भाला सजा लिया और कोई सान पर चढ़ी हुई तलवार लेकर निकला। किसी ने अपने हाथों में सेल ले लिया और किसी ने कमर में छुरी बांध ली।

(४८०) कुछ लोग बात समझा कर कहने लगे कि क्या इन सुभटों को वायु लग गयी है। जिसने रुक्मिणी को हरा है वह मनुष्य तुम्हारे स्तर का नहीं है।

(४८१) एक ही स्थान पर सब क्षत्रिय मिल गये और घटाटोप (मेघ जैसे) होकर युद्ध के लिए चले। तुच्छ बुद्धि से उपाय मत करो अब यह मरने का दाव आ गया है।

(४८२) शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना वहां मिल गयी। वहां घोड़े, हाथी, रथ और पैदल सेना थी। अप्रमाण छत्र एवं मुकुट दिखने लगे तथा आकाश में विमान चलने लगे।

(४८३) इस प्रकार ऐसी असंख्यात सेना चली और चारों ओर खूब नगाड़े बजने लगे। घोड़ों के खुरों से जो धूल उछली उससे ऐसा लगता था मानों तत्काल के भादों के मेघ ही हों।

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

(४८४) सेना के बायीं दिशा की ओर कौवा कांव कांव करने लगा तथा काले सर्प ने रास्ता काट दिया। दाहिनी ओर तथा दक्षिण दिशा की ओर शृगाल बोलने लगे।

(४८५) वन में असंख्य जीव दिखाई दिये। ध्वजायें फकड़ने लगी एवं उन पर आकर पक्षी बैठने लगे। सारथी ने कहा कि शकुन बुरे हैं इसलिये आगे नहीं चलना चाहिये।

(४८६) तब उस अवसर पर केशव बोले कि हम कोई विवाह करने थोड़े ही जा रहे हैं जो शकुनों को देखें। वे सारथी को समझाने लगे कि जो कुछ विधाता ने लिखा है उसे कौन मेट सकता है।

(४८७) नारायण शकुनों की परवाह किये बिना ही चले। जब प्रद्युम्न ने सेना को देखा तो मन में कुछ चिन्ता हुई। माता रुक्मिणी को विमान में बैठा दिया और फिर मायामयी सेना खड़ी कर दी।

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

(४८८) तब प्रद्युम्न ने मन में चिन्तन किया और युद्ध करने वाली विद्या का स्मरण किया। जितनी सेना सामने थी उतनी ही अपनी सेना तैयार कर दी।

युद्ध वर्णन

(४८९) दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये। सुभटों ने धनुषों को सजाकर अपने हाथों में ले लिया। कितने ही योद्धाओं ने तलवारों को अपने हाथ में ले लिया। वे ऐसे लगने लगे मानों काल ने जीभ निकाल रखी हो।

(४९०) हाथी वालों से हाथी वाले योद्धा भिड़ गये तथा घुड़सवार सेना युद्ध करने लगी। पैदल सेना से पैदल सेना लड़ने लगी। तलवार के वार के साथ २ वे भी पड़ने एवं उठने लगे।

(४९१) कोई ललकार रहा है कोई लड़ रहा है। कोई मारो मारो इस प्रकार चिल्ला रहा है। कोई वीर युद्ध स्थल में लड़ रहा है और कितने ही कायर सैनिक भाग रहे हैं।

(४६२) कोई वीर दोनों भुजाओं से भिड़ गये। कोई ललकार करके लड़ रहा था। कोई धनुष की टंकार कर रहा था। कोई तलवार के वार से शत्रुओं का संहार कर रहा था।

(४६३) युद्ध देखकर नारायण बोले, हे अर्जुन और भीम! आज तुम्हारा अवसर है। हे नकुल और सहदेव! मैं तुमसे कहता हूँ कि आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६४) तब श्रीकृष्ण दशोंदिशाओं तथा वसुदेव को सुनाकर ललकार कर कहने लगे। हे बलिभद्र! तुम्हारा अवसर है, आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६५) भीमसेन क्रोधित होकर घोड़े पर चढ़ा तथा हाथ में गदा लेकर रण में भिड़ गया। वे हाथी के समान प्रहार करने लगे जिससे उनके सामने क्षत्रिय भागने लगे और कोई बचा नहीं।

(४६६) तब अर्जुन क्रोधित हुआ और धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। वह चतुरंगिनी सेना के साथ ललकार कर भिड़ गया। कोई भी अर्जुन को रण से नहीं हटा सका।

(४६७) सहदेव ने हाथ में तलवार ली और नकुल भाला लेकर प्रहार करने लगा। हलधर से कौन लड़ सकता था। वे अपने हलायुध को लेकर प्रहार करने लगे।

(४६८) सभी यादव एवं योद्धा रणभूमि में साहस के साथ भिड़ गये। वसुदेव चारों ओर लड़ने लगे जिससे बहुत से सुभट लड़कर रण में गिर पड़े।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या-बल से सेना को धराशायी करना

(४६९) तब प्रद्युम्न ने मन में बड़ा क्रोध किया और मायामयी युद्ध करने लगा। सारे सुभट रण में विद्या से मूर्छित होकर गिर पड़े जिसे विमानों में चढ़े हुये देवों ने देखा।

(५००) स्थान स्थान पर रथ और घुड़सवार गिर पड़े। रत्नों से परिवेष्ठित छत्र टूट गये। स्थान स्थान पर अगणित हाथी पड़े हुये थे जो लड़ाई में मदोन्मत्त होकर आये थे।

(५०१) जब सभी सेना युद्ध करती हुई पड़ गयी तब श्रीकृष्ण खिन्न चित्त हो गये। वे हाहाकार करने लगे तथा सोचने लगे कि यह कौन बलवान वीर है।

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

(५०२) देखते देखते सभी यादव वीर गण गिर पड़े तथा साथ २ सभी सेनायें गिर पड़ी। जिनसे देवता लोग कांपते थे तथा जिनके चलने से पृथ्वी थर २ कांपती थी। जिन वीरों को आज तक कोई नहीं जीत सका था वे सभी क्षत्रिय आज हारे हुये पड़े थे यह बड़े आश्चर्य की बात है। यह यादव कुल को नाश करने के लिये मानों काल रूप होकर ही अवतरित हुआ है।

(५०३) श्रीकृष्ण चारों ओर फिर फिर करके सेना को देखने लगे। चारों ओर क्षत्रियों के पड़े रहने के कारण कोई स्थान नहीं दिखायी देता था। केवल मोती और रत्नों की माला से जड़े हुये छत्र रण में पड़े हुये दिखलाई दिये।

(५०४) अगणित हाथी, घोड़े और रथ पड़े हुये थे। मदोन्मत्त हाथी स्थान स्थान पर पड़े हुये थे। जगह जगह पर निरन्तर खून की धारा बह रही थी और बेताल स्थान २ पर किलकारी मार रहे थे।

(५०५) गृद्धिणी और सियार पुकार रहे थे मानों यमराज ही उनको यह कह रहा था कि शीघ्र चलो रसोई पड़ी हुई है, आकर ऐसा जीमलो जिससे पूर्ण तृप्त हो जाओ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

(५०६) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर रथ पर चढ़े तो ऐसा लगा मानो सुमेरु पर्वत कांपने लगा हो। जब वे संग्राम के लिये चले तो सकल महीतल कांपने लगा एवं शेषनाग भी हिल गया।

युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शकुन होना

(५०७) जब आगे रथ को उनने युद्ध में आगे बढ़ाया तब उनका दाहिना नेत्र तथा दाहिना अंग फड़कने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि हे सारथी सुनो अब शुभ क्या करेगा ?

(५०८) क्योंकि रण में सभी सेना जीत ली गयी है और रुक्मिणी को भी हरण कर लिया गया है। तो भी क्रोध नहीं आ रहा है तो इसका क्या कारण है इस प्रकार रण में धैर्य रखने वाले श्रीकृष्ण ने कहा।

(५०६) उस समय वह सारथी बोला यह आश्चर्य है कि यह कौन है ? तुम्हारी ललकार से यदि यह सुभट भाग जाये तो तुम्हारे हाथ रुक्मिणी आ सकती है।

(५१०) उससे वीर शिरोमणि केशव बोले हे क्षत्रिय ! मेरे वचन सुनो। तुमने सभी मदोन्मत्त सेना का संहार कर दिया और अब ! मेरी स्त्री रुक्मिणी को भी ले जा रहे हो।

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

(५११) तुम कोई पुण्यवान क्षत्रिय हो। तुम्हारे ऊपर मेरा क्रोध उत्पन्न नहीं हो रहा है। मैं तुम्हें जीवन दान देता हूँ लेकिन मुझे रुक्मिणी वापिस कर दो.

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का उपहास करना

(५१२) तब प्रद्युम्न हँस कर बोला कि रण में ऐसी बात कौन कहता है तुम्हारे देखते देखते मैंने रुक्मिणी को हरण किया और तुम्हारे देखते देखते ही सारी सेना गिर गयी।

(५१३) जिस के द्वारा तुम रण में जीत लिये गये हो अब क्यों उसको अपना साथी बना रहे हो ? हे श्रीकृष्ण तुम्हें लज्जा भी नहीं आ रही है कि अब कैसे रुक्मिणी मां.. रहे हो।

(५१४) मैंने तो सुना था कि युद्ध में आगे रहने वाले हो लेकिन अब मैंने तुम्हारा सब पुरुषार्थ देख लिया है। तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता। तुम्हारी सारी सेना पड़ी हुई है और तुमने हृदय से हार मान ली है।

(५१५) फिर प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि तुम पृथ्वी पर पड़े हुए अपने कुटुम्ब को देख कर भी सहन कर रहे हो। मैंने तुम्हारी आज मनुष्यता (पुरुषार्थ) जांचली है तुमको रुक्मिणि से कोई काम नहीं है अर्थात् तुम रुक्मिणि के योग्य नहीं हो।

(५१६) तुमने परिग्रह की आशा छोड़ दी है तो रुक्मिणी को भी छोड़ दो। प्रद्युम्न कहता है कि अपना जीव बचाकर चले जाओ।

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

(५१७) यदुराज मन में पछताने लगे कि मैंने तो इससे सत्यभाव से कहा था लेकिन यह मुझ से बढ़ २ कर बातें कर रहा है अब इसे मारता हूं यह कहीं भाग न जावे क्रोध उत्पन्न हुआ और चित्त में सावधान हुये तथा सारंग पाणि ने धनुष को चढा लिया।

(५१८) वे सोचने लगे कि अर्द्ध चन्द्राकार नामक बाण से मैं इसे मारूंगा और अब इसका पराक्रम देखूंगा। जब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को धनुष चढ़ाते हुये देखा तो उसे भी क्रोध आ गया।

(५१९) प्रद्युम्न ने तब उससे कहा कि हे कृष्ण तुम्हारा धनुष तो छिन गया है। जब श्रीकृष्ण का धनुष टूट गया तो उन्होंने दूसरा धनुष चढाया।

(५२०) फिर प्रद्युम्न ने बाण छोड़ा जिससे श्रीकृष्ण के धनुष की प्रत्यंचा टूट गयी। तब श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर तीसरे धनुष को अपने हाथ में लिया।

(५२१) श्रीकृष्ण जब जब प्रद्युम्न पर वार करने के लिए बाण चढ़ाते तब तब बाण टूट कर गिर जाता। विष्णु ने जब तीसरा धनुष लाधा लेकिन क्षण भर में ही प्रद्युम्न ने उसे भी तोड़ डाला।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

(५२२) प्रद्युम्न ने हंस हंस करके श्रीकृष्ण से बात कही कि आपके समान कोई वीर क्षत्रिय नहीं है? आपने यह पराक्रम किससे सीखा? आपका गुरु कौन था यह मुझे भी बताइये।

(५२३) तुम्हारे धनुष बाण छीन लिये गये तथा तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सके। तुम्हारा पौरुष मैंने आज देख लिया है क्या इसी पराक्रम से राज्य सुख भोग रहे थे?

(५२४) फिर प्रद्युम्न उनसे कहने लगा कि तुमने जरासिंध तथा कंस को कैसे मारा? यह सुनकर श्रीकृष्ण बहुत खिन्न हो गये तथा दूसरा मायामयी रथ संगाकर उस पर बैठ गये।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

(५२५) रथ पर चढकर यदुराज ने क्रोधित होकर अपने हाथ में धनुष ले लिया। प्रज्वलित अग्निबाण को फैंका जिससे चारों दिशाओं में तेज ज्वाला पैदा हो गई।

(५२६) प्रद्युम्न की सेना भागने लगी। वह अग्नि बाण से निकलने वाली ज्वाला को सहन नहीं कर सकी। घोड़े हाथी रथ आदि जलने लगे और इस प्रकार उसकी सेना के पैर उखड़ गये।

(५२७) प्रद्युम्न को क्रोध आया उसकी रण की ललकार को कौन सह सकता है। उसने पुष्प माला नामक धनुष हाथ में ले लिया और उस पर मेघबाण को चढ़ाया।

(५२८) घन घोर बादल गर्जने लगे और पृथ्वी को जल से भरने लगे जब जल ने अग्नि को बुझा दिया तब इस जल से श्रीकृष्ण की सेना बहने लगी।

(५२६) जो क्षत्रिय श्रेष्ठ रथ पर सवार थे वे जल के प्रवाह में बहने लगे। सारे हाथी घोड़े रथ वगैरह बह गये तथा बहुत से क्षत्रिय राजा भी बह गये।

(५३०) तब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को कहा कि यह अच्छी चाल चली गयी है? नारायण के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह मेह कैसे बरस गया?

(५३१) यह जानकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ और मारुत (वायु) बाण हाथ में लिया। जब बाण तेजी से निकल कर गया तो मेघों का समूह समाप्त होने लगा।

(५३२) मायामयी सेना भी कांप गयी और छत्र उड़ उड़ कर जमीन पर गिरने लगे। चतुरंगिणी सेना भागने लगी तथा हाथी, घोड़े एवं रथों को कोई संभाल नहीं सके।

(५३३) तब प्रद्युम्न मन में क्रोधित हुआ तथा पर्वत बाण को हाथ में लिया। बाण को धनुष पर चढाया जिससे पर्वत ने आड़े आकर हवा को रोक दिया।

(५३४) प्रद्युम्न का पौरुष देखकर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुये। वे उसी क्षण वज्र प्रहार करने लगे जिससे पर्वत के टुकड़े २ होकर गिर गये।

(५३५) प्रद्युम्न ने दैत्य बाण हाथ में लिया और नारायण को यमलोक भेजने का विचार किया। तब श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तक वे इसका चरित्र नहीं जान सके।

(५३६) इस प्रकार बड़ा भारी युद्ध होता रहा जिसमें कोई किसी को नहीं जीत सका। दोनों ही बड़े बलवान योद्धा हैं जिनके प्रहार से ब्रह्मांड भी फटने लगा।

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

(५३७) तब क्रोधित होकर श्रीकृष्ण मन में कहने लगे कि मेरी ललकार को रण में कौन सह सकता है ? मेरे सामने कौन रण क्षेत्र में खड़ा रह सका है ? संभव है कुलदेवी इसकी सहायता कर रही है।

(५३८) मैंने युद्ध में कंस को पछाड़ा और जरासिंध को रण में ही पकड़ कर मार डाला। मैंने सुर असुरों के साथ युद्ध किया है। जिस शत्रु ने गर्व किया वही मेरे सम्मुख खेत रहा।

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

(५३९) तब उसने धनुष को छोड़कर हाथ में चन्द्रहंस ले लिया। वह खड्ग बिजली के समान चमक रहा था मानों यमराज ही अपनी जीभ को फैला रहा हो।

(५४०) जब हाथ में खड्ग लिया तो ऐसा लगने लगा मानों श्रीकृष्ण ने चमकते हुए चन्द्र रत्न को ही हाथ में पकड़ा हो। जब वे रथ से उतर कर चलने लगे तो तीनों लोक भयभीत हो गये।

(५४१) इन्द्र, चन्द्रमा तथा शेषनाग में खलबली मच गयी तथा ऐसा लगने लगा मानों सुमेरु पर्वत ही काँप रहा हो। देवांगनायें मन में कहने लगी कि देखें अब इसे कैसे मारता है ?

(५४२) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर दौड़े तो रुक्मिणी ने मन में सोचा कि दोनों की हार से मेरा मरण है। श्रीकृष्ण के युद्ध करने से प्रद्युम्न गिर जायगा।

(४४३) रुक्मिणी ने कहा नारद ! सुनो मैं सत्यभाव से कहती हूँ कि अब तो मृत्यु का अवसर आ गया है। जब तक दोनों सुभट ललकार करके न भिड़ जावे हे नारद ? शीघ्र ही जाकर रण को रोक दो।

रण भूमि में नारद का आगमन

(४४४) रुक्मिणी के बचनों को मन में धारण करके वह ऋषि विमान से उतरा। नारद वहीं पर जाकर पहुँचा जहां प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के बीच लड़ाई हो रही थी।

(४४५) विष्णु और प्रद्युम्न का रथ खड़ा दिखाई दिया। प्रद्युम्न वार करना ही चाहता था कि नारद शीघ्र ही वहां पहुँचे और बाँह पकड़ कर कुमार को रोक दिया।

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

(४४६) तब हँसकर नारद कहने लगे हे कृष्ण ! मेरे बचन सुनिये। यह प्रद्युम्न तुम्हारा ही पुत्र है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है।

(४४७) छठी रात्रि को यह चुरा लिया गया था तथा यह कालसंवर के घर बढ़ा है। इसने सिंहरथ को जीता है। हे कृष्ण ! यह बड़ा पुण्यवान् है।

(४४८) इसको सोलह लाभों का संयोग हुआ है तथा कनकमाला से इसका विगाड़ हो गया है। इसने कालसंवर को भी उसी स्थान पर जीत लिया तथा पन्द्रह वर्ष समाप्त होने के पश्चात तुमसे मिला है।

(४४९) यह प्रद्युम्न बड़ा भारी वीर है तथा रण संग्राम में धैर्यवान एवं साहसी है। इसके पौरुष का कौन अधिक वर्णन कर सकता है ? ऐसा यह रुक्मिणी का पुत्र है।

(४५०) इसी प्रकार प्रद्युम्न के पास जाकर मुनि ने समझा कर बात कही। यह तुम्हारे पिता हैं जिनने तुम्हारा खूब पौरुष आज देख लिया है।

प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पांव पड़ना

(४५१) तब प्रद्युम्न उसी स्थान पर गया और श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर गया। तब नारायण ने हृदय में खूब प्रसन्न होकर, प्रद्युम्न को उठाकर अपनी गोद में ले लिया।

(५५२) उस रुक्मिणी को धन्य है जिसने इसे धारण किया तथा उस सुरांगना (विद्याधरी) को भी धन्य है जिसके यहां यह अवतरित हुआ तथा उस स्थान पर इसने वृद्धि प्राप्त की। आज के दिन को भी धन्य है जब मिलाप हुआ है।

(५५३) धनुष और बाण को उन्होंने उसी स्थान पर डाल दिये तथा चूमकर कुमार को गोदी में उठा लिया। जिसके घर पर ऐसा सुपुत्र हो उसकी सब कोई प्रशंसा करता है।

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

(५५४) तब नारद ने इस प्रकार कहा कि मन को भाने वाले ऐसे नगर की ओर चलना चाहिये। प्रद्युम्न के नगर प्रवेश के अवसर पर नगरी में खूब उत्सव करो।

(५५५) श्रीकृष्ण के मन में तो विषाद हो रहा था कि सभी सेना युद्ध में पड़ी हुई है। सभी यादव एवं कुटुम्बी रण में पड़े हुये हैं। तब क्या नगर प्रवेश मुझे शोभा देगा?

(५५६) नारद ने तब प्रद्युम्न से कहा कि तुम अपनी मोहिनी को वापिस उठा लो जिससे युद्ध में अति कुशल सभी योद्धा एवं सुभट उठ खड़े हो।

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खड़ा होना

(५५७) तब प्रद्युम्न ने मोहिनी विद्या को छोड़ा जिसने जाकर सब अचेतना दूर कर दी। सभी सेना उठ खड़ी हुई तथा ऐसा आभास होने लगा मानों समुद्र ही उमड़ रहा हो।

(५५८) वीर एवं श्रेष्ठ पाण्डव, दशों दिशाओं को वश में करने वाला हलधर, कोटि यादव एवं सभी प्रचंड क्षत्रिय गण उठ खड़े हुए।

(५५९) हाथी, घोड़े, रथवाले तथा पदाति आदि सभी उठ गये मानों विमान चल पड़े हों? इस प्रकार पृथ्वी पर जो सारे क्षत्रिय गण थे वे सभी खड़े हो गये। सधारु कवि कहता है कि ऐसा लगता था मानों सभी सो कर उठें हों।

प्रद्युम्न के आगमन पर आनंदोत्सव का प्रारम्भ

(५६०) प्रद्युम्नकुमार को जब देखा तो श्रीकृष्ण पुलकित हो उठे। सीने से लगाकर उसके मस्तक को चूम लिया जिस पर चोट के निशान हो रहे थे। प्रद्युम्न के शरीर पर जो निशान हो गये थे वे भी मन को अच्छे लगने लगे। उनका जन्म आज सफल हुआ है जबकि प्रद्युम्न घर आया है। सभी कहने लगे कि आज परिजनों का देव मानों प्रसन्न हुआ है। श्रीकृष्ण मन में प्रफुल्लित हो रहे हैं जब से प्रद्युम्न उनके नयनों में समा रहा है।

(५६१) भेरी और तुरही खूब बज रही है तथा आनन्द के शब्द हो रहे हैं। जैसी रुक्मिणी है वैसा ही आज उसको पुत्र मिला है। सकल परिजन एवं कुल का आभूषण स्वरुप पुत्र उसको मिला है। बड़ा योद्धा एवं वीर है। सज्जनों के नेत्रों को आनन्द दायक है। सकल जन समूह नगर के सम्मुख चलने लगे जिससे बहुत शोर हुआ तथा तुरही एवं भेरी बजने लगी जिससे ऐसा मालूम होने लगा कि मानों बादल गर्ज रहे हैं।

(५६२) मोतियों का चौक पूरा गया तथा सिंहासन लाकर रखा गया जिस पर प्रद्युम्न को बैठाया गया। इस घर को आज पुन्यवाला समझो। उस घर को भाग्यशाली समझो जहां प्रद्युम्न बैठा हुआ है। मोती और माणिक से भरे हुये थालों से आरती उतारी गई। युवराज बनाने के लिये तिलक किया गया जो सभी परिजनों को अच्छा लगा। जहां मोतियों का चौक पूरा हुआ था तथा लाया हुआ सिंहासन रखा हुआ था।

(५६३) घर घर तोरण एवं मोतिओं की बंदनवार बँधी हुई थी। घर घर पर गुड़ियां उछाली जा रही थी तथा मंगलाचार हो रहे थे। नवयुवतियां पुन्य (मंगल) कलश लेकर प्रद्युम्न के घर आयी। अगर एवं चंदन से सुशोभित कामिनियां गीत गा रही थी। घर घर मोतियों के वंदनवार एवं तोरण थे।

(५६४) सकल सेना घर जाने के लिये उठी तथा छप्पनकोटि यादव घर चले। जिस द्वारिका को सजाया गया था उसमें क्षोभ हीन होकर चले।

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

(५६५) प्रद्युम्न नगर मध्य पहुँचा तो सूर्य की किरणें भी छिप गयीं। गृहों की छतों पर चढ़ कर सुन्दर स्त्रियों ने प्रद्युम्न को देखने की इच्छा की।

रुक्मिणी को धन्य है जिसने ऐसा पुत्र धारण किया तथा जो नारायण के घर पर अवतरित हुआ। जिसके आगमन पर देव एवं मनुष्य जय जय कार कर रहे थे तथा मनोहर शब्द हो रहे थे। घर घर पर तोरण द्वार बँधे तथा छप्पनकोटि यादवों ने खूब उत्सव किया।

(५६६) नगर में इतने अधिक उत्सव किये गये कि सारे जगत ने जान लिया। शंख बजने लगे तथा घरों में नृत्य होने एवं मंगल शब्द सकने लगे!

(५६७) जब प्रद्युम्न घर के लोगों के पास गया तो नगर के प्रत्येक घर में बधावा गाये जाने लगे। गुडियां उछाली गयीं तथा कामिनियों ने घर घर मंगलाचार गीत गाये।

(५६८) ब्राह्मणों ने चतुर्वेदों का उच्चारण किया तथा श्रेष्ठ कामिनियों ने मंगलाचार किये। पुन्य (मंगल) कलशों को सजाकर सुन्दर नारियां अगवानी को चलीं।

(५६९) नगर में बहुत उत्सव किया गया जब से प्रद्युम्न नगर में दिखाई दिया। सिंहासन पर बैठा कर सभी पुरजनों ने उसके तिलक किया।

(५७०) दूध, दही एवं अक्षत माथे पर लगाया गया। मोती माणिक के थाल भर कर आरती उतारी गई तथा आशीर्वाद देकर सुन्दर स्त्रियां वहां से चलीं।

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

(५७१) इतने में ही मेघकूट से विद्याधरों का राजा यमसंवर पुत्रों एवं कनकमाला सहित द्वारिका नगरी में आ पहुँचा।

(५७२) वह विद्याधर पवन के वेग की तरह आया जिसकी सेना से (उड़ती हुई धूल के कारण) कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। वह अपने साथ रति नाम की पुत्री को लेकर द्वारिका पुरी में आया।

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

(५७३) यमसंवर से श्रीकृष्ण ने भेंट की तब वे भक्ति पूर्वक सत्यभाव से बोले कि तुमने बालक प्रद्युम्न का पालन किया इसलिये तुम्हारे समान अन्य कौन स्वजन है?

(५७४) तब रुक्मिणी उसी समय कनकमाला के पैर लगकर बोली कि तुम्हारे घर से मैं कैसे ऊऋण होऊंगी क्योंकि तुमने मुझे पुत्र की भिक्षा दी है ।

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

(५७५) उनके आगमन पर बहुत से उत्सव किये गये तथा प्रद्युम्न-कुमार का विवाह निश्चित हो गया। ज्योतिषी को बुलाकर लग्न निश्चित किया तब मन में श्रीकृष्ण बड़े सन्तुष्ट हुये ।

(५७६) हरे बांसों का एक विशाल मंडप रचा गया तथा कितने ही प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। लम्बे चौड़े वस्त्र तनाये गये तथा स्वर्ण कलश सिंह द्वारों पर रखे गये ।

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

(५७७) सारे सामान की तैयारी करके श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया। जितने भी मांडलीक राजा थे सभी द्वारिका नगरी में आये।

(५७८) अंगदेश, बंग (बंगाल), कलिंग देश के तथा द्वीप समुद्र के जितने राजा थे वे सभी विवाह में शामिल हुये। लाड देश के चोल प्रदेश के, कान्यकुब्ज प्रदेश के, गाजणवइ (गजनी ?) मालवा और काश्मीर देश के राजा महाराजा आये।

(५७९) गुर्जर देश के नरेश अत्यधिक सुशोभित हुये तथा सांभर के वेलावल अच्छे थे। विपाडली कान्यकुब्ज के अच्छे थे। पृथ्वी के अन्य सभी राजा नमस्कार करते हुये देखे गये।

(५८०) शंखों के मधुर शब्द होने लगे तथा स्थान स्थान पर नगाड़े बजने लगे। भेरी और तुरही निरन्तर बजने लगी तथा माधुरी वीणा एवं ताल के शब्द होने लगे।

(५८१) विद्वान् ब्राह्मण चारों वेदों का उच्चारण करने लगे तथा कामिनियां घर २ मंगलाचार गीत गाने लगी। नगरोत्सव के कारण कल कल शब्द होने लगे जब प्रद्युम्न विवाह करने के लिये चले।

(५८२) रत्नों से जड़ा हुआ छत्र सिर पर रखा गया तथा स्वर्णदंड वाला चँवर शिर पर ढुरने लगा। सोने का मुकुट शिर पर ऐसा चमक रहा था मानो बाल-सूर्य ही किरणें फैंक रहा हो ?

(५८३) तब रुक्मिणी ने ईर्ष्या भाव से कहा कि सत्यभामा के केश लाओ। तीनों लोक भी यदि मुझे मना करें तो भी मैं उसके केश उतरवाऊँगी।

(५८४) केश उतार कर उन्हें पांव से मलूंगी तब प्रद्युम्न विवाह करने जावेगा। लेकिन इतने में ही सब परिवार के लोगों ने मिल करके दोनों में मेल करा दिया।

(५८५) सभी कुटुम्बी जनों के मन में उत्साह हुआ कि प्रद्युम्नकुमार का विवाह हो रहा है। भांवर देकर हथलेवा किया और इस प्रकार कुमार का पाणिग्रहण हुआ।

(५८६) विवाह होने के पश्चात् लोग घर चले गये तथा राज्य करने लगे और अनेक प्रकार के सुख भोगने लगे। सत्यभामा को व्याकुल देख करके सभी सौतें उसका परिहास करती थी।

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

(५८७) तब सत्यभामा ने सलाह करके ब्राह्मण को शीघ्रता से सन्देश लेकर भेजा। उस स्थान पर जहां रत्नसंचय नामक नगर था तथा रत्नचूल नामक राजा रहता था।

(५८८) ब्राह्मण ने शीघ्रता से वहां जा कर विनय पूर्वक कहा कि सत्यभामा ने मुझे यहां भेजा है। रविकीर्त्ति से उन्हें अत्यधिक स्नेह है इसलिये उसी लड़की को भानुकुमार को दे देवें।

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

(५८९) सभी राजा और विद्याधर मिल करके कल कल शब्द करते हुये द्वारिका को चले। नगर में बहुत उत्सव किये गये जैसे ही भानुकुमार का विवाह होने लगा।

(५६०) (लड़की वाले का) सारा परिवार मिलकर तथा विद्याधर व राजा लोग सब विवाह करने को चले। वे सब द्वारिका नगरी पहुँचे जहां मंडप बना हुआ था।

(५६१) घर घर पर तोरण लगाये गये तथा सिंह द्वार पर स्वर्ण–कलश स्थापित किये गये। सब कुटुम्ब ने मिलकर उत्सव किया और भानुकुमार का इस प्रकार विवाह हो गया।

(५६२) इसके बाद वे राज्य करने लगे तथा विविध प्रकार के भोग विलास करने लगे। प्रद्युम्न को सब राज्य के भोग प्राप्त होने लगे। उसके समान पृथ्वी पर दूसरा अन्य कोई राजा नहीं दिखता था।

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवलज्ञान की उत्पत्ति

(५६३) अब दूसरी कथा चलती है। पूर्व विदेह में शंभुकुमार (अच्युत स्वर्ग का देव) गया जहां पुंडरीक नगरी थी तथा जहां क्षेमंधर मुनि निवास करते थे।

(५६४) जो नियम, धर्म और संयम में प्रधान थे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। अच्युत स्वर्ग में जो देव रहता था वह मुनीश्वर की पूजा करने के लिये आया।

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

(५६५) उसने नमस्कार किया तथा अपने पूर्व भव की बात पूछी। हे गुणवान् मुनि ! पूर्व जन्म का जो मेरा सहोदर था वह किस स्थान पर पैदा हुआ ?

(५६६) संशय हरने वाले उन (केवलज्ञानी) ने सभा में कहा कि पृथ्वी पर पांचवां भरत क्षेत्र उत्तम स्थान है। उसमें सोरठ देश में द्वारिकावती नगरी है। भरत क्षेत्र में इसके समान दूसरी नगरी नहीं दिखती है।

(५६७) उस नगरी का स्वामी महिम्न श्रीकृष्ण है जो सपूर्ण नियम धर्म को पालन करने वाला है। उसकी भार्या बड़ी गुणवती है और उसका नाम रुक्मिणी है।

(५९८) उसके घर पर क्षत्रिय मदन (प्रद्युम्न) पैदा हुआ। उस पुण्यवान् को सभी कोई जानते हैं। सुन्दरता में उससे बढ़ कर कोई नहीं है और वह पृथ्वी पर राज्य करता है।

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

(५९९) केवली के वचन सुनकर देव वहां गया जहां सभा में नारायण बैठे थे। देवता ने मणि रत्न जटित जो हार था उसे नारायण को देकर कहा।

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

(६००) फिर वह रविदेव कहने लगा कि हे महमहण ! (महामहिम्न) मेरे वचन सुनिये। जिसको तुम अनुपम हार भेंट दोगे उसी की कुख से मैं अवतार लूंगा।

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

(६०१) तब यादवराय मन में आश्चर्य करने लगे तथा मन को भाने वाली मन में चिन्तना करने लगे। चन्द्रकान्त मणियों से चमकने वाला यह हार सत्यभामा को दूंगा।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को सूचित करना

(६०२) तब प्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ और वह पवन वेग की तरह रुक्मिणी के पास गया। माता से कहने लगा कि मेरी बात सुनिये मैं तुम्हें एक अनुपम बात बताता हूँ।

(६०३) जो मेरा पूर्व भव में सहोदर था वह मुझसे बहुत स्नेह करता था। अब वह स्वर्ग में देव हो गया है और वह रत्नजटित हार लाया है।

(६०४) अब उस हार को जो पहिरेगा उसके घर पर वह आकर पुत्र होगा। हे माता अब तू स्पष्ट कह कि यह हार तुझे प्राप्त करा दूं ?

(६०५) तब रुक्मिणी ने उससे कहा कि मेरे तो तुम अकेले ही सहस्र संतान के बराबर हो। बहुत से पुत्रों से मुझे कोई काम नहीं है। तुम अकेले ही पृथ्वी का राज्य करो।

जामवंती के गले में हार पहिनाना

(६०६) फिर विचार करके रुक्मिणी बोली कि मेरी बहिन जामवंती है। हे पुत्र ! तुम्हें विचार कर कहती हूँ कि उसे जाकर हार दिला दो।

जामवंती का श्रीकृष्ण के पास जाना

(६०७) तब ही प्रद्युम्न ने विचार कर कहा कि जामवंती को यहां बुला लाओ। जो कामसुंदरी पहिन लेगी वही सत्यभामा बन जावेगी।

(६०८) स्नान करके उसने कपड़े और गहने पहिने। उसके शरीर पर स्वर्ण कंकण सुशोभित हो रहा था। जामवंती वहां गयी जहां श्रीकृष्णजी बैठे थे।

(६०९) तब सत्यभामा आ गयी, यह जानकर केशव मन में प्रसन्न हुये। तब कृष्ण ने मन में कोई विचार नहीं किया और उसके वक्षस्थल पर हार डाल दिया।

(६१०) हार को पहिना कर उससे आलिंगन किया और उससे कहा कि तुम्हारे शंबुकुमार उत्पन्न होगा। जब उसने अपना वास्तविक रूप दिखलाया तो नारायण मन में चकित हुए।

(६११) तब महमहण ने इस प्रकार कहा कि मेरा मन विस्मित और अचंभित कर दिया। यदि यह चरित सत्यभामा ने जान लिया तो विकृत रूप करके मोह लेगी। वास्तव में जो विधाता को स्वीकार है उसे कौन मेट सकता है। श्रीकृष्ण कहने लगे कि पुण्यवान ही निष्कंटक राज्य करता है।

(६१२) जब जामवंती के पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम शंबुकुमार रखा गया। वह अनेक गुणों वाला था तथा चन्द्रमा की कांति को भी लज्जित करने वाला था।

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

(६१३) जिसकी सेवा सुर और नर करते थे ऐसा प्रथम स्वर्ग का देव आयु पूर्ण होने से चय कर सत्यभामा के घर पर उत्पन्न हुआ।

(६१४) जो वहां से चयकर अनेक लक्षणों वाला गुणों से पूर्ण अत्यधिक सुन्दर एवं शीलवान सत्यभामा के घर पुत्र हुआ उसका नाम सुभानु रखा गया।

(६१५) दोनों कुमार जिन्होंने एक ही दिन अवतार लिया था चन्द्रमा के समान वृद्धि को प्राप्त होते हुये एक ही स्थान पर पढ़ने लगे।

शंबुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

(६१६) एक दिन दोनों ने जुआ खेला तथा करोड़ सुवंद (मोहर) का दांव लगाया। उस दांव में शंबुकुमार जीता तथा सुभानु हार करके घर चला गया।

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

(६१७) तब सत्यभामा हँसकर मन में विचार करने लगी। उसने कहा कि इस मुर्गे से फिर खेल खेलो अर्थात् लड़ाओ और जो हार जावे वही दो करोड़ मोहर देवे।

(६१८) तब उसने मुर्गा छोड़ दिया और मुर्गे आपस में भिड़ गये। इस खेल में सुभानु का मुर्गा हार गया तब शंबुकुमार ने दो करोड़ मोहर जीत ली।

(६१६) इसके पश्चात् उसने बहुत से खेल किये। (सत्यभामा) दूसरों से भी काफी मंत्रणा करने के पश्चात् दूत को बुलाकर वहां भेजा जहां विद्याधर रहता था।

(६२०) दूत ने वहां जाने में जरा भी देर नहीं लगायी और जाकर विद्याधर को सारी बात बता दी। वहां दूत ने कहा कि जो इच्छा हो वही ले लो और अपनी पुत्री केवल सुभानुकुमार को ही देओ।

सुभानुकुमार का विवाह

(६२१) विद्याधर के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और अपनी कन्या को विवाह के लिये दे दिया। जब सुभानु का विवाह हुआ तो द्वारिका नगरी में सुन्दर शब्द होने लगे।

(६२२) जब सुभानु का विवाह हो गया तब रुक्मिणी के मन में विचार हुआ और मंत्रणा करके उसने दूत को बुलाया और रूपकुमार के पास भेजा।

रुक्मिणी के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

(६२३) वह दूत शीघ्र कुंडलपुर गया और रूपचन्द से कहा कि हे स्वामी ! मेरी बात सुनिये मुझे आपके पास रुक्मिणी ने भेजा है।

(६२४) शंभुकुमार तथा प्रद्युम्नकुमार के पौरुष को सब कोई जानते हैं। दोनों कुमारों को आप कन्याएं दे दीजिये जिससे आपस में स्नेह बढ़े।

(६२५) तब उस अवसर पर रूपचन्द ने कहा कि तुम रुक्मिणी को जाकर समझा दो कि जो यादव वंश में उत्पन्न होगा उसको कौन अपनी लड़की देगा ?

(६२६) उसने (रूपचंद) पुनः समझा कर बात कह दी कि तुम रुक्मिणी से जाकर इस प्रकार कहना कि संभल कर बात बोला करो, ऐसी बात बोलने से तुम्हारा हृदय क्यों नहीं दुखित हुआ।

(६२७) तूने हमारा सारा परिवार नष्ट करा दिया तथा तू शिशुपाल को मरा कर चली गई। आज फिर तू यह वचन कहती है कि मदनकुमार को बेटी दे दो।

(६२८) उसके वचनों को सुनकर दूत वहां से तत्काल चला और द्वारिका नगरी पहुँच गया। उससे जो कुछ बात कही थी वह उसने जाकर रुक्मिणी से कह दी।

(६२९) नारायण से ऐसा कहना कि हम तुम्हारे मध्य कैसे सुखी रह सकते हैं ? तुम्हारे कितने अवगुणों को कहें। तुमको छोड़ कर हम डूम को देना पसन्द करते हैं।

(६३०) यह वचन सुनकर वह व्यथित हो गयी और दोनों आंखों से आंसू बरसने लगे। इस तरह उसने मेरा मान भंग किया है और उसने मेरा हृदय दुखी कर बहुत बुरा किया है।

(६३१) रुक्मिणी को व्यथित बदन देखकर प्रद्युम्न ने अपनी माता से कहा कि तू किसकी बोली से दुखी है यह मुझे शीघ्र कह दे।

(६३२) हे पुत्र ! मैंने मंत्रणा करके दूत को कुंडलपुर भेजा था। वहां दूत से उसने जो दुष्ट वचन कहे हैं, हे पुत्र ! उन्हीं से मेरा हृदय बिंध गया।

(६३३) मैंने तो यह जाना था कि वह मेरा भाई है किन्तु उसने नीच बनकर ऐसी बात कही है। वह मुझे विषय शामिनी मानता है। भला ऐसी बात कौन कहता है ?

(६३४) रुक्मिणी के वचन सुनकर प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ कि उसने माता से नीच वचन कहे। अब रूपचन्द को रण में पछाड़ कर उसकी प्राणों से प्यारी पुत्री को छलकर परणूंगा।

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

(६३५) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहुरुपिणी विद्या को स्मरण किया। शंबुकुमार और प्रद्युम्न पवन वेग की तरह कुंडलपुर गये।

दोनों का डूम का भेष धारण कर लेना

(६३६) नगरी के द्वार दिखलाई देने पर दोनों ने डूम का रूप धारण कर लिया। मदन ने तो हाथ में अलावणि ले ली तथा शंबुकुमार ने मंजीरा ले लिया।

(६३७) फिर वे दोनों वीर चौराहे की ओर मुड़े तथा सिंहद्वार पर जाकर खड़े हो गये। वहां राजा अपने बहुत से परिवार के साथ दिखलाई दिया तब मदन ने अपनी माया फैलाई।

(६३८) फिर मदन ने बहुत से गीत एवं कवित्त जो यादवों के सम्बन्ध के थे उत्तेजित हो हो कर गाये। गीतों को सब ने ध्यान से सुना लेकिन श्रीकृष्ण की प्रशंसा के गीत उन्हें अच्छे नहीं लगे।

(६३९) जब उसने यादववंश का नाम लिया तो रूपचंद का मन दुखित हुआ। रूपचंद ने पूछा कि मैं तुम्हारे गीतों का सार जानता हूँ पर तुम कहां से आये हो, यह बतलाओ !

रूपचंद को अपना परिचय बतलाना

(६४०) हमारे स्थान का नाम द्वारिका नगरी है और जहां यदुराज श्रीकृष्ण राज्य करते हैं। जिनके रुक्मिणी पटरानी है। हे राजन् ! जो तुम्हारी बहिन भी है।

(६४१) उस राणी ने जो तुम्हारे पास दूत भेजा था उसने तुम्हारी बहुत सराहना की थी। उसी ने वहां जाकर तुम्हारा उत्तर कहा। और उसी के कारण हम यहां आये हैं।

(६४२) अपने कहे हुए वचनों को प्रमाण मानो क्योंकि सत्यवक्ता के वचन प्रमाण होते हैं। हे भाग्यवान् हम से स्नेह (संबंध) करके अपनी दोनों कन्यायें दे दो।

रूपचंद का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

(६४३) यह सुनकर राजा क्रोधित होकर खड़ा हो गया। ऐसा लगने लगा मानों अग्नि में घी डाल दिया हो। उसका सम्पूर्ण अंग एवं मस्तक काँप गया तथा बोलते २ प्राण भी उड़ने लगे। ऐसे बोल तुमने किससे कहे हैं? उसने आदेश दिया कि इनको बाहर लेजा कर शूली पर चढ़ा दो। यदि यदुराज में ताकत है तो वह इनको आकर छुड़ा लेंगे।

(६४४) तब उन्होंने पकड़े जाने पर जोर २ से पुकार की कि हम डूम हैं डूम हैं। ये शब्द चारों ओर छा गये। उसके हाथ में अलावणि (अलगोजा) थी जिसके सुनने के लिये सारे बाजार एवं हाट भर गये थे।

(६४५) उसी समय कुमार रूपचन्द ने सब राजाओं को पुकारा तथा सब बातें बताई। वे हाथी घोड़ों को साथ लेकर एक ही क्षण में वहां आ पहुँचे।

(६४६) तब राजा रूपचंद वहां आये जहां प्रद्युम्न और शंबुकुमार थे। वे दोनों एक साथ अपने हाथ में एक तारा (सितार) अलावणि (अलगोजा) और वीणा लेकर गाने लगे।

(६४७) डूम को देखकर राजा के मन में शंका पैदा हुई कि वह नीच जाति पर किस प्रकार प्रहार कर सकता है। धनुष साध करके जब उसने बाण छोड़े तब दूसरों ने भी चौगुणे बाण छोड़े।

प्रद्युम्न और रूपचंद के मध्य युद्ध

(६४८) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा धनुष चढ़ा कर हाथ में ले लिया। उसने क्रोधित होकर अग्निबाण छोड़ा जिससे लड़ते हुये सभी क्षत्रिय भागने लगे।

(६४६) सेना भाग गयी तथा मामा के गले में पांव रख कर उसे बांध लिया। सब दल के भागने पर कन्या को अपने साथ ले लिया और द्वारिका नगरी आ पहुँचे।

(६५०) रूपचंद को लेकर महलों में पहुँचे जहां श्रीकृष्ण बैठे हुये थे। श्रीकृष्ण को रूपचंद ने आंखों से देखा और कहा हमें नारायण का (दर्शन) लाभ कराया गया है ?

रूपचंद को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

(६५१) तब मधुसूदन ने हंस कर कहा कि यह तुम्हारा भानजा है। इसमें बहुत पौरुष एवं विद्याबल है। इसने अपने पिता को भी रण में जीता है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंद को छोड़ देना

(६५२) तब प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने कृपा की और बंधे हुये रूपचंद को छोड़ दिया। प्रद्युम्न ने हंसकर उसे गोद में उठा लिया। फिर उसे रुक्मिणी के महलों में ले गया।

रूपचंद और रुक्मिणी का मिलन

(६५३) वहां जाकर उसने अपनी बहिन से भेंट की। रुक्मिणी ने बहुत प्रेम जताया। बहुत आदर के साथ जीमनवार दी गयी जिसमें अमृत का भोजन खिलाया।

(६५४) भाई, बहिन एवं भानजा अच्छी तरह से एक स्थान पर मिले। रुक्मिणी की बात सुन कर रूपचन्द को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने कन्या को विवाह के लिये दे दी।

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

(६५५) तब हरे बांस का मंडप तैयार किया गया तथा बहुत प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर दोनों कुमारों के साथ विवाह करने चले।

(६५६) बहुत भांति के शंख एवं भेरी बजी। मधुर वीणा एवं तूर बजा। भांवर डाल कर हथलेवा लिया गया तथा चारों का पाणिग्रहण संस्कार पूरा किया गया।

(६५७) नगरी में घर घर उत्सव किया गया और इस प्रकार दोनों कुमारों का विवाह हो गया। जो सज्जन लोग थे वे तो खूब प्रसन्न थे किन्तु अकेली सत्यभामा ऐसी थी जिसका मन जल रहा था।

(६५८) रूपचन्द को जाने की आज्ञा हुई और वह समधी नारायण के यहां से घर गया। वह कुंडलपुर में राज्य करने लगा। अब कथा का क्रम द्वारिका जाता है। उनका (प्रद्युम्न) मन उस घड़ी धर्म में लगा तथा जिन चैत्यालय की वंदना करने के लिये कैलाश पर्वत पर चले गये।

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वंदना करना

(६५९) तब प्रद्युम्नकुमार ने चिंतवन किया कि संसार समुद्र से तैरना बड़ा कठिन है। मन में धर्म को दृढ़ करना चाहिये तथा कैलाश पर्वत पर जो जिन मन्दिर हैं उनकी शुद्ध भाव से पूजा करनी चाहिये। भूत भविष्यत तथा वर्तमान तीर्थंकरों के चैत्यालयों को देखा और कहा कि जिनने जिनेन्द्र भगवान के ये चैत्यालय बनाये हैं वे भरत नरेश धन्य हैं।

(६६०) फिर प्रद्युम्न ने चैत्यालयों की वंदना की जिनकी ज्योति रत्नों के समान चमकती थी। अष्ट विधि पूजा एवं अभिषेक करके प्रद्युम्न द्वारिका वापिस चले गये।

(६६१) इसके पश्चात् दूसरी कथा का अध्याय प्रारम्भ होता है। कौरव और पाण्डवों में कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध हुआ। तब भगवान नेमिनाथ ने संयम धारण किया।

(६६२) फिर प्रद्युम्न द्वारिका जाकर विविध भोग विलासों को भोगने लगे। षटरस व्यंजन से युक्त अमृत के समान भोजन करने लगे।

(६६३) वहां सात मंजिल के सुन्दर श्वेत महल थे उनमें वे नित्य नये भोग विलास करते थे। वे महल अगर तथा चन्दन की सुगन्धि से युक्त थे तथा सुन्दर फूलों के रस से सुवासित थे।

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

(६६४) इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हुआ और फिर नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। तब उनके समवशरण में सुरेंद्र, मुनीन्द्र, एवं भवनवासी देव आदि आये।

(६६५) छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर, नारायण एवं हलधर के साथ चले जहां नेमिनाथ स्वामी समवशरण में विराजमान थे। वहीं श्रीकृष्ण तथा हलधर जा पहुँचे।

(६६६) देवताओं ने बहुत स्तुति की। फिर श्रीकृष्ण ने (निम्न प्रकार) स्तुति प्रारम्भ की। हे काम को जीतने वाले तुम्हारी जय हो! तुम्हारी सुर असुर सेवा करते हैं। हे देव तुम्हारी जय हो।)

(६६७) दुष्ट कर्मों को क्षय करने वाले हे देव! तुम्हारी जय हो! मेरे जन्म जन्म के शरण, हे जिनेन्द्र! तुम्हारी जय हो। तुम्हारे प्रसाद से मैं इस संसार समुद्र से तिर जाऊं तथा फिर वापिस न आऊं।

(६६८) इस प्रकार स्तुति करके, प्रसन्न मन हो मनुष्यों के कोठे में आकर बैठ गये। तब जिनेन्द्र के मुख से वाणी निकली जिसे देवों, मनुष्यों एवं सब जीवों ने धारण किया।

(६६९) धर्म और अधर्म के गहन सिद्धान्त को सुना तथा प्रद्युम्न ने भी आगम की बात सुनी। उसके पश्चात् गणधर देव से छप्पन कोटि यादवों की ऋद्धि के बारे में पूछा।

(६७०) हे स्वामिन् मुझे बताइये कि नारायण की मृत्यु किस प्रकार से होगी? द्वारिका नगरी कब तक निश्चल रहेगी? हे देव! यह मुझे आगम के अनुसार बतलाइये।

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

(६७१) इस प्रकार बात पूछ कर बलराम चुप हो गये। मन में विचार कर गणधर कहने लगे कि बारह वर्ष तक द्वारिका और रहेगी। इसके बाद छप्पन कोटि यादव समाप्त हो जावेंगे।

(६७२) द्वीपायन ऋषि से ज्वाला निकल कर द्वारिका नगरी में आग लग जावेगी। मदिरा से छप्पन कोटि यादव नष्ट हो जावेंगे। केवल श्रीकृष्ण और बलराम बचेंगे।

(६७३) मुनि के आगमन एवं श्रीकृष्ण की जरदकुमार के हाथ से मृत्यु को कौन रोक सकता है ? भानु, सुभानु, शंबुकुमार, प्रद्युम्नकुमार एवं आठ पट्टरानियां संयम धारण करेंगी।

(६७४) गणधर के पास बात सुनकर तथा द्वारिका का निश्चित विनाश जानकर द्वीपायन ऋषि तप करने के लिये चले गये तथा जरदकुमार भी वन में चला गया।

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

(६७५) दशों दिशाओं में बहुत से यादव इकट्ठे हो गये और संयम व्रत लेने के लिये भगवान नेमिनाथ के पास गये। प्रद्युम्नकुमार ने जिन दीक्षा ली तो नारायण चिंतित हुये।

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण श्रीकृष्ण का दुखित होना

(६७६) श्रीकृष्ण शोकाकुल होकर कहने लगे हे मेरे पुत्र ! हे मेरे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम्हारे में आज कौनसी बुद्धि उत्पन्न हुई है ? तुम द्वारिका लेओ और राज्य का सुख भोगो।

(६७७) तुम राज्य कार्य में धुरंधर हो, जेष्ठ पुत्र हो, तुम्हें बहुत विद्याबल प्राप्त है। तुम्हारे पौरुष को देव भी जानते हैं। हे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम अभी तप मत धारण करो।

(६७८) कालसंवर तुम्हारा साहस जानता है। तुमने मुझे रण में बहुत व्यथित किया। तुमने मेरी रुक्मिणी को हरा था तथा बहुत से सुभटों को पछाड़ दिया था।

(६७९) नारायण के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि राज्य कार्य एवं घर बार से क्या करना है, संसार तो स्वप्न के समान है।

(६८०) धन, पौरुष एवं अपार बल का क्या करना है। माता पिता अथवा कुटुम्ब किसके हैं। एक ही घड़ी में नष्ट हो जावेंगे। आयु के नष्ट हो जाने पर कौन रख सकता है ?

रुक्मिणी का विलाप करना

(६८१) नारायण को दुखित देख फिर रुक्मिणी वहां दौड़ी आई। वह करुण विलाप करके चिल्लाने लगी तथा कहने लगी कि हे पुत्र किस कारण संयम धारण कर रहे हो ?

(६८२) तू मेरे केवल एक ही पुत्र हुआ और तुझे भी छोटे ही धूमकेतु हर ले गया। हे पुत्र ! तू कनकमाला के घर पर बड़ा हुआ जिस कारण मैं तेरे बचपन का सुख भी नहीं देख सकी।

(६८३) फिर आनंद प्रदान करने वाले तुम आये और पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान तुमने कुल को प्रकाशित किया। तुमने सम्पूर्ण राज्य-भोग प्राप्त किये। अब इस भूमि पर कौन रहेगा ?

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

(६८४) माता के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि यह सुन्दर शरीर काल के रूठ जाने पर समाप्त हो जावेगा।

(६८५) इसलिये हे माता अब विषाद मत करो तथा माया, मोह और मान का परिहार करो। व्यर्थ शरीर को दुःख मत दो। कौन मेरी माता है और कौन तुम्हारा पुत्र है ?

(६८६) रहट की माल के समान यह जीव फिरता रहता है और कभी स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर अवतरित होता रहता है। पूर्व जन्म का जो संबंध होता है उसी के आधार पर यह जीव दुर्जन सज्जन होकर शरीर धारण करता रहता है।

(६८७) हमारा और तुम्हारा सम्बन्ध पूर्व जन्म में था। उसी को कर्म ने यहां भी मिला दिया है। इस प्रकार माता के मन को समझाया। फिर रुक्मिणी अपने घर पर चली गई।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

(६८८) माता रुक्मिणी को समझा कर फिर प्रद्युम्न नेमिनाथ के पास जाकर बैठ गये। उनने द्वेष क्रोध आदि को छोड़कर पंचमुष्टि केश लौंच किया।

(६८९) उन्होंने तेरह प्रकार के चारित्र को धारण किया तथा दश लक्षण धर्म का पालन किया। बाईस प्रकार के परीषह को उन्होंने सहन किया जिसके कारण बाह्य एवं अभ्यंतर शरीर क्षीण हो गया।

प्रद्युम्न को केवलज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

(६६०) घातिया कर्मों का नाश करने पर उन्हें तुरन्त केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। फिर अपने ज्ञान-नेत्र द्वारा लोक-अलोक की बात जानने लगे तथा उनका हृदय अलौकिक ज्ञान के प्रकाश से चमकने लगा।

(६६१) उसी समय इन्द्र, चन्द्र, विद्याधर, बलभद्र, धरणेन्द्र, नारायण, सज्जन लोग, एवं देवी और देवता आये।

(६६२) इन्द्र उत्कृष्ट वाणी से स्तुति करने लगा। हे मोह रूपी अन्धकार को दूर करने वाले! तुम्हारी जय हो। हे प्रद्युम्न! तुम्हारी जय हो, तुमने संसार जाल को तोड़ डाला है।

(६६३) इस प्रकार इन्द्र ने स्तुति कर धनपति से कहा कि एक बात सुनो। इन मूक केवली की विचित्र ऋद्धियां हैं अतः क्षण भर में ही गन्ध कुटी की रचना करो।

ग्रंथकार का परिचय

(६६४) हे प्रद्युम्न! तुमने निर्वाण प्राप्त किया जिसका कि मेरे जैसे तुच्छ-बुद्धि ने वर्णन किया है। मेरी अग्रवाल की जाति है जिसकी उत्पत्ति अगरोव नगर में हुई थी।

(६६५) गुणवती सुधनु माता के उर में अवतार लिया तथा सामहराज के घर पर उत्पन्न हुआ। एरछ नगर में बसकर यह चरित्र सुना तथा मैंने इस पुराण की रचना की।

(६६६) उस नगर में श्रावक लोग रहते हैं जो दश लक्षण धर्म का पालन करते हैं। दर्शन और ज्ञान के अतिरिक्त उनके दूसरा कोई काम नहीं है मन में जिनेश्वर देव का ध्यान करते हैं।

(६६७) इस चरित को जो कोई पढ़ेगा वह मनुष्य स्वर्ग में देव होगा। वह देव वहां से चय करके मुक्ति रूपी स्त्री को वरेगा।

(६६८) जो केवल मन से भी भाव पूर्वक सुनेंगे उनके भी अशुभ कर्म दूर हो जावेंगे। जो मनुष्य इसका वर्णन करेगा उस पर प्रद्युम्न देव प्रसन्न होंगे।

(६९९) जो मनुष्य इसकी प्रतिलिपि करेगा अथवा तैयार करवाकर अपने साथ रखेगा तथा महान् गुणों से परिपूर्ण. रचना को पढावेगा वह मनुष्य स्वर्ण भण्डार को प्राप्त करेगा।

(७००) यह चरित्र पुण्य का भण्डार है जो इसे पढ़ेगा वह महापुरुष होगा तथा उसको संपत्ति, पुत्र एवं यश प्राप्त होगा और प्रद्युम्न उसे तुरन्त फल देंगे।

(७०१) कवि कहता है कि मैं बुद्धि हीन हूँ और अक्षर तथा मात्रा के भेद को भी नहीं जानता हूँ। विद्वानों को मैं हाथ जोड़ कर नमस्कार करता हूँ कि वे मेरी (अक्षर मात्रा की) हीनाधिकता की त्रुटियों पर ध्यान न दें।

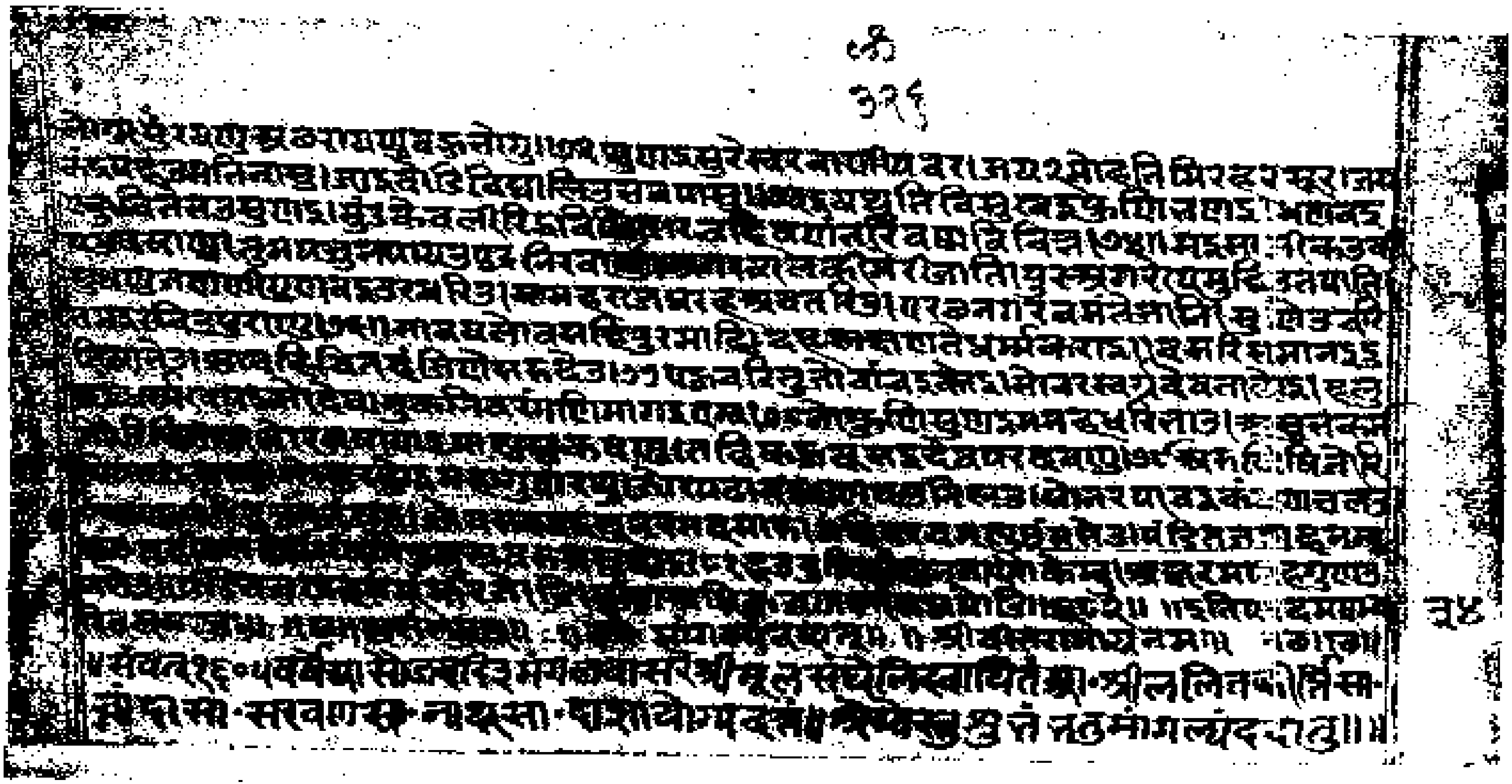

अन्तिम पत्र

(शास्त्र भण्डार श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्द जी जयपुर के व्यवस्थापकों के सौजन्य से प्राप्त)

शब्दानुक्रमणी

अ

अइसइ—१२, ४६, ४०५
अइसउ—४६, १६८
अइसो—४३६
अकाल—१४३, २८१
अकुलाणउ—५४
अकुलाणी—२४७
अकुलानी—२६४
अकुलाणे—४८७
अकुलाने—५४०
अंकुसा—२१३
अकेलउ—२८२
अकेलो—४६०
अखत—३६७
अखर—५०१
अखएहु—३९८
अखाडो—१८२
अखारउ—४५१
अखारि—३३१
अखासि—४५१
अगनिवाण—५२५
अगर—२३, ५६३, ६६३
अगरवाल—६६४
अगरोए—६६४
अंग ६८, ५७८, ६८६
अगलाह—५१७
अगहुडे—३०२
अग्निबाणु—६४८
अग्नि—४०१
अगिनि—२०८
अगिनी—१६२
अगिवाणी—६
अंगु—६६, १२२, ३११, ५०७
अंगुहडो—२००
अगूठा—६४
अगोडो—२०६
अघाइ—३४१, ३६१, ३६२
अघाणउ—३८४
अघागले—३०६
अचंभित—२५५
अचंतउ—१५१
अचंभउ—४२३
अचंभिउ—३४६
अचंभी—३६५
अचंभो—१६४, ३२७, ५३१
अचंभ्यो—४५२
अचल—२४५
अचुल—४३६
अचरिउ—५०२
अंचल—४३१
अछइ—४१६
अछराय—६६१
अछोहु—५६४
अजर—२३२
अजहु—३६१, ४१५, ६२७
अजितु—८
अजोहि—२६८, ४६६

अठबल—३
अठार—२७६
अट्ठारह २०
अणखुटइ—२६६
अणंगह—४२१
अणंगु—१६२, ३११, ३५०
अणंत—३४६
अणुसरइ—२४
अति—३६, ४२, १३४, १३६, २०१, २२७, ३३५, ४२८, ६१४
अतिगले—३०६
अतिबंत—२६१
अतिबल—२६०
अतिसरूप—४२८
अतीत—६५६
अतुल—२०२, ४५६ ४६१, ५०२
अतुर—५६१
अंत—२५३
अंतरिख—३२५
अंतरीख—४८२
अंतु—२, ४६
अथि—३१४
अथिरिण—२७३
अधिक—११, ३८६, ७०१
अधिकु—२५३
अनगानत—१४३
अनंत—१०, ३४६, ५००, ५०४, ६०६
अनंतु—६
अनंतु—५६१
अनागत—६५६
अनिवार—६२, १२१, २३६, ६११
अनूपम—६००, ६०२
अपमाण—४८३
अपय—३६८
अपवालु—७३
अप्रमाणु—१७५
अप्पहि—२०७
अपाण—४८२
अपार—१८, १६५, २३३, २३४, ३५७, ५५६, ६४४
अपाल—२३०, ५६१
अपूरब—१६२, २२४
अफासु—६०४
अफालिउ—७६
अभया—२५४
अभिनंदणु—८
अभेरउ—२७६
अंबमाइ—५
अमइ—२७०
अमृत—६५३, ६६२
अमर—२३२, २८१, ४६२
अमरवेउ—२१८
अमरदेव—२१६, २१७
अमिगिभ—५२६
अयसउ—५३६
अराण—३६२
अर—२११, २३६, ४२२, ५१०
अरजुन—२२४
अर्जुन—४५६, ४६८, ४७४, ४६३
अरठाइ—३५८
अर्थ—३०१
अर्थु—३७६
अर्द्ध—५१८
अरराह—३५६
अरहंत—२३१
अरि—५३८
अरिबल—१७५

अरियणबल २१
अरियणु—१७१
अरिराउ—१५
अरु—९, २०, ३४, ४१, ५१, ७१, ९०, ९६, ११३, १६२, १९२, २५१, २६०, २९५, ३४५, ३९७, ४१९, ४२०, ५०७, ५०८, ५१६, ५५९, ६७३, ६९९,
अरुजे—५०२
अरे—३०३
अला—१०३
अलावणि—४, ५८०, ६३६, ६४४, ६४६
अलिउ—२६५
अलिउलि—४२०
अलियउ—२६७
अलोकणि—२५५
अव—७६, १०७, १४१, १७८, १८६, २५२, २६४, २६५, २९७, ३०९, ३१०, ३११, ३२३, ४२९, ४६८, ४६९, ४७१, ४७३, ४८१, ५१४, ५१८, ५४१, ५४३, ५५१, ६०३, ६०४, ६८३
अवगी—६८५
अवगुण—६२९
अवटाइ—६२७
अवठालि—५५३
अवतरइ—६८६
अवतरणु—१९२
अवतरिउ—२३१, ५०२, ५५२, ५६५, ६१२, ६९५
अवतार—६१५
अवताइ—६०७
अवधारि—६७
अवर—३३२, ४१५, ४१८, ४४५, ५६१, ५६५, ६३८, ६४७, ६६४
अवरइ—३८१
अवरु—८, २२, २४९, २६७, ३९३, ४९३, ४९६, ६६१, ७००
अवलोइ—५४२
अवलइ—११०
अवसर—४३३
अवहि—५१३, ५६१
अवास—१८, ९९, १११, ३१४, ३९६, ५६५, ६६३
अविचार— २३३
अविचाल—२१७, ५९९
अविलेखियउ—५६५
अवेसि—१८८
असगुन—३५९
असंखि—४८५
असराल—२८१, ५८०
असरालु—६
असवारु—३३२
असवारिउ— ३३७
असिवर—१७९, ४७९, ४९२
असौणी—२३३
असीस—१० २९, ४१, ५७०
असुभ—६९८
असुर—२३१, ५३८, ६६६
असुह—२७७
असेस—६८, १६४, ५२९, ५७७, ६८३, ६८८
असेसु—३७, १५२, ५३४, ५५४, ५९७

अलेसहु—४६१
असोग—८६, १०२
अहु—७३
अहंङ—१४, ३७६, ४०४, ४७२
४४६. ४५६, ६३३, ६५१
अहुउ—३७८
अहुव—३६
अहंनहव—१४६
अहंकाव—२३०
अहार—४४३, ६५३
अहाव—३८४
अहि—१६६, २३०, ३०८
अहो—३६६
अहोवी—३०७

आ

आइ—२५, ६४, ६६, ७२, ७५,
१०७, ११३, ११५, १२२,
१३६, १६०, १६५, १६८,
२००, २०१, २०६, २१०,
२१६, २२०, २२४, २५१,
२६२, २८१, २६७, ३०२,
३४०, ३५६, ३५६. ३८८,
३६२, ४१६, ४१७, ४३७,
४६५, ४६७, ४६६, ४७३,
५०५, ५४८, ५७१, ६१८,
६२८, ६४३, ६४५, ६४६,
६५६; ६६४, ६८१
आइल—५६४
आइस—१६७, १७१, ४३३, ६५८
आइसी—३०४
आइसे—१४५
आउ - २०६
आए—३६८, ४२६, ५६५, ५७७
६५१
आकउ—१८४, २५६, ४२६
आकास—२७, २१४
आखित—५७०
आखउ—३३०, ३७८, ४५५, ४५६
आखट—२६६
आखक—१
आखहि—४४६
आगइ—१०७, १६६, १६६, ३८६,
४३६; ४५८
आगम—४, ६६६, ६७०
आगमण—२६, ४०८
आगमु—६७३
आगलउ—५१४, ६१२
आगलो—३६
आगय—२६६
आगासह—१६८
आगि—४७८, ५२८, ६७२
आंगुल—३२४
आ.गुली—३६३, ४२२
आगे—३८६, ५६८
आगै—५७७
आघाइ—४०४
आचल—२४१, ३६७
आचलइ—१६२
आचूक—३७५
आछर—५४
आज—२८, ७४, २८६, ४२६,
४२२, ४६६
आजि—१०१, ४६१
आणु—६६, ८७, १८६, २५६, ४१४,
४१६, ४१७, ४७५, ४६३,
५१५, ५२३, ५५२, ६७६

आठ—८०, ६७३
आठमउ—८
आठ्यउ—५८७
आठवी—६३२
आढत्तु—५३३
आढी—५३६
आणइ—२५७, ३७९, ६११
आणंदियउ—१८३
आणेप्पु—५८
आणि—२६, ४९, ५७, ६३, १००, ११२, १३३, १८५, १९२, १९७, २०३, २०७, २०८, २१७, २४४, २४७, २७२, २७३, ३८८, ३९३, ४०३, ४७१, ४७२, ५६२, ६८७
आणिउ—३२७, ३८६
आणिजउ—३४
आणिहू—५८३
आंणी—५७२
आण्यो—६०३
आणो—६३
आधि—५६, २७१
आवम—६३८
आइह—३९९
आदि—३४४
आवासण—३८६
आधु—४०४
आनंद—१२७
आनंदिउ—५६०
आनंदु—६८३
आप—२४४, २८३
आपइ—२२४
आपण—२९८, ४४१, ४८७
आपणउ—१५५, २७८, ३२७, ३३४, ४०७, ४२१, ४३२, ४८८, ४९४, ६५१
आपणी—४७, १९२, ६३१, ६५३
आपणो—९०, ३७१, ३५५, ५२३
आपणें—३११
आपले—२०८
आपनउ—५०७
आपनी—४५३
आप्यउ—२०३
आपसु—१७३
आपहु—६५०
आपि—८५
आपिउ—१३३, २०८, २१७
आपी—५२, २६५
आपु—३००
आपुण—३८८
आफइ—२००
आफउ—१९२, ४१२
आफरयउ—४४३
आफहु—२६१
आफलु—५५, ६०१, ६०२
आफि—१९३, ३०२
आफी—६३, १९१, २१५, २४७
आफीहु—३०४
आफुहु—६७०
आभरण—१०३, २२९, ६०८
आभिडई—२६१
आम—२१०, ३४७
आय—३५३
आयउ—२८, ३२, ५३, २१६, २१७, २६३, ३०३, ३६२, ४२८, ५६०, ५६३, ५७५, ६९१

आयस—६२६
आयसु—४७३
आयिउ—२१६
आयो—३८, ४५, ६०, १४६, १५६, १५८, ३३६, ४५५, ५६४, ६८३
आयौ—२८६
आरति—५६२, ५७०
आरंभिउ—६६६
आरुढो—५२५
आलि—४२१
आलिंगनु—६१०
आलु—६६
आलोक—१६२
आव—१३६, ६८०
आवइ—३२१, ३६६, ४१४, ४१५
आवत—४३, ७०, २०६, २६०
आवतु—१७६
आवते—३६७
आवध—४७७, ४६७
आवले—३४८
आवि—२०८
आवधु—४५०
आवंतु—३२१
आवहु—२५३, ४४६
आविउ—५६६
आवैं—१६६
आस—३२३, ५१६
आसोका—३७७
आसुपासु—६३०
आसू—१४१
आहार—३७८, ३७६, ३८०
आहि—३६, ५६, १५२, १५४, १६८, २२६, २४३, २५७, २८८, २६८, ३०३, ३०४, ३३६, ३७०, ३८०, ४०६, ४०६, ४४०, ४६७, ४७१, ५००, ५०१, ५१०, ५१६, ५३७, ५५०, ६०५, ६०६, ६१०, ६७७, ६८६

इ

इक—२४, ३७, ६०, १४१, २५१, ३०१, ३२५, ६१५, ६४५
इकु—३४, २४६, ४३०
इकुइ—३६२
इकुसोवन—१८
इंगुल—१५
इंगि—२६५, ३६२
इछी—१२३
इतउ—४३२
इतनउ—२३६, ३३०
इतडो—१८५, २८६
इत्वहो—६२६
इतु—३८३
इथंतरि—६६१
इंदु—५४१
इंद्रजालु—२२२
इंद्रलोक—१६३
इन—४८०
इनउ—४८६
इन्ह—३३४, ४३८, ४५८
इनके—४५६
इनकी—१८६
इनको—२०४
इनी—६०६
इम्ब—५८५, ६८७

इम—४१, १४३, १४४, १४६, २८३
इराम्वत—६८
इय—६६३
इव—६७२
इह—२८, ३६, ७६, ६६, २७८, ३०५, ३२३, ३३६, ४३८
इहइ—४५३, ४४१
इहर—४५३
इहि—४०, ४४, १२५, १६१, २५२, २५४, ३५८, ३२८, ३३३, ४३८, ५१७, ५२३, ५३७, ५४७, ५४८, ६३०, ६५१
इहिर—३७१
इहिसउ—१७६

उ

उइ—६०, ३५६
उकठे—१६१
उखलं—३६३
उगालु—६५, १००
उघ—१३१
उचंग—१५
उचरइ—३६६, ५८१, ६३१
उच्चरइ—५२८
उची—१३१
उछलयउ—१७२
उछलिउ—५८१
उछली—७१, ८६, १७५, ४८३, ५६३, ५६७
उछंगइ—१३३, ५५१
उछंगि—५६०
उछव—५६५
उछह—५५४
उछाह—१३५
उछाऊ—२२३
उछाव—८६
उछाह—४१६, ५८६
उछाहु—४४, ८७, २२८, ३५२, ४१३, ५६६, ५६६, ५७५, ५८५, ६२१, ६५४, ६५७
उजल—१०३, ३१४
उजाथु—१३८
उजेणि—२६६
उझाइ—१७०
उझावलि—१३६
उझिल—४१८
उठ—३८१, ६७२
उठइ—४४१, ४६० ५१३, ५५६
उठहि—४३७, ४४२
उठाइ—१३२, १३३, १५६, ५५१
उठावइ—१२४, १४४
उठि—६८, १०१, २४४, २७२, ४३७, ४४३, ५५७, ५५६
उठिउ—२१२, ४१६
उठियोउ—५५१
उठी—४००, ४२५, ५६४
उठीयउ—१८०
उडे—२३५, २४६, ४२८, ५५८, ५५६
उणे—२८७, २८८
उडी—७३
उणहारि—४०
उतपाति—६६४
उतरइ—५५४
उतरि—१२३, ३२०, ५४०
उतव—२३६, ४१७, ६७१

उतंग—१५
उतंगु—३१६
उतारउ—५६२, ५८३
उतारण—४५०
उतारि—३४१, ४५२, ५७०, ५८४
उतार्यो—२८७, ५५७
उतारी—१०२
उतिमु—३८०
उतिरि—२९९
उथलथउ—५५७
उदउ—४२, ५८२
उदिधिमाल—२९६, ३०५, ३१२
 ४५५, ४५६
उदौ—३१९
उदोत—२९३
उधोत—६८३
उधारि—५९, ३३८, २४०
उपए—२९५
उपजइ—११, १४१, १५३, २३२,
 ४०५, ५०८
उपजावइ—४३१
उपजी—३८९
उपजाउ—६, ५९४, ५९८, ६९०
उपजि—२७
उपजी—३९३
उपदेस—६१०
उपनउ—२७, ११७, ५१७, ५५७
उपनी—१७५, ४०३, ६७६
उपनौ—३३, २८८, ३७६
उपनौ—२८६
उपर—११, १८२, १८७, २१५,
 २५८, ३३७, ३४२, ३५७,
 ३८१
उपरा—३८१, ३८२
उपराउपरु—१९७, २०७
उपरि—३८१, ५११
उपाइ—३६१
उपाउ—७६, १६४, १८६, २०२,
 २५२, २९२, ३२३, ४८१,
 ५९१
उपाय—८२
उबरइ—६७२
उभउ—२१६, २९९, ३२०, ४५०
उभो—६७, ३५७, ४२४
उभे—८९, २१२, ४३५, ४४२,
 ५६३, ५६५, ६३७
उभौ—२०२, २३८, ३६१, ३७५
उभौ—६
उमइ—२८६
उमासे—६८८
उर—२३०, २५०, ५५२, ६९५
उरइ—४३२
उरणि—५७४
उरधु—२६५
उल—४२०
उलगाणो—३३६
उवरउ—३७०
उवरु—२०७, ४४३
उवरै—२८८
उवसंत—२२३
उवार—४९५
उवारि—४६५
उवारु—४६७
उविहारु—२१७
उह—८१, ३१३
उहुडे—५२६

ऊ

ऊंडु—३५८
ऊडू—३५६
ऊरण—४२०
ऊतर—६७६
ऊपरकपर—६१८
ऊभी—२३५
ऊवह —२३५

ए

एक—३०३, ३८०, ४४४, ४४८,
५८१, ६०२, ६१६
एकइ—५३६, ६५७
एकठा—२५४
एकल—६५५
एकलउ—३८०
एकहि—६१५, ६४६
एकसाथक—६४६
एकोलो—४७३
एकु—२५७, २७२, ३५६, ३७८
३७६, ४३६, ४५५, ५३६,
६०५, ६२०, ६८२, ६६३
एकुइ—३८८
एकुउ—३७६
एकुह—४७२
एगुणसी वार—१०
एतइ—१२६, ४१६, ५८४, ५६३
एतउ—२२१, २६४, ४३३
एतह—११४, ११५, ६१३
एतहि—५५०
एतहु—५७१
एते—३६८, ४२४
एम—३६६, ५५४, ६११
एम्ब—३६, ६६७
एरछुनगर—६६५
एसी—६३३, ६५४
एसे—१५१, ४३५, ४६०, ४७८
एसं—१५३
एसो—२६८, २८३
एसौ—१२६, १४८
एस्यो—१४४
ऐह—१८७, २५५, २६५
ऐहु—६५, ३२८, ५०६, ६६७
ऐसी—४८३, ५१२
ऐंसो—३६४
ऐहु—६२१, ६५३

ओ

ओरइ—६१६

क

कइ—६५
कइथ—३४८
कइवं—३३०
कइसइ—३५
कइसी—५५१
कउ—२, २८५, ३२३, ३३६, ४०२,
४३०, ४८१, ५१६, ५६५,
५८५, ६०६, ६१२, ६५७,
६७६, ६८०, ६६४
कणकंकण—६०८
कंकण—२३६
कंकणु—२१५
कचमाल—३४५
कंचण—१६, १६१, ३१३, ६६६

कंचणमाल—२६४, ५७१
कंचणमाला—१२६, १३३, १३४
कंचुइ—५१४
कञ्चुक—१११
कञ्चुस—३४०
कजल—३०
कठिया—३६८, ३७५
कढिहा—२३४
कढीया—३६७
कढाइ—४३८, ४४६, ४४७
कणखउराउ—१६१
कणय—२६, ३११, ३६६
कणयमाल—१३५, २४१, २४५, २४६, २५०, ५४८
कणयपुकट्ठ—१६५
कणयवीढ—३५५
कणिक—६३
कणी—३३४
कंत—१०८, ५३०, ३६२
कतहुली—१
कथंतर—४१७, ४३३, ५६३
कथंतक—४१३, ६६१
कथा—११, १३६, १६३, ४५३, ६५८
कन्ह—५०, ५७२, ५७५, ६०६
कंन्ह—६०, ६३, ६६, ६७
कनउ—६०३
कमक—३७४, ५७६, ५६१
कनकवालु—३८५
कनकवंड—२३, ५८२
कनकमाल—२३, २४६, २५१, २६३, २७७, ५७४, ६८२
कनय—५८२
कनयमाल—२३०
कन्या—२२३, ३०७, ६४६, ६५४
कनयजो—५७६
[illegible]दु—६८४
कंदर्प—६६८
कंद्रप—२१६, २४३, २६१, ४१८, ५६०, ५६२, ५६३, ६२५, ६३७, ६६२
कंदपु—५३०, ६३७
कंदलु—६८५
कंधि—२१३
कपट—६७
कंपइ—५०२
कंपत—३७८
कंपिउ—६७, २६५, ६४३
कमण—६२६
कमठु—२७६, २८४
कम्मु—२७८, ६८७, ६६०
कमल—३
कमंडल—२५, ३१, १४६
कमंडलु—३६०, ३६१, ३६४, ३६५
कम्मठु—६६७
कम्मण—४२३
कम्मसु—१४४, २२६, ३८४, ५२२, ५६८, ६७३
कयउ—४३०
कपड—२०८, २३३
कयथ—२१२
कर—३, ५, ३३, ६३, ७०, ७२, ७६, ७६, १०३, १६१, २११, २३४, २३५, ३५३, ३६०, ३६५, ३८३, ४११, ४५५, ४६६, ४७४, ४७६, ४७६, ४८६, ५३३, ५३६, ५४०, ७०१

करहु—२, २१, ३०, ३६, ४२, ६६, ७९, ८२, ८४, ८५, ८७, ९४, ९५, ९६, ९७, १०९, ११०, १२५, १२७, १५०, १५४, १५७, १६४, १६८, १८१, १८४, १८८, १९०, १९१, २०२, २०८, २५०, २५१, २६५, २६६, २६९, २८३, २९१, २९२, २९५, २९८, ३०८, ३२३, ३३२, ३३७, ३४८, ३५५, ३५७, ३७७, ३८५, ३९३, ३९४, ३९९, ४०५, ४१०, ४१३, ४१८, ४२३, ४३६, ४४५, ४५१, ४६६, ४९२, ४९५, ४९७, ४९९, ५०५, ५०७, ५३४, ५६८, ५६९, ५८९, ५९७, ५९८, ६०१, ६११, ६१२, ६१७, ६३९, ६४१, ६३७, ६८१, ६८५

करई—५०७

करइस—५६४

करउ—७, १३, २७९, ४६१, ६४७

करंकइ—४८४

करकंकरण—१०३

करटहा—३७९

करण—४९, ६१, १९१, ३०८, ४०१, ५४५, ५९४, ६४६, ६८१,

करत—३२, १११

करतउ—६०३

करंत—४२, ९१, ३०१, ३१९, ५२९, ५८२, ६८८

करंति—५६३

करंतु—१२२, २९२, ५२६

करम—५८८

करमबंध—१२६

करयउ—५८४

करवहु—५६९

करवाल—७०, १७९, ५८९

करलेहि—७२

करहुँ—४

करहिं—१११, १२१, १४३, १८२, १८८, ६२६

करहि—४९, ७०, ११३, १४८, १६६, १७०, २०५, ३६१, ३८५, ३८९, ४००, ४८१, ५५४, ६१७, ६४२

कराइ—१२६, १३९, ४३१, ६५८,

कराउ—४९, ५७, १००, ३६८

कराए—६६६

करावहु—११४

कराहि—५९२

करि—१६, २६, २७, ५३, ८२, ८८, १५८, १६७, १७७, १७९, १८९, २१३, २१६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४५, २४६, २५२, २७०, २८०, २९४, ३०७, ३३३, ३३७, ३५१, ३७७, ३९९, ४०५, ४०८, ४१८, ४४८, ४६६, ४७०, ४७२, ४९६, ५१५, ५२५, ५३१, ५३३, ५४०, ५७५, ५७७, ६११, ६४८, ६५५, ६६८, ६७५, ६८७

करिवालु—४९७

करिहा—४७९

करिहि—११०

करी—६४, १४०, १६६, २१४, २५६, २५१, ३४४, ४१८, ४१६, ४८८, ६२६
करण—३४७
करेइ—८०, २२७, २६६, ६८६
करै—१३४, २६०, ३४८, ३७८, ५०१, ६६२
कर्म—६६८
कलकमाल—३१६
कलयर—१२७
कलयरु—५६१
कलमल—५८६
कलयसु—३८१, ६२१
कलस—१६, ५६३, ५६८, ५७६, ५६१
कलसइ—१६१
कला—२४
कलाप—६८१
कलापु—३०८
कलि—३१
कलिगहु—५७८
कलियरु—५६१, ५८१
कलियलु—१७३, ३१८
कवण—६६, १५२, १४७, २०५, २४१, ३१३, ४४७, ५०६, ५३७, ५७३, ५७६, ६८५
कवणांई—४२४
कवणु—१२३, १२६, १३५, १३६, १५७, १८७, १६८, २१०, २३६, २४७, ३२०, ४८७, ४६४, ४६८, ४७०, ५०१, ५२२, ५२७, ५६२, ६२४, ६४३, ६६८
कवणु—६३
कवलिगु—४३८
कवि—३, ५५६
कवित—६३८
कवितु—१, ७, १३
कसु—१४१, ५२४
कंसु—५३८
कसमीर—५७८
कहु—११५, १६६, २६०
कहइ—४०, ४४, ५०, ६६, ११६, १२३, १४४, १४६, २२७, २६३, २७७, ३०५, ३०६, ३१४, ३६६, ३७८, ३७६, ३६३, ४०५, ४२७, ४३७, ४४६, ४४५, ४४६, ४५६, ४५७, ५०८, ५२२, ५३७, ५४१, ५५०, ५६६, ६०७, ६२७, ६३३, ६४१, ६५१, ६७५
कहउ—४८, ६३, २५२, ५४६, ६२६
कहण—७३, १४७, ५०६, ५४६
कहत—७५, १७८, ३८०, ६२६
कहहिं—७४
कहलाउ—४७५, १२८
कहसा—४०५
कहहि—६२६
कहहु—४८, ६३, २४०, २४२, २८३, २८६, ४०७, ५४६, ६०४
कहा—२६, ७६, १०६, १५१, २२२, ३२६, ४१०, ४१२, ४४६, ४४८, ४५६, ५०७, ५०८, ६२६, ६३६
कहि—३६, ४८, ६०, १४०, १६३, २३०, ५६५, ६७०

कहिउ—३३, ३६८, ३८०, ४१३, ४१४, ५७०, ६२८, ६६६
कहिए—१६८, ४४८, ६५०
कहिठार—५६५
कहियउ—१६०
कही १५०, १५६, २६०, २६७
कहीए—५६७
कहु—५७, ८५, १००, १०६, १६६, १६७, १७०, २५२, २५४, २६२, २६०, २६७, २६८, ३०१, ३०३, ३०५, ३०६, ३२६, ३२८, ३३०, ३८४, ३६०, ३६४, ४१०, ४३८, ५४३, ५४५, ५६४, ६०७, ६२४, ६२५, ६२६, ६४२, ६६६, ६७०, ६६८
कहु—३४, १०४
कहे—२६७, ४१५, ५१४, ६३२,
कहै—१६६, २८५, ३३५, ४२१, ४४४, ४५५, ४८५, ५१२, ६२८
कहो—३२२
कहो—२५५, ६०६
कहयउ—२०५, २५५, ३४०, ३६६, ५१५
कहयो—६२३
काके—५५
कागु—४८४
काज—४२७, ६०५
काजु—४१६, ५१५
काटइ—३३६
काटे—४२६
काढिगी—४८४
काढ़इ—१७६
कांठ—२६६
कान—३२४, ३६३, ४२२, ४२५, ४२६
कानकंति—७०८
कान्ह—६०, ६६, १००, ४५२, ६६५
कान्हु—५६, ४५८, ५४२, ६०८
कांपइ—४५०
कापहु—४५३
कापरखाए—५७३
कांति—६१२
कामि—११३, २३१, २४७, २७२, ३६१, ५१७
काम—५७, ३४१, ३४३, ४३३, ४३४
कामबाण—१२, ५८, २३६
कामसुंदरी—२३४
काममुंदरी—२१५, ६०७
कामरस—२४१
कामिणि—१२१
कामिणी—३५६, ४१६, ५६३, ५६७, ५६८, ५८१
कारण—२६५, ३६६, ४०६ ४१५, ४१६, ५०८
कारणु—१२७, १४०, २४१,
कारणं—२६५
काल—३१, ६८, १६८, २०५, २७६, ४८६, ५०२, ५३६
कालसंवर—१३६, १५६, १७२, २५१, २५२, २८५, ५४७, ५४८, ६७८
कालसंवर—२७७
कालासुर—१६८
कालि—४४६
कालु—१६६

कालुगत—६६४
कालू—४४
कालौ—३८४
कायर—४६१, ४७६
कासमीर—२
काहे—४६०
काहुउ—१४१, २७२
काहा—४०८
काहुस्यउ—३६
काहे—२४४, ३२३, ३८१
काहो—१०८, ३४८, ३६२, ३६३
काहौ—१२४, १४३, ३४४, ३८४,
३६३, ४७०
किउ—६६०, ६६१
किए—६८३
किकर—२००
किछु—४०४
किजइ—४६६
किउजइ—६४६
किन—३१०, ३३४, ३४०, ३७१,
४७१, ४७३
किन्हहु—३६३
किम—४८, ७३, १७७, ३०३,
४४८, ६२७
किमइ—२४०
किम्ब—३०२, ४६०, ४४४
किम्बहुउ—४७४
किमाइ—१७
किमि—२८४
किसु—४०४, ४०६
कियउ—१४१, २१०, ३२८, ३२६,
३३६, ३६७, ४३२, ४२३,
४६२, ६१०, ६१६, ६२६,
६५०, ६५६
कियो—८८, १८७
किरणि—४६४
किलकइ—४०४
किसन—४४२
की[illegible]—२७३, ४१४, ६३०
कीमइ—१४२
कीम्बहुं—४२८
कीयउ—२८, ३२, ४३, ४८, ७६,
८६, १७६, १८४, १८६,
२०१, २४८, २४२, २७२,
२७३, २८४, ३४२, ३६४,
४३६, ४८८, ४८४, ६०६,
६१६, ६३०, ६४२, ६७८,
६६४
कीयहु—४३०
कीयो—८८, २८८, ४६१
कीर—४७८
कीरति—४८८
कीरती—२४३
कीहु—४७
कीडा—१३०, १८७
कुकइहि—६१७
कुकडा—६१८
कुकुवार—३८२
कुकुवारउ—२४०
कुटम—४४४, ४८४
कुटमु—४६०
कुटंब—४६१, ६८०, ६६०
कुंड—२०८
कुंडल—२३४
कुंडलपुर—४६, ४६, ८४, ४७२,
६२३, ६३२, ६४८
कुंडलपुरि—३८, ६३४
कुंथु—३४६

कुलासु—३२, ६५, ११०
कुंथु—१०
कुमर—१७३, १८३, १८७, २५१, २६४, ६२४, ६७५
कुमरहि—२६४, ५३६
कुमरन्हि—१६७
कुमरु—२६८
कुमार—२५७, ३०५
कुमारु—३३३, ४६१
कुम्वर—२२२, २२७, २५८, २४८, २५७, २५८, ३५४, ५८५
कुम्वरन्हि—१८५, २१८, २३०,
कुम्वरु—१२३, २१२
कुम्वार—२१४
कुम्वरि—४०, ४१, ३०३, ३०७,
कुम्वारु—३६, १३२, १३८
कुरवइ—११४
कुरवि—४६१
कुरुखेत—२७६, ६६१
कुल—६८३
कुलदेवी—५३७
कुलमंडप्पु—५६१
कुलहिं—५०२
कुली—२०
कुवडउ—२७०
कुवडा—३६५
कुवर—६२, १३६, १५७, १६५, १६६, १६७, १७२, १७५, १७७, १८६, १९२, १९९, २०३, २२९, २३७, २४७, २५३, २५४, २६४, २९६, ३०९, ३३१, ३३५, ४३५, ४६४, ५५५, ५५३, ५५४, ५७५, ६१४, ६१५, ६१८, ६२२, ६२४, ६५४, ६५५, ६५७, ६५९
कुवरहि—५८५
कुवरि—३८, ५६, ६९, २१९, ३०८, ३५५, ३३१
कुवरु—१५६, १५९, २३८, २५८, २९५, ३२२, ५७१, ५६०, ६९७
कुसमबाण—२२५
कसमरस—६६३
कुसल—२९
कुसुमबाण—२३५, ५१९
कूंकू—१२१
कूखि—६००
कूंअउ—३४५
कूटइ—२५०, ३५२
कूटहि—३८२
कूटि—४१७
कूड—२४९
कूडीवूधी—१०९
कूडीया—३२, २४९
कूर—४०२
कूवा—१६१, ३१४
कहे—७
केउ—४७६, ४७७, ४७८, ५९१, ५९२
केतउ—२७३
केते—६२९
केसु—६८१
केकइ—७०१, ३७०
केला—३४७
केलि—३४६
केव—४४५

केयरउ—३४५
केवल—६६४
केवलज्ञान—५६४
केवलभानु—१५२
केवलणाण—१२
केवली—१६०, २६०
केवलु—६६०
केस—२५०, ४२०, ५८३, ५८४,
 ६८३, ६८८
केसड्ढ—५८३
केसव—४८६, ५०१, ५१०, ५२४,
 ५३५, ५५१
केसु—५०६
केसे—६४
कैलासहि—६५६
कोइ—१, ३८, ४०, ४७, ५५, ६६,
 १०५, १२४, १३४, १६६,
 १६८, १६६, १७६, १८३,
 १६२, २१८, २४३, २६७,
 २७८, ३३६, ३५४, ३५६,
 ४४४, ४८६, ४६७, ५११,
 ५३६, ५५३, ५६६, ५६८,
 ६६३, ६६७
कोउ—२, ४७६
कोट—३१४
कोट्ठि—६६८
कोण—१६६, ४४६
कोवि—२२, ५१६, ६१७, ६१८
कोडिधुअ—१६
कोडी—३०७, ३८६
कोयु—१७६
कोल—४७१, ४७४
कोलिगु—३६४
कोंतु—४७६
कोम—४६६, ५०८, ५१७, ५२०
कोपा—३२१
कोपाकल—७६, ४४१, ४६३, ५१८,
 ५२७, ६४८
कोपाहकु—३३१, ५२५
कोपि—६८, २१०, ३४०, ५३५,
 ४७४, ५०६, ५११, ५३७,
 ५४२
कोपिउ—६७, २५६, ३६३, ६४३
कोपिय—३०४
कोपु—३६, ५३३
कोप्पो—१७२, ४६०, ४७४, ४८०,
 ५१६
कयो—५१३, ५२४
कोमलि—५२
कोयंड—४७४
कोयंडु—६४
कोवानल—३६
कोवि—५०२
कोसु—६८८
कोहु—२८७
कोल—४६७
कौतीनन्दना—४५६
कोवाहलु—४६६, ५२०
कौरो—२७६, ६६१
कौसाव—२३४
क्षण—३७, ४४०
क्षत्री—५५३
क्षितिपति—६८०
क्षिम—५८४

ख

खइ—३५, २७०
खउ—४४४, ६१३

खग—३७, २६७, ४९०
खग्गी—४३
खण—३४, १२२, १३१, २१८, २२१, २२४, २३७ २८८, २९१, २९२, ३६०, ४०२, ४२४, ४३०, ४३१, ४३४, ४४४, ६२८, ६६९, ६९०
खत्ती—२०, ४६०, ४६४, ४७३, ४९४, ४३०, ४१०, ४११, ४१२, ४२२, ४३०, ४४९, ६०९, ६४८
खंड—४६, ३०६, ४३४
खंडउ—३६
खंडव—४६८
खंधार—३६७
खपइ—६३५
खयंकर—६६६
खयंतु—४०२
खर—४०६, ४३२
खरउ—३१९, ६४३
खरग—४४०
खरी—९१, ९८, १२१, १४०
खरे—८१, १६१, १८३, ४४८, ४३६, ६१४, ६३२
खरो—४४४
खल—४४१
खली—३९४
खाइ—३४, २०९, ३४०, ३४३, ३९१, ४०४, ४४४, ४६९
खाती—३३८
खाजहु—३४४
खाट—९७
खात—४४४
खारि—४६९
खिउकरण—६६७
खिण—२९४, ४२१
खिप्रपालु—६
खिरणी—३४८
खीप—३४७
खीर—१६२, ४०८
खुटी—३६३
खधा—३८४
खुर—७१
खुरह—४८३
खूकउ—३९४, ४११
खूडा—३९९
खूडे—४०३
खेउ—४७, २१९
खेत—४३७, ४३८
खेयु—६३४
खेपउ—४८७
खेम—४४२
खेल—६१७, ६०९
खेलण—१८७
खेमंधर—१४०, ४९३
खेह—७३, १७४, ४८३
खोडा—४८३
खोडि—३०७, ३४३, ७०१
खोडी—२७७, २९८, ३७१, ४११
खोल—३०४
खोहणी—२७६

ग

गइ—१०४, १११, २४४, ३४९, ४४३, ६०८
गई—४२४, ४२४
गउ—२०८, ३७२, ३८८

गऊ—९३
गए—६६, १२०, १६९, २३५, ४३५, ५३९, ५४१, ५६७, ६१५
गगन—१९३
गज—२१९
गजा—५१, ५६९, ५७५, ५९५
गणस—२०
गणहर—५६९, ६७१, ६७५
गणाइ—१६३
गणे—३१२, ५७९
गणें—२३६
गंजहि—१७५
गंभीर—१९
गब्बरिए—२०
गय—४८२, ५०५, ५२७, ५३०, ५३२, ५५९, ६५५
गयउ—२९, ४१, ५३, ५९, ६७, ९९, १०३, ११६, १३३, १३५, १३७, १४५, १४८, १५०, १८२, १९१, १९७, २१०, २१२, २१६, २२५, २३०, २६२, २६५, २६८, २७०, २८३, २९९, ३२०, ३३७, ३५६, ३६५, ३६८, ३७६, ३९८, ४०२, ४१४, ४५२, ५१९, ५५२, ५५५, ५८६, ६०२, ६३६, ६४९, ६४३, ६५८, ६६४, ६७४, ६७५
गयणि—१७२
गयणिहिं—१७५
गयवर—७०
ग्यारह—९, ११
गये—११, ६४, ९१, १०२, १११, ११५, २१२, २१५, २२१, २५५, २७५, ४७२
गयो—२२, ८१, १०१, १६३, २०४, २५४, २५२, २६५, ४४९, ५२०, ६२०, ६२३
गर्जे—२१
गर्जइ—१७५
गरडु—२१६
गर्भे—१११
गरव—६६
गरवो—२१३
गरहट—६३
ग्रसइ—५०५
गरडु—५३८
गहवो—५५९
गलि—३३६
गले—३०६, ६४९
गलें—१८२
गहघउ—२८२
गहबरइ—१४०, ५८६
गहबरि—१४७
गहि—२०२, २१५, ३२३ ४३८, ४४०, ५४६, ५४९, ५५१
गहिउ—२४१, २५५, ५४०
गहिर—१९
गहीउ—३४५
गहे—६४५
गाइ—४६८
गाउ—२८४
गाउ गाउ—३७
गाए—६३८
गाजइ—३८१
गाजिउ—४७४

गामण—४७८
गाजहिं—७१
गाजे—४६१
गांठि—६५
गाठी—६७, ६८
गाम्ब—१५
गामति—४२३
गावइ—१२०, ४५७, ४६७
गावंत—३५६
गावहिं—१८१
गासु—३८७
गिरवरि—१८६
गिरि—२८०, २६५, ३७३, ५४१
गिरिवर—५०६
गीत—५६३, ६३८
गीध—१४४, १८०
गीधीणि—५०५
गीम्ब—६४४
गुम्फु—३१५
गुटिकासिधि—१६४
गुडहिं—४७७
गुडहु—६८
गुडी—५६३, ५६७
गुडे—१७३, २५६
गुण—५२, १३६, १४२, ३११,
५२०, ६६६
गुणउ—७०१
गुणगिलउ—१२
गुणवइ—६६५
गुणवंत—५६५, ५६७, ६१२, ६१४
गुणहु—६२
गुणे—६४७
गुणै—६१७
गुपत—४५६
गुफा—१८६, १६७, १६८, २००
२०१, २१८, २२६
गुबालु—७५, ११०
गुर—४०६, ५२१
गुरहु—७०, ४७५
गुरु—१३, ४०७
गूजर—५७६
गूडी—८६
गेह—११४
गैंयर—६७, १७३, २३५, ४६५
गैयरु—२१२, २१३
गैंवर—२५६, ४७५, ४७७
गोडइ—४४६
गोडउ—४३८, ४४०, ४४६, ४५१
गोतु—४०७
गोहउ—४४१
गोहिच—४३८
गोहिण—५८, ६१, १०५, १२६
४२२
गोहिणी—४१६

घ

घटइ—४०
घटाउ—६८७
घटाटोप—५८१
घटिक—६८०
घण—१२, १७३, २८१
घणउ—११, ३६, २६६, ३००,
३१६, ३१८, ४०६, ४४८
५४६, ५५०, ५६६, ६५१,
६८०
घणघोर—२०१

घणी—६४, १०८, १०६, १५४
२४१, २४३, २४७, २८८
३६४, ४३५, ४५४,
घणे—२५, ६०, ३४७, ३४८
३५५, ४२६, ४२६, ४७८,
६७८
घणौ—१५५, ४५३
घंट—२६३
घर—८८, ११५, १२६, १३६
१७७, १८४, १६२, २३७
२८८, २८६, २६४, ३४८
३८३, ३८४, ३६६, ४०६
४१४, ४१६, ४२२, ४२५
४४३, ५५३, ५६०, ५६२,
५६३, ५६४ ५६५, ५६६,
५६७, ५७२, ५७४, ५८६,
५६६, ५६६, ६०४, ६१३
६५२, ६८२, ६८३, ६८७
घरइ—४०५
घर घर—८४, १२० ५६३, ५८१,
५६१ ६५७
घरणि—१५४, २४३
घरबार—६७५
घरह—११७, ६६५
घरि—२३०, ४०२, ६१६
घरिघरि—१२१
घाइ—३६५, ६६०
घाव—६८, १७७, ५४५, ५६० ६४७
घाघरी—२६३
घानी—५३१
घारइ—२६१
घालइ—३८३, ३८८, ५२१
घालउ—१२५
घालु—[illegible]
घालि—१२५, २५६, २५८, ३६३,
४७७, ४८७, ५३८, ६१०
घालिउ—२६२, ५३६, ६०६, ६६२
घालियउ—६२७, ४५१
घाली—१४२, २८७, ३५०, ३५३
घ[illegible]—[illegible]५१, ५[illegible]
घाले—१७७
घाल्यो—२५६, ३३१
घीउ—२५३, ६४३
घूल—४७४
घूतु—१४२
घेहु—७१
घेवउ—७१, ३५८
घोडे ३३१, ३३४, ३३८, ३४१
घोडो—३४२
घोडौ—३२७
घोमि—१२२
घोर—१६८
घोरो—३२६, ३३७
घ्रत—७६

च

चइ—३१४
चउ—५२६, ६४७
चउक—५६२
चउथउ—८
चउतीसह—१२
चउपास—१८, ३१६
चउवारे—१६
चउरंग—१७३, २८६, २८७, ४६६,
५३२
चउरंगु—२६२, २७६
चउरासी—३८८

चउथल—२३
चउवीस—७
चउवीसउ—७
चकचूर—५२
चक्क—५१, ८१
चकला—३८७
चकवइ—५६, १५३
चक्कवति—१५०
चक्केसरि—२१
चक्केसरी—५
चडाइ—६७
चडाइयउ—५१७
चडिउ—५२१
चडिवि—२१३, ३३६
चडइ—२१४, ३३७, ३५८, ३६६,
४३८, ४७७, ५०६, ५०९
चडउ ३३४
चडहु—६८
चडाइ—६५
चडाई—२८०, ४९६, ६४८
चडामणि—३३५, ३३६, ३४६
चडावहि—३५७
चढि—१११, १२०, १३५, १५८
१८९, २३५, २९५, ३५७
चढिउ—२५, ३३१
चढी—३, १८७, ३४३, ३५४
चढीइ—४९५
चढे—१०२, २८१, ४६२, ४९९
चढ्यो—२९३
चतुरंग—७२
चंचल—३२३, ३२४
चंद—१३६, ६५१
चंद्रकांति मणि—६०१
चंदन—३७३, ५६३, ६६९
चंदप्पउ—८
चंद्र—२०३, २३४, ५१८, ५४०
चंद्रवयणि—४२
चंद्रहंस—५३९
चंदु ५४१
चमक्कइ—५३९
चमक्कयउ—६०२
चमत्कार—३३७
चंपइ—६२
चंपउ—३४५
चंपि—३६
चंपिउ—२३१
चमर—७२
चमरंत—७२
चम्मर—२२३
चयउ—६१३, ६१४
चर—४२६
चरण—३३९, ३४०
चरणु—३७४
चरसु—३४१
चरित—२६६, २६७, ४२१, ६६२
६९५
चरितु—११, १७४, १८३, १९८
२६५, २७३, ३२० ४२६,
४३२, ४६२, ५३५, ६९७,
७००
चरेइ—६८९
चलंत—५०२
चलइ—८५, १५२, २०९, २६७
२९४, ४७६, ५८४
चलई—३२

चलउ—१७३, १९६, ३०८, ४४८
५१०, ६५२
चलत—२६०, ३१२
चलहु—४६, १०१, ४८१, ५०५
५५४, ५८६
चलिउ—१२४, १५८, १६४, १७३
२४८, २४६, ३१२, ३२६
३५५, ३६०, ३६५, ४४१,
५०६, ५२२, ५५१, ५६४,
५८१, ५६०, ६५८
चल्लिउ—१८३
चलियउ—२०८
चली—६१, ८५, २६६, ३०६, ३५६
५१६, ४८३, ५२८, ५६३,
५६८
चलीउ—३४, १३०, ४४७
चले—१२८, १७५, १८७, ३०७
४८२, ५२६, ५२६, ५४०
५६१, ६४८, ६५५, ६६५
चल्यो—३५, ८३, २३७, ६२७
चल्योउ—३३, २३६
चवइ—४६, ११२, ३४३
चवर—१६६
चवरंग—३२०
चवरंगु—८३
चहि—५३
चहु—१८६
चाउ—८०, २८०, ४८१, ४६६
५१६, ५२०, ५२५, ६४८
चाउरंगु—४८२
चापि—१२६, ३४४
चाप्यो—१२०, १५५
चाम्बइ—५५०
चामर—२३
चारि—३२५, ४५७, ५८१
च्यारि—८०, ३७५, ३६७, ५६८
चारिसौ नानाणी—२५६
चारू—३४७
चारयो—३२४
चालइ—११०, ५७०
चालि—१४५, ५१५
चाले—८८, ४७८, ५६४
चालें—४८७
चाल्यो—१४६, ६२८
चावर—५८२
चाहि—१४४, १६७, २२६, ३०३,
६०५, ६०६, ६८६
च है—५४५
चाहो—३३५
चित—१५७, ५१६, ६५६ ६६३
चितव—६६०
चितहु—३६३, ४०३
चित—६१, ६०१
चितइ—३५, ३८, ३४६, ६२२
चितइत—३६
चितयउ—३६७
चितयऊ—६११
चितवइ—४१
चितावस्थु—६७५
चितिव—१२२
चितु—३१५
चिन्हु—७२
चिलताइ—४००, ४०१
चीतइ—६२८
चेजी—३६२
चेताले—६६०
चेरी—३६१
चेली—१०६

चुटी—१४६
चुंमइ—४२९
चुंमियउ—४६०
चुरइ—४०१
चूटी—२५
चून—६२
चूरह—७८, १७९
चूलिह—४०१
चोपडु—३४२
चोयास—३१४, ३१७, ३९६
चोर—५७८
चोरी—६६, ६९, ७६
चोहटे—१८, २६५, ६२७, ६४४
चोवहसे—११
चोरी—४७२
चोडुजण—६५६

छ

छइ—८६, ६३२
छडि—१२२, १२७
छडी—५४७
छण—६४५
छणांतरि—६९३
छत्र—१९९, २३३, ५०३, ५०२
५८२,
छत्रजि—५००, ५२९
छत्री—६५, १४६, ४८१
छंडु—१२७
छपनकोटि—१२८, ३७३, ४४८
४५३, ४६०, ५५८,
६५५, ६६५, ६६९,
६७१, ६७२,
छपनकोडि—२२, ४६, ४६६, ५६४,
५६५
छपनकोडी—८९
छल—४७२
छलि—६३४
छतु—२२५
छवाइ—५९०
छहरस—६६२
छाइ—८१
छाए—१७, ५७६
छाडइ—८४
छाडि—१६९, १९१, २४१
छाडी—२७२, ३६९
छात—४८२
छाडयो—५५७
छाक—६८४
छायउ—६८९
छिनि—८२
छीनि—२६५, ३०८, ४०२, ५१९,
५२१
छीनी—२६४
छीने—५२३
छुडावहु—६४३
छुरी २१५, २२४
छुरीकार—२६०
छुहारी—३४८
छूटउं—२७९
छूरी—४७९
छेय—४५९
छोटी—३६९
छोडइ—२६७
छोडउ—८५
छोडहि—४२७

छोडि—४६, ४७, ५४, १८४, २६८, २७३, ३०७, ३७२, ५१६, ६२६

छोडिउ—२३०, ६५२

छोडी—६१, २२१, २५०, ५१६, ५६०

छोडो—२८७

छोरी—६८, २८७

ज

जइ—७, ४०, १०६, २२५, ३००, ३०४, ३१७, ३४२, ३३०, ३५६, ४०५, ४४८, ४८८, ५८३, ६४३, ६५८, ६६७, ६७६

जइउ—४२६

जइसी—३५२

जइसे—३००

जउ—१३, ७६, २१२, २४६, २५७, २८८, ४४०, ५१६, ५६०, ६७४

जख—१६

जखु—१२३

जगत—५६६

जगु—१७५

जडिउ ३१६, ५६६

जडित—१६८

जडी—५२

जडे—१७, ५८२

जण—३३५, ३३६, ४८१, ५६२, ६२८, ६३२, ६३६, ६५६, ६५७, ७०१

जणणि—२४१

जणणी—२४८, ६६५

जणाव—६२६

जणाहु—७०१

जणा—४५६

जणाइ—५५, ६६, २५७, ३६२, ३७५, ४००, ४१५, ६२०

जणावहि—५०५

जणिउ—१५५

जणिस—३१४

जणु—८७, १५३, ४१७, ५६०

जणो—८६

जणों—१६६

जद—१०५

जन—५६३

जनकु—६३

जननी—६३१

जन्म—१४१, ५६०

जन्मभूमि—५०८

जनम—१५५, २४५, ६६७, ६८६

जनु—७१, ५०५, ५०६, ५६१

जनेउ—२७४

जपइ—१०३, २२६

जपित—२३१

जम्बूदीप—१५२

जंबूदेश—१४

जंपइ—५०, १७७, २५२, २६८, ३०३, ३१५, ३१७, ३६२, ३७१, ४१२, ४१३, ४२५, ४७३, ५१०, ५१२, ५२१, ५३०, ६११

जंपाण—८८२

जंपासु—५५६

जंपिउ—२६५, ६४३
जम—५०६, ६८४
जमगंधि—७७
जमपाधि—५३५
जमराइ—५०५
जंभीर—३४७
जंबइ—६१२
जंबवती—६०६, ६०७
जमसंवर—१२६, १३२, २४४, २४७
२५८, २६२ २६७, २८३
४०६, ४४४
जमसंवह—२३१, २३७, २६४, ४१४
४७१, ४७३
जम्मह—२४२
जंमि—३१४
जम्मु—६८७
जंबु—४३
जय—६६६, ६६७, ६६२
जयकु—६
जयजयकार—५६५
जयन—१५२
जर—७
जरदकुमार—६७३
जरदकुमार—६७४
जरासंध ४६५, ५२४, ५३८
जरी—२३३
जल—२०५, ३६४, ५२६
जलमहू—१०६
जल सोखणी—१६३
जलहर—५६१
जव—६८, ६६, १४७, १६३, १६४,
१६७, २०८, २१६, २६५,
२६६, २६७, ३७२, ४२६,
४६३, ५४०, ५४३ ५६०,
५८१, ६४७, ६१२
जवइ—५६७
जवते—५६६
जवहि—१८३
जवसंवर—१६४
जस—३१६
जसु—७००
जसोधर—२७०
जहु—२४३, ३१६,
जहां—३८, ६०, ९२, ९४, ९५
१०४, १३४, १३०, १४३,
१४७, १६६, २१५, २६०,
२३५, २३८, २४०. २४८,
३३८, ३४३, ३४२, ३४४,
३६१, ४१६, ४२६, ४३४,
४५२, ४६३, ५४४, ५६३,
५६६, ६४०, ६४६, ६६५
जाहि—३०, ६६, १२६, १४०, १५०
१७५, २२१, २६३, ३१५
३१७, ३१८, ३४६, ३६०
४०६
जाइ—३५, ५८, ६०, ६२, ६७,
८५, ७६, ८१, ८३, १०१,
१०५, ११०, ११४, ११६,
१३०, १३६, १४१, १४३,
१५०, १५७, १५६, १६३,
१७५, १६८, २६०, २२४,
२३२, २३७, २३८, २४६,
२५१, २५७, २६१, २६३,
२७६, २८७, २६४, ३३८,
३४४, ३४५, ३३६, ३५२,
३५८, ३५६, ३६०, ३६१,
३६७, ३६८, ३७१, ३७३,
३७५, ३७७, ४०५, ४३४,

४३५, ५६३, ४८६, ५१७,
५२६, ५४३, ५४५, ५५०,
५५१, ५५७, ५६०, ५६३,
६०६, ६१६, ६२६, ६२८,
६४३; ६५३, ६५८, ६६०,
६६२, ६६८, ६८०, ६९२,
६६८

जाइति—५५२

जाके—११२

जागइ—१२६

जागरण—१२२

जागहु—१२७

जागि—६६, ११७, ६७२

जागिउ—१२८

जाग—१६०

जाण—१३८, ३००, ३०१, ३०२,
३०४, ३५७, ३६०, ४६०

जाणइ—३६, १२६, १४४, १५७,
१७७, १९६, १९२, ३१५,
३४४, ४४८, ५३५, ५६६,
६०७, ६१०, ६२४, ६७७,
६७८

जाणउ—१४६, ४०५, ४६६

जाणहि—२०

जाणहु—६३६

जाणि—४, १३३, १३८, १६५,
२०३, २०८, २४१, २४४,
३८७, ५६२

जाणिउ—६५, ७६, ४२६, ५६५

जाणिए—१६

जाणिक—४७४, ४८६

जाणिति—४३६

जाणी—२४१, ४५८, ६४५

जाण्ठु—१३८

जाणुँ—१६५, १७५, २५३, ३२०,
४६८, ४७४

जाण्पोउ—६३३

जागो—१७, ७२, ७७, २८०, ३८१
५२७, ४८३, ५३६, ५४१,
५५७, ५८२, ६४३, ७०१

जाल—६६४

जालि—६५७

जाबउ—२३, ५६

जाबउराइ—६२

जाबउराउ—२७, १०६, ६०१

जाबउमीर—५४

जाबऊराउ—१७

जाबम—४६१, ५२६, ५५५, ५६०,
६३८, ६५५, ६६५, ६६६,
६७५

जाबम्ब—५०२

जाबमराउ—४७५, ५१७

जावमराय—२४२, ६३६

जावमुराउ—६४०

जादव—४६८, ५५८

जावणिह—४७४

जावयराउ—१२८

जावो—४६६

जावो—४३८, ४६०, ५०२, ६२५,
६४३

जावोनी—४५७

जावोराउ—५२५

जानि—६६५

जाप—१०३, २२६

जाम—३२, ५४, ६८, १२२, १४५,
१६३, १८१, २८०, २८२,
२६२, ४११, ५०१, ५१८,
५१६, ५४०, ५४२, ५६४,
६२२

जामवंती—६०८
जाम्ब—५२८
जायो—२७४
जालइ—४४०
जालामुखी—५
जासु—५१
▲ जाहु—१७७
जाहि—१०१, ११२, ३०१, ४३७,
४४२, ४६४, ५१६, ६८७
जाहु—३८९
जिउ—५५३, ६८६
जिउजामुति—५७९
जिण—७, ११३, १८७ २६६,
२६७, ३२४, ५१७, ६७७
जिणइ—४६०, ४७०
जिणऊ—४६१
जिणभवण—२९५
▲ जिणभवणु—१८७, १८९
जिणभूवण—२७
जिणमु—१६६
जिणवर—२, ३१४, ६५९, ६७५
जिणवरु—१२, ४६१
जिणवाणी—६६८
जिणसासण—६
जिणहु—६६४
जिणि—५५२, ६२७, ६५१
जिणिउ—२११, ५१४
— जिणिंद—६५९
जिणिवि—१७४, ४६१
जिणु—६५८
जिणो—५०८
जिणे—५०२, ६१८
जिणेसरु—६९६
जितइ—५०२
जितयो ५४७
जिना—६३, ७५, ११९, १५९,
३०५, ३५३, ३७१, ४११,
४२०, ४८१, ६६४
जिनके—४६०
जिनुवरणु—६६७
जिन्हहि—५०२
जिन्हि—५३६
जिम्व—४१२, ४१३, ६६०,
जिम—१०४, १०६, ४९०, ५०५,
५८९, ६८३
जिमहि—५५९
जिमु—१८१
जिमि—१०७, १३६
जिरयउ—१८३
जियत—१८५
जिसकी—५७२
जिहां—८६
जिहि—४७, १२७, २६४, २६९,
२७३, २८४, ३१८, ४८०,
५१३, ५५०, ५५२, ५५३,
५६५, ५९०, ६००
जीउ—२२०, २३९, ६६८, ६८३
जीतइ—५३६
जीतहु—१६५
जीतहुगे—७३
जीतिउ—५३८, ६५१
जीत्यो—५४८
जीभ—२७२, ४८९, ५३९
जीव—२३०, ४८५
जीवण—४०१
जीवत—३७०
जीवदानु—५११

जुगत—३०४
जुगतउ—२४०, २४८
जुगति—४८, ४३४
जुगती—२४६
जुगल—३९८
जुगलु—२११, २३६
जुझ—१६७, २७८, ४९७
जुझइ—४४२
जुझएह—२०६
जुझत—४६६, ६४८
जुझु—२१०, ५२६
जुध—१६५
जुबल—२३५
जुबलु—२१७
जुड़ी—३४३
जूझ—१३८, १६८, १८२, २२४,
४४८, ५१४,
जूझइ—४५१, ४६२
जूझण—४७८
जूझि—१८१, ४९८, ५०१, ५५५
जूझू—१८०
जूथा—६१३
जूह—१६९
जेठउ—११४, ११९, ६७७
जूत—२८५
जूधु—४९९
जोत्वणु—४३१
जोते—३७५
जोव्वण—३९०, ४ ३
जोव्वणु—३६१
जोव्वहिंगे—३९२
जोनि ५६०
जेनि—५५१
जंबण—५००
जैसे—१२४, १८६
जेहहि—३२६
जोइ—४०, ३०५
जोइस—४७०
जोइसी—४७०, ५७५
जोगु—२९, ४०, ९४, ३७०, ४४८
जोजण—१६
जोड—३२
जोडइ—२११
जोडि—९३, १४८, १९१, २०२,
२२२, ३५३, ४५५, ७०१
जोति—३१८ ६१२
ज्यो—५०४
ज्योति—६६०
ज्योनार—६५३, ६६२
जोवइ—१८९ ३९६

झ

झकोलइ—१९
झणी—३९२
झपाण—४८७
झल—५२५
झाणु—६९०
झायउ—६९०
झाल—१७०, ३८९
झावहि—६९६
झुणकार—१२०
झुरत—१४५
झुलाइ—९७
झूठउ—११९
झूलति—९८

ट

टंक—३६९, ३७०, ३७१
टंकारित—२८०
टंकारू—८०, ४९५
टसटल्यउ—५४१
टलिउ—६७
टर्र—११८
टल्यउ—२४९
टांग—३८२
टाटस—४७८
टाल—२५८
टीको—३६२
टेकनु—३६०, ३७६
टोइ—४२५
टोपा—४७८

ठ

ठयउ—४४, २७६, ४३६, ५२४, ५६२, ५७५, ५७६, ५८७, ६१६
ठयहु—२२३
ठये—६५५
ठयो—६०, ५२८, ५६२, ६१६, ६२२
ठवइ—३०
ठवहुक—३२७
ठाइ—२०, ३०, १०९, १२६, १५७, २३०, २८३, २९५, २९६, ३२७, ३४४, ३८९, ४१२, ४३७, ४७३, ४८१, ४८६, ५०४, ५३७, ५४८, ५५१, ५७४, ५८७, ६१५, ६१६, ६२५,
ठाउ—२३, २८, ४५, ५६, ५८, ७१, ८०, ८२, १२९, १५२, १५५, १५६, १६७, १६९, १७८, १९८, २३७, २४२, २६६, २६९, ४१२, ५५४, ४७१, ४९३, ४९४, ५०३, ५४३, ५५२, ५७२, ६४०,
ठाउँ—५२२
ठाठा—६८, ९०, ४७६, ५००, ५८०
ठाकुर—२९, ३३, ११६, २८२
ठाढ़े—४३९
ठाढी—१०४
ठाढो—१९०, १९९
ठाण—१८१

ड

डरइ—१९९, ३०८
डरहु—३३४
डसइ—१६८
डहणु—४६८
डाभहि—५५६
डोम—१२९, ६३६, ६४४, ६३७
डोरे—४१६
डोलइ—३१७
डोलहि—५७६
डोले—२८०

ढ

ढलइ—२३, ५८२
ढलीप—६४३
ढल्यउ—७६, ४७४

ण

णंकालु—२१४

णंवरा—१८३, ६१४

णयर—८५, ५९५

णवि—१

णविवि—१२

णवेसु—६७

णयणाणावत्थ—५६१

णाण—१२

णारि—२२६, ४१९

णिज्जल—३१४

णिगाय—२

णिमि—६८८

णिय—८५, २६२, ३१५, ३५६, ६१०

णिलउ—१२

णिवसइ—२१४

णिव्वाणा—२३२

णिसुणह—२७१

णीणासु—१२

त

तइ—७६, २१४, ३०३, ३९२, ४६५, ५१०, ५१५, ५१६, ५२३, ५५०, ५७३, ५७४, ६२६, ६६६, ६७८

तउ—२७, २८, ३३, ३६, ४८, ५०, ५८, ५९, ६३, ६५, ६८, ८५, ९४, ९५, ९६, ९७, ९९, ११९, १०२, १५२, १६७, २१२, २१५, २२६, २२७, २४९, २५०, २७७, २७८, २८३, २९७, २९८, ३०३, ३०७, ३१७, ३६८, ३७१, ३८४, ३८५, ३९८, ४०३, ४०५, ४०६, ४१३, ४२८, ४३७, ४३८, ४४२, ४५७, ४७१, ४७४, ४८६, ५०६, ५०८, ५१०, ५१५, ५५१, ५८३, ६०१, ६१८, ६३७, ६६८, ६७१

तणउ—११, ९९, ११६, १६७, २६८, २६९, ३००, ३०५, ३१५, ३१८, ३१९, ३२२, ३७६, ३७९, ४२१, ४४८, ४६६, ४९४, ५४९, ५५०, ६०३, ६१८, ६३८, ६६९, ६८०, ६८४

तउनि—४०

तउपट—३५१

तक—१३७, ६४३, ६५३

तखिउ—३२७

तण—८६

तणउ—३९, ९५, २२५, २६८, २७८, ३२७, ४०६

तणो—४४, ५६, ९४, १२३, १२८, १४८, १५९, १९२, २४१, २४२, ३६२, ३८२, ४३३, ४७२, ५०९, ५१६, ५९७, ६०६, ६२३, ६४०, ६७८

तणुउ—३१४

तणे—३४६, ४३०, ५२३, ५२६, ५७८

तणँ—६३८

तणो—१६९, ५३४

तणौ—११३, ३६७

तसपि—३६
तन्नुर—५६१
तंखणु—५०८, ६४५, ६६१
तंभिणी—४१
तंखणी—२८८, ५०१, ५१८
तंखिणी—१२३, २४२, ५६५, ६३५
तन—४२२
तनी—५६५
तनो—३३२
तप—१६?, २७४
तपचरणहु—६७५
तपु—६७७
तर—६७, ३४२
तरुणो—३३३
तल—६३, १२५, १२६, १६२, २४४, ३८१, ५८४
तलही—१२६
तव—५०, ६६, ७८, ८३, ८४, ८७, १००, ११२, १२६, १४८, १६२, १६६, १७१, १७२, १७६, १८३, १८४, १८५, २-२, २०७, २१०, २२८, २३०, २४६, २५४, २५६, २६३, २८२, २८७, ३०२, ३२०, ३५६, ३५१, ३६६, ३७२, ३६६, ४०४, ४०७, ४२५, ४२८, ४४२, ४४४, ४४७, ४५३, ४५६, ४६६, ४६६, ५०२, ५०७, ५१६, ५२०, ५२४, ५२७, ५३०, ५३१, ५३५, ५३६, ५४६, ५५१, ५५४, ५५८, ५७५, ५८३, ५८७, ६०५, ६०६, ६१०, ६२२, ६४८, ६५१, ६५२, ६५४, ६५५, ६६५, ६८४
तवइ—६८, २६६, २५५, ३५१, ३५८, ४३७, ४५५, ४४६, ४८८, ५३३, ५३७, ६०२, ६१६
तव्व—५८४
तवहि—१८५, २२०, ३२६, ४०८, ४१२, ४७२, ६०६
तवहो—६८२
तवु—२६५
तस—३८५
तसु—५४, ५६, १०८, १५६, १६२, १६५, २३६, ५०७, ६१२
तह—३६, १२७, १४७, १५१, २१७, २२०, २३६, २६३, ३८७, ४२१, ४८८, ५६८, ५६७, ६०४, ६१३, ६२१, ६३४
तहतह—२२६
तहा—२५, ३८, ५३, ५६, ६२, ८६, ६२, ६४, ६५, १०२, १०३, १२२, १२४, १४६, १५१, १५२, १५३, १५५, १५८, १८०, १६६, २१४, २१८, २२०, २२५, २२८, २५०, २५८, २६१, ३२३, ३२६, ३३८, ३४३, ३५२, ३५४, ३५५, ३६१, ३६८, ३६८, ४१६, ४२६, ४३२, ४३४, ४५२, ४५४, ४६३, ४७४, ५४४, ५६६, ६०८, ६०६, ६१४, ६१६, ६५०, ६६३ ६६५

तहि—८, २१, १२६, १५०, १५२,
१५५, १५६, १६४, १७३,
१८०, १६०, २०८, २१५,
२१६, २१६, २२४, २३०,
२४१, ३२६, ३६३, ४१५,
४२८, ४५०, ४५४, ५१७,
५६१, ५८६, ५८८, ५६६,
६१६, ६४७, ६६८, ७००
तहरि—५६२
ताकी—१५४, २४३, २७१
ताके—१६८, ३२४
ताको—१५४
ताज—४२७
ताभे—४८३
ताम—३२, ३६, ७७, १२२, १४५,
१६३, १८१, २६१, २८०,
२८२, ४११, ५०१, ५१८,
५१६, ५२८, ५४०, ५४२,
५५५, ५६४, ६१०
तारणी—१६२, २०४
ताल—२४, ६२, २६४, ३६३, ५८०
तासु—५१, ६४
तास—६१३
ताहू—१६२
ताहि—५०, ५२, १७७, ३०४,
३७०, ४०६, ४४०, ४४२,
५२४, ५६१, ६८७
तिउ—३६४
तिजयशाहु—१२
तिए—६०३
तिलि—६४१
तितउ—३६०
तिन—१६७, १७०, ३५०, ४८५
५६५
तिनकी—२४४
तिनके—२४
तिनसु—३४३
तिनस्यो—४०२
तिन्हि—१, ६५, ३७२, ६६०
तिन्हु—३४१
तिन्हहि—१६७
तिनहु—४२२
तिनि—४६, ८८, २६६, ६१६
तिनी—८६
तिपत—५०५
तिम्बह—२६८
तिम—१६७, १७०, ३५२
तिमुतिमु—३८६
तिय—२६४
तियबर—२०
तिरउ—६६७
तिरिय—४२, २६७, २६६
तिरियहि—२६७
तिरी—२४३
तिलकु—२६, ५६२, ५६६
तिलोत्तम—५५
तिबद्द—२६८
तिस—२, ३६, १२८, १५७, ४७३,
४८६, ६२५
तिसके—१३४
तिसको—६२५
तिहु—२०४, २८३, २६३
तिहा—२०५
तिहारउ—२४३, २८८
तिहारे—५१४
तिहारें—४८०
तिहारे—३७८, ५४६
तिहारो—२८६, ४२१, ४६३

तिहि—१४, २०, २२, ३०, ३७, ४१, ४२, ४९, ५७, ८६, ९४, १०९, ११२, ११३, १२६, १५६, १५७, १६४, १७०, १८३, १८८, १९८, २०१, २०५, २११, २१५, २१८, २२५, २३७, २४२, २४३, २७१, २७३, २७६, २८४, ३०६, ३२०, ३२७, ३३५, ३४५, ३५२, ३५५, ३७३, ३९१, ४१२, ४१६, ४३२, ५१३, ५३९, ५४८, ५५१, ५५२, ५७४, ५८७, ६००, ६०८, ६०९, ६१०, ६२४, ६४१, ६६१

तिहिा—६०८

तिहिस्यो – ५५०, ५५३

तिहु—२१०

तीजो—२९०

तीजे—२७१

तीन—४०२

तीनखंड—२१

तीनि—२०३, २४५, २४६, २७१, ३०६, ५२१, ५४०, ५८३

तीनिउ—२४७

तीन्यो—२६३

तीस—१२८

तुजि—५२१

तुटि—३७१, ५२१

तुंकहि—२६१

तुण्हु—४२९

तुन्हो—३८५

तुम—२८, ४९, ६२, ११३, ११४, ११७, १२७, २८९, २९०, २९७, ३०२, ३३२, ३३३, ३३४, ३८०, ४२४, ४३३, ४६४, ४६६, ४७३, ५१५, ५२३, ५५०, ६२३, ६२४, ६२८, ६२९, ६६७, ६९४

तुमि—१०८, ३०५, ४४८, ४९४

तुम्ह—१२७, ४२०

तुम्हारउ—२६

तुम्हारो—३७०

तुम्हि—२४८, ३४०, ३८०, ४०७, ४२०, ६४१

तुमहि—४७०

तुम्हो—४७२

तुरंग—३५९

तुरंगु—१२७, ३३१, ३५८

तुरंत—६२३

तुरंतु—१३५, १७१, २१३, २३७, २९२, ४८२

तुरय—५२९

तुरगम—३३१

तुरिय—६८, २५९, ३२३

तुरिहय—१७३

तुरोय—६७, ३३५

तुरीयउ—३२५

तुरी—३३५, ३४०, ४९५

तुरीन—४७७

तुव—३१४, ३११

तुह—२४२, ५०९, ५४९, ५११, ६४०

तुहारे—६२९

तुहि—५०, १४८, १६७, १९०, २५७, २७८, ३१९, ३२२,

३७१, ४०७, ४७२, ५१५, ५७३, ६८५
तुहो—७००
तुह—५११
तूटे—५००
तुटिगो—५१६
तूठउ—१७२, ५७७, ५६०
तूठी—३७७
तूर—३४
तूरी—५०३
तूव—२५५
तेउ—३६०, ५८६
तेज—५२५
तेण—१५६
तेरउ—६६, १७८, १६७, १७८
तेरह—६८६
तेरे—५१६
तेल—१४२, ३५६, ३५७
तेसो—५७६
तोडइ—२१३, २६१
तोडहि—२१०
तोडि—२६१, ३५१, ३७२, ५२०
तोडिवि—६६२
तोडी—२०६
तोपहु—४६७, ४७१, ५३०
तोरण—८६, ५६३, ५६५, ५६१, ६५५
तोरणु—५७६
तोरी—३५४
तोहि—७४, २५६, २६३, ३०४, ३३०, ३७२, ३६६, ४०८, ४१४, ४४७, ४५५, ४५६, ४५७, ४६६, ४६३, ५११, ५१२, ५२२, ५७४, ५८३, ६०२, ६०४, ६०६, ६४३, ६६७
तौहि—६०६

थ

थणहर—१६२, २५०
थंभ—१६४
थंभीणी—४०१
थरहरइ—६६२
थल—४७४, ५२६
थाके—१४१
थापिउ—२५२, २७२
थापे—१२१, ५६१
थाल—३८७, ५५२, ५७०
थालु—६१
थुलिवि—६६३
थुरे—४२२

द

दइ—२८, ४१, २७०, ३१५, ३३०, ४२७, ५८५, ६४६
दउ—२००, ५४२
दक्खण—४८४
दखु—२५७
दंत—२१६
दंड—५
दक्ख—१४२
दक्खण—३४६
दरद—४८३
दर्पण—३१
दर्तु—३०१

दल—२१, ७१, ७५, २६१, २७६, २८३, २८५, ३२०, ४८९, ५२६
दलवल—२१
दलु—७२, ७५, ८२, १७१, २६२, २८२, २८६, ५३२, ६५९
दस—९, १२६, ३३५, ३३६, ४२९, ४४१, ५२६, ५५६, ६९९
दसइ—४९८
दसदिसार—६७५
दसह—४६६
दहि—५७०
दाउ—२४८, २५४
दाख—३४७, ३४८
दाए—३००
दाडिम्ब—३५७
दांत—३९५
दावानल—७२
दाहिण—१४
दाहिणइ—५०७
दाहिणउ—५०७
दाहिनी—४८४
दाहु—१४८
दिखलाउ—३३४
दिखलावहि—४५६
दिखलावहु—४९४
दिखाइ—४६४
दिखाउ—७४
दिखालइ—१८६, १९७
दिखालउ—४३२
दिखालि—६१०
दिखालिअ—५४
दिखा—४०९
दिखावइ—४६९
दिखावहि—४९३
दिखि—२५२
दिखियावइ—६९९
दिगु—५८७
दिजइ—६५९
दिढ़—१२३
दिठ—४२९
दिठउ—३२, ३३७
दिठि—७६
दिठु—२८२, ४११
दिढु—६५९
दिन—११, १११, ११५, १६३
दिनउ—३८५
दिनि—६२१
दिपइ—३१३, ६०१, ६६०
दिवस—११०, ४०३, ४०४, ४३०, ६१६
दिवसु—३५६
दिवावइ—६०६
दिस—१९, ४८४
दिसइ—१६१
दिसंतर—४१०
दिसा—४६६, ४८?, ४९४, ४९८, ५५८
दिसि—१४
दीख—४०९
दीस्या—?७५
दीजइ—४४६
दीजे—४८५
दीठ—५६
दीठउ—६२, ८६, ९६, १४७, २०९, ३२०, ४४२, ५१४, ५१८, ५२३, ५४५, ५५०, ५६०, ६३६, ६३७, ६९०,

दीठि—५०, ६३१
दीठी—२७, ४१, ६८, ६६, २०१, २३६
दीठे—३७, ३४४, ३६७, ६५६
दीणउ—६४८
दीनउ—२६, २१६, ३३०, ३३६, ३७२, ३८७, ५११, ५२०
दीनी—४४, २२३, २२८, २५८, २६७, ३४३, ४०८, ५७४, ६५४
दीने—३५०
दीप—५७८
दीपइ—१६१
दीपो—४०२
दीस—३२४, ६६३
दीसइ—१६, १८, २२, ७२, २१७, ३१३, ३१६, ५०३, ५२६, ५६२, ५६६
दीसहु—१७
दीसहि—१६२, ४८२
दुइ—३३, ७१, ७६, २११, २२२, २३५, ३०६, ३४१, ३४६, ३५३, ४०१, ६१७
दुज—१३६
दुक्खे—४, २७०
दुक्खो—२७६
दुख—१२५, ४२६, ४४५,
दुखइ—३७०
दुजणा—६८६
दुजे—३०६
दुठ—६६६
दुड्ड—६६७
दुरिउ—६
दुवार—४४२
दुवारि—४३६
दुवाय—४४१
दुवारे—६३६
दुष्ट—७६, १२०, ६३२, ६८५
दुह—८, १६१
दुहागिणि—१०७
दुहु—१११, ११५, १२०, ५८४, ६२४, ६५७
दूखित—६२६
दूखपो—६३०
दूजइ—११८, ५२३
दूजउ—५२४
दूजी—१६७
दूणो—८१
दूत—६०, ११५, ११७, ११८, ४३७ ६१६, ६२०, ६२८, ६४१
दूतए—६६७
दूतह—११४
दूतु—४३५
दूधक—२१२
दूरउ—३८३
दूरह—३३३
दूरि—६६८
दूस—५७०
दूवाहि—४६२
दूह—६८६, ६६६
देह—३, ५, ६४, ७६, ११७, ११८, १६७, १७२, १८४, २११, २१३, २१७, २२२, २६८, २६६, ३००, ३०१, ३०२, ३४१, ३७६, ३७७, ४७८, ४६२, ५७०, ६००, ६१७,

६१८, ६२५, ६२९, ६८४, ७००
देउ—२११, ३२८, ६०३, ६१३, ६९६
देक्खइ—३८, १०५, १३१, १३२, १८३, १८९, २८१, ४२५, ५०३
देखत—३१, ३५२, ५१२
देखयउ—१३२
देखहु—१३४
देखाहि—३३०
देखि—३२, ४३, १२५, १४१, १५६, १५९, १७६, १७७, १८४, १९०, १९९, २०२, २०५, २३०, २३९, २६०, २६६, ३०८, ३१३, ३१५, ३२६, ३६५, ४२४, ४३९, ४५५, ४६४, ४८७, ४९३, ५०५, ५३४, ६४८
देखिउ—६८२
देखित—५८६
देखियउ—३१, ४३, ५१८
देखी—९८, १३१, ३५९
देखीयउ—४८८
देसु—३०५
देव—१५, २८, ५७, ९२, ३१७, ३७०, ५४७, ५८८, ५९४, ६६६, ६९७, ६९८
देवता—६९७
देवतु—५३५
देवल—१८
देवलहि—६७
देवि—६६६
देवी—५, १०३, १०६, १०७
देस—१४, ३७, ३८, ३४४, ५९६
देसु—१५२, ६८८
देह—१२१, ३९५
देहरउ—५७
देहि—१०, २४६, २४८, ३८२, ३८३
देहु—४, १०६, १७१, ३०५, ३४०, ३९९, ४२०, ५८८, ६२४, ६२७
देहुरह—४९
देहुरे—५७, ६१
दैयसु—१९८
दैव—५६०
दोइ—१८१, १८२, ४५१, ५३६, ६१५
दोउ—८१, १८१, १८२, २८१, ४६२, ४८९, ६३६, ६४२, ६५५
दोवइ—२७६
दोस—९६, २७८
दोसु—९३,
दौड़ाइ—३३०
द्रुह—२३६
द्रावस—३७४
द्वार—४४२
द्वारिका—५८९, ५९०, ६२१, ६२८, ६४०, ६४९, ६५८, ६६०, ६६२, ६७०, ६७१, ६७२, ६७४, ६७६
द्वारिकापुरी—१६, २७, १३९, १४५ १५२, १५७, २८९, २९६, ३१४, ५३५, ५६४, ५७१, ५७७
द्वीपायन—६७२

ढीपायनु—६७४
ढुंढ—७६, २७६
ढुंस—३५३

ध

धउत—४४६
धण—२६६, ३६२
धणुक—६४७
धणय—१६
धणुह—७०
धन—५६५, ६८०
धनकु—५२०
धनव—४६२, ५१७, ५१६, ५२३
धनसु—५२३
धनहर—७८, ५१६, ५२१, ५२८, ५३६
धनि—५५२
धनिसु—५५३
धनियउ—५१८
धनु—५५२, ६५६
धनुक—२६०
धनुके—३१३
धनुष—७६, ८२, १२७, २८०, ४८६, ५५३
धम्मु—६
धर—८१, १६८, २३०, २४४, २६७, ४१४
धरइ—२४, ३१, ६७, १४३, १६६, २१७, २५०, २५६, २८५, २६१, २६२, २६८, ३०१, ३५५, ३८५, ४१८, ४२६, ४६६, ५४५, ६३१, ६६८
धरउ—१२५
धरण—१६१
धरणि—५१५, ५६८
धरणिदु—६६१
धरनी—६३८
धरम—२६, १५४, २५२, ३६६
धर्म—२०, १५२, ५६४
धर्म्म—५६२, ६५६, ६६६, ६६७
धर्मयुत—१३४
धर्म्मह—६५८
धर्माधर्म—६६६
धरमु—६७१, ६८६
धरयउ—६१२
धरयो—५३४, ५६०, ६५३
धरहि—२५
धरहु—२८६, ६४२, ६८५
धरि—७, ९३, ८०, १७४, २७१, ४०७, ५७५, ६५२, ६६७
धरिउ—४२६, ५६५, ६६५
धरी—१६, ४४, १३१, २०३, ३६६, ४२२
धरीउ—२१६, ५५५
धरे—३६०, ४०३
धरैं—१४६
धवलहर—१५, १८
धवलहरु—३१६
धवहर—३१४
धसक्यो—२४६
धाइ—२१६, २१७, २३६, ४३१
धाइयो—५३१
धाए—२०५
धाजइ—१४१
धाणुक—७०
धायउ—५५४, ५२६, ५३२
धारविंधणी—१६५

धीजइ—१४०
धीय—५८८, ६२५
धीर—२५६, ३४६, ४२७, ४५८,
४६७, ४६८, ५१०, ५५८,
५६६
धीह—१६२, २०१
धुआ—२६३, ३१६, ३१७, ३१८,
४८५
धुणि—६४३
धुंघाइ—४०१
धुरंधर—६७७
धूआ—३१६
धूतु—२७६, २७३
धूम्पोह—४१७
धूमकेतु—१२२, १२५, १५४
धोइ—६०८
धोरो—३२५, ३२६
धोवती—३६०, ३७४
धोल—६६३

न

नइ—५६३
नउ—७, १३
नकुल—४७४
नक्षत्र—११
नगर—४२३
नदी—३६५
नन्दण—११८, १२०
नंदणवण—४६
नंदणवणु—६०
नंदणु—१२
नंदन—१०४, ११५, ४५३
नंदनु—५५३
नमस्कार—२६, ४३, १५८, २४०,
५६५
नमस्काद—३६६
नमसु—४०८
नमि—१०
नंमू—७०१
नयण—३०, १०५, १४१, १४१,
२२७, ५६०, ६५०
नयणा—६६
नयन—५६६
नयर—१५, ३७, ६०, १२५, १५८,
२६२, ३२०, ३६२, ४२३,
५६१, ५६३, ५६५, ५८६
नयरि—१२०, १३५, २६६, ३१६,
५६७, ५६६, ५८१, ६२८,
६४६
नयरी—४४, ३२०, ५५४, ५६४,
५७१, ५६०, ६२१, ६४०,
६५७, ६७०, ६७२
नयरू—५६, ८४, २७१, ३१३, ६३६
नर—६५, १६८, ५६५, ६१३, ६६८
६६७
नरनाह—४७८
नरवइ—५४, २५३, २६५, २८०,
६००
नरवे—१६७
नरायण—२८५
नरिंद—१३२, ६५६
नरेस—६६, ५७६
नरेसइ—४६१
नरेसु—१६४, ५३४
नल—३२६, ४८०
नवइ—५

नवउ—९
नवखंड—४६०
नवणी—१३
नवि—६३९
नहि—१६७, २०७
नहीं—१४७, ४८०, ४९५, ५७२, ६२०
नहु—६०, २७८, ५०२, ६२६
न्हवणु—६६८
नाइ—९२
नाइंउ—११६
नाउ—३२७, ४१९, ४२१, ४२५, ५९७, ६१२
नाक—३६३, ४२२, ४२५
नाग—२०१
नागपासी—२०५, २५६, २८२, ३८७
नागसेज—२०३, २३३
नागु—१८९, २०१, ४८४
नाचण—३४
नाचणि—२४
नाचहि—५६६
नाजु—४०१
नाटक—१२७
नाणु—२०४
नातह—६९०
नानारिषि—२५, २८, ३०, ३३, ३५, ३८, ५६, १४५, १४६, १५१, २८३, २८८, ४४५, ५४५, ५५४, ५५६
नाम—४०९, ६१४
नामु—१९८
नारद—२९, ३१, ३७, ४१, ४६, ४८, ५१, १४७, १४९, १५०, १५२, २८५, २९१, २९२, २९७, ३०९, ३१३, ३१४, ३९६, ४१४, ४५६, ५४३, ५४६
नारदु—३४, ४३, ५३, २९५, ५४४
नारदुरिषि—५०
नारायण—२८, ४३, ४७, ५१, १०१, १०२, ११४, ११८, १२७, २९३, ४००, ३०५, ३०६, ४०४, ४०५, ४५२, ४६१, ४६५, ४७२, ५३०, ५३५, ५४४, ५५१, ५५५, ५५५, ५६५, ५९९, ६१०, ६२९, ६६५, ६७०, ६७२, ६७९, ६८१, ६९१
नारायणु—२६, २९, ५३, ६४, ६५, ७९, ८५ ८९, ९४, ९५, ११७, १५३, ३३२, ३९०, ४६२, ६४०, ६५०, ६७६
नारायनु—५२
नारायुण—८२
नारि—५५, ८८, ९७, ११५, १२०, १४२, २२६, २२७, २७१, २७६, ३६५, ४२२, ४२३, ४२६, ५४१, ५६३, ५६५, ५७०, ५८४, ६०८, ६३४
नारिग—३४७
नारी—१२३
नासु—६९२
नाहि—४५, ८३
नाही—२०७, २९८, २७७, ३३२, ३७१, ४५९, ५१५, ५२२, ६०५
न्हाइ—२०५, ६०८

न्हामो—२३६
निकंटकु—१८६
निकलइ—४६१
निकलिउ—३६४
निकली—२१५, ४२३
निकालि—३८३, ५४८
निकासु—३, ८, १३८
निकुताइ—१३२, ५७७
निकुल—४५६, ४७१, ४६३
निगहइ—६४३
नीघण—६४७
निपाति—३५०
निपू—६२३
निज—६५
निजिणि—२१६
निशु—७०, ४१८
निति नित—६१, १४०
निद्रा—६६
निपजावइ—३३८, ३४६
निपाए—६५६
निभजंत—७२
निमजि—७५
निमति—५७७
निमते—५७६
निमस—२४२
निमसइ—१५२, २७१, ५८७, ५६३, ६१६
निमसं—११६, १६४, ६१४
निम्मल—१६१
नियमण—७६
नियनिय—६६३
नियरौ—१६६
—१०५, १६२
निरजासु—६७०, ६६०
निरबासु—६६४
निरास—२३३
निरुत—११२, २६३, ३६६, ४१४
निलउ—६१३, ६६६
निवली—३४६
निवारि—५४३
निवसइ—१५६, २२०
निवसहि—१६, २०
निश्चल—६७०
निच्चे—१६०, ४२७
निसाण—४८३
निसाणह—५६०
निसाणा—६८, ५६०, ५७६
निसि—१२२
निसिपुत—१२७
निसिहि—५४७
निसुणइ—३०५
निसुणउ—२६६
निसुणहु—११, १७४, ४०१, ४६२, ५४६
निसुणि—२६, ४२, ४८, ५१, ६४, १२७, १५८, १७२, १७८, १८३, १८७, १८६, २४६, २५३, २५६, २६४, २८६, ३०१, ३१४, ३१५, ३२०, ३२२, ३२८, ३३१, ३८६, ४२१, ४२६, ४२७, ४३८, ४४१, ४४५, ४५६, ४७४, ५०७, ५४३, ५६६, ६००, ६०६, ६२८, ६३०, ६३५, ६४३, ६५५
निसुणिउ—३२७
निसुणी—३०६, ५१०

निसुणेइ—४३०, ६८४
निसुणो—४६६
निसुणी—४५४, ५६५
निसुनइ—३८२
निहचे—६७४
निहाउ—५८०
निहालिउ—२०१
निहुडिउ—३६५
नीकलइ—४७६
नीच—२६८
नीची—२६८
नीबू—६५४
नीर—५२८, ५२६
नीरु—१६, ७८, ३७७
नीसरइ—६६८
नेम—२२, ३६, ५८४
नेम्म—५६७
नेमि—१०, ४६१, ६६४
नेमीस्वर—६६१
नेमिसरु—१२
नेहु—६२४
न्योते—३६०
न्योत्यो—३६२

प

पइ—६०, ३०४, ३५०, ४८७
पइठउ—३६३
पइठे—३५१, ३५३
पईपइ—४४२
पइसरइ—२००
पइसार—१३८
पउ—२४
पउलि—३१४
पएसु—५५४
पकडि—१६०
पकरि—४५७, ४६३, ५४५
पखारे—३२४
पंखि—४८५
पगारु—१८६
पचारि—३२, १६२, २११, ४५०, ४६५, ४६०, ४६४, ४६६, ५३०, ५३८, ५४३, ५४७, ६३४
पचारे—६७८
पचारै—५४२
पचास—७६
पछिताइ—४१७
पछिताउ—३६
पछितावउ—५१७
पछित्तावउ—४२६
पछितायो—२८६
पजलइ—३६
पजुलंतु—५२५
पजुन—६६४
पजून—५३२
पजूनहा—५२६
पजूसइ—११
पटरानी—३७४
पटु—१८२
पठइ—८७, १०४, १२०, ७०१
पठउ—७७
पठए—६०, २५५, ६३६ ६४१,
पठयउ—४३३
पठयो—५८८
पठायो—२१८, २२६, ६१६
पठावइ—६६६
पठिउ—१२७

पठे—९०

पठयो—९२, ६२२, ६२३

पठइ—४२०

पवइ—४२०, ५५१

पडउ—४३९

पडव्वउ—५०५

पडखु—१३८

पडह—६३८

पडहु—१७३

पडाइ—५३२

पडि—४२६, ४७९, ५१५

पडिउ—७५ १९६, ३३२, ३५९, ३७३, ४१८, ४४०, ५५१

पडिगयउ—३७२

पडियउ—१७३

पडियो—४५२

पडिहारु—४८४

पडी—६३, १५३, ५१४

पडे—४९८, ४९९, ५००, ५०२, ५५५, ५५९

पवइ—३१८

पढण—१२७

पढम—६१३

पढमच्छ—१३

पढायतु—३७९

पढाविइ—१७६

पढं—६१५

पणामइ—१

पणावइ—४

पणावहु—२

पणि—२९९

पत्थय—२९५

पताल—६८६

पलिगइ—२६६

पसियाइ—४०५

पयंतरि—४९२

पदमचलीण—४

पद्मपुत—१४७

पदमावती—५

पद्मप्रभु—८

पवारय—५२, ३१३

पन्न—१३, २४, १९६, ३११, ३१६, ४०४, ४३०

पंचकउ—४३९

पंचइ—११

पंचज—१२

पंचति—४५९

पंचमु—५९६

पंचमुवीर—६८८

पंचसय—१८३

पंचासयु—१८०

पंडव—४५९

पंडित—७०१

पंडी—५०२

पइंत—३७४

पइतउ—३७६

पंथ—४९६

पंथि—७७

पंदह—५४८

पभणइ—२५९

पभणेइ—३

पम्वणा—१३५

पम्याणा—४१५

पम्याणु—६२२

पय—१३, १९, १०६, २७१

पयठइ—२१२

पयडी—२६८

पयंपइ—३७०, ४२४, ४९३

पयसाह—४४०
पयाइ—१६४
पयार—१०७
पयाल—५६२
पयालि—१४४, १४६
पयासइ—१८७
पयासउ—४१२
पयासहु—१०८
पयासु—१२
पयासो—४०८
पयाहिण—६६६
पर—२१६, ४४५, ४६१, ४८८, ५२७
परइ—५४२, ६६७
परंखिउ—५१५
परगट—४२७
परचंड—५५८
परजलइ—६५७, २७५
परजलयउ—४४१
परजलीउ—२५३
परजले—१७०
परठयो—६२२
परणइ—४७
परणउ—५७, ६३४
परणाउ—३६
परणी—८८, ३०३
परबमणु—४१३, ५६६, ६४६, ७००
परबमनु—६३५
परबम्बण—१४४
परबम्बुण—१३०
परबम्बनु—३२०
परबवण—२२५, ३१४, ३२०, ५८४
परबवणु—१५५, १५७, १६०, १७३
१७६, १७८, १८२, १८६
१८६, ४२८, ४२६, ४६४
५४२, ५७३, ६५६, ६६६
६६८
११६ १२३, १२७ १३५,
१३६, १४६, १५४, १८७
१६२, ४६२, १६८, २६०
२६७, २३६, २७७, २६०
४६२, ५५१, ६२४, ६७५
६७७
परबवन—३८२
परबवनु—६३४
परवेस—४०८
परदेसो—३७०
परधानु—१८५
परपंचु—२६५
परभाव—४०६
परम—३१०
परमेसर—६६५
पर्यंत—३५
पर्वंतउ—५४१
परवतधारण—५३३
परघउ—७६, १४२
परयो—५३०
परसपर—३८१
परहरी—६६
परहि—५३२
प्रछन्न—१२४
प्रजलंतु—७५
प्रजलेइ—२०६
प्रतिउतर—६८४
प्रतिपालिउ—२८४
प्रबवण—५४६
प्रबवणु—५६२

प्रवचन—४५५
प्रवचनु—६७६
प्रवुवनु—१३६, १३८
प्रमाण—३६७
प्रभणइ—४११
प्रवाहु—४२६
प्रहार—४६५, ५३४
प्रहारु—४६७
पराइ—२६०
पराण—१४५, ३०८, ४७०, ५२२
परासु—४१८
परान—२७४
परापति—१८३, १८८, २३०
परि—२८६, ३०२, ३६१, ६२७, ६६२
परिउ—२५३
परिगहु—२४८, ४१६, ५७०
परिगहु—५५५, ६२७
परिणइ—२३५
परिपूनु—४२
परिभानही—४८८
परिमल—६६३
परिमलइ—२३
परिमलु—६८
परिमहु—४५
परिरहे—६४४
परिवरण—२७५, ४६०, ४६१, ४६२
परियाति—२
परिहरे—६८८
परिवार—२२, ६३७
परिहरइ—६८५
परिहरपउ—३८६
परिहरहु—३८५
परिहस—६१, ६६, १४५
परिहसु—५८६, ६१७
परिहाजउ—३२०
परी—३०६, ४०१, ४१२
परीधर—१८१
परीवरु—१७५
परीसहु—६२६
पारूति—३८२
परे—२५६, ४०३
परोसइ—३८८
परोसिउ—३८६, ३६०
परोसे—३८७, ४०३
परोसो—३६३
पलणाइ—६४५, ६४६
पलणाहु—२४७
पलाइ—८३, ३४३, ४१६, ५२५, ६४८
पलाणहु—६८, ६६
पलाणिउ—१७५
पलाणु—१७३
पलाणे—२५८
पलि—१४४
पल्वउ—५०६
पवण—५६, ७२, २५२, २६६, ३५४, ३८६, ४३५, ४४१, ६०२, ६३५
पवणि—२०
पवणु—५३३
पवन—५७२
पवयु—२८०
पवर—६६२
पवरिय—३३४, ४५६, ४६८, ४६६, ५५०
पवरिपु—४७१, ४६३, ५३३, ६५१, ६५७

पवरिशु—७४, १६६, ४६४
पवरिसु—४३४, ६२४
पवलि—४४०
पवहि—१४६
पवाडउ—६२६
पवाण—६४२
पविसु—२८
पसाइ—१४८
पसइ—४६४
पसाउ—७, १२, २८, ८४, १०६,
१६६, १७२, १८२, १८४,
२८८, ३४८, ३७७, ६४२
पसारि—४०
पसारी—४८६
पसारैं—४३६
पहु—३६, ११४, ११८, १६३, २४६
२४७, २४१, ३०२, ३०७,
४३४, ४४०, ४४१, ४४३,
४६४, ४२२, ६०२, ६२३,
६४७, ६४२, ६७४
पहुवह—३०३
पहुचाणइ—३२४
पहुण—४१
पहुर—३४२
पहुरइ—४७८, ४६६, ६०७
पहुरे—६०८
पहुरेइ—७८, ८०, १७६, २३४
पहाख—१४०, ४६४
पहार—४३६
पहिचाणइ—४०
पहिलइ—११२
पहु—४३
पहुत—६, २४, ७२, ११४, १२२,
१३४, २६३
पहुतउ—१३०, २०६, २२०, २२४,
२६१, ३३८, ३३६, ३४३,
३४४, ३६७, ४३४, ६४४
पहुतौ—४१६
पहुते—४६, १७४, २४१, २६६
४६०, ६४६, ६६४
पहुतो—४४४, ६४६, ६४०
पहुपचाप—२३४
पहुपमाल—२१४
पहुममालु—२११
पहूत—४७१, ६२८
पहूतउ—३६०
पाइ—१०६, १०८, १०६, १२८,
२००, २२३, २३०, २३७,
२३८, २६४, ४२०, ४४४,
४७४, ४४१
पाइक—२६०, २६१, ४६०
पाइकस्यौ—२६१
पदात—११६
पाउ—१८२, २६८, ३२६, ४८४,
४४४, ६४६
पाख—१६३
पाखर—२४६, ६४०
पांच—१३६, ४६६
पाचसइ—२४३
पांचसैं—२४१
पाचसौ—१६४
पाछइ—३१, ६६, ११२, ४१४, ६१६
पाछिलउ—४१३
पाटघरणि—४३
पाटण—२७१, ४८७
पाटमहादे—६४०
पाठइ—४४४
पाठए—३३४

पंठयउ—५८७
पाढयो—४२५, ६५८
पाडल—३४५
पाहिड—१९७
पांडव—६६१
पांडवह—४६१
पांडो—२७६, ५५८
पाण—६३४
पाणन—६४३
पाणिउ—३६१
पाणिगहनु—६५६
पाणिगहणु—५८५
पाणिग्रहन—८८
पाणी—१६१, ५८८
पाणीअंजणी—१९४
पातलि—३८८
पातालगामिनी—१९३
पाथि—४३५
पाप—३२४, ५८४
पापह—१९६
पावउ—६७५
पायो—५०२
पार—१२३, ५६२
पालक—३५२
पालकु—१८५
पालि—६४२
पालिउ—२४४, ५७३
पाव—३३९
पावइ—३६२, ३९२
पावडी—२०३, २११, २३३
पावय—५८२
पावहु—४५८
पास—१०१, २९५, ४१७, ५५०, ६२२, ६८८
पासि—१९७
पासु—१०, १२६, ४२०, ६७०, ६७४
पाहुड—१२७
पिउ—२६७
पिउलजूरी—३४८
पिता—४०८, ५५०, ६५१
पियउ—३६१
पियरे—१६२
पीतियउ—४४८
पीयरे—३९७
पुकार—६२७, १२८, २५१, ३५४, ५०५, ६४४, ६४५
पुकारिउ—६३
पुकारियउ—६७, २५८
पुकारी—६५
पुकारयो—३५२
पुङ्ख—५४
पुण—११६, २३०
पुण्ठ—४, ५४
पुणि—८५, १०३, १०६, २१४, २६३, ५६४
पुत्री—६२०, ६४२
पुनु—४१३, ४२९, ६६६
पुन—१८८
पुंन—५६३, ७००
पुनवंत—२३०
पुंनवंत—५४७, ५६२, ५९८, ६११
पुंनवंतु—५११
पुन्नवु—२३२
पुन्नहि—२३२
पुन्नु—३३१
पुर—३, ६९४, ६९६

पुरयन—५५३
पुराइयउ—५६२
पुराह—३१८, ३८०, ६६५
पुरायउ—५६२
पुरि—२०, ३४२, ५५५
पुरिसु ३६२
पुरी—१६, १५२, ३१३
पुव—७६
पुव्व—२४५
पुव्वाहु—२६६
पुप्फ—२३६
पुप्फबाण—२१६
पुहपमास—५२७
पुहमि—१४६, १७०, ३०६, ५५६,
 ५७७, ५७६, ५६२, ६८६,
पुहमिराय—६७
पुहमि—८१
पूए—६३२
पूछ—१६०, २१५
पूछइ—२६, ६३, २२६, २४०,
 ३२०, ३२६, ४००, ४०७,
 ४०८, ४०६, ४४७, ४५०,
 ६६६
पूछउ—४४७
पूछहु—१६१
पूछि—२६, ६३१, ६७१
पूछिउ—१५१, २२६, ४५३
पूछी—४०८
पूज—१८८
पूजइ—४२, ४५३, ४२८, ४६७,
 ५६८
पूज्जइ—६५६
पूजण—३५७
पूजा—४६, ५१
पूजी—५६५
पूंडरीकणी—५६३
पूत—११२, ११५, ११७, ११६,
 १२७, १४२, १७१, २५२,
 २८५, ३७४, ३६६, ४१४,
 ४१७, ४०८, ४५६, ४६०,
 ४६१, ४६२, ५५६, ५७४,
 ६०५, ६१२, ६३२, ६७६,
 ६७७, ६८१, ६८३
पूतउ—४०५
पूतहि—२८४, ३०६
पूतु—२४८, ४१५, ५५६, ५६१,
 ६८५
पूत्र—१४०
पून—५६८
पून्यो—६८३
पूरउ—२५४, ४४२
पूरं—४७, १२६, १४२
पूरब—१५०, १५५, १६८, २०८,
 २७७
पूरि—१२, ३६२
पूरिय—१४२, ४२३
पूरिहि—५६६
पूरे—७७, ३६७, ४१५
पूव—५६५, ६०३
पूव्व—५६३, ६८६
पूव्वहु—६८७
पेखि—१२५, २४१
पेट—१४८, ३८६, ४३६, ४५३
पेम—२६५
पेमरस—२४५
पेलिउ—५०७
पेसणु—२४६, २४८

पैठा—६०
पैम—२४७
पैसणो—२४
पौरिस—५२२
पौरिस—५५३, ५५६
पौरिसु—२३०
पौरिसु—६८०

फ

फटिक—१२, ३१५
फटिकसिला—२२६
फण—५४१
फरकिउ—५०७
फरहरइ—२५
फरहरै—१४६
फरहि—३८२
फरौ—४७५
फल—३५१, ५००
फलु—२३०
फले—१६२, ३४८, ३६७
फलयउ—२०६
फहरंत—३१६
फाडियउ—२६५
फाटहि—५३६
फारइ—२५०
फिरइ—३१, ३३७, ६८६
फिरत—३८
फिरहि—४१०
फिराबइ—२१५
फिरि—३७, ३४८, ५०३, ६६०
फिरै—३७, ६३७
फुंकाय—१८६
फुडि—६३
फुडउ—६०५, ३१५
फुणवइ—२१५
फुणि—३८, ८८, ११०, ११८, १२८, १२७, १५७, १५६, १७७, १८४, १९६, १९९, २००, २०२, २०४, २१२, २१५, २१६, २२१, २२२, २२३, २२५, २२८, २३०, २३५, २३८, २३९, २४०, २४८, २७०, २७१, २७९, २९३, २९६, ३०८, ३१२, ३२०, ३२६, ३२८, ३५१, ३५७, ३६०, ३६२, ३६३, ३६४, ३६७, ३७३, ३९५, ४०८, ४१५, ४१९, ४२२, ४२७, ४२९, ४३०, ४३२, ४३६, ४३८, ४५०, ४५५, ४७२, ४९४, ५१५, ५२०, ५२५, ५८५, ५९६, ६००, ६०६, ६१०, ६५२, ६६८, ६६९, ६७१, ६७८, ६८१, ६८३, ६८८, ६९३, ६९८
फुणिर—६६४
फुनि—२९
फुलइ—२६७
फुलवाडि—१०१, ३४४, ३५०
फुलि—३६५
फूटि—५३४
फूलो—३४४
फेकरइ—४८४
फेरहु—८२
फेर—१४
फोफल—३४८

ब

बतीस—८०
बलिभद्र—५१
बहुत—२३७, २८०, २८८
बाढी—८१
बाण—७६
बाधि—२५६
बाधिउ—२२०, २२१
बांधो—११८४
बाल—२४२, २२७, २५५, २८५, २९०
बुलाइ—२५४
बोलइ—७५, २६७, २९०, ३०६
बोलु—१७८

भ

भइ—६३, ६९, १४६, २४९, ३४१, ३५७, ३५९, ३८९, ४२५, ५१७, ६४५, ६९३,
भई—४२४
भउ—२६६, ५६०, ६४७, ६५९
भए—११, ६४, ६८, १०२, १२०, २१२, ४३३, ४३५, ४३९, ४७२, ४८९, ५४८, ५६७, ५७९ ६३७, ६५३
भगति—१०८, २२३, २३७, २३०, २९४, ५७३
भजन—५९७
भजहु—४९५
भएइ—४४, ५१, १२३, १७५, २८३, २८४, ३०१, ३०४, ३०७, ३१४, ३२०, ३३३, ३३४, ४५२, ४५८, ४८०, ४८५, ५१६, ६२०, ६९३
भगति—५६०
भगाहि—१८७
भगो—१७६
भंग—३५
भंगु—२२९, ३९४
भंजउ—१७५
भंडार—३७९, ३९३
भंति—१७
भंती—५७६
भय—१२
भयउ—८, ९, २८, ३३, ११२, ११६, ११८, ११९, १२७, १२८, १३९, १४७, १४८, १५१, १७३, १८०, १८५, २१६, २२३, २४५, २५५, २५५, २६४, २७०, २७५, २७६, २८०, २८६, २९९, ३२०, ३२९, ३३७, ३५६, ३६०, ३६१, ३७३, ३७६, ३९४, ३९८, ४०२, ४१३, ४३०, ४३२, ४३३, ४५०, ४६३, ४७५, ४७६, ४८१, ४९६, ५२०, ५२४, ५४७, ५४८, ५५२, ५५५, ५६०, ५६१, ५६५, ५६६, ५८०, ५८५, ५८६, ५९१, ५९३, ६०२, ६०३, ६१३, ६१४, ६२१, ६३५, ६३९, ६४८, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६६१, ६६४, ६७५, ६८२
भयो—२८, ६५, ७२, ८७, १०९, १५४, २०४, २३८, २६२

२५३, ३५९, ४०६, ४२८, ४७५, ५१६, ५२७, ५३१, ५४३, ५६१, ६२१, ६७६
भये—११५, १८३, २५४
भए—६७५
भर—५४१
भरइ—८५, २५६, ३९४
भरथ—१३७
भरत—५२८
भरहु—६५९
भरहुँलैत—१४, १५२, ५९६
भरमु—३६१
भरिउ—४४३, ५५२, ५६२
भरिभाउ—२६६, २८४
भरिवाउ—२१, ७४, ७६, ८३, १६४, १६९, १७१, १७८, १८२, १८६, २०२, २५९, ३२३, ३३६, ४६५, ६४९
भरि—२८६, ३१३, ३९८
भरिहि—२४
भरी ९१, ९६, ३४८
भरे—१६१
भरेइ—६१, ५७०
भरोसउ—२५७
भलउ—२८, ३२५, ३८०, ५१४, ६९९
भल्यउ—५४२
भली—२९०, ३०२
भले—२२३, ५२९, ५७९, ६५५
भलो—४७३
भव—६६७
भवंतर—५९५
भवभागु—६९२
भवियहु—६
भवणु—२९५, ५८३
भहराइ—५३१
भाइ—२४, २६, ६५९,
भाउ—७, १३, २७, १७४, २७०, २०१, २८६, ३२६, ३२८, ३४१, ३७६, ३७७, ४०७, ६०१, ६५२, ६९८
भाख—६४२
भाग—३८८
भागिउ—२५८
भागी—६४९
भाखि—३५६, ४९१
भाजउ—१७१
भाणइ—१६४
भाणिज—६५४
भाणु—२९३, ३२६
भाणेजु—६५१
भांति—१८, २५, ३४८, ३५०, ६५५
भातु—३८८
भादो—१७५
भाविम्ब—४८३
भान—३२६, ३३६, ६१८, ६७३
भानइ—१८, २८४, ३५६, ६२०
भानउ—१७१, १७८, १८६, ३२९, ३५९
भानकुम्वर—३२७, ३५२
भानकुमार—३२०, ३३८, ३२९, ३३३, ४१६, ५८९, ५९१
भानकुमारु—३२२
भान्यउ—२०२

भान्यो—४६५
भानहि—२९७
भानिउ—७६
भानु—३०९, ३३१, ३३२, ३५५, ३५६, ३५८
भानुइ—३८८
भानौ—२५९
भामिनी—५१०, ५१३
भायउ—५६०, ५६२, ६२३, ६५४
भारउ—३३५
भारथ—२७६
भारहु—६६१
भाव—६७३
भावरि—८८, ५८५, ६५६
भावहु—५५७
भासमु—१७०
भिटाव—१००, १०४
भिडइ—७८, १७९, १८०, २१४, ४६९, ४९२
भिडिउ—२०१, २१९
भिरे—४६२, ४९०
भिडे—२८१, ४९८
भिभिउ—६१०, ६११
भिरइ—१९५, २६१, ४५१, ४९०, ४९८
भिरउ—२१३
भिरहु—४७३
भिरै—६१८
भिलु—३०४, ३०८
भीरइ—५४३
भीरहि—४९१
भील—२९८, ३०७, ३०९
भीलु—३०२
भीषम—८३
भीषमराइ—६५
भीषमु—४४
भीषमुराउ—५६, ६८, ७१, ८३, ८५
भुइ—४५०
भुंजइ—६५७
भूंजही—५७८
भूंजै—६०५
भूंजिउ—५२३
भुवणु—२१४, ६५९
भुवन—५४१
भूखउ—३६१, ३७८, ३७९, ३९१, ३९३, ४००, ४०१, ४०२
भूखे—३४०, ३८४
भूंजइ—१२६
भूंजहि—११५
भूमि—३७२, ३७३
भूमिय—३१४
भूमिउ—६८३
भूली—४११
भेउ—१६५, १६७, ४६६, ६९६, ७०१
भेट—४४
भेटइ—१८७
भेटि—२३८
भेटिउ—२७, ६२, २३७, ५७३
भेटी—१५९, ६५३
भेरि—१८१, १७३, ५६१, ५८०, ६५६
भेस—२९८
भोग—९१, ५९२, ६६२, ६६३
भोगल—६८३
भोगवइ—२६७
भोगु—२३२, ५८६, ६९१

भोजन—३८५, ४१०, ४६९, ६५३, ६६२

म

मइ—५६, ३३८, ४२९, ४४३, ४४५, ४९९, ५३३, ६३२, ६३३, ६९४

मइगल—७८, १७९

मइयासहु—५१७

मखइ—३५५

मझार—८६, ९०, १००, १४२, २१२, २२६, ३६५, ४२३, ५६५, ५७२, ६३७

मडउ—४३९

मढ—१८

मण—२९६, २९७, २९८, ५१८

मणाइ—३९२

मणि—१२, १७, १६८, २९२, ३१४, ३१६, ३१९, ५९९

मणोजो—२२०

मत—२४९

मति—१

मथुराराज—४६५

मद—६७२

मइण—१२

मदसूदनु—६५१

मधुर—९७

मंगल—१२१, ५६६

मंगलचार—१२०, ५६३, ५६७

मंगलचार—८७

मंगलु—५६८, ५८१

मंगलुचार—३५७

मंजीरा—६३६

मंडप—६५५

मंडपु—८६, ८८, ५७६, ५९०

मंडलीक—५७७

मंत—२७, ६१९

मंतु—६०, १६८, १८७

मंत्र—१८७, ६१७, ६२२, ६३२

मंत्रु—५८७

मंद—५८०

मंदार—३४६

मंदिर—१५, १८, ९०, ९५, २६३, ३१७

मंदिरि—३५६

मन—२५, २९, ३२, ३६, ३८, ५४, ५८, ६५, ६८, ८४, ८७, ११०, १३३, १५४, १५६, १६६, १७२, १८९, १९४, १९७, २०२, २२७, २२८, २४८, २५९, २८०, २८६, २८७, २८८, २८९, २९१, ३२२, ३२६, ३२८, ३२९, ३३१, ३४०, ३४९, ३७१, ३७३, ३९२, ३९८, ४०४, ४०५, ४११, ४१२, ४१३, ४१७, ४८८, ४९९, ५३०, ५३३, ५३५, ५४१, ५४२, ५४४, ५५४, ५५५, ५६०, ५६५, ५७५, ६०१, ६०२, ६०७, ६०९, ६१०, ६११, ६१७, ६२०, ६२१, ६२२, ६४२, ६५२, ६५५, ६६५, ६७१, ६८१,

मनमा—३५, ४१, ४८, ६५७,

ममवि—६४७
ममहु—२२२, ५३१, ६९८
मनाइ—६२५
मनावइ—४११
मनावहि—१०७
मनि—१२२, १५८, २२३, २६८, ३०४, ५२८, ५८५, ६६८
मनु—४२, ३०८, ३२९, ४१३, ५६५, ६५८
मनुह—५१५
मनुहारि—३१४
मनोजउ—२२१, २२२
मय—३११
मयउवउ—२९२
मयगल—४९०, ५०४
मयण—५७, १६२, १७४, १८२, १८३, २०२, २०३, २११, २१२, २१४, २१८, २२०, २२२, २२८, २२९, २३७, २३९, ३४४, २४५ २४९ २६०, २८३, २८७, २८८, २९५, २९७, ३०९, ३२२, ३३८, ३४४, ३५८, ३६७, ४०१, ४३०, ४३६, ४६३, ४८८, ५१८, ५२१, ५३५, ५४५, ५५०, ५५४, ५५६, ५५७, ५६५, ५६७ ५७५, ५८५, ६०१, ६३६, ६५८, ६६०, ६६२
मयणकुवर—६२७
मयणामइ—५५७
मयणाहु—२३०
मयणाहि—५३४
मयणु—१७२, १७३, १९०, १९७, २००, २१०, २२०, २२५, २३८, २४०, २८४, २९२, ३१५, ३२०, ३२२, ३९४, ४१२, ४४७, ४६२, ५१२, ५१६, ५६०, ५९२, ५९९, ६०७
मयमंत—२६१, ५००
मयमंतु—२०१, २१३, ५०४
मयरध—२०७
मयरधउ—३५५
मयरद्ध—२२५, ३६०, ४९९, ५१५, ५२१, ५४४
मयरद्धउ—२८३, ३६९, ४५७, ५२१, ५२४, ५६२
मयरद्धहु—१६८
मयरुद्धु—४६१
मयरक्खु—१९६, ५८१
मयरक्खे—५२६, ६५२
मया—१७७
मयाइ—४१८, ४१९
मयायउ—३२३, ५२४
मरइ—१२८, ३६६, ४४०
मरउ—१२५, ४३८
मरणु—७, २६६, ४८१, ६७०
मरणा—३११, ४७१
मरणु—५४२,६७२
मरवाइ—६२७
मलचा—३४६
मल्ल—५६१
मलति—९९
मलयद्धउ—२९१
मलयागिरि—२१६
मलावस—४५१

मलावहु—४००
मल्लिनाथु—१०
मसु—६३
मसाहण—५६०
मह—४१, ५८, १६७, २५०, २५८, २६२, ४८६, ५८६, ७००
महइ—३४६
महकइ—६८, ३४५
महग्घरिव—५८
महणी—२८६
महलइ—६७८
महंत—२३०, ४२६
महंतु—५०२
महमंडल—२४३
महमहइ—३४६
महमहण—६०, ७३, ४१४, ५०६, ५३०, ५६७, ६००, ६११
महमहणु—५०१, ५१६, ५४६
महमहनु—५०६
महल—३०५
महलई—३०४
महलउ—६१, ३०१, ३०३, ३०६, ४३३, ४३४
महले—६७, ८३
महागुणराधु — ६६६
महावे — १३३, २७०, ६७३
महाहुउ—२१०, २७४, २७६, ५३६, ६६१
महि—२३२, ५०२
महिमंडल—५३२
महियल—५२८
महियलु—५०६
मही—६०५
मधु—१०, ८४, १८३, ३०१, ५१०, ६०६, ६६७
मधुयरि—१२१, ४८५, ५८०, ६५६
माइ—४१२, ४४७, ४५४, ४५६, ४५७, ४५८, ६३४, ६८५, ६८७, ६८८
माइन—६८५
माग—३०१
मागइ—३०३, ३२८, ३२९, ३७९, ४३१, ५१३, ६६७
मागि—३७९
मागित—४१०
मागी—५६
मागो—४५७
माजि—४७९
मांझ—३१, १२५, १३०, १३१, १५२, २६६, ३१४, ३१६
माठी—३४२
माड—३६४
माडे—३८८
माणस—१५१, १५३, २६६
माणिउ—५६०
माणिक—६१, २६३, ५६२, ५७०, ५७१
माधु—३३६, ६८५
माणसु—६६८
मातह—५०१
माता—२४१, ३१६, ४०५, ४०८, ४१७, ४१८, ४३०, ४३८, ५६३, ४८७, ६०२, ६०४, ६८४
माते—४७७
माथे—४७८
माथो—४१७

माधव—६५२—६६६
माण—१२, ३५, ३६, ४५, १८५, २०७, ३८९, ३९४, ४६१, ४८०
माणइ—१०६, ६३३, ६९६
माणण—२२९
माणभंग—६३०
माणहि—४८७
माहू—६४९
माया—३६७, ४९९, ६८३
मायामइ—३५५
मार—४९१
मारउ—५१७
मार्ज—१७
मारण—२५५
मारि—८३, १५७, ३५३, २६२, ३८७, ५३८, ५५१
मारिउ—२११, ५२४
मारिवंतु—२१३
मारुत—५३१
मारघो—२५०
माल—२३६, ३१९, ४५५, ५०३
मालव—५७८
माला—१२९
मालाहि—१३३
मालि—३५२, ३५३
मालो—३५४
मास—१६३, ४०३
मासह—४२४
माहू—४३०, ४९५, ६२९, ६४५
माहि—१४, १६, १०१, १२८, ६९६
मित्र—३६७
मिल—११८, १८६
मिलइ—३४, २०७, ५९२
मिस्पउ—१८९, २९९
मिल्यो—४१७
मिलहि—२२९
मिलहु—४६६, ४८१, ५८९
मिलाइ—४६८
मिलावऊ ·५६१
मिलि—८९, २२०, २५४, २९६, ५८४, ५९१
मिलिउ—४८२, ५६१, ५९०
मिलिसइ—१६०
मिली—४८, ६१, १०५, २९०, ३५६, ४१९, ५४८
मिले—१६०, १८७, ३०७ ६४७, ६५४
मिसि १८७
मेव—५४३
मुकट—१९६, २३३, ५८२
मुकहू—२१७
मुकति—६९७
मुकराइ—६४८
मुकलाइ—२८६, ३५०, ३८२
मुक्के—७
मुखमंडल—४४८
मुखह—२
मुखप्पणा—२३२
मुंभ—३१५
मुंड—१४६, २६१
मुंडइ—४१६
मुंडकेवली—६९३
मुणि—१५१, ५९५
मुणिउ—१४४, १८०
मुणिवर—२४२
मुणिवर—४८

मुनि—४०, ५३, १५८, १६३, २६८, ३६७, ४१५, ५५०, ५६३, ६७३
मुनिराइ—३६
मुनिसर—५६४
मुंबडी—५८, ६३
मुबरी—३४३
मुंबरी—६३
मुनिस्वक—२४०
मुनिवर—१५२
मुरारि—५०, ६७, ८६, ८८, ६०, ६७, १००, १०३, ५४७, ५७२, ५७५, ६०८
मुह—२०७, २४१, ३००, ५११, ६०५, ६३०, ६६८, ६७८
मुंह—१२, १६७
मुहचंतु—८६
मुहथि—४६१
मुहामुह—२२६
मुहि—१०६, १२३, १४८, २१०, २४१, २६८, ३००, ३०२, ३०३, ३०७, ४१५, ५५५, ५२३, १३३, ६७६, ६६४
मुही—२६०
मुह—६२
मूठिक—३८४
मूक—२५
मूकउ—४३६
मूंगह—११३
मूंछि—११२
मूंछिउ—४२१
मूंछो—३६५, ४२२
मुणिसुव्रतु—१०
मूष्ठ—३०१
मूंछे—२५, १४६, ३६३
मृगरी—३४१
मेइ—३१८
मेघ—१७६, २८१
मेघकूट १२६, १५६, २३७, ४५४, ५७१
मेघनादु—५२८
मेघवाण—५२७
मेघमाली—५३१
मेटइ—४७, १६८, २७८, ४८६, ६७३
मेटण—१२५, २७७
मेटणहार—६११
मेटे—३१७
मेठो—३६७
मेवनी—२१
मेरउ—६२६, ६३०
मेरी—३७१, ५२७, ६६४
मेरु—१४, ६७
मेरो—५४२
मेलइ—८०
मेलउ—५५२
मेल्हइ—७६
मेलीउ—५३३
मेह—७१, १७३, ४८३
मेहउ—३७२
मेहकूटि—१५४
मेहु—५३०
मंगल—१८०, ४६०, ५००
मंडो—३६४, ३६६, ३७२
मंथन—१८१
मैलइ—५२१
मोकली—४२४
मोखि—२६२, ३५१

मोछी—६१८
मोती—१७, ६१, ३१३, ५०३, ५६२, ५६३, ५७०
मोपहु—२६४, ४६७, ४७१
मोलु—३४०
मोस्यो—२६५
मोसहु—२०६
मोसिहु—१६०, ५२२
मोह—२८७, ६८५, ६९२
मोहण ा—६११
मोहणी—५५, १९३, २८७
मोहतिमिरहरसूर—६९२
मोहि—१७१, २४६, २४८, २६३, २६५, ३०४, ३११, ३३०, ३८९, ४०८, ४१२, ४३२, ४४७, ४५५, ४५६, ४६९, ४९३, ५११, ५४६, ५७४, ५८३, ६०२, ६०३, ६०४, ६७०, ६८३
मोहिणी—५५७
मोहहि—१५
मोहु—४३१
मोहै—४९९

य

यउ—६११
यह—१५, ५५, १०८, १०९, १९२, २०७, २१०, २२६, २२७, २२९, २८५, २९७, ३०४, ३१४, ३२०, ३२२, ३२६, ३३२, ३३३, ३६२, ३९१, ४०६, ४२८, ४२९, ४४७, ४४८, ४५२, ४५५, ४५६, ५०१, ५०२, ५०९, ५३८, ५४६, ५४७, ५४९, ६८६
यहर—४२३
यहु—१२३, ३३२, ३९२, ५०२, ५४१, ७००
याको—५३५
याण—१११

र

रए—६५५
रखवाल—२०५
रखवारे—२५७, ३२६, ३४०, ३४१, ३४५
रखहि—३१५
रचतु—१२२
रचहि—६९३
रचि—१६, २९१, २५३, ६९२
रचिउ—३९५
रचित—४५, २७७
रचितु—१२६
रची—४७, २६०
रच्यो—२९३
रण—७२, ७३, ८१, ८३, १६५, १६६, १७४, १७६, १८१, २६१, २८१, ४६१, ४६२, ४६७, ४७५, ४७६, ४७७, ४९०, ४९१, ४९२, ४९६, ४९८, ४९९, ५०१, ५०२, ५०६, ५०७, ५१२, ५३७, ५३८, ५४२, ५४४, ५४९, ५५५, ५५६, ६३४, ६७९
रणधीर—५०८
रणक—७०

रसबासहू—२६, ४१, २३८
रसहाक—४२७
रसि—४६१
रसिनामा—२२७, ५७२
रय—४३, ४६, ६५, ३४४, ३४७, ३४८, ४२४, ४४०, ४४५
रयु—५०७
रम्यो—२७०
रयण—३१३, ५०३, ५८७, ५६६, ६६०
रयणमूलु—५८७
रयणाकित—६०३
रयणसरसणी—१६३
रयणहू—१६२
रयणि—१२७, २३६
रयण—५४०
रयणनि—५००
रसइ—६५७
रसव—३२६
रव्यव—१३०, १५८, २४८, ३३१
रलो—४८, ६५८
रले—३३३, ६५५, ६६५
रस—२४७, ६६३
रसु—११
रसोई—३६१
रहु—७८, १७३, १७६, ४०५, ४८२, ५३२, ६४५
रहइ—२६८, ४०४, ४४०, ६७१
रहउ—३४०, ४४६, ५७६
रहटमाल—६८५
रहटाम—४४३
रहयउ—५३३, ५३८
रहवर—५५६
रहबह—२६२
रहुस—२६
रहस्यउ—१२७
रहहु—६७१
रहाइ—१४४, १५७, २१६, २८५, ५४५, ४६५, ६८०, ६८१
रहाए—६०
रहायो—२८४
रहि—७४, ८१
रहिउ—२०५, ६२६
रहिवर—७०, १७५, २५६, ५००, ५०४, ५२६, ५२६
रहे—६४४
रहैं—५३७
रहोगे—६८३
राइ—६०, १८५, ५७७, ५७६, ६४१
राइर—१६
राउ—२१, ६४, १२६, १३३, १३७ १५३, १६६, १७२, १७४, १७७, १८३, १८४, १६१, २३८, २४४, २५६, २६६, २६६, २७०, २८२, ३८४, २८६, २८८, ३६६, ३७२, ३७३, ४४४, ५०३, ५६०
राको—१७१
राखि—८४, २०५, ५२३
राखिउ—२५७
राखियउ—१८५
राग—३२४
राज—२२, २३२, ५६२ ५६८, ६०५, ६११, ६५८ ६७७
राजकुयरि—२३५
राजा—६६, १३४, १६२, २५१, २५७, २५८, २६६, ६४५,
राजु—१११, १८६, १६१, ५२३,

४७६, ४८६, ४६१
राजभोग—६७६
राडि—२७५
राढो—८१
राणो—६१, १११, १३३, २७४, ३७६, ३७७, ३७६, ३८३, ३८८, ३६१, ३६३, ३६४, ३६५, ४०५
राणे—५२६
राति—११०
राम—२७५
रामहिड—२६४
राय—२५५, २५७, ४६०, ५८६, ६४०
रालि—३५८, ३८३, ५३६, ५५३
रालयउ—३६५, ४२८
रालिपाउ—४४६
रावण—२७५
रावत—७०, ७५, १७८, २६१, ४६०
रावतस्यौ—२६१
रावल—४२५, ४२६
रावलइ—६५०
रावलुहो—३३८
रिधि—६६६
रीति—६६३
रिद्ध—२६३
रिस—६६६
रिषभु—८
रिषि—२६, ३२, ३३, ४६, ४६, १५६, २६८, ५४५
रिसाइ—३४, ३५, ३०२, ३३६, ४२८, ४४५, ४४६, ५८३, ६३४
रिसाणउ—४११
रिसाणा—२५६
रिसाणो—२८२
रीति—३६४
रीध—५४४
रुषमणी—५०६
रुखिमणी—४४७, ५०८, ५८३, ५१६, ६४०, ६५३
रुकमिणी—४७, १०४, १०७, १०८, १०६, १४८, २४३, ४४२, ४४६
रुकिमिणि—१०२
रुक्मीणी—१५४
रुकिमीणी—१५६
रुकुमिणी—६२१
रुख—३५१
रुधि—५३३
रुवनु—६६
रूप—३१, ३२, ३६, ३६, ५५, ६८, ६७, १०३, १३४, १६०, ३१८, ३१६, ३११, ३३८, ४०३, ४५०, ५०२, ५६८, ६१२, ६३४, ६३६, ६५०, ६८४
रूपचंद—८५ ६२३, ६३६, ६४५, ६४६, ६५८
रूपचंदु—८४, ६२५, ६३४, ६५०
रूपणि—४०३
रूपि—४५१
रूपिणि—५०, ६१, ६२, ६५, ६७, ६६ ८४, ६०, ६५, ६६, १०२, १०४, ११६, ११७, १२७, १४०, १४३, १४६, १४७, १६०, १६३, २३१,

३९९, ४०५, ४०७, ४११, ४१३, ४१७, ४१८, ४१९, ४२५, ४२६, ४२८, ४२९, ४४१, ४४६, ४६३, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४७१, ४८०, ५१०, ५११, ५१२, ५१५, ५१२, ५४४, ५६१, ५६५, ५७४, ६०२, ६०५, ६२५, ६५२, ६७८, ६८१, ६८७, ६८८
रुपिणी—५६, ७३, ११०, १२६, ३९८, ४०६, ४१८, ४२७, ४५३, ४५४, ५५२, ५९७, ६०६, ६२३, ६३१
रुपिम—४२८
रुपी—३६७
रुपीणि—५३, ७६, ४०५, ६२२,
रुपीणी—७४, ४३४
रुपु—६१०
रुपुकुवर—६२२
रुपो—४३२
रुडे—६८४
रुसइ—४१०
रुहइ—१२
रुहवे—२६५
रूहिव—५०४
रेस—३०
रोइ—४२५
रोपहु—६४३
रोपे—५९१
रोवइ—१४१, २५१
रोवति—३५९
रोस—२८०
रोहिणि—५

ल

लइ—६९, ७१, ७६, १०२, २१२, २३३, २४८, २५९, २७४, ३०८, ३२६, ४७४, ४४७, ४४०, ४९७, ५६०, ५६३, ६४९, ६५०
लइय—६७, ३०७
लउ—२२१, ४७४, ५३५
लए—१६५, ३५४, ४८९, ४९५, ६३६, ६४४
लक्खणवंत—४२
लक्खण—३९, १३४, १३६, १३७, ४२८, ६८९, ६९६
लक्खणवंतु—४२८, ६१४
लकुटि—६
लखण—१३२, ३११
लगन—४४, ८७, ४७५
लगाई—९८
लगि—२७५, ३८२
लड़इ—३८२
लडणु—१३८
लडहि—३७१
लडहु—३८१
लडी—३६५
लंका—३७५, ३५२
लंघे—२९५
लयउ—१३३, १३४, १८४, २७०, २८०, २८६, ३६०, ३९५, ४०८, ४१३, ५२०, ५२५, ५३३, ५४०, ५४७, ५५१, ५५३, ६३८, ६३१, ६७४, ६८२
लयौ—५५०, ५३१

लरइ—४४१, ४६१, ५२५,
लवंग—३४८
लव ऽ बुद्धि—१४
लहु—५८०
लहइ—२, ५५३
लहउ—२७३
लहणी—२७८
लहरि—१६
लाइ—६०, १०६, २७५, ६२०,
लाउ—५७८
लाए—६४६
लागइ—१०८, ११२, २२२, २२३, २६४, ३००, ४३१, ४७२,
लागउ—६००
लागणहु—११२
लागने—४३३
लागहु—१२७
लागि—२७५
लागी—७३, १०८, १४७, २३६, २६०, ३१२, ३८३, ५७४, ६८४
लागे—२३०, ४८७
लागो—२३७, २३८, ५०६, ५४६
लाघण—४०२
लाज—१७६, २४६, ५१३
लाजइ—१७१
लाठी—३६०, ३७१
लाडु—४०३
लाडू—२७०, ३६०, ४०३, ४०४
लाभ—१८३, २०४, २३१, ५४८
लाभइ—१७८, २७८, ३०२
लाभु—६५०
लायउ—४२६
लालची—४४४
लावण—६८४
लावइ—५७, ३५३, ४००, ४११, ७०१
लिउ—३११
लिकाइ—५३
लिलि—६८१.
लिखितु—१२७
लिखियावइ—६६६
लिखी—५५
लिख्यो—४८६
लियउ—५३, १२७, १८७, ४१४, ५८५, ६१५
लियो—५८, ८२, २४४
लिलाट—३०
लीए—४६२
लीजहि—२५५
लीय—३६५
लीयउ—४२६, ४६६, ५२७
लीयो—४०२, ५३६
लुबधि—२४७, २७२
लुबधे—२६५
लेइ—५, ६४, ६६, ७८, ८६, ११६, १६६, १७२, १७६, १६२, २०६, २११, २२७, २३५, २३६, ३७७, ४६८, ४७७, ४७८, ४७६, ४६७, ५६८, ६२०, ६२५, ६७५, ६८६
लेउ—१०४, १६५, ६०० ६२६
लेकर—३८७
लेखगि—३
लेगयो—१५४
लेचल्यउ—५१०
लेचल्यो—४६४

लेसा—१४२, १४६
लेमइ—४५७
लेतइ—२०६
लेनि—२३६
लेहि—७२, १४४, २६८, ३०१, ४१०, ६०७, ६७६
लेहु—६६, ७५, १४६, ३४०, ४२०, ४६४, ४६६, ४७४, ६२०
लेहँ—२७७
लैंगय—१५६
लोइज—६७
लोग—२७, ६०, ३४६,
लोगु—३००, ३३२, ३८६, ३६०, ३६२, ४२३, ४५२, ५८६, ६६१
लोटइ—४३१
लोणु—३८७
लोपि—२६३
लोपियउ—५६५
लोपी—७३
लोयण—६६०
लोयपमाणु—६६०
लोयग्गु—५०७

व

वइ—३६, ५७८, ५६०, ५६६, ६००, ६४१, ६६३, ६६७
वइठइ—१४३
वइठउ—२३, ३५, ६५, २४८, २५८, ४६३, ६६८
वइठे—६२, २५१, ३१८, ४३४, ६०८
वइठो—३५, ११७, ५६६, ६५०
वइसाइ—३४१
वइसारि—१०३
वइसारिउ—५६२, ५६६
वइसि—३८५
वखाणइ—६६८
वखाणु—६६४
वचन—५४६, ६२८, ६३२
वच्छथलि—६०६
वजइ—१७३
वज्ज—५२, ६३, २०६, २५८, २६५, ५२४
वज्जहिं—५६६
वटवाल—३००
वडउ—३३२, ३६२, ४२३, ४३६, ४५३
वडी—३३, ३०१
वडे—३८७, ३८८, ३६५
वण—५६, १०१, १३०, १३१, १६६, १८७, २१२, २२०, २२१, २२५, २२६, २४०, २४४, ३३६, ३४२, ४८६, ६६६
वण्ण—६६३
वणवेइ—५५
वणवेवी—१०५
वणयर—३१४
वणवाल—६६
वणवासी—६६५
वणहं—८६, १००, १४२, २१२, २२५, २२६, ३३८
वणिज—५७२
वणिसण—३३
वत्तीस—
वत्तीसं—८०
वत्तीसी—१३२

वदनि—६२१

वदतु—२१५

वंदे—२७

वधाए—५६७

वधावउ—११६, ११७, ११८, ५६३

वधावा—१२०

वधु—४५०

वधौ—४६५

वन—१३०, २२५, २३८, [illegible]

वनखंड—१२४

वर्लयउ—८

वनवासी—६७४

वंग—५७८

वंदनमाल—१७, ८९

वंदर—३५०, ३५१, ३५३, ३५४

वंदवबेउ—२०९

वंदल—३५०

वंदे—२९५, ६६०

वंधउ—१९३

वंधि—१८३

वंविवि—३४३

वंस—११०, ५७६, ६२५, ६५५

वधु—१२

वभंगु—१६८

वंभए—१२०, ३१८, ३६३, ३७८, ३८२, ४४३

वंभगु—३६०, ३६३

वयठउ—५३, ११६, २२०, ५६०

वयरी—१०८, २२६

वयण—२९, ४६, ६१, ६२, ७७, ९६, ९७, १४१, १५८, १७२, १७६, १८९, १९२, २४०, २४६, २५३, २५५, २८६, २८९, २९८, ३१९, ३७१, ३९७, ४२१, ४२७, ४३८, ४४१, ४५४, ४५५, ४७०, ५१०, ५५६, ५९९, ६००, ६०२, ६२७, ६२८, ६३०, ६३१, ६३४, ६५४, ६७९, ६८४

वयणु—६०, ९४, १४९, १६०, २६५, ३०१, ३१५, ३३१, ३७८, ३८४, ४१२, ४२९, ४३०, ४३२, ५१९

व्यंजन—३८८

वयर—१२३

वयराउ—४६८

वयरु—८४

वयसंवर—१७०

वयसरि—५८

वयसारि—११९

वयसारियउ—५६२

वर—४४, २०१, २०९, २२६, २२९, २५६, ३१५, ३४३, ३५६, ४११, ४२८, ४६७, ५०२, ५४९, ५५६, ५५८, ५६१, ५६८, ५७०

वरजइ—५८३

वरजे—३७५

वर्णा—३१६

वर्णइ—५४९

वरत—२९६, ६५९

वरसु—४०८

वरंगिणि—६९७

वरम्हंड—५३६

वरम्हंडु—४७४

वररंगिणी—५६५

वरस—१३६, ५५३
वरसइ—७८
वरसहि—२८१
वरहासेण—२१८
वह्लाय.रि—३९८
वह्लाउ—६३७
वृद्धि—१३९, ५४७
वराह—२१८
वरि—६०५
वरिस—१५७, १६०, १६२, ५४८, ६७१
वरिसउ—५३०
वरिसहि—१७९
वरिसुट्ठ—१४५
वरी—२९, ३०९,
वव—७००
वल—१३२, २०२, २८७, २९३, ४०६, ४५३, ४५९, ४६१, ५०२, ५७९, ६४३, ६८०
वलि—११९, ४६६
वलिवंड—४६०, ५५८
वलिभद्र—२२, ७८, ९२, ११३, ३१५, ४२३, ४२४, ४४४, ४४५, ४४६, ४४८, ४६७, ४९४
वलियउ—२३०
वलियो—४६५, ४६७, ५०१
वलिवंत—१२७, ५३६
वलिवंतउ—२०३
वलो—४५८
वलीभद्र—४५२
वसु—६६, २७९, ३०७, ४६४, ५८८, ६९६, ६५१

ववलु—३४५
ववलसिरि—३४५
वसुविउ—३६८
वसुदेउ—३७३
वसइ—१४, १५, २०, १०१, ३१३, ३१४, ४६०
वसई—२१६
वसहे—६९५
वसंत—२२७
वसंतु—२२१
वस्त—१९२, २१७, २३६, ३०१, ३०२
वस्त्र—४, १०३, २२९
वस्तु—३००
वसहि—२०, ६९६
वसा—८८
वसारि—४५७
वसो—४७०
वसुण—२००
वसुदेउ—३७१, ३७२
वसुदेव—३१७, ३६७, ४६६, ४९४, ४९८
वह—७९, ८०, १०५, १०७, २४५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३७६, २२३, २४५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३७६, ४००, ६०४
वहइ—४२०, ५२९
वहउ—३६५
वहत—१४१
वहयउ—२८२, ५३८

बहुहि—५०४, ६४३
बहि—१३०, ५२८, ५२९
बहिण—११०, २७९, ६०६
बहिणि—६४३, ६५४
बहिणी—१०९
बहु—३९, ४२, ९१, ९६, १०१, १०५, १३७, १७३, २२३, २९२, ३१४, ३१९, ३४८, ३५०, ३५६, ३८०, ४१८, ४१९, ४३८, ४५०, ४५१, ४९९, ५२४, ५५७, ५६१, ५६३, ५७५, ५७६, ५८१, ५८६, ५९०, ५९७, ६०३, ६१२, ६३७, ६५६, ६५८, ६६३, ६७५, ६९१
बहुवि—८४, ८५, २९१, ५१३, ६८७
बहुवी—२७९
बहुत—१८, २४, ४४, ६१, १०५, ११५, २३७, २३८, २९४, ३२२, ३४४, ३४७, ३८८, ४१६, ४२१, ४४३, ५७३, ५७६, ५८९, ६०५, ६१९, ६३२, ६३९, ६५५, ६७७, ६८३
बहुतई—४९८
बहुतु—५४६, ५६१
बहुपणि—१९४
बहुमती—४
बहुरि—४११, ६१९
बहुव—३२८
बहुरुपिणी—६३४
बहूत—४६०, ६४१, ६६६
बहूतु—१२७
बहि—५१९
बहै—१६२
बहोडि—४३७
बहोडी—२२१, २५७, ३७१, ४३७, ६१७
बहोरी—२८७
बाइ—१०८, ४८०, ४८४
बाइस—८९, ६८९
बाखर—३२५
बाजइपउ—३२५
बाप—३२४
बाबइ—६९७
[illegible]
बाभण—४८३
बाजंत—६५६
बाजहि—४, १२१, १७५, ५६१
बाजे—१७५
बाट—३०४, ३०७, ४८४
बाढहु—४३९
बाढि—१०२, ३४४
बाढिउ—३१४
बाढी—१०५, ३४३, ३४९, ३५०, ३५१, ३५३, ३५४
बाढइ—६२४
बाढिउ—५०६
बाढी—२७५
बाण—७८, ७९, ८२, १३८, १७९, २८१, ५१८, ५२१, ५२३, ५३१, ५३३, ६४७
बाणनि—५१, ६२, ८१
बाणि—२
बाणि थे—१९
बाणी—६९२

बाधु—५३५, ५५३

बात—२६, ४२, ४८, ५३, ७५, ९३, ९४, ९६, ११६, १५०, १५४, २९७, ३२६, ३६९, ३८२, ३८३, ४४४, ४४७, ४५३, ४७०, ४७२, ४८०, ५१२, ५८२, ५५०, ५९५, ६२३, ६२६, ६३०, ६३१, ६३३, ६७१, ६७४

बाबर—३४९

बाधि—७, ९५

बाधिउ—८५, ५१७, ६४९, ६५२

बांधि—४४९

बाप—४६२

बापहि—२८५

बापी—२४८, ३६२, ३९८

बापु—६८०

बांभण—३२५, ३३५, ३६५, ३७०, ३७५, ३७६, ३७८, ३८०, ३९०, ३९३, ३९४, ४३७, ४३९, ४४२, ४४३

बाभणु—३२६, ३२७, ३६३, ३८०, ३९१, ४३८

बाम्हन—१३१

बामन १२५

बामा—७४

ब्याहु—४०९, ६२१

ब्याहु ६२१

बार—११, ४३, ६०, ७९, ८९, २६०, ३१२, ३८३, ४००, ५६५, ५६७, ५९१, ६२०

बारबइ—१९

बारबार—१०८

बारमइ—१५९, २४२, ५७२, ५९६

बारम्बइ—३१२

बारह—१६, १५७, ६७०

बारहमइ—१२९

बारहै—१६०

बाह्मण—२०

बारि—७८, १६१, ६८१

बारु—११

बाल—१५७, २६४, ३००

बालउ—१६८, १७०, १८८, ४३०, ५७३

बालयमंत—३५२

बाला—४२९

बालु—११९

बालुका ३२७

बाले—१६७, ३८२, ६४२

बालेहि—१७५

बालैं—१७१

बालो—१७६

बावण—१५५

बावडी—१०५, ३६०, ३६३, ३६४

बावरी—१०२, १०४

बावो—२१४

बासीस—११

बास—२३, ६६३

बासु—३

बासुपूजु—९

बाहु—४०१, ४५७, ४६३, ५९५

बाहिर—३८३, ४४६, ६४३, ६८९

बाहिरी—४०९

बाहु—३६९

बाहुड—५११

बाहुडि—८३, १७७, २४६, ३०८, ४३९, ५५३, ६०९, ६६०, ६६६

बाहुडिउ—३७२
बाहुडी—१३३, १५८, ३६५, ६०६
बाहुरि— १४०, १६३, २४८, ४५३,
६२५, ६५८, ६६६
बाहुरी—१७७, ३४३
बाहुरे—४२२
बिउ—६८६
बिउलक्खण—२२५
बिकाहुड—११२
बिगतिहि—४३४
बिग्रहु—३७६
बिगहु—१६४
बिगाहु—२८५
बिगुचोन—३३६
बिगोइ—२५२, ४२४, ५१३
बिघन—६
बिचारि—२६, ६३, २१२, २२७
बिचारु—३०५, ३२०, ३८४, ६०६,
६०७, ६०६
बिचाहुण—४८६
बिचित्त—६६३
बिछोही—१४२
बिछुउ—४२३
बिजउरे—३४७
बिजयसंख—२३४
बिजयसंखु—२१६
बिजयागिरि—१८७
बिजाहुर—३८, १८४, २२६, २६५,
३१८, ५७२, ६१६, ६२१,
६६१
बिजाहुरनी—६२०
बिजाहुरि—५५, २२१
बिजाहुरु—२२३, २६२, ५७१
बिजु—५८६
बिजोगु—३३२, ३६२, ४५२, ५४८
बिडु—७६
बिणबहु—२११
बिणहु—३४
बिणासु—६७४, ६६०
बिद्ध—१
बिधारि—५७६
बिदेहु—१५०, ५६३
बिद्या—१२६, १३२, १६१, २०३,
२०५, २२२, २३३, २४५,
२४६, २४७, २४८, २४९,
२५५, २६३, २६५, २६३,
३६४, ३८२, ४०६, ४१८,
४५४, ४८८, ६५१
बिद्यातारणी—१६४
बिद्याधर—५८६
बिद्याबल—६७७
बिधाता—१४०
बिनहु—६२, ६४, ४२४
बिनउ—३६६
बिनसइ—२७, ११८, ४२०, ५८८
बिनाणु—२७३
बिनोद—२४
बिप्र—३२३, ३२६, ३२८, ३३३,
३३४, ३३७, ३६२, ३७७,
३८०, ३८१, ३८५, ३६०,
३६५, ४३५, ४३६, ४३७,
४४२, ४५६, ५६८, ५७१
बिप्रहु—४४५
बिभहु—३४५
बिपरित्त—३२, ४२४
बिभु—३५६, ३३०, ३८७, ३६२
बिभउ—३६६, ५०१
बिभिउ—१६०

विमलु—९
विमाण—२५, ४३, २९१, २९२, २९५, ३१२, ३२०, ४८५, ४८७, ५५९
विमाणहु—४६२, ५४४
विमाणा—१३३, ६५५
विमाणि—१२४
विमाणु—१२३, १३५, १८९
विमाता—४९९
विंब—२६९
विम्बाण—१३०, ३१८
विम्बाणहु—१३१
विम्बाणु—१२२, २९५
वियउ—३१
वियाण—२९६
वियाणइ—३८४
विरती—४२३, ४२६
विरख—८४, १०२, १६२, ३४४, ३४७, ३५१
विरखं—२०९
विरधि—१५७, २९९, ४०९, ४३०, ६१७, ६८२
बिधि—१३६
विरखु—२२५
विरूधउ—२५४
विरूप—३१
विरधी—३९५
विलख—८३, २१५, २६६, २९२, ५०१, ५२४, ६३१, ६७६
विलखउ—२६२, ३२९, ४१५
विलखहि—१४३
विललाइ—१६०, ३९१, ६८१
विललाणी—६३०
विलाडी—९०, १४०, ३५९, ३९२, ४७५
विलखो—६७८
विलतरंग—२२५
विललाइ—४००, ६८१
विलसइ—५८६
विलसाइ—५९२, ६६२
विलास—११३, ६६२, ६६३
विलिख—१४६
विवाण—१५८
विवाणहि—२८१
विवाहण—३०९, ५८१, ५८४
विवाहहि—४६, ४७
विवाहि—२२७
विवाहे—६२२
विवाहु—४४, ४८, ८७, २२३, २८९, ४१३, ५८५, ५८६, ५८९, ६५४, ६५५
विविह—१०७
विष्णु—७६
विषमु—२०१, २०७, २२९, २३१
विषय वासिणी—६३२
विस—१६९, २७०
विसखाती—४७६
विस्तार—१६
विसथाइ—९९
विसमइ—५३५
विसमउ—१४३, १८५, २५०, ४०५, ५५५, ६११, ६३१
विसमादी—३२
विसरयो—१४५
विसहर—१९०, २०२, २०६, २१४, २१५
विसहरु—२१४

बिसाधु—२२२
बिसाले—२६६
बिसाहु २९६
बिसुर—४६६
बिंसूरइ—४१२
बिसेषइ—१५
बिस्नु—४२१, ४४५
बिसास—२६६
बिहुडाइ—४३१, ६८०
बिहडाव—४६१
बिहलघण—४४
बिहलंघन—२५०
बिहसि—५६ ६४, २६०, ३७०,
४२६, ४५८
बिहसत—६०
बिहसंतु—२५, ११७
बिहसिउ—६०६
बिहसाइ—२६, १५६, २००
बिहसेइ—६१
बिहि—४०, ४८६
बिहिणा—६६१
बिहिसाइ—६६८
बिहु—६८६
बीजाहराउ—१५३
बीभु—५३६
बीडा—१७२
बीण—४, ५८०
बीणा—३०३, ३३३
बीधा—२७७
बीनयो—६३
बीय—१३
बीर—७८, ८१, १३६ १५५, १६३,
१८१, १८२, १८६, २०१,
२०६, २१२, २२१, २३६,
३४३, ४०३, ४२७, ४४७,
४५६, ४५८, ४६७, ४६२,
४६८, ५०२, ५१०, ५४६,
५५६, ५५८, ५६१, ६३७
बीरा—३५२
बीरु—१०, १३०, १६०, १६६,
२०७, २०८, २०६, २१०,
२१४, २२०, २२४, २२५,
२२६, २५६, ३१५, ३४५,
३४६, ३६२, ५०१
बीबो—१६७
बीस—२३५, ३३६
बीसक—४४१
बुआण—१८५
बुभाइ—५२८
बुभिवि—१३७
बुधि—१, २६८, ३६४, ४३५, ४८८
७०१
बुद्धि—४१८, ६३५, ६७६
बुरो—६३०
बुलाइ—१८७, ६२२
बुलाय—१०४
बुलिउ—१८३
बुचइ—२२७, २६६, ६४०
बूभइ—१, १३६
बूभिउ—१३८
बूढउ—३२५, ३३४
बूढे—३३२
बूधो—४८१
बूंद—३११
बूरे—४८५
बूलाइ—४००
बेग—५६, ७२, १३५, २६८, ३५४,
५७२, ५८७, ५८६

बेगउ—२६८
बेगि—६१, १६५, १७०, २५३
२८६, २६०, ४३५, ४४१,
६०२, ६०५, ६३६
बेगु—६३४
बेगे—२८६
बेगो—५४३
बेटा—३६
बेटी—३६, ६२५, ६२७
बेवियउ—१५
बेण—६५६
बेताल—५०४
बेतालु—३२
बेधि—६४
बेद—८७, ३२८, ३७४, ३८०, ५६८
५८१
बेबहुउ—४३०
बेल—३४८
बेलउ—१२५
बेला—५७६
बेलु—३४५
बेसु—३०६
बेकार—६३६
बंझउ—१०१, ३८७
बंकि—३८१
बंठी—१०५, ३८८, ५२६
बंठो—३५२
बंद—१५५
बंदप—६११
बंधु'वल—४७४
बंस—२०
बंसइ—४८५
बंसण—३६६
बंसंबर—७६
बंसु'बर—६४३
बंसरहि—३८१
बोछी—४८१
बोल—४५, ३७८, ४२१, ४५७
४७३, ५६०, ६३१
बोलइ—४३, ४५, ५६, ८४, ६६
६७, ६६, १००, १०६
११७, १४६, १५२, १६७
२०६, २६६, २८८, ३०६
३१३, ३६८, ३८४, ४०६
४४५, ४४७, ४६४, ४६३
५४४, ५५४, ५५६, ५७३
५७४, ५८३, ६०७, ६२५
६३४,
बोलत—६४३
बोलति—६४२
बोलते—६४३
बोलि—११६
बोलिउ—५१६
बोलियउ—६६
बोल्यउ—५१७
बोले—६०५
बोलं—१४८, ६०६
बोलो—४७३
बोल्यो—१७८, ५०१

श ष स

श्रोगी—३५
षं'यसु—६
षण—३०, ७६

सङ्गन—२३

सउ—३७, ७६, १६८, १७६, २२४
२५२, ४८८, ६२६, ६७६

सकइ—१६८, ३६२, ४६६, ५३२
६३०

सकउ—३३१, ४३७, ४४३

सकति—२६८

सकयहु—३३

सकलतउ—१३०

सकहि—३३०

सके—५२३

सकेलइ—५५६

सक्यो—२०२

सखी—४००

सगलो—४५२

सगि—६१३

सगुन—४८५

सघरए—७८

सचउ—५८७

सचभामु—३६

सजिउ—४७५

सजरए—६८६, ६६१

सजहु—७०

सजूत—२६३

सजरए—१८३

सज्जेन्—१७३

सभूत—१७५

सटकइ—३३५

सठ—७७

सजे—६३८

सतखरए—६६३

सतभाइ—२६, ३३०

सतभाउ—४५, ८४, ३६८

सतभामा—३०, ३१, ६१, ६८
१०८, ६१२

ससरहु—१०

सति—६४

सतिभाउ—४८, ५६, ६२, १००
१५२, १६१, २२३, २७४
३२६, ५१७, ५४३ ५७३,
५८५

सतिभाम—४०२

सतिभामा—६३, ६४, ६५, ६६, ६६
१०३, १०४, १०६
११२, ११३, ११६
११८, १२७, ३१८
३४३, ३६१, ३६२
३७३, ३७५, ३८५
४१६, ४२०, ४२४
४३३, ४४३ , ८६,
५८७, ५८८ ५६७,
६०१, ६०६ ६११,
६१४, ६१७ ६५७

सतीभामा—६२

सतुबाची—६४२

सवा—६६३

सवाफल—३४७

सघाणि—६४७

सथार—१, ३, ५५६

सथारु—५, ३०७

सधे—६४

सधेहि—१८३

सन—५३२

सनधु—१७३

सनबंध—४७५

सनमथ—२४५

सनमघु६८६

सनमाधु—४०९

सनाहु—४७८

सनीश्वर—११

सनेहु—६०३

सनेहु—५८८, ६४२

संक—३६९, ३७१

संख—५१, १२१, ३४८, ५६६
५८०, ६५६

संगइ—२६८

संग्राम—२१०, ४६७, ४६९, ४६२
४९८, ५००, ५०६, ५४९
५५५, ५५६

संग्रामु—२६६, ५०८

संघरइ—२७५, २८३, ३८८, ६७२

संघरहु—१६५, ६७१

संघर्षउ—५१०

संघरि—२८६

संघरी—३५१

संघरे—४०३

संघार—४६१

संघारू—४९२

संघारणु—७९

संघासरण—८३४

संचरइ—३०

संघारित—५१९

संजमु—४९४, ६६६, ६७३, ६७५

संजुत—७२

संजुत—३२०, ४८२, ५७१

संजोगु—४०

संति—९

संतापु—१४०, १४२

संतोषी—१६३

संदेसउ—३६८

संदेह—४०६

संदेहु—१६, ३०५, ५३०

संधाण—८०

सम्मसु—६८७

सन्यास—३३१

संसार—६५९

संसारि—६६७

संसारु—८३१

संहरे—३९०

संहार—१६१

सपतउ—१५९, २२८, २५०, ३५५
४६३, ५४४

सपत्तउ—१५०

सपत्ती—६८१

सपते—८४

सपराण—८१, १८१

सपराणु—२९

सपरान—४५८

सफलु—२३१, ४२९, ५६२

सब—२२, १११, १६२, १७५ १८७
२५४, २५५, ३५०, ३५६
३५३, ३९५, ४२५, ४७३
४८१, ५०२, ५१२, ५८६
५९३, ६३८

सबडु—२४

सबहु—२३०

सभा—२३, ५३, ३३२, ३३७
३७२, ३७३, ४५७, ४६३
४६४,

सभाइ—११०, २५५, ३१२, ३६०
४५८

सभाउ—२५७, ५९६

सभाणइ—५२१

सभालि—४७७, ५३६

सभालिउ—७६

सम—७२, २४३, ४८८, ५२२, ५६२

समउसरण—६६५

समभाइ—६६, १४५, ३६२, ६२८

समभाव—६८७

समय—२०६

समवि—२६४

सभाविउ—१८४

समदिनारायण६५८

सम्वरि—३०३, ४०६

समयमुहं—१२

समरंगिणि—७६

समराण—१७५

समरी—४८८

समवसरण—१५१, ६६४

समहाइ—२५६

समाण—१५

समाधान—४००

समान—१५

समु—३६२, ५७२

समुभार—१५०, २८५, ३८३, ४००
४८०, ५५०, ६८८

समुभावै—४८६

समुव—३२७

समुद्दु—५५७, ६५६

समुद्र—१२५, ५५७

समुंद—५५८

समेलि—३८६

संपतउ—६५, २२५

संपति—७००

सबु—४५, ६६, १६७, २८३, ५०८
५५३, ५६४, ५६६, ६२४
६४६

संभयउ—५६३, ६१०

संभगे—२११

संभरि—५७६

संभकुमवाय—६१२, ६२४

संवकुवर—६१६, ६१८

संवतु—११

सम्वस—२३५

सम्हारइ—४७६

संसयहु—५६६

सम्हालि—१२३, १६२, ४५०, ४५१

सयपंच—३२८

सयन—२६०, ३२०, ४७४, ४८३,
४८८, ५१०, ५१४, ५२६,
५२८, ५५६, ५७७, ६४६

सयना—५१२, ५६४

सयनु—४८७, ५०८, ५७२,

सयल—२५८, ३५०, ३८५, ३६०,
३६१, ४६६, ५२६, ५५८,
५६१, ५६३, ५६४, ५८६,
५८७, ५८६, ५६१, ६१४,
६६८

सयलहु—४६१

सयलु—३७, ३८६, ४१३, ५१०,
५५५, ५७७

सर—६४, १७६, २२४

सरण—१३

सरणा—३११

सरलि—१४५

सरभंगु—६४३

सरवइ—२०८

सरस—११, ६६३

सरसती—४

सरसुती—१

सरस्वती—६२८

सरिस—१०२, २६५, २९४, ४२५, ४६३, ४७०, ५३९, ५६१
सरिसो—४९५
सरीर—५४, ५०८, ६८५
सरीरहु—६८४
सरीरु—२३९, ३४६
सरु—१, ५२०
सरुव—३८, ३९, ४२, १३६, २२७, २३८, ४२८, ६१४
सरुवु—१३४
सरे—२८१, ३२०
सरोवर—२०४
सरोवरु—३, २०५
सल—६४, २१३, ५५९
सलिलु—५७६
सलहण—६३९, ६९१
सलहिउ—२३०
सलि—२१९
सव—५७९, ६३८, ६४३, ६४६
सवई—३९७, ४१५
संवइ—६११
सवतिसाल—९१
सवतिसालु—५८६
सवव—५६६
सवनि—३७५
सवसु—४८७
सवल—१७५, ४५१, ५०२, ६४३
सवसिद्धि—१९५
सवारि—५६८
सव्व—४२२
सव्वहु—४६१
सवु—२, १३५, १३०, १३८, १८३, १९२, २७९, ३००, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ४४४, ४६२, ४६८
सवुव—५८०
सव्वु—५८४
सरिसु—१३९
ससि—१७, ४२, ७३, १०६, २९३
ससिगलहु—८२
ससिभाइ—३०, ६१५
ससिहुर—६१२
सहइ—५३७, ६८९
सहण—५८३
सहदेउ—४५९
सहयो—४७०, ४९७
सहन—८३
सहनाण—१३३
सहनाणु—५०
सहस—६०५
सहाव—५३७
सहाउ—११०, २६८
सहारइ—५२७
सहारउ—१४१
सहारि—३३ २३१, ३४०, ४९६, ५३२
सहि—३१९
सहिउ—१२
सहिनाण—३१८, ३९७
सहिनाणु—४१५
सहियो—४९३
सहिलयो—६१, १०५
सहीए—५२९
सहु—११०, २१०, ३४०, ५१६, ५६०
सहेर—४९, ५७, ६४१
सहोवर—५१

सहोअरि—४४
सहोवरु—२१
सहोयर—१९६, २२८
सहोवरि—६४०
सहोवरु—५९५, ६०३
सही—१३१
सहुयउ—५१५
सागालाए—६४६
साचउ—३७८, ४२१,
साज—४८९
साजइ—४७६
साजहुइ—४७५
साजि—४७६, ४७७, ४७९, ४८९
साजिउ—५८, १७३
साजियउ—५९
साजहि—१७५
साजहु—६९, ४७५
साजे—२५९
साजुहु—४७५
साजं—४७९
साण—२०७
सात—५१, ६२
सातउ—६४
साति—३२
साथ—८४, २९९, ५०२, ५३८,
        ६४६
साथि—५१३
साधु—६९९
साधु—५५०
साधिउ—५१८, ५२७
साधु—३८४
साम—३२४
सामंत—६२६
सामकुमार—६३५
सामकुमार—६४६
सामहण—२७९, ५७७
सामहराज—६९५
सामि—१२, १५०
सामिउ—२१, ४६१
सामिकुमार—६७३
सामिणि—१०६, ४२०
सामी—१६६, २६४, ३५३, ४०७,
        ६९४
सामुहे—५६१
सायर—१६, १५२, ४७५
सायरह—३७४
सार—६०, ९४, १२८, १५९, ३१२,
        ३६७, ३७५, ४००, ४३५,
        ५०५, ६२०, ६३९, ६४५
सारंगपाणि—२६, ५१७
सारगपाणि—६३
सारंगमणि—७७
सारथि—५८, ५९, ४८५, ५०७,
        ५०९
सारथी—४८६
सारद—१, २, ३
सारिउ—१५५
सारी—६५
सारु—५, ११, ३९, १३४, १३६,
        ३९५, ३७८, ३८०, ४४८,
        ४७१, ६०३, ६८४, ७००
सावयलोय—६९६
सासउ—६७१
सासण—५
साहु—१२

साहुण—२१
साहुस—१६२, १९८, २०८, २५६,
२६७, २७३, ३४९, ४२७,
४५८, ५९८, ५४९, ५५६,
सिउ—४९०, ५४६, ५४८, ६३७
सिखर—२१७
सिगली—३७३
सिगिरि—४८२, ५५९
सितू—४१०
सिधि—६६९
सिद्धि—२३१
सिण—६४४
सिगार—३०
सिगार—३५७
सिघ—१३८, १६५, १८१, १८२,
२१७, ४४८, ४५१
सिघरह—१६४, १६८, १७४, १८२
सिघासण—२६, ५६९
सिघासणु—२०२, २९९, ५६२
सिदुरु—३४६
सिधु—१६९
सिह—१७४, ४५०, ४६०
सियालु—४८४
सिर—२३, ३२३, २५०, २५६,
२७२, २८६, ३६३, ३७८,
३८२, ४१६, ४२१, ४२६,
४२९, ५६०, ५६२, ५७०,
५८२, ५८३, ६५९
सिरि—३४५
सिल—२५८
सिला—३५, १२४, १२५, १२६,
१३१, १३२, १५५, २३०,
२४४, २५६
सिव—१८३
सिहुवार—५७६
सिहु—११२, ११६, १६४, १९५,
२१०, २३४, २३०, ४१४,
५८८, ५८९
सीउ—१९०
सीखयज—४५३, ५२२
सीभइ—६५३, ६६२
सीतल—९
सीहार—३७५
सीयउ—४१६
सीया—२७५
सीलम्बंत—६१४
सीस—१, ९२
सीसु—८२, ६४३
सीहुवार—४४२, ५९१
सीहुवार—४३५,
सीहुवारि—६३७
सीहिणि—१६९
सीहु—१६९
सुमइ—२०
सुमठे—३५८
सुइ—५८८
सुइन—७१
सुइरी—३६४, ४०१
सुख—९१, १११
सुखइ—६८२
सुखासण—१०२
सुखु—६२९
सुगणइ—४८६
सुगमु—४८६
सुगुणु—१८३
सुचंगु—२१६

सुजन—५७३
सुजाणु—५०
सुभट्ट—७१
सुठु—१२
सुणकार—८७
सुण्यउ—४१७
सुणइ—३८४, ६६३,
सुणहु—२७१
सुणि—२६५, ४५८, ६६४
सुणिउ—१३७, २६५, ६६४
सुणिव—६६४
सुणे—४२६
सुणेइ—६७६
सुणो—६२३
सुण्यो—३७६
सुतारि—४५
सुदंसणु—१४, २७४
सुदिन—४३६
सुधणु—३६५
सुधाकारणी—१६३
सुधि—६८, १४४, १४८, १५७, १६६
सुन्दरि—३२, ४१, ३१२, ४२१
सुनीर—३६८
सुपनखां—२७५
सुपवित्त—१२
सुपासु—८
सुरिनंतर—६७६
सुपियार—६१५
सुपियारे—१३६, ७७३
सुभ—१६३
सुभद्दया—४५६
सुभ बरिसणी—१६३
सुभाम—६२८
सुभामकुवर—६२१
सुभानु—६१४. ६७३
सुभानुकुवरु—६१६
सुभु—५०७
सुमति—८
सुमिरो—४१८, ४८८, ६३५
सुयण—५६१
सुर—१८३, २०५, २२०, ५३८, ५६५, ५६६, ६००, ६०३, ६१३, ६६६, ६६८, ६६३, ६६६
सुरंग—१४६
सुरंगिनि—५४१
सुरजनुहु—२७८
सुरवेउ—२१६
सुरनारि—५०
सुरमणि—५५२
सुरमवण—६७७
सुरयणु—६६१
सुरांरदु—६६४
सुरसोहु—२३२
सुरसुंदरि—४१, ४३, ४५, ४८
सुरिंदु—६६१
सुरेस्वर—६६२
सुवंश—५१६
सुवरीयउ—२७८
सुवास—६६३
सुविचार—१८
सुविधु—६
सुसपालु—४५
सुहड—२६४
सुहव—७०, १७५, १५६, ४७५, ५४३, ५५६, ५५८, ६७८
सुहवनि—४८०

सुहब्नु—४८९
सुहद—५७७, ४९८
सुहए—४८७, ४९९
सुहवंसए—२७४
सुहनाली—२२७
सुहल—५३६
सुहाइ—३२९
सुहिनाल—२७१
सूके—१६१
सुक्ख—२३, ९८, १७३, ५०३, ६०२
सुणिउ—५१४, ५६९
सूब—२०
सुंदरि—१४३
सूरि—६५७
सूरु—१६८
सूली—६४३
सूधर—२१९
सूवा—८७
सूहो—१२०
सूहव—३५७
सेखए—२३४
सेढि—२७१, २७२
सेरी—२७२
सेल—४, १०३
सेली—६४५
सेना—५०१
सेनाकरि—२६०
सेनाकरी—२०४
संभउ—८
सेम्बहि—२३१
सेल—४७९
सेव—२८, ९२, २११, ४४५, ५८८,
६१३, ६६२
सेवा—२१५
सेस—५०६
सेसपाल—४४, ६९, ७१, ७४, ७५,
७६, ७७, ७९, ८३, ६२७
सेसे—११६
सेह—८०
सैन—२८८, ५५०
सैना—५०३
सोइ—३५, ३८, ४२, ४३, ४७,
१०५, १०७, ११२, ११४,
११८, १२४, १३१, १५०,
१८८, १९०, १९६, १९९,
२१३, २१५, २१८, २२४,
२३५, २४०, २५०, २५२,
३३५, ३३८, ३४९, ३६४,
४०९, ४१५, ४२४, ४३१,
४९७, ५३४, ५६९, ५९८,
६०४, ६०६, ६२५
सोउ—१०७, ५२१
सोखइ—२७०
सोखणी—१९३, ३६५
सोतउ—२७२
सोनो—३०१
सोप्यो—२६९
सोभ—५५५
सोभे—५६३
सोरठ—१४, १४६, २४२, ५९६
सोलह—८०, १९१, २२९, २३१,
२३३
सोलहउ—९
सोला—१८३, १८६, १९२, ५४८
सोले—६३२
सोवल—१२८

सोहड़—४२, ५२, १०३, २३४,
 ३१६, ६०८
सोहउ—६८७
सोहि—३०३
सोहहि—१७, ४६७, ४६७
स्तुति—६६८
स्मरि—४६१, ४६३
स्यंघरउ—१८४
स्यंघरथ—४४७
स्यंघराउ—१८४
स्वर्ग—६८६, ६९७
स्वर्ग—५९४
स्वाति—१२
स्वामि—६३५
स्वामी—४, ९५, ११८, १४७, १४८
 ५९५, ५९७, ६२३
स्वाद—५०५
स्वाली—३४

ह

हइ—८७, ९३, २२५, ३२७, ४०६,
 ४४९, ४७१, ४८०, ५९३
हइवर—२६१
हउ—१५४, १२८, १६६, २६३,
 २७३, ३००, ३२८, ३७०,
 ३८०, ४१७, ४६४, ४७३,
 ५३६, ६००, ६२३, ६६७,
 ६७८, ६९८, ७०१
हकराउ—३७६
हकारउ—३७६
हकारि—५८, ११६, १२०, २५३,
 ३४०, ५७५, १०७, ६१९
हडइ—५०६
हणई—५३२
हणह—२७५
हणि—१५४, २९७, ४१३, ४१४
हणिलइ—६७
हणी—५०८, ५१२
हणे—५७६
हणइ—५१
हणउ—६२
हणवंत—३०३
हणें—६४७
हत्थ—२०६
हति—१२४
हथलेवो—८८
हथलेवउ—५८५, ६५६
हथियार—३५४
हथियार—४६७, ४७१, ४७६
हंस—३
हंसगमिणि—४२
हम—४१०, ४११, ४२५, ४३७
हमइ—६५०
हमारउ—१८५, ३०९
हमारी—११३, ३०८
हमारे—२८९
हमि—२७, १४३, १४४, ३८४,
 ४४२, ६४१, ६४२
हम्मु—२४८
हय—४८२, ५०४, ५२६, ५२९,
 ५३२, ५५९, ६४५
हयउ—५४, २३९
हयवर—५००
हया—२७१, २७२
हर—१२७, ४५८, ६६२
हरख—६

हरव—१५९

हरण—७

हरख्यौ—१८९

हरसिउ—३२०

हरि—३६, ९६, ११९, १४३, १९२, ३४४, ४५८, ४८०, ५०६, ५१९, ५४७, ६५०, ६७३

हरिउ—१२७

हरिदेउ—१०७, ५१३

हरिनंदण—३०३

हरिनंदनु—३०२

हरिराउ—२३, ६२, ७६, ४९३, ४९४, ५६०, ५७३

हरिलइ—७६,

हरिलयउ—१४७

हरिवंसइ—१२

हरिव्यौ—२८८

हरिसय—१९६

हरी—१२१, ४७२, ६७८, ६८२

हरीलइ—६९

हरु—३१४

हरे—६५५

हरेइ—६

हल—४६७

हलउ—६४

हलहर—४५, ११९, ३३४, ४४४, ४३९, ४४१, ४४७, ४५२, ४६१, ४७२, ४९७, ६९१,

हलहल—५९, ८६, १४३, ४४९

हलहल—५९, १४३, ४४९

हलहल—६६५, ६७१, ६७२

हलहलु—६४, ५५८

हसाइसु—४८

हसिउ—४७४

हल्लिउ—४७५

हली—३५१

हलु—४५०

हलुवइ—६९७

हुवइ—४२१

हसइ—१०७

हसाइ—३७३

हसि—९५, ९७, १००, १४९, ४४४, ५१२, ५१५, ५४६, ६२२, ६५१, ६५२,

हसिउ—५५१

हस्ती—१९१

हहडउ—३६

हहि—२२८

हहु—३८०

हाइ—१०६

हाक—४९२, ५०९, ५२७, ५३७

हाकइ—४९१

हाकि—७८, १९०, १९६, २६१

हाकी—४९५

हाट—६४४

हाडो—३८८

हाथ—६, २५, ३१, ५२, ९२, ११७, १२५, १३१, १४६, १४८, १५५, १७२, १९९, २०२, २०६, २२२, २३४, २८०, २९९, ३०९, ३४३, ३७७, ४१७, ४२२, ४९६, ४९७, ५०९, ५२०, ५३१, ५३३, ५३५, ५४०, ६४४, ६४६, ६४८, ६७३

हाथहु—२११, २३५
हाथि—७७, ८२, २१३, २४६
हाथु—३८७
हार—६०३
हारहु—११२, ११३
हारसु—६०४
हारि—२६२, ६१६
हारित—१८२, ५१४
हारी—४१६
हारु—२३४, ५९९, ६००, ६०१, ६०४, ६०६, ६०९, ६१०
हारैं—६१७
हालहु—५०६
हासउ—३७३
हासी—२९१, ३३२, ४२२
हाहाकारु—५०१
हिम—३२४
हिय—१४०
हिय अलोक—१९३
हियहु—१९९
हियहू—६०१
हियउ—१४१, २६५, ३४२, ४२९, ६२६, ६७८
हियस—५१६
हीएहु—४०६
हीरा—१७८, ७०१
हीरामु—६३४
हीयउ—२४९, ५५१, ६३०
हीयरा—१६०
हुत—११, १२४, १७१, १७३, २०० ४२२, ५३३, ६४४
हुलासहि—२५३
हुती—३५०
हुते—६३९
हुतो—२६९
हुरि—८५
हुबो—१३५
हेम—२९०, ३०१, ६२९, ६५६
हैवर—१८०, ४७५, ४९२
होइ—१, ६, ७, ३५, ४०, ४३, ४८, १०४, १०७, १०९, ११२, ११४, ११७, १३१, १६८, १७६, १८३, १८६, १९०, १९२, १९९, २०२, २१५, २२४, २३२, २३५, २४०, २४३, २४८, २५०, २६७, २७८, ३१०, ३३५, ३३८, ३३९, ३६४, ३६५, ३८३, ३९१, ४०९, ४१५, ४२७, ४४४, ४६४, ४७८, ४८१, ५०५, ५११, ५१३, ५१५, ५३५, ५३६, ५५३, ५५५, ५८९, ६०४, ६०७, ६३३, ६७०, ६७५, ६८४, ६९७, ६९९
होइहि—१६२
होउ—१३, ५७३
होण—५६८
होहि—७४

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	३	रुिकमणी	रुक्मिणी
१४	१	रुक्मिणी	,,
१४	३	रादउराइ	जादउराइ
२२	१	रुक्मणि	रुक्मिणी
२२	१०	रुक्मिणी	,,
२४	६	नारयण	नारायण
३१	७	रुक्मिणी	रुक्मिणी
३५	५	निम्पल	निर्म्मल
४५	१	प्रद्युम्न	प्रद्यु म्न
६०	२	दम्पति	दम्पन्ति
६६	३	गुरा	गुर
६७	४	आवास	अवास
७३	३	वृत्त	वृत्तों
७४	६	मगल	मंगल
९०	१	प्राप्त सकने	प्राप्त कर सकने
९१	६	रुक्मिणि	रुक्मिणी
९२	६	,,	,,
९३	५	,,	,,
९३	६	,,	,,
९४	६	,,	,,
९९	४	दाउ	दोउ
१२०	४	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१२०	१०	जामंवती	जामवती
१२३	६	भानहि	सुभानहि
१२४	१	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१२९	१	डाम	डोम
१३५	४	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१४२	७	अठरहुवें	अठारहुवें
१५०	२२	भयकर	भयंकर

१५१	१७	दुख	दुःख
१५१	१८	दुख	दुःख
१५२	६	नेत्रों	नेत्रों
१५३	८	सहेलयो	सहेलियों
१५४	१	पहिल	पहिले
१५४	६	के	का
१५४	२३	प्रद्यम्न	प्रद्युम्न
१५७	२३	विधाओं	विद्याओं
१८५	१६	रूप धारण बनाकर	रूप धारण कर
१९२	२०	के	से
१९२	२०	समा	सभा
२१४	५	रुपचन्द	रूपचन्द
२१४	८	बहुरुपिणी	बहुरूपिणी
२१४	२४	[illegible]पचन्द	रूपचन्द
२१५	७	"	"
२१५	१६	"	"
२१५	१९	"	"
२२०	२६	अभ्यपंतये	अभ्यंतर